प्रथम वर्ष कला

हिन्दी अनिवार्य

© UNIVERSITY OF MUMBAI

डॉ. सुहास पेडणेकर
कुलगुरू,
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई

डॉ. धनेश्वर हरिचंदन
प्रभारी संचालक
दूर व मुक्त अध्ययन संस्था,
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई

प्रा. अनिल आर. बनकर,
सहयोगी प्राध्यापक इतिहास आणि सहाय्यक संचालक व
प्रभारी अध्ययन साहित्य विभाग,
दूर व मुक्त अध्ययन संस्था, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई

कार्यक्रम समन्वयक : **डॉ. संध्या एस. गर्जे**
सहायक प्राध्यापक,
दूर व मुक्त अध्ययन संस्था, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

लेखक : **डॉ. प्रवीण चन्द्र बिष्ट**
रामनारायण रुइया महाविद्यालय, माटुंगा, मुंबई - ४०००१९

: **डॉ. उषा दुबे**
एम.डी. महाविद्यालय, मंगलदास वर्मा चौक,
परेल (पूर्व), मुंबई - ४०००१२

: **डॉ. शैलेश कुमार दुबे**
एस.आइ.ई.एस. महाविद्यालय,
जैन सोसायटी, सायन (प), मुंबई

: **डॉ. श्यामसुन्दर पाण्डेय**
बिरला महाविद्यालय, गौरीपाडा, कल्याण
महाराष्ट्र - ४२१३०४

: **डॉ. शीतला प्रसाद दुबे**
सेवा निवृत प्राध्यापक, के.सी. महाविद्यालय,
चर्चगेट, मुंबई

: **डॉ. जयश्री सिंह**
जोशी बेडेकर महाविद्यालय, ठाणे (प), महाराष्ट्र

: **डॉ. सत्यवती चोबे**
विल्सन महाविद्यालय,
गिरगाव चौपाटी के सामने, मुंबई - ४००००७

जुन २०१८, प्रथम वर्ष कला, हिन्दी अनिवार्य

प्रकाशक : प्रभारी संचालक, दूर व मुक्त अध्ययन संस्था, मुंबई विद्यापीठ,
विद्यानगरी, मुंबई -४०० ०९८.

अक्षर जुळणी : अश्विनी आर्टस्,
गुरुकृपा चाळ, एम्. सी. छगला मार्ग, बामणवाडा,
विलेपार्ले (पूर्व), मुंबई - ४०० ०९९.

मुद्रण :

अनुक्रमणिका

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ क्रमांक
१.	बीती विभावरी जाग री	१
१.१	भिक्षुक	५
१.२	मैं नीर भरी दु:ख की बदली	९
२.	नर हो न निराश करो मन को	१३
२.१	पुष्प की अभिलाषा	१८
२.२	झाँस की रानी	२१
३.	सिंदुर तिलकित भाल	२५
३.१	दीया जलाना कब मना है	२९
३.२	जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना	३३
४.	वैतरणी करोगे पार	३७
४.१	बात बोलेगी	४१
४.२	बसंती हवा	४५
५.	बाघ	४९
५.१	कहाँ तो तय था चिरागा हर एक घर के लिए	५२
५.२	चल पड़े जिधर दो डग मग में	५६
६.	हम दीवानों की क्या हस्ती	५९
६.१	किस्सा जन तंत्र	६२
६.२	विद्रोहिणी	६५
७.	बड़े घर की बेटी	६९
७.१	पुरस्कार	७४
७.२	हार की जीत	८०
८.	चीक की दावत	८४
८.१	पाजेब	९०
८.२	सदाचार का ताबीज	९४
९.	डिप्टी कलेक्टरी	९८
९.१	अपना गाँव	१०३
१०.	वापसी	१०८
१०.१	अकेली	११३
१०.२	सिक्का बदल गया	१२०
११.	गदल	१२६
११.१	घुसपैठिए	१३३
११.२	गणपति गण नायक	१४१
१२.	कब्र का मुनाफा	१५१
१२.१	दलित ब्राह्मण	१६०
१३.	पत्र लेखन	१६६
१४.	निबंध लेखन	१७५

अनुक्रमणिका

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ क्रमांक
१५.	अशुद्धि शोधन	१८१
१५.१	संज्ञा, सर्वनाम	१८९
१५.२	विशेषण और क्रिया	१९६
१५.३	अपठित गद्यांश	२०४
१६.	भाषा दक्षता - लिंग और वचन	२१२
१६.१	पर्यायवाची शब्द और विलोम शब्द	२२४
१७.	मुहावरे	२३०
१७.१	संक्षेप एवं पल्लवन	२३८

I

प्रथम वर्ष कला, हिन्दी अनिवार्य

F.Y.B.A. HINDI COMPULSORY LIST OF TEXT BOOK

भाग - १

१. काव्य कुंज

संपादन : हिंदी अध्ययन मंडल, मुंबई विश्वविद्यालय,
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

२. श्रेष्ठ कहानियाँ भाग - १

संपादन : हिंदी अध्ययन मंडल, मुंबई विश्वविद्यालय,
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

भाग - १

१. काव्य कुंज

पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित कविताएँ

१. बीती विभावरी जाग री - जयशंकर प्रसाद
२. भिक्षुक - सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
३. मैं नीर भरी दु:ख की बदली - महादेवी वर्मा
४. नर हो न निराश करो मन को - मैथिलीशरण गुप्त
५. पुष्प की अभिलाषा - माखनलाल चतुर्वेदी
६. झाँसी की रानी - सुभद्राकुमारी चौहान
७. सिंदुर तिलकित भाल - नागार्जुन
८. दीया जलाना कब मना है - हरिवशंराय बच्चन
९. जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना - गोपाल दास सक्सेना नीरज

२. श्रेष्ठ कहानियाँ भाग - १

पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित कहानियाँ

१. बड़े घर की बेटी - प्रेमचंद
२. पुरस्कार - जयशंकर प्रसाद
३. हार की जीत - सुदर्शन
४. चीफ की दावत - भीष्म साहनी
५. पाजेब - जैनेंद्र कुमार
६. सदाचार का ताबीज - हरिशंकर परशाई
७. डिप्टी कलेक्टरी - अमरकांत
८. अपना गाँव - मोहनदास नैमिशराय

पत्रलेखन - (निमंत्रण, बधाई, आवेदन, संपादक के नाम (शिकायत एवं सुझाव)

भाषा दक्षता

१. अशुद्धि शोधन (शब्दगत व अर्थगत)

२. संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया शब्दों को वाक्य में पहचानना।

३. अपठित गद्यांश

भाग - २

१. काव्य कुंज

संपादन : हिंदी अध्ययन मंडल, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

२. श्रेष्ठ कहानियाँ भाग - १

संपादन : हिंदी अध्ययन मंडल, मुंबई विश्वविद्यालय,

प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

भाग - २

१. काव्य कुंज

पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित कविताएँ

१. वैतरणी करोगे पार - शिवमंगल सिंह सुमन

२. बात बोलेगी - शमशेर बहादुर सिंह

३. बसंती हवा - केदारनाथ अग्रवाल

४. बाघ - केदारनाथ सिंह

५. कहाँ तो तय था चिरागा हर एक घर के लिए - दुष्यंत कुमार

६. चल पड़े जिधर दो डग मग में - सोहलाल द्विवेदी

७. हम दीवानों की क्या हस्ती - भगवती चरण वर्मा

८. किस्सा जनतंत्र - धूमिल

९. विद्रोहिणी - सुशीला टाकभौरे

२. श्रेष्ठ कहानियाँ भाग - २

पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित कहानियाँ

१. वापसी - उषा प्रियंवदा

२. अकेली - मन्नू भंडारी

३. सिक्का बदल गया - कृष्णा सोबती

४. गदल - रांगेय राघव

५. घुसपैठिए - ओमप्रकाश वाल्मीकि

६. गणपति गण नायक - सूर्यबाला

७. कब्र का मुनाफा - तेजेंद्र शर्मा

८. दलित ब्राह्मण - सत्यप्रकाश

निबंध लेखन - (सामाजिक, शैक्षणिक, आत्मकथात्मक, वैचारिक, सम-सामयिक)

भाषा दक्षता

१. लिंग

२. वचन

३. पर्यायवाची शब्द

४. विलोम

५. मुहावरे

संक्षेपण एवं पल्लवन

Examination Pattern of FYBA Hindi (Compulsory)

पूर्णांक : १०० **समय : ३ घंटे**

प्रश्न : १. संदर्भ सहित व्याख्या (कविता और कहानी दोनों में से विकल्प सहित)

प्रश्न : २. दीर्घोत्तरी प्रश्न (कविता और कहानी दोनों में से विकल्प सहित)

प्रश्न : ३. टिप्पणियाँ (कविता और कहानी दोनों में से विकल्प सहित)

प्रश्न : ४. वस्तुनिष्ठ प्रश्न १० (कविता और कहानी दोनों में से)

प्रश्न : ५. अ. पत्रलेखन (दो में से एक)

आ. निबंध लेखन (चार में से एक)

प्रश्न : ६. अ. भाषा दक्षता

१. अशुद्धि शोधन

२. संज्ञा

३. सर्वनाम

४. विशेषण

५. क्रिया

प्रश्न : ६ आ. अपठित गद्यांश से ५ लघु प्रश्न

भाषा दक्षता

१. लिंग

२. वचन

३. पर्यायवाची शब्द

४. विलोम

५. मुहावरे

संक्षेपण एवं पल्लवन

❖❖❖❖

१

बीती विभावरी जाग री : भिक्षुक , मैं नीर भरी दुख की बदली :

संपादन : हिन्दी अध्ययन मंडल
(काव्य कुंज)

इकाई की रूपरेखा :

१.१ इकाई का उद्देश्य
१.२ प्रस्तावना
१.३ कवि परिचय
१.४ कविता का भावार्थ
१.५ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
१.६ बोध प्रश्न / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१.१ इकाई उद्देश्य :

इस काव्य खंड की प्रथम इकाई में हम तीन कविताएँ ले रहे हैं। जिनमें 'बीती विभावरी जाग री!', 'भिक्षुक', 'मैं नीर भरी दुख की बदली' को लिया गया है। इसके अंतर्गत कवि परिचय, कविता का भावार्थ, स्पष्टीकरण तथा संभावित प्रश्नों का उल्लेख किया गया है ।

इससे विद्यार्थीयों में प्रात:कालीन सौंदर्य के अवलोकन की क्षमता का निर्माण होगा, देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी का बोध होगा। बच्चे अनुभूति की सच्चाई से अवगत होंगे। कविता के भाव व शिल्प के प्रति समझ विकसित होगी। साहित्य के प्रति रुचि का निर्माण होगा । समाज के प्रति संवेदशीलता का भाव जागृत होगा। कविता में आए कठिन शब्दों, मुहावरों व अलंकारों के अर्थ की समझ विकसित होगी ।

१.२ प्रस्तावना :

कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखी गई कविता 'बीती विभावरी जाग री !' एक उत्कृष्ट जागरण गीत है । जिसमें उषा नागरी असंख्य ताराघटों को जल में समाधिस्त होने के लिए विवश कर रही है । साथ ही पक्षियों के चहकने से उषा के आगमन का आभास होने लगता है। पेड़, हवा के झौकों के साथ डोलने लगे हैं। लेकिन संपूर्ण सृष्टि के जग जाने पर भी नायिका सोई हुई है, जो सम्पूर्ण रात्री भर अपने प्रिया के आगमन का इंतजार कर रही थी ।

भिक्षुक कविता में कवि ने भिखारी की हीनावस्था का मार्मिक चित्रण किया है। उसे इस स्थिति तक पहुँचाने वाले समाज के प्रति कवि ने विद्रोह का भाव जगाकर संघर्ष की प्रेरणा दी है ।

'मैं नीर भरी दुख की बदली' कविता में कवयित्री जीवन की तुलना बादलों से करती है, वह स्वंय दुखों को झेलते हुए सामाजिक जीवन के मंगलमयता की कामना करती है। कवयित्री अपने इस प्रतिदान के बदले किसी बात की अपेक्षा नहीं करती है ।

जयशंकर प्रसाद

१.३ जीवन परिचय

श्री जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी के सम्पन्न वैश्य परिवार में सन् १८८९ ई. में हुआ। उनके पिता तथा बड़े भाई बचपन में ही स्वर्गवासी हो गए। छोटी उम्र में ही लाड़ -प्यार से पले प्रसाद जी को घर का सारा भार उठाना पड़ा। उन्होंने स्कूली शिक्षा छोड़कर घर पर ही अंग्रेजी, हिन्दी, बंगाली तथा संस्कृत का ज्ञान प्राप्त किया। अपने पैतृक कार्य को करते हुए भी उन्होंने अपने भीतर काव्य – प्रेरणा को जीवित रखा।

उनका जीवन बहुत सरल था। सभा सम्मेलनों की भीड़ से वे दूर ही रहा करते थे। वे बहुमुखी प्रतिभा के कलाकार और शिव के उपासक थे। कामायनी पर उनको हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से 'मंगलाप्रसाद पुरस्कार' प्रदान किया गया। जीवन के अन्तिम दिनों में राजयक्ष्मा से पीड़ित रहने के कारण १४ नवम्बर १९३७ ई. में अर्थात ४८ वर्ष की अल्पायु में ही उनका स्वर्गवास हो गया ।

प्रसाद की रचनाएँ - प्रसाद जी सर्वतोंमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे । उन्होंने कुल २७ रचनाएँ कीं । इनमें से प्रमुख काव्य पुस्तकों का विवरण इस प्रकार है –

कामायनी - यह महाकाव्य छायावादी काव्य का कीर्ति- स्तम्भ है। इस महाकाव्य में मनु और श्रद्धा के माध्यम से मानव को ह्रदय (श्रद्धा) और बुद्धी (इड़ा) के समन्वय का सन्देश दिया गया है।

आँसू - यह वियोग का काव्य है । इसके एक-एक छन्द में दुख और पीड़ा साकार हो उठी है ।

चित्राधार - यह प्रसाद जी का ब्रजभाषा में रचित काव्य - संग्रह है ।

लहर - इसमें प्रसाद जी की भावात्मक कविताएँ संग्रहीत हैं ।

झरना - यह प्रसाद जी की छायावादी कविताओं का संग्रह है । इस संग्रह में सौन्दर्य और प्रेम की अनुभूतियों को मनोहारी रूप से वर्णित किया गया है ।

इसके अतिरिक्त प्रसाद जी ने अन्य विधाओं में भी साहित्य – रचना की हैं उनका विवरण इस प्रकार है -

नाटक – नाटककार के रूप में उन्होंने चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, जनमेजय का नागयज्ञ, कामना, एक घूंट, विशाख, राज्यश्री, कल्याणी, अजातशत्रु, प्रायश्चित नाटकों की रचना की है ।

उपन्यास - कंकाल, तितली, इरावती अपूर्ण रचना है।

कहानी – संग्रह – प्रसाद जी उत्कृष्ट कहनीकार थे। इनकी कहानियों में भारत का अतीत मुस्कराता है । प्रतिध्वनि, छाया, आकाशदीप, आंधी और इन्द्रजाल कहानी संग्रह हैं ।

निबंध – काव्य और कला ।

प्रसाद जी के साहित्य में व्यापकता और गहनता दोनों ही हैं। उनके काव्य में छायावादी काव्य की विशेषता का चरम उत्कर्ष दिखाई देता है । उनकी अनुभूति और अभिव्यक्ति का सहयोग पाकर आधुनिक काल की कविता सुरभित हो उठी। वह आधुनिक काल के सर्वश्रेष्ठ कवियों में शीर्ष स्थान के अधिकारी हैं ।

१.४ बीती विभावरी जाग री - भावार्थ / काव्य

१. जय शंकर प्रसाद जी ने इस कविता के माध्यम से प्रकृति का सुंदर वर्णन किया है, वे कहते हैं कि रात का पहर समाप्त होने को आ गया है। इस प्रात:कालीन दृष्य को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा है कि सूर्य के आगमन की आहट से तारांगण अम्बर रूपी पनघट में जमा हैं ।

प्रात: के आगमन की आहट से चारों तरफ खुशी की लहर दौड़ गई है। पक्षियों का समूह अपनी चहचहाहट से सुबह का स्वागत कर रहे हैं। पेड़ों के कोमल पत्ते अपना आँचल फैलाकर डोलते हुए प्रात: का स्वागत कर रहे हैं। पेड़ों की सारी लताएँ भर आई हैं। पेड़ों में पुष्प खिल आए है। जो रस से सने हुए हैं। जिनका आनंद लेने के लिए भौंरे आ गए हैं। उनके अधर इस सुगंधित रस से सराबोर हो गए हैं । जिन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि इन अधरों का रस कभी तेजहीन नहीं होगा । वे मलयज पर्वत से बहने वाली तेज हवाओं की परवाह किए बिगर इस रस का आनंद ले रहे हैं ।

हे सखी प्रकृति के सभी प्राणी जाग चुके हैं। और तुम अब तक सोई हुई हो। मुझे यह समझ में नहीं आ रहा है कि तुम किस प्रेम में खोई हुई हो। किस सपने में डूबी हुई हो । अब जाग जाओ ।

१.५ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

'अधरो में राग अमंद पिए
अलकों में मलमज बंद किए
तू अब तक सोयी है आली!
आखों में भरे विहाग री !'

अनुलेख : अधरों में ————————–विहाग री!

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ काव्य–कुंज नामक काव्य संकलन के 'बीती विभावरी जाग री' नामक कविता से ली गई हैं । इसके कवि जयशंकर प्रसाद जी हैं।

प्रसंग : यह कविता लहर नामक काव्य–ग्रंथ से ली गई है। यह मूल रूप से एक उत्कृष्ट जागरण गीत है जिसे नायिका को जगाने के लिए अभिव्यक्ति दी गई है।

व्याख्या : इन पंक्तियों के माध्यम से कवि नायिका को संबोधित करते हुए कह रहा है कि हे नायिके प्रकृति के सभी प्राणी प्रातः होते ही जाग गए हैं और संबंधित कार्यों में जुट गए हैं। उषा के आगमन पर कलियाँ खिल चुकी हैं और भौंरे उनमें जा–जाकर उसके मद का पान कर रहे हैं, उनके अधर इस सुगंधित रस से सरा बोर हो गए हैं। जिन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि इन अधरों का रस कभी तेजहीन नहीं होगा, वे मलयज पर्वत से चलने वाली तेज हवाओं की परवाह किए बिना इस रस का आनंद ले रहे हैं और हे नायिके तुम अपने आँखों में अब तक प्रेम की कल्पना भरकर सोई हो। उठो अब तुम भी अपने कार्यो में जुट जाओ.

साहित्यिक सौंदर्य :

१) प्राकृतिक सौन्दर्य का उल्लेख किया गया है ।
२) 'क' की आवृति अनुप्रास अलंकार का प्रतिनिधित्व करता है ।
३) शब्द का सुन्दर समन्वय दिखाई देता है ।
४) यह एक प्रकार का जागरण गीत है ।

१.६ बोध प्रश्न :

क) 'बीती विभावरी जाग री!' कविता का कथ्य स्पष्ट कीजिए।
ख) 'बीती विभावरी जाग री! ' कविता का संदेश अपने शब्दों में लिखिए
ग) बीती विभावरी जाग री कविता का केंन्द्रीय भाव लिखिए।

लघुउत्तरी प्रश्न :

१) कवि अंबर पनघट में किसके डूबने की बात कर रहा है ?
उत्तर : तारा रुपी घट के डूबने की बात कर रहा है ।
२) किसका आँचल डोल रहा है ?
उत्तर : किसलय का आँचल डोल रहा है ।
३) कवि किसके भर आने की बात कर रहा है ?
उत्तर : लतिका के भर आने की बात कर रहा है ।
४) अब तक कौन सोई हुई है ?
उत्तर : अब तक नायिका सोई हुई है ।

१.१

भिक्षुक - सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

इकाई की रूपरेखा :

१.१.१ जीवन परिचय
१.१.२ भिक्षुक
१.१.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
१.१.४ बोध प्रश्न
१.१.५ लघुत्तरी प्रश्न

१.१.१ जीवन परिचय

महाकवि निराला का जन्म सन् १८९७ ई. में बंगाल के मेदिनीपुर जिले में हुआ। उनके पिता का नाम रामसहाय त्रिपाठी था । आपकी प्रारम्भिक शिक्षा राज्य के हाईस्कूल में हुई। आपको बचपन से ही कुस्ती. घुड़-सवारी और खेती का बड़ा शौक था । बालक सूर्यकान्त के सिर से माता-पीता की छाया अल्प आयु में ही उठ गई ।

आपको बंगला भाषा और हिन्दी साहित्य का अच्छा ज्ञान था। आपने संस्कृत और हिन्दी के साहित्य का भी अध्ययन किया । भारतीय-दर्शन में आपकी पर्याप्त रुचि थी ।

इनका पारिवारिक जीवन अत्यन्त कष्टमय रहा । एक पुत्र और एक पुत्री को जन्म देकर इनकी पत्नी स्वर्ग सिधार गई। पत्नी के विरह के दौरान इनका परिचय महावीर प्रसाद द्विवेदी से हुआ। उनके सहयोग से इन्होंने 'समन्वय' और 'मतवाला' का सम्पादन किया। इनकी कविता 'जूही की कली' ने क्रान्ति ला दी। आपको बार–बार आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। आर्थिक अभावों के चलते इनकी पुत्री सरोज का देहान्त हो गया। उस पर आपने 'सरोज स्मृति' नामक कविता लिखी।

साहित्य और जीवन में निराला स्वामी रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द से बहुत प्रभावित थे। इनकी कविताएँ छायावादी, रहस्यवादी और प्रगतिवादी विचार धाराओं के आधार पर लिखी गई हैं। सन् १९६१ में इनकी मृत्यु हो गई।

प्रमुख रचनाएँ – निराला बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार थे। कविता के अतिरिक्त इन्होंने उपन्यास, कहानियाँ, निबंध, आलोचना और संस्मरण भी लिखे हैं। इनकी काव्य-रचनाएँ इस प्रकार हैं –

परिमल – इसमें सड़ी – गली मान्यताओं के प्रति तीव्र विद्रोह तथा निम्न वर्ग के प्रति गहरी सहानुभूति दिखाई देती है।

गीतिका – इसकी मूल भावना श्रृंगारिक है फिर भी इनके बहुत से गीतों में मधुरता के साथ आत्मनिवेदन, प्रकृति वर्णन तथा देश –प्रेम का चित्रण भी हुआ है ।

राम की शक्ति पूजा - इसमें कवि का ओज तथा पौरुष प्रकट हुआ है ।

सरोज समृति - यह हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ शोक-गीत है । कुकुरमुत्ता, अणिमा, अपराध, बेला, नये-पत्ते, आराधना, अर्चना भी उनकी सुन्दर काव्य रचनाएँ हैं ।
निराला जी की गद्य रचनाएँ इस प्रकार हैं –
लिली, चतुरी चमार, अप्सरा, अलका, प्रभावती और निरूपमा ।

१.१.२ भिक्षुक - भावार्थ

भिक्षुक कविता को निराला जी के 'अपरा' नामक काव्य-ग्रंथ से लिया गया है। इस कविता के माध्यम से निराला जी ने समाज के हाशिए में जीवन व्यतीत करने के लिए अभिशप्त 'भिक्षुक' का वर्णन किया है। समाज का यह एक ऐसा वर्ग है जो लगातार अन्न के दानों के लिए तड़पता दिखाई देता है ।

लेखक कहता है कि वर्तमान समय में मुनष्य की दुर्दशा देख पाना बड़ा ही कष्टप्रद हो रहा है। वह एक ऐसे भिक्षुक को देख रहा है जिसके भूख के कारण पीठ और पेट मिलकर एक हो चुके है। उन में अब अंतर कर पाना संभव नहीं हैं। उसमें अब चलने का सामर्थ्य भी नहीं रह गया है। वह लाठी के सहारे चल रहा है। यह चलना उसकी मजबूरी है क्योंकि उसे मुट्ठीभर दानों की तलाश रह गई हैं। उसमें बोलने की सामर्थ्य भी अब शेष नहीं रह गई है इसीलिए वह अपनी फटी-पुरानी झोली का मुंह फैलाए धूम रहा है ।

उस भिक्षुक के साथ उसी की तरह भूख से जूझते हुए दो बच्चे चल रहे हैं। जो भीख के लिए अपने हाथ फैलाए हुए हैं । ये बच्चे बाएँ हाथ से अपने पेट को मल रहे हैं, और इनका दायाँ हाथ लोगों से कुछ पाने की अपेक्षा में फैला हुआ है । उनके ओठ भूख के कारण सूख चुके हैं । लेकिन उनके भाग्य विधाता समृद्ध वर्ग से उन्हें कुछ भी नहीं मिल पाता है, अंततः वे आसुओं का घूँट पीकर ही रह जाते हैं।

अब उनके पास सिर्फ एक ही विकल्प बचता है कि सड़क किनारे पड़े हुए जूठे पत्तलों को चाट कर अपनी क्षुधा शांत करें। लेकिन वहाँ भी लगातार कुत्तों से उनकी प्रतिस्पर्धा चलती दिखाई देती है।

इस प्रकार लेखक ने समाज में मनुष्य की दुर्दशा को अभिव्यक्ति दी है। मनुष्य का इस तरह का विभत्स्य वर्णन अन्यत्र नहीं दिखाई देता है। यही स्थिति समाज को इस वर्ग के उत्थान को लेकर सोचने के लिए विवश करता है।

१.१.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

'वह आता'
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता ।
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लुकटिया टेक,'

अनुलेख : वह आता ———————— लकुटिया टेक।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ 'काव्य-कुंज' नामक काव्य संकलन के 'भिक्षुक' नामक कविता से ली गई हैं। इसके कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हैं ।

प्रसंग : यह कविता निराला जी के 'अपरा' काव्य-ग्रंथ से ली गई है। इसमें कवि की अनुभूतियों की सच्चाई को अभिव्यक्ति दी गई है ।

व्याख्या : कवि ने इन पंक्तियों के माध्यम से समाज के उस वर्ग को अभिव्यक्ति दी है जो अन्न के एक-एक दाने के लिए मुहताज है, कवि मनुष्य की दुर्दशा पर दुख प्रकट करते हुए कह रहा है कि वह एक ऐसे भिक्षुक को देख रहा है जिसके कई दिनों से भूखे रहने के कारण पेट और पीठ में अंतर कर पाना मुश्किल हो रहा है। उस में अब चलने तक का सामर्थ्य भी शेष नहीं दिखाई देता है। वह यदि किसी तरह साहस जुटाकर चलने की बात सोचता भी है तो उसे लाठी का सहारा लेना पड़ता है। अर्थात लाठी के बिना उसमें खड़े होने का सामर्थ्य तक शेष नही रह गया है।

साहित्यिक सौंदर्य :

१) मनुष्य की दुर्दशा का उल्लेख हुआ है ।
२) कवि के अनुभूतियों की सच्चाई का आभास होता है ।
३) विद्रोह का भाव दृष्टव्य होता है ।
४) संघर्ष के लिए प्रेरित करने वाली पंक्तियाँ हैं।

१.१.१ बोध प्रश्न :

क) भिक्षुक कविता का उद्देश्य लिखिए।

ख) भिक्षुक कविता की संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

ग) भिक्षुक कविता का संदेश अपने शब्दों में लिखिए।

घ) 'भिक्षुक' कविता कवि के यथार्थ अनुभूतियों का प्रतिनिधित्व करती है स्पष्ट कीजिए ।

१.१.५ लघुत्तरी प्रश्न :

१) भिक्षुक के शरीर के किस हिस्से में अंतर कर पाना संभव नहीं है ?

उत्तर : पेट और पीठ में अंतर कर पाना संभव नहीं है ।

२) भिक्षुक किसके सहारे चलने की कोशिश कर रहा है ?

उत्तर : लकड़ी के सहारे चलने की कोशिश कर रहा है ।

३) भूख से किसके सूखने की बात की जा रही है ?

उत्तर : भूख से ओठों के सूखने की बात की जा रही है ।

४) कुत्ते किस पर झपटने की ताक लगाए हुए हैं ?

उत्तर : कुत्ते भिखारियों द्वारा चाटे जा रहे जूठे पत्तलों पर झपटने के लिए तैयार दिखाई दे रहे हैं।

१.२

'मैं नीर भरी दुख की बदली' - महादेवी वर्मा

इकाई की रूपरेखा :

१.२.१ जीवन परिचय
१.२.२ मै नीर भरी दुख की बदली : भावार्थ
१.२.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
१.२.४ बोध प्रश्न
१.२.५ लघुत्तरी प्रश्न

१.२.१ जीवन परिचय

श्रीमती महादेवी का जन्म सन् १९०७ ई. में उत्तर प्रदेश के प्रसिध्द नगर फरूखाबाद में हुआ। उस दिन होलिका दहन का पुण्य पर्व था। इनकी माता हेमरानी साधारण कवयित्री थीं एवं श्रीकृष्ण में अटूट श्रध्दा रखती थीं । उनके नाना को भी ब्रजभाषा में कविता करने का चाव था । नाना एवं माता के इन गुणों का महादेवी पर भी प्रभाव पड़ा। नौ वर्ष की छोटी उम्र में ही इनका विवाह स्वरूप नारायण वर्मा से हो गया था। किन्तु इन्हीं दिनों इनकी माता का स्वर्गवास हो गया । माता का साया सिर से उठ जाने पर भी इन्होंने अपना अध्ययन जारी रखा तथा पढ़ने में और अधिक मन लगाया, जिसके परिणामस्वरूप इन्होंने मैट्रिक से लेकर एम.ए.तक की परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कीं। बहुत समय तक आप प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्रधानाचार्य के पद पर कार्य करती रहीं ।

सर्वप्रथम आपकी रचनाएं "चाँद" में प्रकाशित हुई । इसके बाद आप चाँद की सम्पादिका भी रहीं । इन्हें 'सेक्सरिया' तथा मंगला प्रसाद पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है । भारत सरकार ने इन्हें "पद्मभूषण" की उपाधि से अलंकृत किया है । १९८३ में आपको डेढ़ लाख रुपये का ज्ञानपीठ पुरस्कार तथा एक लाख रुपये का उत्तर प्रदेश सरकार का हिन्दी पुरस्कार प्रदान किया गया। महादेवी की साहित्य – साधना के इस सम्मान से वास्तव में पुरस्कारों का गौरव बढ़ा है ।

रचनाएँ – महादेवी जी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं । –

नोहार – इस काव्य संकलन में भावमय गीत संकलित हैं । इनमें वेदना का स्वर मुखर हुआ है ।

रश्मि – आत्मा – परमात्मा के मधुर सम्बन्धों के गीत इस संग्रह में संकलित हैं ।

नीरजा – इसमें प्रकृति – चित्रण प्रधान गीत संकलित हैं । गीतों में सुख-दुख की अनुभूतियों को वाणी मिली है।

सांध्यगीत – इसके गीतों में परमात्मा से मिलन का आनन्दमय चित्रण है ।

दीप शिखा – इसमें रहस्य – भावना प्रधान गीतों को संग्रहीत किया गया है। इसके अतिरिक्त अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, श्रृंखला की कड़ियाँ आदि आपकी गद्य रचनाएँ हैं। 'यामा' नाम से आपके विशिष्ट गीतों का संग्रह हुआ है। 'संधिनी' और 'आधुनिक कवि' भी आपके गीतों के संग्रह हैं ।

१.२.२ मै नीर भरी दुख की बदली : भावार्थ

इस कविता में कवयित्री महादेवी वर्मा ने विरहित जीवन व्यथा को अभिव्यक्ति दी है, इनका यह विरह एहलौकिक न होकर पारलौकिक है। जो स्थाई होता है। वह कहती हैं कि मेरा दुख जल से भरे बादलों के दु:ख के समान है। जो दूसरों को तृप्त करने के लिए लगातार स्वयं कष्ट झेलते हैं। मेरा दुख भी स्थायी दुख है । मेरे शरीर का रोम-रोम इस दु:ख से कंपित हो रहा है । मेरे इस रुदन से आहत (दुखी) होने के बजाय विश्व के लोग हँस रहे हैं ।

मेरी आँखें लगातार जल से भरी रहती हैं। और पलकों से सदा बरसात सी रोती रहती हैं, इस के बावजूद भी अपने प्रियतम को पाने की आशा लगातार बनी हुई है। मैं ज्यों-ज्यों अपने प्रियतम की ओर बढ़ती हूँ। मेरे हर कदम से एक विशिष्ट प्रकार की ध्वनि निलकती है, जो मेरे कदमों में और अधिक गति भर देती है। और मेरी हर श्वास मेरे प्रियतम से मिलने के लिए पराग के समान उड़कर उन तक पहुँचने के लिए व्याकुल हैं।

लेखिका आगे कहती है कि मौसम मे परवर्तन के साथ ही आकाश में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। आज तो ऐसा प्रतीत हो रहा है कि आकाश ने नए रंग के दुपट्टे धारण कर लिए हैं। उसकी छाया में मलयांचल पर्वत से ठंडी हवाएँ चलने लगी हैं। पूरी प्रकृति आनंद मय हो गई है। किन्तु लेखिका की भौहैं, चिंता के कारण तन आई है तब भी उनके प्रियतम से मिलने के कोई आसार नहीं दिखाई दे रहे हैं ।

बरसात का मौसम आ रहा है। धूल की कणों पर बरसात की बूदों के मिलने से चारों और सौंधी गंध फैल गई है । जिसके परिणाम स्वरूप प्रकृति के सभी तत्वों में नवजीवन संचारित होने लगा है। चारों ओर एक तरह की नवीनता छा गई है। रस्ते इतने साफ हो चुके हैं कि उन पर अब आते-जाते लोगों के पद्चिन्ह भी अंकित नहीं होते।

लेखिका इस बात को लेकर चिंतित है कि प्रकृति के सभी तत्वों का अपने आप में मग्न होने के कारण अब उसके आने की याद तक लोगों की स्मृति से गायब दिखाई दे रही है, अर्थात लेखिका को उसके सुख की कल्पना का अंत होता दिखाई दे रहा है। वह यह मान चुकि है कि संपूर्ण आकाश के किसी भी कोने में उसके लिए कोई स्थान नहीं दिखाई दे रहा है ।

अंतत: लेखिका जीवन का परिचय देते हुए कहती है कि मैं अपना परिचय क्या दूँ। मेरा यही इतिहास है कि मैं जीवन के जिस उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ी थी, जिसने मुझे जीने के लिए

सबल प्रदान किया। आज उसी का अंत होने की स्थिति में है । अर्थात लेखिका ने जीवन में कर्म को प्रधानता दी है। और लोगों को भी लगातार कार्य करने की प्रेरणा दी है ।

१.२.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण :

'मेरा पग-पग संगीत भार
श्वासों में स्वप्न पराग झरा
नभ के नवरंग बुनते दुकूल.
छाया में मलय-बयार पली।'

अनुलेख : मेरा पग – पग ..... मलय – बयार पली ।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ 'काव्य कुंज' नामक काव्य संकलन के 'मैं नीर भरी दुख की बदली' नामक कविता से ली गई है। इसकी कवयित्री महादेवी वर्मा जी हैं।

प्रसंग : इन पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री निरंतर चिर-विरह में लीन रहते हुए भी अपने प्रेम को बॉटती रहती है।

व्याख्या : कवयित्री ने इन पक्तियों के माध्यम से विरहित जीवन में आशा का संचार करने की प्रेरणा दी है । यहाँ प्रेमिका में अपने पति के आने की आशा लगातार बनी हुई है। उसे लगता है कि ज्यों–ज्यों समय बितता जा रहा हैं त्यों-त्यों उसके प्रिय के मिलन की घड़ी नजदीक आ रही है। अत: उसके चलने से एक विशिष्ट प्रकार की ध्वनि निकलने लगी है। उसकी हर साँस अपने प्रियतम से मिलने के लिए पराग के समान उड़ जाना चाहती हैं। आज आकाश ने नए दुपट्टे धारण कर लिए हैं। मलयांचल पर्वत से ठंडी हवाएँ बहने लगी हैं। पूरी प्रकृति आनंदमय हो गई है।

साहित्यिक सौंदर्य :

१) बादल को आत्म और नीर को प्रेम का प्रतीक माना गया है।
२) त्याग की भावना दिखाई देती है।
३) प्रकृति का सुंदर वर्णन हुआ है।
४) संस्कृत-निष्ठ शब्दों का प्रयोग किया गया है।
५) प्रिय से मिलन की छटपटाहट दिखाई देती है।

१.२.४ बोध प्रश्न :

क) 'मैं नीर भरी दुखी की बदली' कविता का संदेश अपने शब्दों में लिखिए ।
ख) 'मैं नीर भरी दुखी की बदली' कविता का संदेश लिखिए ।
ग) 'मैं नीर भरी दुखी की बदली' कविता विरह की पराकाष्ठा को अभिव्यक्त करती है स्पष्ट कीजिए।
घ) 'मैं नीर भरी दुखी की बदली'कविता में सामाजिक जीवन के मंगलमय की कल्पना की गई है स्पष्ट कीजिए।

१.२.५ लघुउत्तरी प्रश्न :

१) निर्झरियाँ कहाँ मचल रही हैं ?
उत्तर : निर्झरियाँ पलकों में मचल रही है ।
२) श्वासों से क्या झड़ रहा है ?
उत्तर : श्वासों से स्वप्न पराग झड़ रहा है ।
३) दुकूल शब्द का प्रयोग किसके लिए हुआ है ।
उत्तर : दुकूल शब्द का प्रयोग दुपट्टे के लिए हुआ है।
४) विरह से उत्पन्न क्रंदन को देखकर कौन हँस रहा है ?
उत्तर : विरह से उत्पन्न क्रंदन को देखकर विश्व हँस रहा हैं ।

२

‘नर हो न निराश करो मन को’, ‘पुष्प की अभिलाषा’, झाँसी की रानी’

इकाई की रूपरेखा

२.१ इकाई का उद्देश्य
२.२ प्रस्तावना
२.३ कवि परिचय
२.४ कविता का भावार्थ
२.५ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
२.६ बोध प्रश्न, वस्तु निष्ठ प्रश्न

२.१ इकाई का उद्देश्य :

इस काव्य खंड़ की द्वितीय इकाई में हम तीन कविताएँ ले रहे हैं। जिनमें ‘नर हो न निराश करो मन को’, ‘अभिलाषा’ व ‘झाँसी की रानी’ को लिया गया है। इसके अंतर्गत कवि परिचय, कविता का भावार्थ स्पष्टीकरण तथा संभावित प्रश्नों का उल्लेख किया गया है ।

इन कविताओं के माध्यम से विद्यार्थीयों में आशावादी दृष्टिकोण, जीवन मूल्य, राष्ट्र-प्रेम व स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान देश वासियों के त्याग से परिचय कराया जाएगा।

२.२ प्रस्तावना :

कवि मैथिली शरण गुप्त द्वारा रचित ‘नर हो न निराश करो मन को ’ एक आशावादी कविता है। जिसमें जीवन के मूल्यवान होने की बात कही गई है। और स्वयं अपने-अपने जीवन के निर्माण की प्रेरणा दी है ।

‘पुष्प की अभिलाषा’ के अंतर्गत माखनलाल चतुर्वेदी जी ने राष्ट्रप्रेम की भावना को जगाने का प्रयास किया है। इस हेतु उन्होंने पुष्प का मनवीकरण करके बलिदान की भावना को अभिव्यक्ति दी है ।

‘झाँसी की रानी’ सुभद्राकुमारी चौहान की उस दौरान की कविता है जब देश में स्वतंत्रता आंदोलन अपने चरम की ओर बढ़ रहा था । इसके अंतर्गत रानी लक्ष्मी के शौर्य और

पराक्रम का वर्णन किया गया है। जो सदियों तक आने वाले युवकों के मन में देश भक्ति के बीज को अंकुरित ही नहीं करेगी बल्कि नवयुवकों में देश के लिए समर्पण की भावना को विकसित भी करती रहेगी ।

२.३ मैथिलीशरण गुप्त - जीवन परिचय

'भारत–भारती' के अमर गायक 'साकेत', 'यशोधरा' जैसे महाकाव्यों के प्रणेता श्री मैथिलीशरण गुप्त का जन्म बुन्देलखण्ड के चिरगाँव (झाँसी) में सन् १८८६ ई. में हुआ था। इनके पिता सेठ रामचरण गुप्ता को हिन्दी साहित्य से विशेष प्रेम था। गुप्त जी की शिक्षा–दीक्षा घर पर ही सम्पन्न हुई। घर के साहित्यिक वातावरण के कारण गुप्त जी में कविता के प्रति अभिरुचि हुई। पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी के सम्पर्क में आने से इनके काव्य-जीवन को नई प्रेरणा मिली । द्विवेदी जी के आदेशानुसार ही गुप्त जी ने सर्वप्रथम खड़ी बोली में 'भारत-भारती' नामक राष्ट्रीय भावनाओं से युक्त पुस्तक की रचना की ।

'साकेत' नामक महाकाव्य पर हिन्दी–साहित्य सम्मेलन ने इनको 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' प्रदान किया। आगरा और प्रयाग–विश्वविद्यालय ने गुप्त जी को डी. लिट् की मानद उपाधि से विभूषित किया । भारत सरकार द्वारा गुप्त जी को १९५४ में पद्मभूषण से अलंकृत किया गया । ये दो बार राज्य सभा के सदस्य भी मनोनीत किए गए ।

१२ दिसम्बर १९६४ में गुप्त जी का देहावसान हो गया ।

रचनाएँ – गुप्त जी तत्कालीन कवियों में सर्वाधिक लोकप्रिय कवि रहे हैं। इनकी चालीस मौलिक तथा छह अनूदित पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं । गुप्त जी की आरम्भिक रचनाएँ कलकत्ता से निकलने वाले 'वैश्योपकारक' में प्रकाशित हुई । इनकी प्रसिध्द काव्य- रचनाएँ इस प्रकार है –

भारत - भारती – इसमें देश के प्रति गौरव की भावनाएँ भरी हैं। इसी से ये राष्ट्रकवि के रूप में विख्यात हुए।

साकेत – मानस के पश्चात् हिन्दी में राम – काव्य का दूसरा स्तम्भ मैथिलीशरण गुप्त कृत 'साकेत' ही है ।

यशोधरा – इसमें उपेक्षित यशोधरा के चरित्र को काव्य का आधार बनाया गया है ।

द्वापर, जय-भारत, विष्णुप्रिया – इनमें हिडिम्बा, नहुष, दुर्योधन आदि के चरित्रों का पुनर्निर्माण कवि की पुनर्निर्माण कला का जीवन्त प्रमाण है। गुप्त जी की अन्य प्रमुख पुस्तकें इस प्रकार हैं – पंचवटी, चंन्द्रहास, कुणालगीत, सिध्दराज, मंगल – घट अनघ तथा मेघनाद वध।

२.४ 'नर हो न निराश करो मन को'

कवि मैथिली शरण गुप्त ने इस कविता के माध्यम से मनुष्य के जीवन को महत्वपूर्ण बताया है। वे मनुष्य से आव्हान करते हैं कि तुम इंसान हो, और इंसान को जीवन में कभी भी निराश नहीं होना चाहिए। हमें लगातार अपने भावार्थ में संलग्न रहना चाहिए। हमें इस बात का ध्यान रखना है कि हमें लोग हमारे कार्यों से जाने, हमें लगातार इस खोज में लगा रहना है कि हमारा जन्म किस हेतु हुआ है? व्यर्थ के कार्यों को करके इसे गवाने का कोई अर्थ नहीं है। हमारा यह शरीर किसी काम में आ सके इस हेतु लगातार प्रयास करते रहता है। हमें जीवन में निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं है ।

वे मनुष्य को संबोधित करते हुए कह रहे हैं कि समय रहते यदि हमने कार्य नहीं किया तो समय निकल जाएगा। जो व्यक्ति सौद्देश्य कार्यों को करता है। वह कार्य व्यर्थ नहीं होता। यह संसार सिर्फ सपने देखने के लिए नहीं है बल्कि उन सपनों को साकार करने के लिए है। हमें रास्ता तैयार करना है। और आगे बढ़ना है। यदि व्यक्ति प्रगति के पथ पर कदम आगे बढ़ाता है तो स्वयं भगवान उसे सहारा देने के लिए आगे आते हैं। इसलिए हमें अपने कार्यों पर विश्वास करना चाहिए और आगे बढ़ना चाहिए।

आगे कवि कहता है कि हे मनुष्य तुम्हें सिर्फ अपनी रुचि के अनुसार कार्य को चुनना है उसके लिए सारे तत्व इस पृथ्वी पर विद्यमान हैं। यदि तुमने एक बार अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का निश्चय कर लिया तो उसे पाना असंभव नहीं है। तुम्हें अपने लक्ष्य की प्राप्ति के उपरांत जिस आनंद की अनुभूति होगी उसकी कल्पना संभव नहीं है। अतः इस अकल्पनीय सुख को प्राप्त करने के लिए जागो, उठो और आगे बढ़ो। जिस समाज में तुम रह रहे हो उसके लिए देवतुल्य बनने का प्रयास करो। तुम्हें निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं है ।

हे मनुष्य तुम्हें हमेशा अपने गौरव का ध्यान रखना है। क्योंकि तुम्हारे कार्यों के बल पर ही तुम जाने जाओगे, इसलिए अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए सदा सतर्क रहना है। तुम्हें कुछ ऐसे कार्यों को करना है कि मरने के बाद भी लोग जानें तुम्हारी जय-जय कार करें। आपके जीवन में कैसी भी विषम परिस्थितियाँ क्यों न आ जाए लेकिन अपने स्वाभिमान का त्याग नहीं करना चाहिए, जो हमारी ताकत होती है। क्योंकि बुरे समय के बाद अच्छा समय भी आता है। इसलिए हमें निराश होने की आवश्यकता नही है ।

भगवान ने तुम्हारी इच्छानुसार तुम्हें वे सारी वस्तुएँ दान की हैं जिनकी तुम्हें आवश्यकता है। यदि इसके बावजूद भी तुम इन्हें अर्जित करने में सक्षम नहीं हो पाते हो तो इसमें किसी का दोष नहीं हैं। तुम्हें इस बात का ध्यान रहे कि इस संसार की कोई भी वस्तु को प्राप्त करना असंभव नहीं है। इसलिए निराश होने की आवश्यकता नहीं है।

हे मनुष्य तुम इस संसार के सुखों का भोग करने के उद्देश्य से इस संसार में आए हो। तुममें उन तमाम गौरवों को आर्जित करने की क्षमता भी है। तुम सभी भगवान के अपने लोगों में हो, तुम उनके घर के लोगों में से हो। अतः तुम्हारे लिए- इस संसार में कोई भी कार्य करना असंभव नहीं है अर्थात सब कुछ संभव है। अतः तुम्हें निराश होने की आवश्यकता नहीं है।

हे मनुष्य तुम अपने कार्यों को लेकर खेद प्रकट न करो । बल्कि कार्यो के तह तक पहुँचकर अपने लक्ष्य को भेदने में निरंतर संलग्न रहो। क्योंकि हमारे कार्य ही हमारे उद्यम को अभिव्यक्ति दे पाएँगे। इन कार्यो में खरा उतरने के बाद जो आनंद की अनुभूति होती है। वही हमारी सच्ची निधि है। जो व्यक्ति इस संसार में निष्क्रिय बना रहता है। उसके जीवन को धिक्कार है। अत: प्रत्येक व्यक्ति को जीवन से निराश न होकर कार्य के प्रति निष्ठा रखनी चाहिए। और लगातार कार्य करते रहने चाहिए। तभी जीवन का आनंद प्राप्त हो सकता है ।

२.५ संदर्भसहित स्पष्टीकरण :

'समझो जग को न निरा सपना
पथ आप प्रशस्त करो अपना
अखिलेश्वर है अवलम्बन को
नर हो, न निराश करो मन को'

अनुलेख : समझो जग ..... मन को।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य कुंज' के 'नर हो न निराश करो मन को' नामक काव्य संग्रह से ली है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं।

प्रसंग : यह एक आशावादी कविता है जिसमें कवि कर्म करने के लिए प्रेरित करता है।

व्याख्या : इन पंक्तियों में कवि मनुष्य को संबोधित करते हुए कह रहे हैं कि जो व्यक्ति सउद्देश्य कार्यों को करता है। उसके द्वारा किए गए कार्य कभी व्यर्थ नहीं जाते हैं। यह संसार सिर्फ सपने देखने के लिए नहीं है बल्कि उन सपनों को साकार करने के लिए निरंतर प्रयास करते रहना है और आगे बढ़ते रहना है। जो व्यक्ति प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता है, स्वंय भगवान उसे सहारा देने के लिए आगे आते हैं। अत: हमें अपने आप पर व अपन कार्यो पर विश्वास करना चाहिए। अर्थात किसी को निराश होने की आवश्यकता नहीं हैं ।

साहित्यिक सौंदर्य:

१) यह एक आशावादी कविता है ।
२) इसमें कर्म को प्रधानता दी गई है ।
३) सरल शब्दों का प्रयोग किया गया है ।
४) काव्य पंक्तियों में तुकांतता दिखाई देती है ।

२.६ बोध प्रश्न :

क) 'नर हो न निराश करों मन को' नामक कविता का भावार्थ लिखिए ।
ख) 'नर हो न निराश करो मन को' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ।
ग) 'नर हो न निराश करो मन को' का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।
घ) 'नर हो न निराश करो मन को' कविता के माध्यम से कर्म को प्रधानता दी गई है स्पष्ट कीजिए ।

लघु उत्तरी प्रश्न :

१) कवि मनुष्य से क्या करने को कह रहा है ?

उत्तर : कवि मनुष्य को काम करने को कह रहा है ।

२) कवि किस रस का सेवन करने के लिए कह रहा है ?

उत्तर : कवि स्वत्त्व सुधा रूपी रस का पान करने के लिए कह रहा है ।

३) कवि मनुष्य के किसके जन होने की बात कर रहा है ?

उत्तर : कवि मनुष्य के जगदीश्वर के जन होने की बात कर रहा है ।

४) सन् १९५४ में मैथिलीशरण गुप्त जी को किस सम्मान से नवाजा गया ?

उत्तर : सन् १९५४ में मैथिलीशरण गुप्त को 'पद्मभूषण' की उपाधि से नवाजा गया ।

२.१

'पुष्प की अभिलाषा' - माखनलाल चतुर्वेदी

इकाई की रूपरेखा :

२.१.१ जीवन परिचय
२.१.२ भावार्थ - पुष्प की अभिलाषा
२.१.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
२.१.४ बोध प्रश्न
२.१.५ लघु उत्तरी प्रश्न

२.१.१ जीवन परिचय

श्री माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म सन् १८८९ में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद के बाबई गाँव में हुआ था । इनके पिता का नाम पं. नन्दलाल चतुर्वेदी था। प्राथमिक शिक्षा के पश्चात् इन्होंने घर पर ही संस्कृत, बंगला, गुजराती, अंग्रेजी आदि का अध्ययन किया। इन्होंने कुछ दिन अध्यापन कार्य भी किया। सन १९१३ में ये सुप्रसिध्द मासिक प्रभा के सम्पादक नियुक्त हुए । श्री गणेश शंकर विद्यार्थी की प्रेरणा तथा साहचर्य के कारण ये राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेने लगे । इन्हें कई बार जेल यात्रा करनी पड़ी। चतुर्वेदी जी सन् १९४३ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष हुए । ८० वर्ष की अवस्था में ३० जनवरी, १९६८ के इनका स्वर्गवास हो गया। 'हिम किरीटिनी' हिम तरंगिनी इनके प्रमुख कविता संग्रह हैं । इसके अतिरिक्त इनके काव्य – ग्रंथ 'माता' और 'मरण–ज्वार' भी प्रकाशित हुए। चतुर्वेदी जी ने नाटक, कहानी, निबंन्ध और संस्मरण भी लिखे हैं। इनके भाषणों में चिन्तक की लाचारी तथा 'आत्मदीक्षा नाम के संग्रह भी प्रकाशित हुए है ।

इनके काव्य का मूल स्वर राष्ट्रीयता वादी है जिसमें त्याग, बलिदान, कर्तव्य – भावना और समर्पण का भाव है। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को स्वर देने वालों में इनका प्रमुख स्थान रहा है। इनकी कविता में यदि कहीं ज्वालामुखी की तरह धधकता हुआ अन्तर्मन है तो कहीं पौरूष की हुंकार और कहीं करुणा से भरी मनुहार है।

हिन्दी साहित्य की सेवा के उपलक्ष्य में सागर विश्वविद्यालय ने इन्हें मानद डी. लिट. तथा भारत सरकार ने 'पद्म भूषण' की उपाधि से अलंकृत किया था ।

२.१.२ पुष्प की अभिलाषा - भावार्थ

क्रांति के अमर गायक माखन लाल चुतर्वेदी जी की 'पुष्प की अभिलाषा' नामक कविता राष्ट्र-प्रेम से ओत-प्रोत है। उनका मानना है कि देश के प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह राष्ट्र सेवा के लिए सदैव तैयार रहे। जिस राष्ट्र में इस तरह की मानसिकता रखने वाले नागरिक होते हैं उस देश की तरफ कोई भी राष्ट्र आँख उठाकर नहीं देख सकता है। उन्होंने देशवासियों के दिलों की राष्ट्र भक्ति की भावना को और अधिक सुदृढ करने के लिए अपने विचारों को पुष्प के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। जो इस बात का प्रतिनिधित्व करता है कि जिस देश का 'फूल' भी राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह करने के लिए प्रतिबद्ध है वहाँ का नागरिक कैसा होगा ?

'पुष्प की अभिलाषा' के माध्यम से कवि बताता है कि फूल की यह इच्छा नहीं है कि वह देव पत्नी के गहनों के रूप में निर्मित माला में गूँथा जाए। नहीं वह प्रेमी के गले की माला में स्थान पाकर उसकी प्रेमिका को अकर्षित करने की अभिलाषा ही रखता है। न ही उसकी इच्छा है कि वह सम्राटों के शव पर चढाया जाए। इस हेतु भी वह भगवान से प्रार्थना नहीं करता है। न ही उसकी कोई ऐसी इच्छा है कि वह देवों के सिर पर चढ़ाया जाए और वहाँ पर विराजमान होकर अपने भाग्य इठलाए।

प्रश्न यह उठता है कि आँखिर पुष्प की चाह क्या है? पुष्प माली से कहता है। कि हे वनमाली तुम मुझे तोड़कर उस रास्ते पर फैक देना जिस रास्ते से हमारे देश के वीर जवान इस देश की रक्षा के लिए आगे बढ़ रहे हों। जिन्हें अपने जीवन से ज्यादा देश से प्रेम है। ऐसे वीर जवानों के मार्ग पर मुझे बिछा देना ताकि उन्हें किसी तरह कि परेशानी का सामना न करना पडे।

इस प्रकार कवि ने देश भक्ति को अभिव्यक्त करने वाली अदभुत कविता लिखी है ।

२.१.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण :

'मुझे तोड़ लेना' वनमाली
उस पथ में देना तुम फेंक
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावे 'वीर अनेक।'

अनुलेख : मुझे तोड़ ..... वीर अनेक।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक काव्य-कुंज के 'पुष्प की अभिलाषा' नामक कविता से ली गई हैं। जिसे माखनलाल चतुर्वेदी ने लिखा है।

संदर्भ : इन पंक्तियों के माध्यम से कवि देश-प्रेम की भावना को अभिव्यक्ति देता है ।

व्याख्या : इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने पुष्प को इंसान की तरह वाणी दी है। पुष्प बगीचे के माली को संबोधित करते हुए कहता है कि हे वनमाली तुम मुझे तोड़कर उस रास्ते पर डाल देना जिस मार्ग से हमारे देश के वीर जवान अपनी जान की परवाह किए बिना देश की रक्षा के लिए

आगे बढ़ रहे हों। जिन्हें अपने जीवन से ज्यादा देश से प्रेम होता है । ऐसे वीर जवानों के मार्ग पर मुझे बिछा देना ताकि उन्हें किसी तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े।

साहित्यिक सौंदर्य :

१) राष्ट्रप्रेम की भावना को अभिव्यक्त किया गया है ।
२) पुष्प में मानवीकरण अलंकार दिखाई देता है ।
३) काव्य पंक्तियों में तुकांतता का प्रयोग किया गया है ।
४) गुलामी से मुक्ति की ओर संकेत किया है ।

२.१.४ बोध प्रश्न :

१) 'पुष्प की अभिलाषा' का भावार्थ स्पष्ट कीजिए ।
२) 'पुष्प की अभिलाषा ' का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।
३) 'पुष्प की अभिलाषा' कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ।
४) 'पुष्प की अभिलाषा' कविता के माध्यम से देशभक्ति की भावना को अभिव्यक्ति दी गई है। अपने शब्दों ने लिखिए।

लघु उत्तरी प्रश्न :

१) पुष्प किसके गहनों में नहीं गुँथना चाहता है ?

उत्तर : पुष्प सुरबाला के गहनों में नहीं गुँथना चाहता है।

२) पुष्प किसके शव में न चढ़ाँए जाने की बात करता है ?

उत्तर : पुष्प सम्राटों के शव में न चढ़ाए जाने की बात करता है।

३) पुष्प माली से उसे कहाँ फैंकने को कहता है ?

उत्तर : पुष्प माली से उसे वीरों के मार्ग में फैकने को कहता है।

४) सैनिक किस पर शीश चढ़ाने को तैयार रहते है।

उत्तर : सैनिक मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने को तैयार रहते हैं।

२.२

'झाँस की रानी' - सुभद्राकुमारी चौहान

इकाई की रूपरेखा :

२.२.१ जीवन परिचय
२.२.२ भावार्थ - झाँसी की रानी
२.२.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
२.२.४ बोध प्रश्न
२.२.५ अति लघु उत्तरी प्रश्न

२.२.१ जीवन परिचय

श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म सन् १९४० में इलाहाबाद के एक सम्पन्न परिवार में हुआ था । इन्हें बचपन से ही काव्य से बहुत प्रेम था । खंडवा के ठाकुर लक्ष्मण सिंह से विवाह के पश्चात इन पर महत्मा गाँधी द्वारा चलाये गए राष्ट्रीय आन्दोलन का विशेष प्रभाव पड़ा, इसलिए ये राष्ट्र- प्रेम से ओतप्रोत कविताएँ लिखने लगीं। इनके काव्य संग्रह 'मुकुल' पर सन् १९३१ में साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा सेक्सरिया पुरस्कार प्रदान किया गया । सन् १९४८ में एक मोटर दुर्घटना में इनकी मृत्यु हो गई ।

सुभद्रा जी की काव्य- साधना के पीछे उत्कट देश-प्रेम, अपूर्व साहस तथा आत्मोत्सर्ग की प्रबल कामना है। आजादी के लिए जेल – जीवन की सम्पूर्ण यातनाओं को हँसते – हँसते, सुखपूर्वक सहने में इन्हें आनन्द आता था । इनकी कविता में सच्ची वीरांगना का ओज और शौर्य प्रकट हुआ है। हिन्दी-काव्य जगत में ये अकेली ऐसी कवियित्री हैं जिन्होंने अपने कंठ की पुकार से लाखों भारतीय युवक - युवतियों को युग-युग की अकर्मण्य उदासी को त्याग स्वतंत्रता संग्राम में अपने को झोंक देने के लिए प्रेरित किया। सुभद्रा जी की 'झाँसी वाली रानी थी' और 'वीरों का कैसा हो वसंत' शीर्षक की कविताएँ आज भी तरुण-तरुणियों के ह्रदय में वीरता के भाव जाग्रत करती है ।

सुभ्रद्रा जी की भाषा सीधी सरल तथा स्पष्ट एवं आडम्बरहीन खड़ी बोली है। मुख्यतः दो रस इन्होंने अंकित किये-वीर तथा वात्सल्य। इनके काव्य में एक ओर नीर सुलभ ममता और सुकुमारता है और दूसरी पद्मिनी के जौहर की भीषण ज्वाला। अपने काव्य में इन्होंने पारिवारिक जीवन के मोहक चित्र अंकित किये हैं जिनमें वात्सल्य की मधुर व्यंजना हुई है। अलंकारों अथवा कल्पित प्रतीकों के मोह में न पड़कर सीधी –सादी स्पष्ट अनुभूति को इन्होंने प्रधानता, दी है ।

'मुकुल और त्रिधारा' इनके प्रसिद्ध काव्य-संग्रह है ।

२.२.२ भावार्थ - 'झाँसी की रानी'

'झाँसी की रानी' सुभद्रा कुमारी चौहान की उस दौर की कविता है, जब देश में स्वतंत्रता आन्दोलन अपने चरम की ओर बढ़ रहा था। यह कविता न सिर्फ झाँसी की रानी के शौर्य का वर्णन करती है बल्कि अंग्रेजों ने किस तरह धीरे-धीरे स्थानीय राजाओं को हराकर अपना साम्राज्य बढ़ाया इसके ऐतिहासिक संकेत भी इसमें दिए गए हैं। जिसका उल्लेख कवयित्री ने इस प्रकार किया है ।

कवयित्री कहती है । पूरा भारतवर्ष अंग्रेजों की गुलामी व यातनाओं से त्रस्त हो चुका था। अंग्रेजों द्वारा दी जाने वाली यातनाओं का विरोध होने लगा था । राजवंशी राजाओं का क्रोध सातवे आसमान पर था। जिससे भयभीत होकर अंग्रेजों का सिंहासन डोलने लगा था। ऐसा लग रहा था मानो बूढ़े भारत में आज फिर से जवानी का संचार हो रहा था। अब भारत के लोगों को आजादी की कींमत समझ में आने लगी थी। इसीलिए सभी ने यह संकल्प ले लिया था अब फिरंगियों को इस देश से खदेड़ बाहर करना है। यह वही दौर था जब झाँसी से रानी लक्ष्मीबाई ने तलवार उठा ली थी। जिसका सामना करने की क्षमता किसी में नहीं दिखाई दे रही थी ।

इस सब के चलते एक बार फिर से महलों में उजाला अर्थात खुशियाँ छाने लगी । लेकिन यह खुशी ज्यादा समय तक नहीं टिक पाई। काल के चक्र ने फिर महलों में काली घटा कर दी, तीर चलाने वाली झाँसी की रानी के हाथों में चूड़ियाँ अधिक समय तक नहीं टिक पाई अर्थात वह विधवा हो गई । राजा संतान सुख लेने से पहले ही इस संसार से चल बसे। और रानी का जीवन शोकमय हो गया। इसी के परिणाम स्वरूप रानी को झाँसी की रक्षा के लिए तलवार उठानी पड़ी।

झाँसी के राजा की मृत्यु पर डलहौजी काफी प्रसन्न हुआ। उसे लगा की झाँसी को हड़पने का इससे अच्छा अवसर फिर नहीं मिल सकता। उसने फौरन फौज भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया। इस प्रकार लावारिस झाँसी का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया। अश्रुपूर्ण रानी ने देखा कि झाँसी राजा के बिना विरानी हो गई है। तब उसने उसकी रक्षा के लिए तलवार उठाई और बड़ी ही जाँबाजी से युद्ध किया ।

ब्रिटिश शासकों ने बातों ही बातों में दिल्ली पर भी कब्जा कर लिया था । पेशवा को विठूर में कैद कर दिया, उसकी नजरें. नागपुर को हड़पने के लिए तैयार थी, उदयपुर तंजौर, सतारा और कर्नाटक को भी उन्होंने नहीं छोड़ा, सिंध, पंजाब, ब्रह्मा पर भी उन्होंने बज्रापात किया। बंगाल और मद्रास आदि राज्यों को भी लगातार अपना गुलाम बनाते चले गए। इन सभी स्थितियों को देखते हुए रानी लक्ष्मीबाई काफी दुखी हुई और उसने अंग्रेजों से लोहा लेने का संकल्प किया ।

अंग्रेजों के शासन के दौरान कुटियों में रहने वाले भी विषय वेदनाओं से ग्रस्त थे। साथ ही महलों में रहने वाले भी सुखी नहीं थे। वीर सैनिकों का समूह अपने पूर्वजों के शौर्य को याद करके अपने अंदर साहस जुटाने का प्रयास कर रहे हैं। नाना धुन्धू पन्त पेशवा अंग्रेजों का सामना करने के लिए युद्ध सामग्री जुटाने में लगे हुए थे। बहन झाँसी की रानी ने रणचंडी का अवतार धारण कर अंग्रेजों के विरुध्द तलवार तान दी। उन्होंने लोगों के मन में समर्पण की ज्योति जगाने के लिए आव्हान प्रारंभ कर दिया। और स्वयं तलवार उठा ली ।

कवि कहता है कि बाँकि की कथा के संदर्भ को छोड़ों। अब हम झाँसी के मैदान में चलते हैं। जहाँ पर झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई मर्द बनकर युद्ध के मैंदान में खड़ी है। दूसरी ओर से लैफ्टिनेंट वॉकर अपनी सेना के साथ जैसे ही झाँसी की रानी की ओर बढ़ा वैसे ही रानी ने भी अपनी तलवार खींच ली। उसके बाद दोनों की सेनाओं के बीच घमासान युध्द हुआ। जखमी वॉकर युध्द के मैदान से भाग खड़ा हुआ। उसे अपनी हार आश्चर्यजनक प्रतीत हुई। लक्ष्मीबाई का युद्ध कौशल्य के संदर्भ में बुंदेले हरबोलों के मुँह से कहानी सुनी ।

झाँसी की रानी झाँसी के मैदान से आगे बढ़कर लगभग सौ मील की दूरी तय कर कालपी पहुँचती है। जहाँ पहुँचते ही थककर उसका घोड़ा भूमि पर गिर पड़ा और साथ ही उसी क्षण स्वर्ग को सिधार गया। यहाँ भी यमुना के तट पर अंग्रेजों ने फिर से एक बार रानी से मात खाई। विजयी रानी आगे बढ़ती गई और उसने ग्वालियर को भी अपने आधीन कर लिया। रानी के भय से अंग्रेजों के मित्र सिंधिया राजधानी छोड़कर भाग खड़ा हुआ। यह कथा बुन्देलों हरबोलों के मुँह से सुनी थी ।

रानी को विजय तो मिली किन्तु फिर से अंग्रेजों की सेना ने उसे घेर लिया। इस बार अंग्रेजों की कमान जनरल स्मिथ ने संभाली थी। रानी के सम्मुख उसे भी मुँह की खानी पड़ी और उसे मैदान छोंड़कर भागना पड़ा। रानी की ताकत उसकी दो सखियाँ थी जिनका नाम काना और मन्दरा था इन्होंने युद्ध के मैंदान में भारी मात्रा में हाहाकार मचाया था। एक बार फिर से अंग्रेजी सेना ने ह्यूरोज के नेतृत्व में रानी को घेर लिया। इसका भी रानी ने डटकर सामना किया। जिसे बुन्देले हर बोले ने हमें बताया।

चारों ओर से घिरने के बावजूद रानी मारकाट करते हुए आगे बढ़ी जैसे ही अंतिम छोर पर पहुँची तो एक बड़ा नाला सामने आ गया । जो उसके लिए बहुत बड़ा संकट बन गया। उसके पास जो नया घोड़ा था उसने नाला पार करने से इनकार कर दिया अर्थात वह अड़ गया। इतने में अनेक सवार वहाँ आ खड़े हुए। उन्होंने रानी को अकेला देख उसे घेर लिया और उस पर चारों ओर से वार करने लगे। इस प्रकार घायलावस्था में धिरी सिंहनी की भाँति लड़ने वाली झाँसी की रानी को वीरगति प्राप्त हुई। बुंदेले हर बोलों के मुँह से हमने उसके शौर्य की गाथाएँ सुनी।

इस प्रकार लगातार कई दिनों तक लड़ते हुई रानी स्वर्ग सिधार गई । उसकी चिता उसके लिए दिव्य सवारी के समान थी। ज्वाला के तेज से जब उसका तेज मिला तो ज्वाला और जोर से धधक उठी, जिसकी वास्तव में वह अधिकारिणी थी। उस समय उसकी उम्र तेइस साल की थी। वह सामान्य स्त्री नहीं थी बल्कि अवतारी थी। वह तो सिर्फ भारत वासियों के मृत शरीर में प्राण फूकने के लिए स्वतंत्रता नारी बनकर आई थी। वह हमें एक रास्ता दिखा गई और हमें देश को स्वतंत्र करवाने का पाठ पढ़ा गई। इस प्रकार बुंदेले हर बोलों ने अपने मुँह से रानी लक्ष्मीबाई की मर्दानगी से युद्ध करने की कथा को हमें बताया ।

२.२.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण :

'दिखा गई पथ, सिखा गई हमको जो सीख सिखानी थी' बुन्देले हर बोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी। खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ।

अनुलेख : दिखा गई ..... रानी थी ।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'काव्य-कुंज' के 'झाँसी की रानी' से ली गई है जिसे सुभद्राकुमारी चौहान ने लिखा है ।

प्रसंग : इन पंक्तियों के माध्यम से झाँसी की रानी के शौर्य और पराक्रम को अभिव्यक्ति दी गई है ।

व्याख्या : कवि ने झाँसी की रानी के शौर्य और पराक्रम का उल्लेख करते हुए कहा है कि वह लगातार कई दिनों तक अंग्रेजों का सामना करती रही। वह अपने राज्य का लगातार विस्तार करती जा रही थी। ज्वाला के तेज से उसका तेज अधिक धधकता दिखाई पड़ता था । उस समय उसकी उम्र केवल तेईस साल थी। वह सामान्य स्त्री नहीं थी बल्कि कोई अवतारी प्रतीत होती थी। वह इस संसार में भारत वासियों की खोई हुई शक्तियों को जगाने के उद्देश्य से आई थी। वह हमें स्वतंत्रता का रास्ता दिखाने आई थी। यह कथा हमने बुन्देले हर बोलों के मुँह से सुनी थी।

साहित्यिक सौदर्य :

१) लक्ष्मीबाई के शौर्य का वर्णन किया गया है ।
२) कविता काफी प्रेरणास्पद है।
३) कविता ऐतिहासिकता का संकेत करती है।

२.२.४ बोध प्रश्न :

क) 'झाँसी की रानी' का कथ्य अपने शब्दों में लिखिए ।
ख) 'झाँसी की रानी' का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।
ग) 'झाँसी की रानी ' एक स्त्री की शौर्य कथा है। अपने शब्दों में लिखिए।
घ) 'झाँसी की रानी' कविता का संदेश अपने शब्दों में लिखिए ।

२.२.५ अति लघुउत्तरी प्रश्न :

१) रानी की तलवार से जख्मी होकर कौन भाग गया था ?
उत्तर : लैफ्टनैंट वॉकर रानी की तलवार से जख्मी होकर भाग गया था ।
२) सिंधिया कहाँ से भाग गया था ?
उत्तर : सिंधिया राजधानी छोड़कर भाग गया था ।
३) रानी की सखियाँ कौन थी ?
उत्तर : रानी की सखियाँ काना और मन्दरा थी ।
४) रानी सहादत के समय कितनी वर्ष की थी ?
उत्तर : रानी सहादत के समय मात्र तेइस वर्ष की थी ।

❖❖❖❖

३

"सिंदूर तिलकित भाल", 'दीया जलाना कब मना है', जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना ।

इकाई की रूपरेखा :

३.१ इकाई का उद्देश्य
३.२ प्रस्तावना
३.३ कवि परिचय
३.४ कविता का भावार्थ
३.५ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
३.६ बोध प्रश्न / वस्तुनिष्ठ प्रश्न

३.१ इकाई का उद्देश्य

इस काव्य खंड की तृतीय इकाई में हम तीन कविताएँ ले रहे हैं। जिनमें 'सिंदूर तिलकित, भाल', 'दीया जलाना कब मना है'। 'जलाओ दिये पर ध्यान रहे इतना' से लिया गया है। इसके अंतर्गत कवि परिचय, कविता का भावार्थ, स्पष्टीकरण तथा संभावित प्रश्नों का उल्लेख किया गया है ।

इससे विद्यार्थीयों को अपने जड़ों से जुड़े रहने का बोध होगा। स्मृतियाँ जीवन कों शक्ति देती हैं। इस बात की जानकारी प्राप्त होगी। जीवन के प्रति आशावादी बनने की प्रेरणा, कार्य के प्रति निष्ठा को बढ़ावा मिलेगा। विद्यार्थी परोपकार से प्राप्त सुख से रूबरू होगा।

३.२ प्रस्तावना :

सिंदूर तिलकित भाल में कवि ने प्रवास के दौरान स्मृतियों के सहारे किस प्रकार जीवन को जीया जाता है। इसे अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। व्यक्ति को अपनों से बिछुड़ने पर ही अपने और पराये का बोध होता है ।

'दीया जलाना कब मना है' में कवि का आशावादी स्वर मुखरित हुआ है कवि कहता है कि सपना देखना अच्छी बात है किन्तु इन्हें पूरा करने के लिए कर्म की आवश्यकता होती है जिसके लिए हमें हमेशा तत्पर रहना चाहिए ।

जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना नामक कविता में मानवतावादी स्वर मुखरित हुआ है। कवि कहता है कि व्यक्ति को अपनी खुशी को सबकी खुशी में परिवर्तित करने का निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। ऐसा करने से अलौकिक सुख की अनुभूति होती है ।

३.३ नागार्जुन - कवि परिचय

जनकवि नागार्जुन का जन्म सन् १९११ में बिहार राज्य के दरभंगा-जिले के तरौनी नामक गाँव में हुआ था। इनका जन्म का नाम वैद्यनाथ मिश्र था परन्तु बौध्द-दर्शन से अत्यधिक प्रभावित होने के कारण इन्होंने अपना नाम एक मेधावी बौध्द दार्शनिक नागार्जुन के नाम पर रख लिया। इन्होंने हिन्दी के अतिरिक्त मैथिली गुजराती तथा संस्कृत में भी अनेक रचनाएँ की हैं। कविता के साथ-साथ नागार्जुन साहित्य की अन्य विधाओं-यथा उपन्यास, आलोचना तथा कहानी की ओर भी उन्मुख हुए। परंतु कविता ही इनकी व्यापक प्रसिद्धि का आधार रही हैं। पत्रहीन नग्न गाछ पर इन्हें सन् १९६१ का मैथिली भाषा के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। इनके अन्य काव्य-संग्रह हैं - युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, प्यासी पथराई आँखें, तालाब की मछलियाँ। इनकी काव्य-संवेदना व्यक्ति से विश्व-मानव-स्तर तक परिव्याप्त रही हैं। यही कारण है कि इनकी कविता में स्थानीय मुद्दों, युगीन राजनीतिक एवं सामाजिक प्रश्नों के साथ-साथ व्यक्ति-मानस के कोमल भावों की भी उत्कृष्ट अभिव्यक्ति है। इनकी कविताओं के इसी व्यापक चरित्र के कारण ही इन्हें जन-जन का कवि भी कहा जाता है। सन् १९९८ में इनकी मृत्यु हो गई ।

३.४ 'सिन्दूर तिलकित भाल' - भावार्थ

इस कविता में कवि स्वयं श्रीलंका के लिए निकले है। इसी बीच उन्हें अपनी नवविवाहित पत्नी का सिंदूर तिलकित भाल याद आने लगता है, घर की यादें सताने लगती हैं। जिनका वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है - कवि कहता है. कि मुझे विषम परिस्थितियों ने घोर निर्जन में डाल दिया है, ऐसी परिस्थिति में मुझे प्रिये तुम्हारा सिंदूर तिलकित भाल याद आता है। इस संसार में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं होगा जो अपने समाज से दूर रहना चाहता हो। हम अपने लोगों के बीच बिना किसी संकोच के एक-दूसरे के कार्यों में हाथ बँटाते रहते हैं। एक दूसरे के कार्यों में सहयोग करते रहते हैं। और एक दूसरे का सहवास पाते रहते हैं। कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं जो चाहेगा की उसकी साँसें शून्य से टकराए। अत: कवि कहता है कि मैं भी पत्थर का बना नहीं हूँ जो अपने लोगों से दूर कर दिए जाने के बाद भी दुखी न होऊँ, विरोध न कँरू ।

मैं तो असाधारण व सचेतन जंतु हूँ, मैं क्या, कहाँ, किन्तु, परन्तु वाली बातों को नहीं जानता । यहाँ हर्ष-विषाद-चिंता व क्रोध एक साथ विद्यमान हैं । यहाँ पहुँचने पर ही हमें सुख और दुख का एहसास हुआ, यहाँ पर अनुमान की गुंजाइश नहीं है क्योंकि सब कुछ सामने (प्रत्यक्षत:) घटित होता है । यहाँ पर पुरानी बातों के अनायास स्मृति में आ जाने और थोड़ी देर में विस्मृति में चले जाने की प्रक्रिया चलती रहती है। तब हे प्रियतमा तुम याद आती हो। क्योंकि अभी तक मेरे भीतर इंसानियत बची हुई है। अभी तक मेरा ह्रदय पत्थर की तरह कठोर नहीं हुआ है।

मुझे प्रवास के दौरान अपने लोग याद आ रहे हैं। जिनकी आँखों से प्रेम का अमृत बरसता दिखाई देता था। मेरे स्मृति पर चित्र लगातार प्रतिबिम्क्ति हो रहे हैं। मुझे आज मेरा 'तरउली' गाँव भी याद आ रहा है ।

कवि को उसके तरउली गाँव की लीचियाँ व वहाँ के आम के फल याद आ रहे हैं। वहाँ आकर्षित करने वाले भू-भाग उनमें उगाए जाने वाले धान के साथ - साथ कमल व कुमुदिनी के फूल व तालमखान भी याद आते हैं। जिनके नाम उनके रूप-गुण के अनुसार रखे गए हैं। वहाँ के वनों को भी वे नहीं भुला पाते हैं । और वहाँ के पर्वत शिखर याद आते हैं।

कवि उनके उन मृदुलतम अंक के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने उनके लिए पलंग का काम किया। वह जमीन धन्य है जिसमें अन्न, पानी और साग-सब्जी आदि उपजते हैं। जिनका सेवन कर कवि अपने को धन्य मानता है। इस जमीन से उपजने वाले फल-फूल और कंदमूल तथा मधु और माँस आदि ने मेरा पोषण किया। इस प्रकार कवि कहता है कि मैं अपने गाँव व वहाँ की जमीन का ऋृणी हूँ। जिसका मैं चाहकर भी दशांश नहीं चुका सकता हूँ। कवि अपने गाँव घर से दूर पड़ गया है। लेकिन वह अपने गाँव को अपने से दूर नहीं कर पा रहा है। उसे रह-रहकर वहाँ के लोग व वहाँ का समाज याद आ रहा है ।

अंतिम पंक्तियों में कवि गाँव और शहर के बीच अपने अस्तित्व को प्रदर्शित करते हुए कहता है कि आज में गाँव से दूर असहाय अवस्था में पड़ा हुआ हूँ। यहाँ भी लोग हैं उनका समूह है, मैं भले भी अपनी सारी जिंदगी यहीं बिताऊँ तब भी लोग मुझे प्रवासी ही कहेंगे। मेरे मरने पर ये लोग मेरी चिता पर दो फूल भी डाल देंगे। इस प्रकार समय का चक्र चलता रहेगा, मेरे एक तस्वीर टाँग दी जाएगी जिसमें मैं मूँक बना रहूँगा ।

कवि अपनी प्रिया को याद करते हुए कहता है जब में पश्चिम दिशा में सूर्य को ढ़लते हुए देखता हूँ। उसका वह लालिमा युक्त दृश्य मुझे तुम्हारे सिंदूर तिलकित भाल की याद दिला देता है।

इस प्रकार कवि भले ही अपने गाँव व घर से किन्हीं विषम परिस्थितियों के कारण दूर हो गया हो लेकिन वह अपने मन और मस्तिष्क से गाँव से अलग नहीं हो पा रहा है।

३.५ संदर्भसहित व्याख्या :

याद आते स्वजन
जिनका स्नेह से भीगा अमृतमय आँख
स्मृति- विहंग की कभी थकने न देगी पाँख
याद आता मुझे अपना वह तरउली ग्राम ।

अनुलेख : याद आते ..... तरउली ग्राम।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक काव्य-कुंज के 'सिंदूर तिलकित भाल' से ली गई हैं। जिसे नागार्जुन ने लिखा है।

प्रसंग : इन पंक्तियों में प्रवास के दौरान अपनों से बिछुड़ने के दुख को प्रकट किया गया है।

व्याख्या : कवि प्रवास के दौरान अपने लोगों से बिछुड़ जाता है तब उसे रह -रहकर वे सभी लोग याद आने लगते हैं जो दुख और सुख में सदैव उसके साथ बने रहते थे । जिनकी आँखों में हमेशा उसके लिए अमृत बरसता हुआ महसूस होता था । मेरे अपने इन लोगों के सारे चित्र मेरी स्मृतियों में ताजा हो रहे हैं। मुझे आज अपना वह तरउली गाँव बहुत याद आ रहा है। जिसका अपना एक अलग महत्व हुआ करता था ।

साहित्यिक सौंदर्य :

१) अपनों से बिछुड़ने का दुख अभिव्यक्त हुआ है।
२) सरल भाषा का प्रयोग किया गया है ।
३) संस्कृत शब्दों का भी प्रयोग हुआ है ।
४) स्मृतियों को महत्व दिया गया है ।

३.६ बोधप्रश्न :

१) 'सिंदूर तिलकित भाल' नामक कविता का संदेश लिखिए ।
२) 'सिंदूर तिलकित भाल' नामक कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए ।
३) 'सिंदूर तिलकित भाल' कविता प्रवास के दौरान की व्यथा का लेखा-जोखा है। अपने शब्दों में लिखिए।

लघुउत्तरी प्रश्न :

१) घोर निर्जन परिस्थितियों से कवि को कौन याद आता है ?

उत्तर) घोर निर्जन परिस्थितियों में कवि को अपनी पत्नी का 'सिंदूर तिलकित भाल' याद आता है।

२) कवि के गाँव का नाम क्या है ?

उत्तर) कवि के गाँव का नाम तरउनी है ।

३) समय किस गति से चल रहा है ?

उत्तर) समय निर्बाध गति से चल रहा है ।

४) कवि को किसके नामों की याद आ रही है ?

उत्तर कवि को शस्य-श्यामिला जनपदों की याद आ रही है। जिनके नाम उनके रूप और गुणों के आधार पर रखे गए हैं।

❖❖❖❖

३.१

'दीया जलना कब मना है' - हरिवंश राय बच्चन

इकाई की रूपरेखा :

३.१.१ कवि परिचय
३.१.२ भावार्थ - 'दीया जलाना कब मना है'
३.१.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
३.१.४ बोध प्रश्न

३.१.१ कवि परिचय :

श्री हरिवंशराय बच्चन का जन्म सन् १९०७ में इलाहाबाद में हुआ था । सन् १९३८ में इलहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम. ए. करने के पश्चात् ये वहीं विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक नियुक्त हुए । सन् १९५२ में इन्होंने केम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। कुछ महीने आकाशवाणी में कार्य करने के तुरंत बाद सन् १९५५ में इनकी नियुक्ति भारत सरकार के विदेश मंत्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ के पद पर हुई । सन् १९६६ में ये राज्य सभा के सदस्य मनोनीत हुए।

लिखने का उत्साह बच्चन के मन में विद्यार्थी-जीवन से ही था । एम. ए. के अध्ययन - काल में इन्होंने फारसी के प्रसिध्द कवि उमर खय्याम की रुबाइयों का हिन्दी में अनुवाद किया, जिसने इन्हें नवयुवकों का प्रिय कवि बना दिया। इसी से उत्साहित होकर इन्होंने उसी शैली में अनेक मौलिक रचनाएँ लिखी, जो मधुशाल, मधुबाला, मधुकलश आदि में संगृहित हैं। अपनी गेयता, सरलता, और खुलेपन के कारण ये काव्य संग्रह बहुत ही पसंद किए गए । पहली पत्नी की मृत्यु ने इनके काव्य में निराशा और वेदना की रेखा खींच दी, परंतु यह खटाटोप शीघ्र ही छँट गया और ये पुनः मधुरता, आस्था और विश्वास के गीत गाने लगे । गाँधीवाद और सामाजिक यथार्थ का प्रभाव भी इनकी अनेक कविताओं में देखा जा सकता है। १८ जनवरी, २००२ को इनका देहावसान हो गया।

बच्चन व्यक्ति-प्रधान गीतों के कवि हैं। इस क्षेत्र में इन्होंने विविध प्रयोग किए हैं । इनके गीतों की भाषा सरस और स्वाभाविक है। उनमें उर्दू-कविता जैसा प्रवाह है। कवि ने लोकधुनों के आधार पर भी कुछ गीत लिखे हैं। मधुशाला, एकांत संगीत, सूत की माला, मिलन-यामिनी, हलाहल, आरती और अंगारे, धार के इधर-उधर, बहुत दिन बीते आदि इनकी प्रसिध्द काव्य-रचनाएँ हैं। इनकी काव्य रचना दो चट्टानों पर इन्हें साहित्य अकादमी की ओर से पुरस्कार प्रदान किया गया। सन् १९७६ में इन्हें पद्मभूषण की उपाधि से अलंकृत किया गया ।

३.१.२ भावार्थ - 'दीया जलाना कब मना है'।

कवि हरिवंशराय बच्चन ने इस कविता के माध्यम से आशावादी विचारधारा को प्रोत्साहित किया है, वे कहते हैं कि मैंने कल्पना रूपी हाथों से जिस सुन्दर मंदिर को तैयार किया और भावना के हाथों ने जिसमें शामियाना ताना था।

मेरे स्वप्नों ने जिसे पूरी निष्ठा के साथ सवारा-सजाया जिसमें स्वर्ग के समान सभी प्रकार के सुखों को समाया गया था, लेकिन जब उसे अकृति देने के लिए ईंट, पत्थर व कंकड़ों को जोड़ने का प्रयास किया गया तो वह उस तरह नहीं बन पाया जो कल्पना में था । अर्थात मेरे सारे सपने ढह गए । लेकिन इस दुख से दुखी रहने के बजाय अपने लिए एक छोटी सी कुटिया बनाकर अंधेरी रात में उसने दिए का उजाला करके सुखपूर्वक रहने के लिए कभी कोई मनाही नहीं है ।

आकाश में अपने अश्रु रूपी बादलों से अपना नीलापन और अपने रत्नों को धोकर आकर्षकता प्रदान की थी, लेकिन उसके सपनों को आशा की प्रथम किरण ने अपनी मदिरा सम लालिमा बिखेरकर सभी सपनों को चूरचूर कर दिया। सूर्य की चंचल किरणों से यदि चंद्रमा का सपना टूट भी गया तो वह निराश नहीं होती, वह तो अपने स्वभाव के अनुकूल चारों ओर निर्मलता बिखेरना बंद नहीं करती है। इस प्रकार विषम परिस्थिति में वह अपने कर्तव्यरूपी दिए को जलाए रखती है ।

कवि कहता है कि मेरे जीवन में एक समय ऐसा था कि एक घड़ी के लिए भी चिंता मेरे आस-पास नहीं भटकती थी, और किसी प्रकार की बुरी छाया भी मेरे पलक का स्पर्श तक नहीं कर पाती थी। मेरी आखों से मेरी खुशी झलकती थी। और वार्तालाप से शरारत प्रकट होती थी। मेरी स्वच्छंद हंसी से बादल तक शर्मसार हो जाते थे। उसका मेरे जीवन से चला जाना मानो मेरे जीवन से खुशियों का चला जाना था। लेकिन जीवन में अस्थिरता आने पर निराश होने की आवश्यकता नहीं है। बल्कि विषम परिस्थितियों में भी व्यक्ति को खुश रहने की आवश्यकता है। ताकि हर परिस्थिति में समरसता बनाए रखने की कला लोग उससे सीख सकें।

जब मेरे जीवन में संगीत की लहर ने पदार्पण किया तो मैंने सभी प्रकार के सुख वैभवों का त्याग कर उसे वरदान समझकर सहर्ष स्वीकार किया। संगीत का अपना एक अलग सुख होता है। उसकी ध्वनि में पृथ्वी व आकाश दोनों ही मद्मस्त हो उठते है। और मैं भी धुन में अधिक समय तक साधन मात्र रह गया हूँ। लेकिन यदि अधूरी पंक्तियों से भी मेरा मन बहल जाता है तो इससे कोई परहेज नहीं करना चाहिए। क्योंकि संगीत से जुड़ा रहना अधिक महत्वपूर्ण है ।

कभी-कभी जीवन में अच्छे दोस्त मिल जाते है। जो उनके साथ चुम्बक की तरह चिपके रहते हैं। ये उनके ह्रदय में घर कर जाते हैं। ऐसे दोस्तों के साथ जीवन बिताना बड़ा ही सुखकर होता है। हमें जीवन वीणा में गाए गए सुंदर गीत का अहसास कराता है। इसके बावजूद वे कभी जीवन के आधे रास्ते में ही छोड़कर विदा हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में एक नए मित्र को

खोजना और उसके साथ आगे का जीवन बिताना गलत बात नहीं होती। इस प्रकार अपने जीवन में प्रकाश करना गलत बात नहीं है।

मेरे जीवन में हवा का इतना तेज झौका आया कि उसने मेरे आशियाने को ही ध्वस्त कर दिया। जीवन को लेकर शोर गुल मचाना मेरे किसी काम नहीं आया। जब व्यक्ति के जीवन में विनाश का सिलसिला चलने लगता है तो उसे रोक पाना किसी के बस में नहीं है। लेखक आज निर्माण के प्रतिनिधि को ही कटघरे में खड़ाकर उससे पूछने लगता है। वे उसे यह बताने को कहते हैं कि जो बसे हुए लोग हैं। उन्हें उजाड़कर फिर से बसने की प्रकृति मुझे जड़ प्रतीत होती है। लेखक कहता है कि उजड़े हुए घर फिर से बसते है। और इस प्रकार बसने की प्रक्रिया बुरी नहीं है।

३.१.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण :

'हाय, वे साथी कि चुम्बक लौह से जो पास आए।
पास क्या आए, ह्रदय के बीच ही गोया समाए।
दिन कटे ऐसे कि कोई तार वीणा के मिलाकर।
एक मीठा और प्यारा जिन्दगी का गीत गाए'।

अनुलेख : हाय , ने ..... गीत गाए ।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक काव्य-कुंज के 'दीया जलाना कब मना है' से ली गई है। जिसे हरिवंशराय बच्चन ने लिखा है।

प्रसंग : कवि विषम परिस्थिति में धैर्य से काम लेने को कह रहा है और साथ ही नए सिरे से बिगड़े हुए कामों को सजोने के लिए कहता है।

व्याख्या : कवि इन पंक्तियों के माध्यम से कहता है कि जीवन में कभी-२ कुछ अच्छे मित्र मिल जाते हैं। जो सिर्फ उनके साथ चुम्बक की तरह ही नहीं चिपकते बल्कि उनके ह्रदय में अपने लिए जगह बनाने में भी सफल हो जाते हैं। ऐसे मित्रों के साथ समय बिताना बड़ा ही सुखकर होता है, जो हमें जीवन रूपी वीणा में गाए गीत के समान सुखकर होता है, जब कभी वे जीवन के आधे रास्ते में ही छोड़कर विदा हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में उनके बिना जीवन बड़ा ही कष्टप्रद लगने लगता है .

साहित्थिक सौंदर्य:

१) सच्चे मित्र की मित्रता को अभिव्यक्ति दी गई है ।
२) आशावादी कविता है ।
३) संघर्ष की प्रेरणा देती है ।

३.१.४ बोध प्रश्न :

क) 'दीया जलाना कब मना है' कविता का केंद्रीय भाव लिखिए।
ख) 'दीया जलाना कब मना है' कविता की संवदेना को अपने शब्दों में प्रकट कीजिए।
ग) 'दीया जलाना कब मना है' कविता एक आशावादी कविता है स्पष्ट कीजिए।

लघुउत्तरी प्रश्न :

१) कल्पना के हाथों किस मंदिर को गढ़ा गया ?
उत्तर कल्पना के हाथों कमनीय मंदिर को गढ़ा गया।
२) बादलों के अश्रु से किसे धोया गया था ?
उत्तर बादलों के अश्रु से नभ-नील नीलम को धोया गया था।
३) व्यक्ति का जोर किसके साथ नहीं चलता है ?
उत्तर व्यक्ति का जोर नाश की शक्तियों के साथ नहीं चलता है।

३.२

'जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना' - गोपाल दास सक्सेना 'नीरज'

इकाई की रूपरेखा :

३.२.१ कवि परिचय
३.२.२ भावार्थ - 'जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना'
३.२.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
३.२.४ बोध प्रश्न

३.२.१ कवि परिचय

गोपालदास सक्सेना 'नीरज' (जन्म: ४ जनवरी १९२५, पुरावली, इटावा, उत्तरप्रदेश) ने अपनी मर्मस्पर्शी काव्यानुभूति तथा सरल भाषा द्वारा हिन्दी कविता को एक नया मोड़ दिया है और बच्चन जी के बाद नई पीढ़ी को सर्वाधिक प्रभावित किया है। नीरज जी से हिन्दी संसार अच्छी तरह परिचित है। जन समाज की दृष्टि में वह मानव प्रेम के अनन्यतम गायक हैं। भदन्त आनन्द कौसल्यायनन के शब्दों में उनमें हिन्दी का अश्वघोष बनने की क्षमता है। दिनकर के अनुसार वे हिन्दी की वीणा हैं। अन्य भाषा-भाषियों के विचार में वे सन्त-कवि हैं और कुछ आलोचक उन्हें निराश-मृत्युवादी मानते हैं। आज अनेक गीतकारों के कण्ठ में उन्हीं की अनुगूँज है।

१९४२ में उन्होंने एटा से हाईस्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। शुरुआत में इटावा की कचहरी में कुछ समय टाइपिस्ट का काम किया, उसके बाद सिनेमाघर की एक दुकान पर नौकरी की। लम्बी बेकारी के बाद दिल्ली जाकर सफाई विभाग में टाइपिस्ट की नौकरी की। वहाँ से नौकरी छूट जाने पर कानपुर के डी. ए. वी कॉलेज में क्लर्की की। फिर बाल्कट ब्रदर्स नाम की एक प्राइवेट कम्पनी में पाँच वर्ष तक टाइपिस्ट का काम किया। नौकरी करने के साथ प्राइवेट परीक्षाएँ देकर १९४९ में इंटरमीडिएट, १९५१ में बी. ए. और १९५३ में प्रथम श्रेणी में हिन्दी साहित्य से एम. ए. किया। मेरठ कॉलेज मेरठ में हिन्दी प्रवक्ता के पद पर कुछ समय तक अध्यापन कार्य भी किया किन्तु कॉलेज प्रशासन द्वारा उन पर कक्षाएँ न लेने व रोमांस करने के आरोप लगाये जिससे कुपित होकर नीरज ने स्वयं ही नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। उसके बाद अलीगढ़ के धर्म समाज कॉलेज में हिन्दी विभाग के प्राध्यापक नियुक्त हो गए और मैरिस रोड जनकपुरी अलीगढ में स्थायी आवास बनाकर रहने लगे ।

प्रकाशित साहित्य :

संघर्ष (१९४४), अन्तर्ध्वनि (१९४६), विभावरी (१९४८), प्राणगीत (१९५१), दर्द दिया है (१९५६) बादर बरस गये (१९५७) मुक्तकी (१९५८) दो गीत (१९५८), नीरज की पाती (१९५८) गीत भी अगीत भी (१९५९) आसावरी (१९६३), नदी किनारे (१९६३) लहर पुकारे (१९६३), कारवाँ गुजर गया (१९६४), फिर दीप जलेगा (१९७०) तुम्हारे लिये (१९७२), नीरज की गीतिकाएँ (१९८७)

पुरस्कार एवं सम्मान - विश्व उर्दू परिषद पुरुस्कार, पद्म श्री सम्मान (१९९१) भारत सरकार यश भारती एवं एक लाख रुपये का पुरस्कार (१९९४), उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ, पद्म भूषण सम्मान (२००७), भारत सरकार, फिल्म फेयर पुरस्कार।

नीरज जी को फिल्म जगत में सर्वश्रेष्ठ गीत लेखन के लिये उन्नीस सौ सत्तर के दशक में लगातार तीन बार यह पुरस्कार दिया गया। उनके द्वारा लिखे गए पुरस्कृत गीत हैं १९७० काल का पहिया धूमे रे भइया! (फिल्म : चन्दा और बिजली), १९७१:बस यही अपराध मैं हर बार करता हूँ (फिल्म : पहचान) १९७२ : ए भाई जरा देख के चलो (फिल्म : मेरा नाम जोकर)

३.२.२ भावार्थ - 'जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना'

इस कविता के माध्यम से कवि का मानवतावादी स्वर ध्वनित हुआ है। वह कह रहे हैं कि व्यक्ति को अपने कार्यो द्वारा संपूर्ण धरती को प्रकाशवान करना चाहिए। व्यक्ति को नए-नए ज्ञान रूपी ज्योति को प्रसारित करने के लिए नए पंख धारण करने चाहिए। व्यक्ति के जीवन में इस प्रकार का परिवर्तन आए कि उसकी गौरव गाथा आकाश तक फैल जाए। लोगों के जीवन में उनके कार्यों के परिणाम स्वरूप ऐसी रोशनी फैली कि अशान रूपी अंधेरे को वहाँ पर सिर छुपाने के लिए जगह तक न मिल पाए। लोगों के जीवन में मुक्ति का दरवाजा खुलकर ऐसी स्थिति का निर्माण हो कि न तो उनके जीवन से प्रकाशरूपी खुशहाली जा पाए और न ही अज्ञान रूपी अंधेरा उनके जीवन में प्रवेश कर सके।

इसीलिए कवि गुहार लगा रहा है कि व्यक्ति का ध्यान ज्ञान रूपी प्रकाश पर ही टिका रहे ताकि उसके जीवन में अज्ञान रूपी अंधकार प्रवेश न कर सके ।

कवि कहता है कि भगवान ने सृष्टि का सृजन इसलिए किया है कि संसार में सभी का जीवन सुखमय बीते यदि किसी दरवाजे पर उदासी छाई रहेगी तो भगवान का यह सृजन अधूरा माना जाएगा। कवि मनुष्यता कि बात करते हुए कहता है कि जब तक यह भूमि एक दूसरे के खून की प्यासी दिखाई देगी तब तक मनुष्य का लक्ष्य पूरा नहीं माना जाएगा। जब तक मनुष्य स्वार्थी बना हुआ है तब तक पृथ्वी पर विनाश का सिलसिला चलता ही रहेगा। भले ही लोग दिवालीया मनाकर खुशियाँ बेटोरने की कोशिश करते रहें। इसलिए कवि कल्याणकारी कार्यों के लिए मनुष्य को प्रेरित कर रहा है ताकि सभी का जीवन खुशहाल बन सके ।

आगे कवि कहता है कि केवल दीपक के जलने से इस भू- भाग का अज्ञान रूपी अंधेरा नहीं मिट सकता है और न ही मिट सकेगा। आप अपनी आँखों के सभी आँसुओं को बहा दो।

ऐसा करने से आप दूसरों के ह्रदय में अपने लिए जगह नहीं बना पाओगे। इस धरती पर जब तक स्वयं मनुष्य दीपक का रूप धारण करके नहीं आएगा तब तक इस धरती पर रहने वाले लोगों का कल्याण संभव नहीं है।

इसलिए हे मनुष्य तुम्हें अपने ज्ञान रूपी दीपक से संपूर्ण पृथ्वी का अज्ञान रूपी अंधकार दूर करना है । तभी मनुष्य का जीवन स्वर्णिम बन पाएगा।

३.२.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण :

सृजन है अधूरा अगर विश्व-भर में
कहीं भी किसी द्वार पर है उदासी,
मनुजता नहीं पूर्ण तब तक बनेगी
कि जब तक लहू के लिए भूमि प्यासी।

अनुलेख : सृजन है ..... भूमि प्यासी।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक काव्य-कुंज के 'जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना' नामक कविता से ली गई है । इसके कवि गोपाल दास सक्सेना 'नीरज' हैं ।

प्रसंग : इन पक्तियों के माध्यम से कवि मनुष्य को दीपक के रूप में परिवर्तित होकर समाज को प्रकाशवान करने की गुहार लगा रहा है ।

व्याख्या : प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने अखिल मानवतावादी स्वर को व्यक्त करने का प्रयास किया है। वह कहता है कि यदि व्यक्ति की नजर में विश्व के कोई भी कोने में यदि विकास अधूरा दिखाई देता है और उसके कारण वहाँ से लोगों का जीवन उदास हो गया है तो मनुष्य को आपसी बैर-भाव समाप्त कर दुखी-पीड़ित लोगों की मदद करने के लिए आगे आना होगा ।

समाज में जब तक व्यक्ति एक दूसरे के खून का प्यासा होगा या अपने राज्य का विस्तार लोगों की जान लेकर किया जाएगा तब तक इस संसार में मानवता विद्यमान नहीं हो सकती है।

साहित्यिक सौंदर्य :

१) मानवतावादी स्वर मुखरित होता है।
२) संस्कृतनिष्ठ शब्दों का प्रयोग दिखाई देता है।
३) शब्दों का सुन्दर समन्वय हुआ है।
४) ज्ञान रूपी प्रकाश के प्रसार की बात की गई है।

३.२.४ बोध प्रश्न :

१) जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना कविता का भाव स्पष्ट कीजिए।
२) इस कविता का संदेश लिखिए।
३) यह कविता मानवतावादी विचार धारा को मुखरित करती है स्पष्ट कीजिए।
४) कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।

लघु उत्तरी प्रश्न :

१) कवि किसे जलाने की बात कर रहा है ?

उत्तर कवि ज्ञान रूपी दीपक को जलाने की बात कर रहा है।

२) मनुजता कब तक पूर्ण नहीं होगी ?

उत्तर जब तक यह भूमि लहू के लिए प्यासी रहेगी तब तक मनुजता पूर्ण नहीं होगी।

३) जीवन में व्याप्त अंधेरा कब मिटेगा ?

उत्तर जीवन में व्याप्त अंधेरा तभी मिट पाएगा जब मनुष्य स्वयं दीप बनकर अवतरित होगा।

४) मृत्यु शब्द का अर्थ लिखिए।

उत्तर मृत्यु शब्द का अर्थ नश्वर है।

❖❖❖❖

४

‘वैतरणी करोगे पर’ - शिवमंगलसिंह सुमन

इकाई की रूपरेखा :

४.१ इकाई का उद्देश्य
- ४.१ कवि परिचय / शिवमगंल सिंह ‘सुमन’
- ४.२ प्रस्तावना
- ४.३ भावार्थ / कथ्य
- ४.४ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
- ४.५ बोध प्रश्न
- ४.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

४. इकाई का उद्देश्य

- इस इकाई में कवि शिवमंगल सिंह ‘सुमन’ की पाठ्यक्रम में निर्धारित कविता की विवेचना की गई है । इससे आप -
- कविता का भावार्थ / कथ्य समझ सकेंगे ।
- कविता से चुने हुए अंश की व्याख्या कर सकेंगे ।
- कविता से संबंधित बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे ।

४.१ शिवमंगल सिंह ‘सुमन’ / कवि परिचय

शिवमंगल सिंह ‘सुमन’ का जन्म ५ अगस्त, १९१५ को उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के झगेरपूर गाँव में हुआ वह हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे । उन्होंने एम.ए. एवं पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त की, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय ने १९५० में डी. लिट्. उपाधि से उन्हें सम्मानित किया । २७ नवम्बर, २००२ को दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया ।

प्रमुख कविता संग्रह -

हिल्लोल (१९३९), जीवन के गान (१९४२), युग का मोल (१९४५), प्रलय सृजन (१९५०) आदि ।

४.२ प्रस्तावना -

'वैतरणी करोगे पार' कविता में कवि अपने युग के लोगों को (मनुष्य) अपने समय के परिष्कार का, अपने जीवन के उत्कर्ष का दायित्व दूसरों के ऊपर न डालकर अपने ऊपर लेने को कह रहे हैं ।

४.३ भावार्थ / कथ्य -

'वैतरणी करोगे पार'

शिवंगल सिंह 'सुमन' वैतरणी करोगे पार' कविता के माध्यम से अपनी शक्ति का प्रयोग करके जीवन में सफलता प्राप्त करने का संदेश देते हैं । उनके अनुसार मनुष्य की प्रवृत्ति हैं अपनी जिम्मेदारी दूसरे के ऊपर डाल देना। अत: इससे हम वैतरणी (एक मिथकीय नदी जो स्वर्ग के रास्ते में पड़ती है ।) पार नहीं कर सकेंगे। हमें अपनी प्रवृत्ति में परिवर्तन करना ही होगा।

कवि अपने युग के मानव को अपने समय के परिष्कार का, अपने जीवन के उत्कर्ष का दायित्व दूसरों के ऊपर न टालकर अपने ऊपर लेने का संदेश देते हैं। इसे दौर की इस प्रवृत्ति को देखकर कि यहाँ सब लोग दूसरों के कन्धों पर बैठकर अपनी नैया पार लगाना चाहते हैं, उन्हें वे अपंगो जैसा अभिनय करने से मना करना चाहते हैं तथा वे उन लोगो को अपनी टाँगे कटवा देने के लिए कहते हैं। ताकि जो पतझर फैला है, वह कुछ ढँक जाए । कम से कम एक बहाना हो जाए कि ये लोग कुछ कर ही नहीं सकते, क्योंकि नई बहार लाने के लिए तो पेड़-पौधों-पत्तों को खून से अर्थात परिश्रम से ही सींचना पड़ेगा।

कविवर सुमन कहते हैं कि यहाँ कोई भी उपवन का खाका बनने को तैयार नहीं, उनके अनुसार सब लोग फल-फूल पाना चाहते हैं, उसके लिए जो परिश्रम करना है, उसे करने को कोई तैयार नहीं । मेहनत करने अर्थात् स्वाद बनने के लिए तैयार होना ही होगा, तभी वैतरणी पार होगी।

४.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण -

वैतरणी करोगे पार
दूसरों के कन्धे पर
अन्धों की जमात में
अपंगों का अभिनय ?
कटवा दो अपनी टाँगें
टाँगे दो दरख्तों पर
नंगापन पतझर का
कुद्द ती ढक जाएगा ।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ शिवमंगल सिंह 'सुमन' रचित 'वैतरणी करोगे पार' से उद्दधृत हैं। यह कविता 'काव्य कुंज' पुस्तक में संकलित है। इसका संपादन हिन्दी अध्ययन मंडल, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई ने किया है ।

प्रसंग - इन पंक्तियों में कवि अपने युग के मनुष्य को अपने समय के परिष्कार का, अपने जीवन के उत्कर्ष का दायित्व दूसरों के ऊपर न डालकर अपने ऊपर लेने का संदेश दिया है ।

व्याख्या - ऊपर दी गई पंक्तियों के माध्यम से कवि इस दौर की प्रवृत्ति को देखकर कहते है कि यहाँ सब लोग दूसरों के कन्धों पर बैठकर अपनी नैया पार लगाना चाहते हैं, उन्हें वे कहते हैं कि अपंगो का अभिनय करने से बेहतर है कि अपनी टाँगें कटवा ही दो ताकि जो पतझर फैला है, वह कुछ ढँक जाए। हम अपनी गलतियों पर पर्दा डाल सकें।

विशेष -

१) मानव मूल्यों के पतन पर कवि ने चिंता व्यक्त की है।
२) कवि ने कविता का विषय सामायिक चुना है। इससे रोज - रोज हमारा सामना होता है।
३) कविता की भाषा सहज और सरल है ।
४) वैतरणी शब्द का सांकेतिक रूप में प्रयोग हुआ है ।

४.५ बोध प्रश्न -

१) 'वैतरणी करेंगे पार' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए?

२) 'वैतरणी करोंगे पार' कविता में कवि ने मनुष्य की किस प्रवृत्ति का चित्रण किया है? इसे सौदाहरण समझाइए।

३) 'वैतरणी करोंगे पार' कविता में वैतरणी का सांकेतिक अर्थ स्पष्ट करते हुए? कविता के भावार्थ को स्पष्ट कीजिए?

४) 'वैतरणी करोगे पार' कविता में कवि ने मानव मूल्यों के पतन पर चिंता व्यक्त की है। इस पर प्रकाश डालिए?

४.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

१) 'वैतरणी करोगे पार ' कविता के कवि कौन हैं?

उत्तर शिवमंगल सिंह सुमन' वैतरणी करोगे पार' कविता के कवि हैं।

२) 'वैतरणी करोगे पार' कविता में वैतरणी का क्या अर्थ है ?

उत्तर 'वैतरणी करोगे पार' कविता में वैतरणी का अर्थ है जीवन में सफलता प्राप्त करना। (वैतरणी - एक मिथकीय नदी जो स्वर्ग के रास्ते में पड़ती है।)

३) 'वैतरणी करोगें पार' कविता में मनुष्य कैसे वैतरणी पार करना चाहता है ?

उत्तर 'वैतरणी करोगें पार' कविता में मनुष्य दूसरों के कन्धे पर वैतरणी पार करना चाहता है।

४) अपंगो सा अभिनय कौन करता है ?

उत्तर दूसरों के कन्धे पर वैतरणी पार करने वाला अपंगो सा अभिनय करता है।

५) प्लास्टिक के फूलों से क्या सजाए जाने का शौक चर्राया है ?

उत्तर प्लास्टिक के फूलों से बाग को सजाये जाने का शौक चर्राया है।

६) किसे पार करने के लिए कवि कहते हैं ?

उत्तर वैतरणी पार करने के लिए कवि कहते हैं।

७) कवि पतझर का नंगापन दूर करने के लिए क्या कहते हैं ?

उत्तर कवि पतझर का नंगापन दूर करने के लिए अपनी टाँगों को कटवाने के लिए कहते हैं।

८) कवि के अनुसार किसका पानी मर गया है ?

उत्तर कवि के अनुसार मालियों की पीढ़ी का पानी मर गया है ।

९) वर्तमान में लोग क्या नहीं बनना चाहते ?

उत्तर वर्तमान में लोग खाद नहीं बनना चाहते ।

१०) शिवमंगल सिंह 'सुमन' के दो कविता संग्रह का नाम लिखिए ?

उत्तर शिवमंगल सिंह 'सुमन ' के दो कविता संग्रह का नाम है - १) हिल्लोल तथा
२) जीवन के गान

❖❖❖❖

४.१

‘बात बालेगी’ - शमशेर बहादुर सिंह

इकाई की रुपरेखा :

४.१ इकाई का उद्देश्य
- ४.१.१ कवि परिचय / शमशेर बहादुर सिंह
- ४.१.२ प्रस्तावना
- ४.१.३ भावार्थ / कथ्य
- ४.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
- ४.१.५ बोध प्रश्न
- ४.१.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

४.१ ईकाई का उद्देश्य-

- इस इकाई में कवि शमशेर बहादुर सिंह की पाठ्यक्रम में निर्धारित कविता की विवेचना की गई है । इससे आप -
- कविता का भावार्थ / कथ्य समझ सकेंगे।
- कविता से चुने हुए अंश की व्याख्या कर सकेंगे ।
- कविता से संबंधित बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे ।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे ।

४.१.१ शमशेर बहादुर सिंह / कवि परिचय

शमशेर बहादुर सिंह का जन्म १३ जनवरी, १९११ को देहरादून, उत्तर प्रदेश में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा देहरादून में हुई । युवाकाल में वे वामपंथी विचारधारा से प्रभावित हुए । शमशेर की कविताएँ आधुनिक काम— बोध के बहुत निकट हैं, जहाँ पाठक तथा श्रोता के सहयोग की स्थिति को स्वीकार किया जाता है । उनकी बिम्ब ‘रेडीमेड’ नहीं हैं , वह सामाजिक आस्वादन को पूरी छूट देता है । १२ मई, १९९३ को वे दिवगंत हो गये ।

कविता संग्रह - कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ, चुका भी हूँ नहीं मैं, इतने पास अपने आदि।

४.१.२ प्रस्तावना -

'बात बोलेगी कविता' में कवि सच्चाई के संबंध में अपनी कविता को खड़ी करते हैं । वे कहते है कि सच्चाई को प्रकट होने के लिए किसी और की आवश्यकता नहीं होती। वह स्वयं बोलती है ।

४.१.३ भावार्थ / कथ्य -

शमशेर बहादुर सिंह 'बात बोलेगी' कविता में सच्चाई के संबंध अपनी बात प्रस्तुत करते हैं । सच्चाई सच्चाई होती है, उसे प्रकट होने के लिए किसी के सहारे की जरूरत नहीं होती । उनकी कविता का अभिप्राय खोजना होता है, वे भाषा की निगूढ़ में अपनी बात को रखते हैं ।

कवि की यह कविता सच्चाई के पक्ष में खड़ी है। वे कहते हैं कि सच्चाई को प्रकट या प्रस्तुत होने के लिए किसी और की आवश्यकता नहीं होती। वह स्वयं बोलती है । जो सत्य है, समय उधर ही गति करता है और जिस जनता ने अपने भय को जीत लिया है, उसका सुख भी सत्य में ही निहित है ।

वर्तमान काल अथवा आज की दीनता , निर्धनता, और बौध्दिक दरिद्रता का सामना करने के लिए कवि आहवान करते हैं कि सब लोग एक स्वर में पूछें कि सत्य का क्या रंग हैं अर्थात इस कठिन समय के पीछे की सच्चाई क्या है। वह कहते हैं कि जनता का दु:ख तो एक ही हैं, राजनीति और धर्म के नारे और झंडे भले ही अनेक हैं ।

कवि जनता से एक होने का आहवान करते हैं और कहते हैं कि अगर वे ऐसा नहीं करेंगे तो उनकी स्वतंत्रता छिन जाएगी । उस समय हम कुछ नहीं कर सकेंगे ।

अत: सत्य के पक्ष में खड़ा होना होगा। तभी बात बोलेगी भी और भेद खोलेगी ।

४.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण -

'बात बोलेगी
हम नहीं।
भेद खोलेगी
बात ही।
सत्य का मुख
झूठ की आँखें
क्या – देखें!'

सदंर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ शमशेर बहादुर सिंह रचित 'बात बोलेगी' से उद्दधृत हैं । यह कविता 'काव्य कुंज' पुस्तक में संकलित है। इसका संपादन हिन्दी अध्ययन मंडल, मुम्बई विश्वविद्यालय मुम्बई ने किया है ।

प्रसंग - कवि की यह कविता सच्चाई के पक्ष में कही है । वे कहते हैं कि सच्चाई को प्रकट होने के लिए किसी और की आवश्यकता नहीं होती । वह स्वयं बोलती है ।

व्याख्या - उपर दी गई पंक्तियों के माध्यम से कवि सच्चाई को प्रकट अथवा प्रस्तुत होने के लिए किसी और की आवश्यकता नहीं होती। वह स्वयं बोलती है। कवि सच्चाई के पक्ष में खड़ा है । हमें भी सच्चाई के पक्ष में खड़ा रहना चाहिए । अत: हम केवल सत्य को ही देखें ।

विशेष - १) कवि सच्चाई के पक्ष में खड़ा है ।
२) सच्चाई स्वयं प्रकट होती है ।
२) कविता की भाषा सहज एवं सरल है ।
४) बात बोलेगी' पंक्ति का सांकेतिक अर्थ बहुत सरल है किन्तु उसका अर्थ निगूढ़ है ।

४.१.५ बोध प्रश्न -

१) 'बात बोलेगी' कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।
२) 'बात बोलेगी' कविता सच्चाई के पक्ष में कही है। इस पंक्ति पर प्रकाश डालिए।
३) 'बात बोलेगी' कविता में कवि वर्तमान काल की दीनता, निर्धनता और बौध्दिक दरिद्रता का चित्रण करते हैं इसे स्पष्ट कीजिए ।
४) 'बात बोलेगी' कविता में कवि सच्चाई के साथ न खड़े होने पर स्वतंत्रता छिन जाने की चिंता को क्यों प्रकट करते हैं? इसकी समीक्षा कीजिए।

४.१.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न -

१) 'बात बोलेगी' कविता के अनुसार भेद कौन खोलेगा ?

उत्तर 'बात बोलेगी' कविता के अनुसार भेद बात ही खोलेगी।

२) 'बात बोलेगी' कविता के कवि कौन हैं?

उत्तर 'बात बोलेगी' कविता के कवि शमशेर बहादुर सिंह है।

३) कौन बोलेगा ?

उत्तर बात बोलेगी ।

४) सत्य का रूख किसका रुख है ?

उत्तर सत्य का रूख समय का रूख है ।

५) किसमें सुख है ?

उत्तर सत्य में सुख है ।

६) बुद्धि कैसी है ?

उत्तर बुद्धि कंगाल है ।

७) सत्य के पक्ष में खड़े न होने पर क्या होगा ?

उत्तर सत्य के पक्ष में खड़े न होने पर स्वतंत्रता छिन जाएगी ।

८) सत्य का रंग क्या है? इसे कैसे पूछा जायेगा ?

उत्तर सत्य का रंग क्या है, इसे पूछने के लिए एक साथ आना होगा ।

९) शमशेर बहादुर का जन्म किस वर्ष हुआ ?

उत्तर शमशेर बहादुर का जन्म १३ जनवरी , १९११ में हुआ ।

१०) जनता का दु:ख कितने प्रकार का है ?

उत्तर जनता का दु:ख एक ही प्रकार का है।

४.२

‘बसंती हवा’ - केदारनाथ अग्रवाल

इकाई की रुपरेखा :

४.२ इकाई का उद्देश्य-
- ४.२.१ कविता परिचय / केदारनाथ अग्रवाल
- ४.२.२ प्रस्तावना
- ४.२.३ भावार्थ / कथ्य
- ४.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
- ४.२.५ बोध प्रश्न
- ४.२.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

४.२ इकाई का उद्देश्य-

- इस इकाई में कवि केदारनाथ अग्रवाल की पाठ्यक्रम में निर्धारित कविता की विवेचना की गई है । इससे आप -
- कविता का भावार्थ / कथ्य समझ सकेंगे।
- कविता से चुने हुए अंश की व्याख्या कर सकेंगे ।
- कविता से संबंधित बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे ।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे ।

४.२.१ केदारनाथ अग्रवाल / कवि परिचय-

केदारनाथ अग्रवाल का जन्म १ अप्रैल १९११ को कमासिन, बाँदा (उत्तर प्रदेश) में हुआ। बी.ए. इलाहाबाद विश्वविद्यालय से और एल. एल. बी. डी. ए. वी. कॉलेज कानपुर से की। वे प्रगतिशील काव्य-धारा के एक प्रमुख कवि हैं । कवि केदारनाथ की जनवादी लेखनी पूर्णरूपेण भारत की सोंधी मिट्टी की देन है ।

काव्य संग्रह - युग की गंगा (१९४७), नींद के बादल (१९४७), लोक और आलोक (१९५७) आदि ।

४.२.२ प्रस्तावना -

‘बसंती हवा’ कविता में कवि हवा और प्रकृति के अन्य उपादानों , जैसे कि पेड़ - पौधे आदि का मानवीकरण करते हुए बसंती हवा के बहने का बड़ा सजीव चित्र खींचा है ।

४.२.३ भावार्थ / कथ्य -

केदारनाथ अग्रवाल 'बसंती हवा' कविता के माध्यम से हवा और प्रकृति के अन्य उपादानों जैसे कि पेड़- पौधे आदि का मानवीकरण करते हुए बंसती हवा के बहने का बडा सजीव चित्र खींचा है । उन्हें प्रकृति का कवि कहा जाता है ।

कवि के अनुसार हवा अपने बारे में बताते हुए कहती है कि मैं वही हवा हूँ जो अनन्त समय से आकाश को थामे हुए है, जो पूरी पृथ्वी पर मीठा संगीत गुँजाती है, जो जीवों को प्रेम का अमृत पिलाती है । हवा कहती है कि मुझे देखों मैं कितनी मस्तमौला और बावली हूँ ।

मुझे कोई डर नहीं है, न कोई दोस्त न दुश्मन जिधर भी जाती हूँ हर चीज को प्यार से सहलाती, हिलाती जाती हूँ । खेतों में जाकर वह अलसी, सरसों और अरहरी के पौधों को हिलाती -डुलाती है ।

कविता के अन्तिम पद में प्रकृति के इस वितान में एक पथिक को लाकर कवि जैसे प्रकृति के मानवीकरण को चरम पर पहुँचा देता है । हवा अरहरी के पौधों को पास से गुजरते राहगीर के ऊपर घेर लेती है और हँसती है ।

४.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण-

'हवा हूँ, हवा, मैं बसंती हवा हूँ।
वही हाँ, वही जो युगों से गगन को
बिना कष्ट-श्रम के सम्हाले हुए हूँ,
हवा हूँ, हवा मैं बसंती हवा हूँ ।
वही हाँ, वही जो धरा का बसंती
सुसंगीत मीठा गुँजाती फिरी हूँ,
हवा हूँ, हवा, मैं बसंती हवा हूँ।'

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ केदारनाथ अग्रवाल रचित 'बसंती हवा' से उद्धृत है । यह कविता 'काव्य कुंज' पुस्तक में संकलित है। इसका संपादन हिन्दी अध्ययन मंडल, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई ने किया है।

प्रसंग - इन पंक्तियों में कवि ने हवा और प्रकृति के अन्य उपादानों जैसे कि पेड़-पौधे आदि का मानवीकरण करते हुए बंसती हवा के बहने का बड़ा सजीव चित्र खींचा है ।

व्याख्या - ऊपर दी गई पंक्तियों के माध्यम से कवि हवा और प्रकृति के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त करते हैं । केदारनाथ अग्रवाल को प्रकृति का कवि कहा जाता है ।

हवा अपने बारे में बताते हुए कहती है कि मैं वही हवा हूँ जो अनन्त समय से आकाश को थामे हुए है, जो पुरी पृथ्वी पर मीठा संगीत गुँजाती है, जो जीवों को प्रेम का अमृत पिलाती हैं। हवा कहती हैं कि मुझे देखो मैं कितनी मस्तमौला और बावली हूँ ।

विशेष -

१) कवि ने हवा आरै प्रकृति के अन्य उपादानों जैसे कि पेड़-पौधे आदि का मानवीकरण किया है।
२) कविता की पंक्तियों के आधार पर केदारनाथ अग्रवाल को प्रकृति का कवि कहा जा सकता है ।
३) कविता की भाषा सहज और सरल है ।
४) कविता मे बसंती हवा का विशेष चित्रण है ।

४.२.५ बोध प्रश्न -

१) 'बंसती हवा' कविता में कवि हवा और प्रकृति के अन्य उपादानों जैसे कि पेड़-पौधे आदि का मानवीकरण करते हैं । इस पर प्रकाश डालिए ?

२) 'बसंती हवा ? कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए ?

३) केदारनाथ अग्रवाल को प्रकृति का कवि कहा जाता है। 'बंसती हवा' कविता के माध्यम से समीक्षा कीजिए ?

४) 'बसंती हवा' कविता में हवा कहती है कि मुझे देखो मैं कितनी मस्तमौला और बावली हूँ। इस कथन पर अपने विचार लिखिए ?

४.२.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न -

१) 'बसंती हवा' कविता के कवि कौन हैं ?

उत्तर 'बसंती हवा' कविता के कवि केदारनाथ अग्रवाल हैं ।

२) हवा के अनुसार वह कौन सी हवा हैं ?

उत्तर हवा के अनुसार वह बसंती हवा हैं।

३) किसे प्रकृति का कवि कहा जाता है ?

उत्तर केदारनाथ अग्रवाल को प्रकृति का कवि कहा जाता है।

४) हवा प्राणियों को कौन - सा आसव पिलाकर जिलाये हुए है ?

उत्तर हवा प्राणियों को प्रेम - आसव पिलाकर जिलाये हुए है।

५) कौन कहता है कि वह मस्तमौला और बावली है ?

उत्तर हवा कहती है कि वह मस्तमौला और बावली है।

६) किसके पास न प्रेमी है और न दुश्मन ?

उत्तर हवा के पास न प्रेमी है और न दुश्मन।

७) कवि केदारनाथ अग्रवाल के दो काव्य संग्रह कौन-से हैं ?

उत्तर कवि केदारनाथ अग्रवाल के दो काव्य संग्रह है- युग की गंगा (१९४७) और नींद के बादल (१९४७)।

८) कवि ने किसका मानवीकरण किया है ?

उत्तर कवि ने हवा और प्रकृति के अन्य उपादानों जैसे कि पेड़-पौधे आदि का मानवीकरण किया है।

९) बसंती हवा में कौन हँसा ?

उत्तर बसंती हवा में सारी सृष्टि हँसी।

१०) बसंती हवा को देखकर कौन लजाया ?

उत्तर बसंती हवा को देखकर अरहरी लजायीं।

५

‘वाघ’ - केदारनाथ सिंह

इकाई की रुपरेखा :

५.० इकाई का उद्देश्य -
५.१ कवि परिचय / केदारनाथ सिंह
५.२ प्रस्तावना
५.३ भावार्थ / कथ्य
५.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
५.५ बोध प्रश्न
५.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

५.० इकाई का उद्देश्य -

इस इकाई में कवि केदारनाथ सिंह की पाठ्यक्रम में निर्धारित कविता की विवेचना की गई है । इससे आप -

- कविता का भावार्थ / कथ्य समझ सकेंगे ।
- कविता से चुने हुए अंश की व्याख्या कर सकेंगे ।
- कविता के संबंधित बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे ।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।

५.१ केदारनाथ सिंह / कवि परिचय -

केदारनाथ सिंह का जन्म सन् १९३४ में बलिया, उत्तर प्रदेश के चकिया गाँव में हुआ। आरम्भिक शिक्षा गाँव में बाद की शिक्षा हाईस्कूल से एम. ए. तक वाराणसी में । आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब विधान विषय पर सन् १९६४ में पीएच. डी. प्राप्त की । वे पेशे से अध्यापक थे।

काव्य संग्रह - अभी बिलकुल अभी, जमीन पक रही है, यहाँ से देखो आदि ।

५.२ प्रस्तावना -

‘वाघ’ कविता एक लम्बी कविता है जिसमें विभिन्न कविताएँ जीवन के विभिन्न पहलुओं में मौजुद हिंसा को दर्शाती हैं। यह कविता उसका आरम्भिक अंश है।

५.३ भावार्थ / कथ्य -

केदारनाथ सिंह 'वाघ' कविता के माध्यम से हमारे समय की विडम्बना को रेखांकित करते हुए उसमें एक संवेदनशील मनुष्य की उपस्थिति की तरफ ध्यान दिलाते हैं। यहाँ वह मनुष्य कवि है। उसने जीवन के अनुभवों को जिया है, उन्हे याद रखा है जो उसकी पीठ पर निशानों की तरह मौजूद हैं जैसे बाघ की पीठ पर धारियाँ होती हैं ।

वह कहता है कि अपनी बात जो मुझे कहनी है मैं सीधे कहूँगा, किसी काव्य उपादान का सहारा नहीं लूँगा, क्योंकि मैं ही समय हूं। मेरे नाखूनों में समय की चमक हैं, मेरी आत्मा की खुशी जो है वही इतनी नकारात्मक है कि घुटनों के दर्द के रूप मे प्रकट होती है और इस सदी में जिसे सत्य माना जाता है, दर असल वह झूठ है। मतलब यहाँ झूठ को सच माना जाता है।

कवि कहता है कि मैं अपने होंठों के कम्पन से कुछ कहने का प्रयास कर रहा हूँ, यही कम्पन कवि की पहचान है।

५.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण -

'बिम्ब नहीं
प्रतीक नहीं
तार नहीं
हरकारा नही.
मैं ही कहूँगा
क्योंकि मैं ही
सिर्फ मैं ही जानता हूँ।'

सदंर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ केदारनाथ सिंह रचित 'वाघ' (आमुख) से उद्धृत हैं। यह कविता 'काव्य कुंज' पुस्तक में संकलित है। इसका संपादन हिन्दी अध्ययन मंडल, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई ने किया है।

प्रसंग - इन पंक्तियो में कवि ने हमारे समय की विडम्बना को चित्रित करते हुए उसमे एक संवेदनशील मनुष्य की उपस्थिति की तरफ ध्यान दिलाते हैं।

व्याख्या -ऊपर दी गई पंक्तियों के माध्यम से कवि हमारे समय की विडम्बना को रेखांकित करते हुए उसमें एक संवेदनशील मनुष्य की उपस्थिती की तरफ ध्यान दिलाते हैं। यहाँ वह मनुष्य कवि है । उसने जीवन के अनुभवों को जीया हैं, उन्हे याद रखा है जो उसकी पीठ पर निशानों कि तरफ मौजुद हैं जैसे वाघ की पीठ पर धारियाँ होती है । वह कहता है कि अपनी बात जो मुझे कहनी है मैं सीधे कहूँगा, किसी काव्य- उपादान का सहारा नहीं लूँगा क्योंकि मैं ही समय हूँ। मेरे अनुभव मै ही जान सकता हूँ, केवल मैं ।

विशेष -
१) उपर्युक्त पंक्तियों मे कवि ने हमारे समय की विडम्बना का वर्णन किया है ।
२) कविता की भाषा सहज और सरल है ।

३) कविता मे कवि मनुष्य के रूप में विद्यमान है ।
४) कविता में कवि किसी काव्य उपादान का सहारा नहीं लेता ।

५.५ बोध प्रश्न -

१) 'बाघ' कविता में कवि हमारे समय की विडम्बना का चित्रण करते हैं । इस पर प्रकाश डालिए ?
२) 'बाघ' कविता में कवि किस रूप में उपस्थित है ? इसे स्पष्ट कीजिए।
३) 'बाघ' कविता मे कवि किसी काव्य उपादान का सहारा नहीं लेते । इस कथन की विवेचना किजिए ?
४) 'बाघ' कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

५.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न -

१) 'बाघ' कविता के कवि कौन हैं ?
उत्तर 'बाघ' कविता के कवि केदारनाथ सिंह हैं ।
२) 'बाघ' कविता कवि क्या रेखांकित करते हैं ?
उत्तर 'बाघ' कविता में कवि हमारे समय की विडम्बना को रेखांकित करते है ।
३) 'बाघ' कविता में कवि हमारे ध्यान में क्या लाना चाहते हैं ?
उत्तर 'बाघ' कविता में कवि हमारे ध्यान में एक संवेदनशील मनुष्य की उपस्थिति को लाना चाहते हैं।
४) कविता में कवि किस रूप में उपस्थित है ?
उत्तर कविता में कवि मनुष्य के रूप में उपस्थित है ।
५) कवि कविता मे किस का सहारा नहीं लेता ?
उत्तर कवि कविता में काव्य -उत्पादन का सहारा नहीं लेता ।
६) कवि के अनुसार सदी में किसे सत्य माना जाता है ?
उत्तर कवि के अनुसार सदी में जो झूठ है, उसे सत्य माना जाता है ।
७) कवि होंठों के कम्पन से क्या करने का प्रयास करता है ?
उत्तर कवि होंठो के कम्पन से कुछ कहने का प्रयास करता है ।
८) कवि की पहचान क्या है ?
उत्तर होंठो की कम्पन कवि पहचान हैं ।
९) बिम्ब नही, प्रतीक नहीं' पंक्ति किस कवि की है ?
उत्तर बिम्ब नहीं, प्रतीक नहीं, पंक्ति केदारनाथ सिंह की है ।
१०) केदारनाथ सिंह के किन्हीं दो काव्य संग्रह का नाम लिखिए ?
उत्तर केदारनाथ सिंह के दो काव्य संग्रह हैं - अभी बिलकुल अभी और जमीन पक रही है ।

❖❖❖❖

५.१

‘कहाँ तो तय था चिरागा हर एक घर के लिए’ - दुष्यंत कुमार

इकाई की रुपरेखा :

५.१ इकाई का उद्देश्य -
- ५.१.१ गज़लकार परिचय / दुष्यन्त कुमार
- ५.१.२ प्रस्तावना
- ५.१.३ भावार्थ / कथ्य
- ५.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
- ५.१.५ बोध प्रश्न
- ५.१.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

५.१ इकाई का उद्देश्य -

इस इकाई में गज़लकार दुष्यन्त कुमार की पाठ्यक्रम में निर्धारित गज़ल की विवेचना की गई है । इससे आप -

- गज़ल का भावार्थ / कथ्य समझ सकेंगे ।
- गज़ल से चुने हुए अंश की व्याख्या कर सकेंगे ।
- गज़ल से संबंधित बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे ।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नो के उत्तर दे सकेंगे ।

५.१.१ दुष्यन्त कुमार / ग़ज़लकार परिचय

दुष्यन्त कुमार का जन्म १ सितम्बर १९३३ को राजापूर नवाद, जिला बिजनौर (उत्तर प्रदेश) में हुआ । शिक्षा एम. ए. (हिन्दी), इलाहाबाद । उन्होंने कविताएँ, उपन्यास तथा नाटक लिखे, लेकिन जो प्रसिध्दि उन्हें अपने ग़ज़ल-संग्रह ‘साए में धूप’ से मिली, वह उनकी कोई और रचना उन्हें नहीं दिला सकी / ३० दिसम्बर १९७५ को भोपाल (म. प्र.) मे उनका निधन हुआ।

- कविता संग्रह - सुर्य का स्वागत, जलते हुए वन का वसन्त
- ग़ज़ल - संग्रह - साये में धूप

५.१.२ प्रस्तावना -

'कहाँ तो तय था चिरागा हर एक घर के लिए' 'दुष्यंत' कुमार की एक प्रसिध्द ग़ज़ल है। इसमें वर्तमान सामाजिक राजनीतिक परिस्थिति को सम्बोधित करते हुए इस ग़ज़ल में आजादी के बाद भंग हुए सपनों की ओर संकेत किया गया है तथा अलग-अलग ढंग से जीवन की विषमताओं को चित्रित किया गया है।

५.१.३ भावार्थ / कथ्य -

दुष्यन्त कुमार 'कहाँ तो तय था चिरागा हर एक घर के लिए' ग़ज़ल के माध्यम से वर्तमान सामाजिक राजनीतिक परिस्थिति को सम्बोधित करते हुए आजादी के बाद भंग हुए सपनों की ओर संकेत करते हैं। इस ग़ज़ल में अलग-अलग ढंग से जीवन की विषतमताओं को रेखांकित किया गया है।

यह दुष्यन्त कुमार की एक प्रसिध्द ग़ज़ल है। ग़ज़ल मूलतः उर्दू की विधा होती है जिसमें हर शेर अलग होकर भी अपने शिल्पगत सूत्रों से ग़ज़ल से जुड़ा रहता है। इस ग़ज़ल के सभी शेर अपने कथ्य के लिहाज से भी एक दूसरे से सम्बध्द है।

ग़ज़लकार संघर्ष को भी नहीं छोडना चाहता, ग़ज़ल के पाँचवे शेर में वह कहता है कि शक्तिशाली लोगों को भले ही यह भरोसा हो चला हो कि कोई उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता, लेकिन आम आदमी अपने अधिकार की आशा नहीं छोड़ता । वह अपनी आवाज में असर पैदा करने की उम्मीद से जुड़ा हुआ है ।

५.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण -

वो मुतमइन हैं कि पत्थर पिघल नहीं सकता / मैं बेकरार हूँ आवाज में असर के लिए ।

संदर्भ -प्रस्तुत पंक्तियाँ दुष्यन्त कुमार रचित 'कहाँ तो तय था चरागाँ हर एक घर के लिए' ग़ज़ल से उद्धृत हैं। यह ग़ज़ल काव्य कुंज पुस्तक में संकलित है। इसका संपादन हिन्दी अध्ययन मंडल, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई ने किया है ।

प्रसंग -उपर्युक्त पंक्तियों मे ग़ज़लकार ने वर्तमान सामाजिक राजनीतिक परिस्थिति को सम्बोधित करते हुए आजादी के बाद भंग हुए सपनों की ओर संकेत करते हैं ।

व्याख्या - ऊपर दी गई पंक्तियों के माध्यम से ग़ज़लकार जीवन की विषमताओ को चित्रित करते हैं । लेकिन साथ ही ग़ज़लकार संघर्ष को भी नहीं छोड़ना चाहते, ग़ज़ल के शेर में वह कहते हैं कि शक्तिशाली लोगों को भले ही यह भरोसा हो चला हो कि कोई उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता, लेकिन आम आदमी अपने अधिकार की आशा नहीं छोड़ता । वह अपनी आवाज मे असर पैदा करने की उम्मीद से जुड़ा हुआ है ।

विशेष –

१) उपर्युक्त पंक्तियों में ग़ज़लकार ने वर्तमान सामाजिक - राजनीतीक परिस्थिति का चित्रण किया है।

२) ग़ज़ल में आम आदमी अपने अधिकार की आशा नहीं छोड़ता ।

३) ग़ज़ल की भाषा सहज सुन्दर लय युक्त है ।

४) यह दुष्यत्त कुमार की प्रसिद्ध ग़ज़ल है ।

५.१.५ बोध प्रश्न -

१) दुष्यंत कुमार ने ग़ज़ल के माध्यम से वर्तमानकाल सामाजिक राजनीतिक परिस्थिति का चित्रण किया है । इस कथन को स्पष्ट कीजिए ?

२) आम आदमी अपने अधिकार की आशा नहीं छोंडता। ग़ज़ल के आधार इसकी समीक्षा कीजिए ?

३) ग़ज़ल का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए ?

४) ग़ज़ल में आजादी के बाद भंग हुए सपनों की ओर संकेत है। इस पर प्रकाश डालिए ?

५.१.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न -

१) ग़ज़ल में किसे सम्बोधित किया गया है ?

उत्तर ग़ज़ल में वर्तमान सामाजिक -राजनीतिक परिस्थिति को सम्बोधित किया गया है ।

२) ग़ज़ल में क्या संकेत किया गया है ?

उत्तर ग़ज़ल मे आजादी के बाद भंग हुए सपनों की ओर संकेत किया गया है ।

३) ग़ज़ल मे क्या रेखांकित किया गया है ?

उत्तर ग़ज़ल में जीवन की विषमताओं को रेखांकित किया गया है ।

४) ग़ज़लकार क्या नहीं छोड़ना चाहता ?

उत्तर ग़ज़लकार संघर्ष नहीं छोड़ना चाहता ।

५) किसे भरोसा हो गया है कि कोई उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता ?

उत्तर शक्तिशाली लोगों को भरोसा हो गया है कि कोई उनका कुछ नही बिगाड़ सकता ।

६) आम आदमी क्या नहीं छोड़ता ?

उत्तर आम आदमी अपने अधिकार की आशा नही छोड़ता ।

७) आम आदमी किस उम्मीद से जुड़ा हुआ है ?

उत्तर आम आदमी आपनी आवाज में असर पैदा करने की उम्मीद से जुड़ा हुआ है।

८) ग़ज़ल मूलत: किस भाषा की विधा है ?

उत्तर ग़ज़ल मूलत: उर्दू भाषा की विधा है ।

९) ग़ज़ल के ग़ज़लकार कौन है ?

उत्तर ग़ज़ल के ग़ज़लकार दुष्यंत कुमार हैं ।

१०) दुष्यंत कुमार का जन्म किस जिले मे हुआ था ?

उत्तर दुष्यंत कुमार का जन्म १ सितम्बर १९३३ को राजपूर - नवादा, जिला बिजनौर (उत्तर प्रदेश) में हुआ था ।

५.२

‘चल पड़े जिधर दो डग मग में’ - सोहलाल द्विवेदी

इकाई की रुपरेखा :

५.२ इकाई का उद्देश्य
- ५.२.१ कवि परिचय / सोहलाल द्विवेदी
- ५.२.२ प्रस्तावना
- ५.२.३ भावार्थ / कथ्य
- ५.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
- ५.२.५ बोध प्रश्न
- ५.२.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

५.२ इकाई का उद्देश्य -

इस इकाई में कवि सोहलाल द्विवेदी की पाठ्यक्रम में निर्धारित कविता की विवेचना की गई है। इससे आप -

- कविता का भावार्थ / कथ्य समझ सकेंगे ।
- कविता से चुने हुए अंश की व्याख्या कर सकेंगे ।
- कविता से संबंधित बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे ।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे ।

५.२.१ सोहलाल द्विवेदी / कवि परिचय

सोहलाल द्विवेदी का जन्म सन १९०६ में फतेहपुर जिले के बिन्दकी नामक कस्बे में एक सम्पन्न परिवार में हुआ था । घर के अच्छे वातावरण का इनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। हाईस्कूल तक की शिक्षा फतेहपुर में प्राप्त करने के बाद मे उच्च शिक्षा प्राप्त करने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय चले गए। यहाँ से एम.ए., एल.एल बी, की उपाधि पाप्त की। हिन्दी साहित्य का यह अमर सपूत २१ फरवरी, सन १९८८ ई. को इस नश्वर संसार से विदा हो गया।

रचनाएँ - भैरवी, पूजागीत, दूध बताशा, शिशु भारती आदि ।

५.२.२ प्रस्तावना -

‘चल पड़े जिधर दो डग, मग में’ कविता में बापू की एक विशाल छवि का अंकन किया गया है।

५.२.३ भावार्थ / कथ्य -

सोहलाल द्विवेदी 'चल पड़े जिधर दो डग, मग में' कविता महात्मा गांधी को समर्पित करते हैं। राष्ट्रकवि द्विवेदी ने बापू की एक विशाल छवि का अंकन किया है। वे कहते हैं कि जिधर आप चले, जनसमूह उधर ही चल पड़ता है जिसे आप आशीर्वाद दें, उसकी रक्षा में अनेक हाथ लग जाते है, युग हमेशा आपको याद रखेगा ।

सोहलाल द्विवेदी जी गांधीवाद के प्रबल समर्थक थे। इस कविता में उन्होंने गांधी जी के प्रभाव की काव्यात्मक व्यंजना की है। उस दौर में गांधी जी एकमात्र ऐसे नेता थे जिन्हें साधारण जनता वास्तव में ही ह्रदय से सम्मान देती थी। उनकी बात मानती थी। उनके जैसा नेता जिसके साथ लाखों लोग एक साथ खड़े हो जाएँ, न तो आजादी से पहले कोई था, न बाद में हुआ ।

कहा जाता है कि ३० जनवरी , १९४८ को जब गांधी जी की हत्या हुई, पूरा देश रो उठा था जैसे उनके किसी बहुत निकट व्यक्ति का निधन हो गया हो।

५.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण -

चल पड़े जिधर दो डग, मग में,
चल पड़े कोटि पग उसी ओर,
गड़ गई जिधर भी एक दृष्टि,
गड़ गए कोटि दृग उसी ओर।

सदंर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ सोहलाल द्विवेदी रचित 'चल पड़े जिधर दो डग, मग में' से उद्धृत हैं। यह कविता 'काव्य-कुंज' पुस्तक में संकलित है। इसका संपादन हिन्दी अध्ययन मंडल, मुम्बई विश्वविद्यालय मुम्बई ने किया है ।

प्रसंग - इन पंक्तियों में राष्ट्रकवि सोहलाल द्विवेदी ने महात्मा गांधी की एक विशाल छवि का अंकन किया है ।

व्याख्या - ऊपर दी गई पंक्तियों के माध्यम से कवि बापू की एक विशाल छवि का अंकन करते हैं। उनके अनुसार जिधर आप चलें, जनसमूह उधर ही चल पड़ता है, जिसे आप आशीर्वाद दे उसकी रक्षा में अनेक हाथ लग जाते हैं, युग हमेशा आपको याद रखेगा। द्विवेदी जी गांधीवाद के प्रबल समर्थक थे ।

विषेश –

१) कवि ने पंक्तियाँ गाँधीजीं को समर्पित की हैं।

२) कविता की भाषा सहज और सरल है।

३) महात्मा गांधी के जीवन मूल्यों का चित्रण है।

४) गांधी जी को साधारण जनता ह्रदय से सम्मान देती थी।

५.२.५ बोध प्रश्न -

१) राष्ट्रकवि सोहलाल द्विवेदी की प्रसिध्द कविता 'चल पड़े जिधर दो डग मग में' महात्मा गांधी को समर्पित है। इस पर प्रकाश डालिए ?

२) 'चल पड़े जिधर दो डग, मग में' कविता का मूल भाव अपने शब्दो में लिखिए ?

३) राष्ट्रकवि सोहलाल द्विवेदी गांधीवाद के प्रबल समर्थक थे । पठित कविता के आधार पर समीक्षा कीजिए ?

४) महात्मा गांधी की साधारण जनता वास्तव में ही ह्रदय सम्मान देती थी। इसे स्पष्ट कीजिए ?

५.२.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न -

१) 'चल पड़े जिधर दो डग मग में' कविता के कवि कौन हैं ?

उत्तर 'चल पड़े जिधर दो डग मग में' कविता के कवि सोहलाल द्विवेदी हैं।

२) राष्ट्रकवि का सन्मान किसे मिला ?

उत्तर राष्ट्रकवि का सन्मान सोहलाल द्विवेदी को मिला।

३) 'चल पड़े जिधर दो डग मग में' कविता किसे समर्पित हैं ?

उत्तर 'चल पड़े जिधर दो डग मग में' कविता महात्मा गांधी को समर्पित है।

४) कविता में किसकी विशाल छवि का अंकन है ?

उत्तर कविता में बापू की विशाल छवि का अंकन है।

५) गांधीवाद का प्रबल समर्थक कौन था ?

उत्तर राष्ट्रकवि सोहलाल द्विवेदी गांधीवाद के प्रबल समर्थक थे।

६) किसे साधारण जनता ह्रदय से सम्मान देती थी ?

उत्तर महात्मा गांधी को साधारण जनता ह्रदय से सम्मान देती थी।

७) जनता किस नेता की बात मानती थी ?

उत्तर जनता महात्मा गांधी की बात मानती थी।

८) कवि के अनुसार युग-दृष्टा कौन है ?

उत्तर कवि के अनुसार युग-दृष्टा महात्मा गांधी है।

९) कवि के अनुसार युग -परिवर्तक कौन था ?

उत्तर कवि के अनुसार युग-परिवर्तक महात्मा गांधी थे।

१०) कविता में द्विवेदीजी ने गांधीजी के प्रभाव किस शैली में चित्रित किया है ?

उत्तर कविता में द्विवेदी जी ने गांधी जी के प्रभाव को काव्यात्मक व्यंजना में चित्रित किया है।

❖❖❖❖

६

‘हम दीवानो की क्या हस्ती’- भगवती चरण वर्मा

इकाई की रुपरेखा :

६.० इकाई का उद्देश्य -
- ६.१ कवि परिचय / भगवतीचरण वर्मा
- ६.२ प्रस्तावना
- ६.३ भावार्थ /कथ्य
- ६.४ संदर्भ साहित स्पष्टीकरण
- ६.५ बोध प्रश्न
- ६.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

६.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई में कवि भगवतीचरण वर्मा की पाठ्यक्रम में निर्धारित कविता की विवेचना की गई है । इससे आप -

- कविता का भावार्थ / कथ्य समझ सकेंगे ।
- कविता से चुने हुए अंश की व्याख्या करक सकेंगे ।
- कविता से संबंधित बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे ।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे ।

६.१ भगवतीचरण वर्मा / परिचय

भगवतीचरण वर्मा का जन्म ३० अगस्त, १९०३ को उनाव जिले (उत्तर प्रदेश) के शफीपुर गाँव में हुआ। इलाहाबाद से बी. ए. एल. एल. बी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। ५ अक्टूबर १९८१ को इनका निधन हुआ।

काव्य संग्रह - मेरी कविताएँ, सविनय और एक नाराज कविता आदि।

६.२ प्रस्तावना -

‘हम दीवानों की क्या हस्ती’ कविता में कवि जीवन के प्रति एक फक्कड़ और मस्ती भरा दृष्टिकोण प्रदर्शित करते हुए कहते हैं कि हमने अपने जीवन को दीवानगी के साथ जीया है, मस्ती के साथ जीया है।

६.३ भावार्थ / कथ्य -

भगवतीचरण वर्मा 'हम दीवानों की क्या हस्ती' कविता के माध्यम से जीवन के प्रति एक फक्कड़ और मस्ती भरा दृष्टिकोण प्रदर्शित करते हुए कहते हैं कि हमने अपने जीवन को दीवानगी के साथ जिया है, मस्ती के साथ जिया है। यह कविता व्यक्ति की एक विशेष मन:स्थिति की तरफ संकेत करती है, जब वह दैनिक जीवन की नियम बध्दता से ऊबकर स्वयं को स्वतंत्र कर लेता है और जीवन तथा संसार को एक खास लापरवाही से देखता है।

भगवतीचरण वर्मा ने 'हम दीवनों की क्या हस्ती ' कविता में अपनी तरल दृष्टि से संसार को देखते हुए मस्ती प्रेम और फक्कड़ता के माध्यम से सच्ची खुशी की तलाश करते हैं।

६.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण -

'हम दीवानों की क्या हस्ती', आज यहाँ कल वहाँ चले। मस्ती का आलम साथ चला, हम धूल उड़ाते जहाँ चले।

सदंर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ भगवतीचरण वर्मा रचित हम दीवानों क्या हस्ती से उद्धृत हैं। यह कविता 'काव्य-कुंज' पुस्तक में संकलित है। इसका संपादन हिन्दी अध्ययन मंडल मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई ने किया है ।

प्रसंग - इन पंक्तियो में कवि अपने जीवन के प्रति एक फक्कड़ और मस्ती भरा दृष्टिकोण प्रदर्शित करते हुए कहते हैं कि हमने अपने जीवन को दीवानगी के साथ जिया है ।

व्याख्या - ऊपर दी गई पंक्तियों के माध्यम से कवि जीवन के प्रति एक फक्कड़ और मस्ती भरा दृष्टिकोण प्रदर्शित करतें हुए कहते है कि हमने अपने जीवन को दीवानगी के साथ जिया है, मस्ती के साथ जिया है।

इस कविता में व्यक्ति की एक विशेष मन:स्थिती की तरफ संकेत करती है, जब वह दैनिक जीवन की नियम बध्दता से ऊबकर स्वयं को स्वतंत्र कर लेता है और जीवन तथा संसार को एक खास लापरवाही से देखता है।

विशेष -

१) कवि उपर्युक्त पंक्तियों में जीवन के प्रति एक फक्कड़ और मस्ती भरा दृष्टिकोण प्रदर्शित करतें हैं।

२) कविता की भाषा सहज और सरल है।

३) यह कविता व्यक्ति की एक विशेष मन:स्थिति की तरफ संकेत करती है।

४) भगवतीचरण वर्मा मुख्यत: उपन्यासकार है लेकिन उन्होंने कविताएँ भी लिखी हैं।

६.५ बोध प्रश्न -

१) 'हम दिवानों की क्या हस्ती' कविता का सारांश अपने शब्दो में लिखिए ?
२) 'हम दीवानो की क्या हस्ती' कविता में जीवन के प्रति एक फक्कड़ और मस्ती भरा दृष्टिकोण चित्रित हैं। इसे स्पष्ट कीजिए ?
३) 'हम दीवानों की क्या हस्ती' कविता में व्यक्ति की एक विशेष मन:स्थिति की तरफ संकेत है। इसकी समीक्षा कीजिए ?
४) 'हम दिवानों की क्या हस्ती' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए ?

६.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न -

१) 'हम दिवानों की क्या हस्ती' कविता के कवि कौन है ?
उत्तर 'हम दिवानों कि क्या हस्ती' कविता के कवि भगवतीचरण वर्मा हैं।
२) भगवतीचरण वर्मा मूलत: किस विधा के रचनाकार है ?
उत्तर भगवतीचरण वर्मा मूलत: उपन्यास विधा के रचनाकार हैं।
३) भगवतीचरण वर्मा के दो काव्य संग्रह कौन से है ?
उत्तर भगवतीचरण वर्मा के दो काव्य-संग्रह हैं - मेरी कविताएँ तथा सविनय और एक नाराज कविता।
४) इस कविता में कवि जीवन के प्रति कौन सा दृष्टिकोण रखते हैं ?
उत्तर इस कविता में कवि जीवन के प्रति एक फक्कड़ और मस्ती भरा दृष्टिकोण रखते हैं।
५) कवि अपने जीवन को कैसे जीता है ?
उत्तर कवि अपने जीवन को दीवानगी के साथ जीता है।
६) यह कविता किस मन:स्थिति की तरफ संकेत करती है ?
उत्तर यह कविता व्यक्ति की एक विशेष मन:स्थिति की तरफ संकेत करती है।
७) कवि कैसे स्वतंत्र होते हैं ?
उत्तर कवि दैनिक जीवन की नियमबध्दता से ऊबकर स्वंय को स्वतंत्र कर लेता है।
८) कवि जीवन और संसार को कैसे देखते है ?
उत्तर कवि जीवन और संसार को लापरवाही से देखते हैं।
९) कवि की कविता में कौन सी दृष्टि है ?
उत्तर कवि की कविता में तरल दृष्टि है।
१०) कवि के अनुसार हम किस दुनिया में हैं ?
उत्तर कवि के अनुसार हम भिखमंगो की दुनिया में है।

❖❖❖❖

६.१

'किस्सा जनतंत्र' - धूमिल

इकाई की रुपरेखा :

६.१ इकाई का उद्देश्य
- ६.१.१ कवि परिचय / सुदामा पाण्डेय 'धूमिल'
- ६.१.२ प्रस्तावना
- ६.१.३ भावार्थ / कथ्य
- ६.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
- ६.१.५ बोध - प्रश्न
- ६.१.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न -

६.१ इकाई का उद्देश्य

इस इकाई में कवि सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' की पाठ्यक्रम में निर्धारित कविता की विवेचना की गई है । इससे आप -

- कविता का भावार्थ / कथ्य समझ सकेंगे ।
- कविता से चुने हुए अंश की व्याख्या कर सकेंगे ।
- कविता से संबंधित बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे ।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे ।

६.१.१ सुदामा पाण्डेय 'धुमिल'/कवि परिचय-

धूमिल का जन्म ९ नवम्बर १९३६ को गाँव खेवली, बनारस (उत्तर प्रदेश) में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव मे तथा कूर्मि क्षत्रिय इंटर कॉलेज, हरहुआ से १९५३ में हाईस्कूल किया।

धूमिल जी हिन्दी की समकालीन कविता के दौर के मील के पत्थर सरीखे कवियो में एक है। उनका निधन १० फरवरी सन् १९७५ को हुआ।

प्रकाशित साहित्य -

संसद से सड़क तक (१९७२), कल सुनना मुझे और सुदामा पाण्डेय का लोकतंत्र (१९८३)।

६.१.२ प्रस्तावना -

'किस्सा जनतंत्र' कविता में कवि एक निम्न मध्यमवर्गीय परिवार की दारूण कथा कहते हैं। जिसके घर में खाने को भी पर्याप्त वस्तु नहीं है। धूमिल हमारे देश के जनतंत्र पर एक गहरी आलोचनात्मक टिप्पणी करते हैं।

६.१.३ भावार्थ / कथ्य

सुदामा पाण्डेय 'धूमिल', 'किस्सा जनतंत्र' कविता उनके कविता संग्रह 'कल सुनना मुझे' से ली गई है। इस कविता में वे एक निम्न मध्यमर्गीय परिवार की दारूण कथा कहते हैं। जिसके घर मे खाने को भी पर्याप्त वस्तु नहीं है। रसोई में गृहिणी के घुसने से लेकर उसके थोड़े आटे से रोटी बनाने, और पति द्वारा खाना खाकर दफ्तर के लिए निकलने तक की कहानी बहुत मार्मिक ढंग से बताते हैं । आटा इतना कम है कि आँगन में खेलते बच्चों को भी पूरा नहीं पड़ेगा, स्त्री रोटियाँ बनाते हुए हिसाब लगाती रहती है कि किसको कितनी रोटी दी जाए। पति की थाली में तीन रोटी आती हैं वह उन्हें देखकर दुख से भर उठता है, फिर खाकर काम पर निकल जाता है और रास्ते मे जब उसे साइकिल रोकनी पड़ती है तो उसे याद आता है कि जल्दी में पत्नी को चूमना वह फिर भूल गया। पत्नी जिसने रोटियों की गिनती में भी अपने आपको शामिल नहीं किया। इस मर्म भेदी कविता से धूमिल हमारे देश के जनतंत्र पर एक गहरी आलोचनात्मक टिप्पणि करते हैं।

६.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण -

लगभग भागते हुए चेहरे के साथ,
दफ्तर जाने लगती है
सहसा चौरास्ते पर जली लाल बत्ती जब,
एक दर्द हौले से हिरदै को हूल गया
ऐसी क्या हड़बड कि जल्दी मे पत्नी को चूमना .. देखो, फिर भूल गया ।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' रचित 'किस्सा जनतंत्र' से उद्धृत हैं। यह कविता 'काव्य-कुंज' पुस्तक में संकलित है। इसका संपादन हिन्दी अध्ययन मंडल, मुंम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई ने किया है।

प्रसंग - इन पंक्तियों में कवि ने एक निम्न मध्यमवर्गीय परिवार की दारूण कथा कहते हैं, जिसे घर में खाने को भी प्रर्याप्त वस्तु नहीं हैं।

व्याख्या - ऊपर दी गई पंक्तियों के माध्यम से कवि कहते है कि स्त्री रोटियाँ बनाते हुए हिसाब लगाती रहती है कि किसको कितनी रोटी दी जाए । पति की थाली में तीन रोटी आती हैं, वह उन्हें देखकर दुख से भर उठता है, फिर खाकर काम पर निकल जाता है और रास्ते में जब उसे साइकल रोकनी पड़ती है तो उसे याद आता है कि जल्दी में पत्नी को चुमना वह फिर भूल गया

विशेष -

१) ऊपर दी गई पंक्तियों में एक निम्न मध्यमवर्गीय परिवार की दारूण कथा का वर्णन हैं।
२) कविता की भाषा सरल है।
३) कविता से धूमिल हमारे देश के जनतंत्र पर एक गहरी आलोचनात्मक टिप्पणि करते हैं।
४) धूमिल की यह कविता अनेक कविता संग्रह 'कल सुनना मुझे' से ली गई है।

६.१.५ बोध प्रश्न

१) 'किस्सा जनतंत्र' कविता का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए ?
२) धूमिल किस्सा जनतंत्र कविता में एक निम्न मध्यमवर्गीय परिवार की दारूण कथा को चित्रित करते हैं। इसकी समीक्षा किजिए ?
३) धूमिल 'किस्सा जनतंत्र' कविता में देश के जनतंत्र पर एक गहरी आलोचनात्मक टिप्पणी करते हैं । इस कथन पर प्रकाश डालिए ?
४) 'किस्सा जनतंत्र' कविता में सहज प्रेम का चित्रण किया गया है। इस पर प्रकाश डालिए ?

६.१.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न –

१) किस्सा जनतंत्र कविता के कवि कौन हैं ?
उत्तर किस्सा जनतंत्र कविता के कवि सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' हैं ।
२) धूमिल का पूरा नाम क्या हैं ?
उत्तर धूमिल का पूरा नाम सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' है ।
३) किस्सा जनतंत्र कविता धूमिल के किस संग्रह से ली गई है ?
उत्तर 'किस्सा जनतंत्र'कविता में धूमिल के 'कल सुनना मुझे' नामक संग्रह से ली गई है।
४) 'किस्सा जनतंत्र' कविता में किसकी दारूण कथा हैं ?
उत्तर 'किस्सा जनतंत्र' कविता में निम्म मध्यवर्गीय परिवार की दारूण कथा हैं।
५) पति की थाली मे कितनी रोटी आती हैं ?
उत्तर पति की थाली में ३ रोटी आती है।
६) कितने बच्चे टा टा कहते हैं ?
उत्तर दो बच्चे टा टा कहते हैं।
७) साइकिल कैसी थी ?
उत्तर साइकिल खटर – पटर एक ढड्डा सी थी।
८) पति क्या भूल जाता है ?
उत्तर पति जल्दी में पत्नी को चूमना भूल जाता है।
९) धूमिल कविता में किसका किस्सा कहते हैं ?
उत्तर धूमिल कविता में लोकतंत्र का किस्सा कहते हैं।
१०) धूमिल किस पर आलोचनात्मक टिप्पणी करते हैं ?
उत्तर धूमिल हमारे देश के जनतंत्र पर एक गहरी आलोचनात्मक टिप्पणी करते हैं।

❖❖❖❖

६.२

'विद्रोहिणी'

- सुशीला टाकभौरे

इकाई की रुपरेखा :

६.२ इकाई का उद्देश्य –
- ६.२.१ कवि परिचय / सुशीला टाक भौरे
- ६.२.२ प्रस्तावना
- ६.२.३ भावार्थ / कथ्य
- ६.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
- ६.२.५ बोध प्रश्न
- ६.२.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

६.२ इकाई का उद्देश्य-

- इस इकाई में कवयित्री सुशीला टाकभौरे की पाठ्यक्रम में निर्धारित कविता की विवेचना की गई है । इससे आप –
- कविता का भावार्थ / कथ्य समझ सकेंगे ।
- कविता से चुने हुए अंश की व्याख्या कर सकेंगे ।
- कविता से संबंधित बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे ।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे ।

६.२.१ सुशीला टाकभौरे / कवि परिचय –

सुशीला टाकभौरे का जन्म ४ मार्च १९५४ को बानापुरा, सिकनी मालवा, होशंगाबाद (म. प्र.) में हुआ । वे दलित स्त्री रचनाकारों में आज अग्रणी स्थान रखती हैं ।

कविता संग्रह – स्वाति बूंद और खरे मोती, तुमने उसे कब पहचाना, यह तुम भी जानो, हमारे हिस्से का सूरज आदि।

६.२.२ प्रस्तावना –

'विद्रोहिणी' कविता में कवयित्री स्त्री के ऊपर समाज द्वारा थोपी गई वर्जनाओं का विरोध करती हैं जो उसे अपंग जैसा बना देती है ।

६.२.३ भावार्थ / कथ्य –

'विद्रोहिणी'

कवयित्री सुशील टाकभौरे 'विद्रोहिणी' कविता के माध्यम से स्त्री के ऊपर समाज द्वारा थोपी गई वर्जनाओं का विरोध करती हैं जो उसे अपंग जैसा बना दैती हैं । वह कहती हैं कि परम्पराओं की दी हुई बैसाखियों के सहारे वे लंगड़ो की तरह चलती रहीं, लेकिन उन्हें अब खुला अनंत आसमान चाहिए। अपने भीतर भर रही घुटन को चीरकर अब वे अपनी आवाज को सुनाना चाहती हैं। प्रत्येक स्त्री कभी न–कभी इस अनुभव से गुजरती है जब उसे अपने व्यक्तित्व में खुलकर प्रकट होने के कारण समाज की तरफ से जाने क्या-क्या कहा जाता हैं। इसी भावबोध को कवयित्री ने इस कविता में सशक्त ढंग से व्यक्त किया है।

६.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण –

माँ बाप ने पैदा किया था
गंगा।
परिवेश ने लंगड़ा बना दिया
चलती रही
निश्चित परिपाटी पर
बैसाखियों के सहारे
कितने पड़ाव आए !

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ कवयित्री सुशीला टाकभौरे रचित 'विद्रोहिणी' से उद्धृत हैं। यह कविता 'काव्य कुंज' पुस्तक में संकलित है। इसका संपादन हिन्दी अध्ययन मंडल, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई ने किया है ।

प्रसंग - इन पंक्तियों में कवयित्री स्त्री के ऊपर समाज द्वारा थोपी गई वर्जनाओं का विरोध करती हैं जो उसे अपंग जैसा बना देती हैं।

व्याख्या - ऊपर दी गई पक्तियों के माध्यम से कवयित्री स्त्री के ऊपर समाज द्वारा थोपी गई वर्जनाओं का विरोध करती हैं जो उसे अपंग जैसा बना देती है। वह कहती हैं कि परम्पराओं की दी हुई बैसाखियों के सहारे वे लंगड़ो की तरह चलती रहीं, लेकिन उन्हें अब खुला अनंत आसमान चाहिए। अपने भीतर भर रही घुटन को चीरकर अब वे अपनी आवाज को सुनाना चाहती हैं। प्रत्येक स्त्री कभी –न कभी इस अनुभव से गुजरती हैं। जब उसे अपने व्यक्तित्व में खुलकर प्रकट होने के कारण समाज की तरफ से जाने क्या क्या कहा जाता है।

विशेष –

१) ऊपर दी गई पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री स्त्री के ऊपर समाज द्वारा थोपी गई वर्जनाओं का विरोध करती हैं।

२) कविता की भाषा सरल है।

३) स्त्री परम्पराओं की दी हुई बैसाखियों के सहारे चल रही हैं।

४) सुशीला टाकभौरे दलित स्त्री रचनाकारों में अग्रणी स्थान रखती है। अतः स्त्री की समस्याओं को वे सशक्त ढंग से चित्रित कर सकी हैं।

६.२.५ बोध प्रश्न –

१) सुशीला टाकभौरे की कविता 'विद्रोहिणी' का केंन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए ?

२) 'विद्रोहिणी' कविता मे स्त्री के ऊपर समाज द्वारा थोपी गई वर्जनाओं का चित्रण है। इस पर प्रकाश डालिए ?

३) स्त्री परम्पराओं की दी हुई बैसाखियों के सहारे लंगड़ो की तरह चल रहीं है । इस कथन की 'विद्रोहिणी' कविता के आधार पर समीक्षा कीजिए ?

४) 'विद्रोहिणी' कविता में विद्रोहिणी कौन हैं ? इस पर अपने विचार लिखिए ?

६.२.६ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न –

१) 'विद्रोहिणी' कविता की कवयित्री कौन हैं ?

उत्तर 'विद्रोहिणी' कविता की कवयित्री सुशीला टाकभौरे हैं।

२) सुशीला टाकभौर का जन्म किस वर्ष हुआ ?

उत्तर सुशीला टाकभौरे का जन्म मार्च १९५४ को बानापुरा सिवनी मालवा, होशंगाबाद (म. प्र.) मे हुआ।

३) कवयित्री अनुसार समाज स्त्री पर क्या थोपता है ?

उत्तर कवयित्री के अनुसार समाज स्त्री पर वर्जनाओं को थोपता है ।

४) कवयित्री के अनुसार स्त्री किसकी बैसाखी के सहारे चल रही है ?

उत्तर कवयित्री के अनुसार स्त्री परम्पराओं की बैसाखी के सहारे चल रही है ।

५) स्त्री को किसने लंगड़ा बनाया ?

उत्तर स्त्री को परिवेश ने लंगड़ा बनाया।

६) स्त्री को क्या चाहिए ?

उत्तर स्त्री को अनन्त आसमान चाहिए।

७) स्त्री को गंगा के रूप में किसने पैदा किया ?

उत्तर स्त्री को गंगा के रूप में माँ बाप ने पैदा किया।

८) स्त्री कों आसमान की कैसी छत चाहिए ?

उत्तर स्त्री को आसमान की खुली छत चाहिए।

९) विद्रोहिणी बनकर कौन चीखता है ?

उत्तर विद्रोहिणी बनकर स्त्री चीखती है।

१०) अमानवी कौन हो गया है ?

उत्तर स्त्री अमानवी हो गई है।

७

'बड़े घर की बेटी'

प्रेमचन्द

इकाई की रूपरेखा :

७.० **इकाई का** उद्देश्य
७.१ प्रस्तावना
७.२ कहानी का सार
७.३ कहानी का संदेश
७.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
७.५ बोध प्रश्न
७.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

७.० इकाई का उद्देश्य

१. इस इकाई के अन्तर्गत हम हिन्दी साहित्य के कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द के संबंध में चर्चा करेंगे। प्रेमचन्द की प्रसिद्ध कहानी 'बड़े घर की बेटी' के माध्यम से हम यह देखेंगे कि छोटी–छोटी घटनाएँ किस प्रकार पूरे परिवार को प्रभावित करती हैं। साथ ही हम यह भी पढेंगे कि 'क्षमा' जैसे सद्गुण ही किसी व्यक्ति के बड़प्पन की पहचान होते हैं। इस कहानी को पढ़ने के बाद आप –

- प्रेमचन्द के जीवन और साहित्य से परिचित हो सकेंगे।
- कहानी में प्रयुक्त कठिन शब्दों एवं मुहावरों का अर्थ समझ सकेंगे।
- कहानी का सारांश बता सकेंगे।
- प्रस्तुत कहानी के उद्देश्य से अवगत हो सकेंगे।
- कहानी की भाषा – शैली से परिचित हो सकेंगे।

७.१ प्रस्तावना

लेखक परिचय - कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के समीप लमही नामक गाँव में हुआ था। इनका वास्तविक नाम धनपतराय था। बचपन में ही पिताजी की मृत्यु के बाद आर्थिक तंगी झेलते हुए उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की और एक प्राइमरी स्कूल में अध्यापक बन गए। नौकरी के दौरान उन्होंने बी.ए. की पढ़ाई की और शिक्षा विभाग में सब–डिप्टी इन्स्पेक्टर बन गए। लगातार स्वास्थ्य बिगड़ते जाने के कारण मात्र 56 वर्ष की

अवस्था में ही सन 1936 ई. में इस महान साहित्यकार का निधन हो गया। प्रेमचन्द ने लगभग 300 कहानियों की रचना की जो मानसरोवर नाम से सात खण्डों में संग्रहित हैं। सेवा सदन, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, रंगभूमि और गोदान आदि उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। प्रेमचन्द की कहानियों में सामाजिक यथार्थ अभिव्यक्त हुआ है। सामाजिक बुराइयों के विरूद्ध आवाज उठाती हुई उनकी कहानियाँ आदर्श की तरफ उन्मुख होती हैं।

७.२ कहानी का सार

'बड़े घर की बेटी' एक संयुक्त परिवार की कहानी है। बेनीमाधव सिंह गौरीपुर गाँव के एक छोटे जमीनदार थे। उनके दादा जी बहुत अमीर थे जिन्होंने गाँव में मंदिर और तालाब आदि बनवाए थे लेकिन मुकादमों के चक्कर में अब उनकी आधी सम्पत्ति ही बची थी। बेनीमाधव सिंह के दो बेटे थे – श्रीकंठ सिंह और लालबिहारी सिंह। बड़े बेटे श्रीकंठ सिंह बी.ए. पास थे। वह भारतीय संस्कृति और संयुक्त परिवार के समर्थक थे। उनका विवाह भूप सिंह की बेटी आनंदी के साथ हुआ था। दूसरा बेटा लालबिहारी एक पहलवान और अनपढ़ युवक था। एक दिन दाल में घी डालने की बात को लेकर आनन्दी और लालबिहारी में झगड़ा हो गया। आनंदी ने घर में घी समाप्त हो जाने की बात कही तो लालबिहारी को लगा कि वह उसके घर को तुच्छ समझ रही है। इसलिए तिनकते हुए उसने कहा कि – ''तुम्हारे मायके में तो जैसे घी की नदी बहती है।''

आनंदी भी अपने मायके की बुराई नहीं सुन सकती थी इसलिए मायके की तारीफ करती हुई बोली – ''हाथी मरा तो भी नौ लाख का।''

लालबिहारी भाभी की यह धृष्टता सह नहीं सका और आनंदी के ऊपर जोर से खड़ाऊ फेंक दिया। आनंदी ने खड़ाऊ को तो अपने हाथों से रोक लिया लेकिन उसका हृदय बहुत दुखी हुआ।

श्रीकंठ सिंह जहाँ नौकरी करते थे वहाँ से केवल शनिवार को ही घर आते थे। आनंदी और लालबिहारी का झगड़ा गुरूवार को हुआ था इसलिए आनंदी को शनिवार तक अपने पति का इंतजार करना पड़ा। श्रीकंठ सिंह शनिवार की शाम को घर आये और बाहर बैठ कर गाँव के लोगों से बातें करने लगे। मौका देखकर लालबिहारी ने आनंदी की शिकायत की और औरत को मर्यादा में रहते हुए बात करने की चेतावनी भी दी। बेनीमाधव सिंह ने भी अपने छोटे बेटे का समर्थन करते हुए आनंदी को मर्यादा में रहने की सलाह दी। घर के अंदर आने पर रोते हुए आनंदी ने श्रीकंठ सिंह को घटना सभी घटनाओं की पूरी जानकारी दी। पत्नी का अपमान सुनकर वह क्रोधित हो उठे और सुबह होते ही अपने पिताजी से अलग होने का निर्णय सुना दिए। पिता बेनीमाधव सिंह घर का बँटवारा नहीं चाहते थे इसलिए समझाते हुए कहे कि –

लालबिहारी तुम्हारा भाई है। उससे कभी भूल–चूक हो तो कान पकड़ो लेकिन....

श्रीकंठ सिंह – लालबिहारी को मैं अपना भाई नहीं समझता।

बेनीमाधव सिंह – स्त्री के पीछे?

श्रीकंठ सिंह – जी नहीं, उसकी क्रूरता और अविवेक के कारण।

बाप–बेटे के झगड़े को सुनने के लिए गाँव के लोग धीरे–धीरे जमा होने लगे। कुछ उस झगड़े से प्रसन्न भी हो रहे थे। बढ़ते हुए झगड़े को देखकर बेनीमाधव सिंह ने श्रीकंठ सिंह के सामने घुटने टेक दिए और बोले कि – बेटा मैं तुमसे बाहर नहीं हूँ। तुम्हारा जो जी चाहे कहो, अब तो लड़के (लालबिहारी) से अपराध हो गया।

श्रीकंठ सिंह ने अपना निर्णय सुना दिया कि ''इस घर में या तो मैं रहूँगा या लालबिहारी।''

लालबिहारी अपने बड़े भाई की सभी बातें सुन रहा था। उसे बचपन की वह सभी बातें याद आ रही थीं जिसमें श्रीकंठ सिंह उसे प्यार किया करते थे। वह अपने किए पर पछतावा कर रहा था। उसे अपनी गल्ती का अहसास हो गया था। वह नहीं जानता था कि गुस्से में भाभी पर खड़ाऊँ फेंक देने के कारण घर का बँटवारा हो जाएगा। सब कुछ सोचकर लालबिहारी बहुत दुखी हुआ। वह आनंदी के पास जा कर बोला – ''भाभी, भैया ने निश्चय किया है कि वह मेरे साथ इस घर में नहीं रहेंगे। वह अब मेरा मुँह देखना नहीं चाहते, इसलिए अब मैं जाता हूँ। उन्हें फिर मुँह न दिखाऊँगा। मुझसे जो कुछ अपराध हुआ, उसे क्षमा करना।'' लालबिहारी की बातें सुनकर आनंदी का हृदय पिघल उठा। अब उसे झगड़ा बढ़ाने की बात पर पछतावा हो रहा था। उसने अपने पति श्रीकंठ सिंह को समझाने और लालबिहारी को माफ कर देने का प्रयास किया लेकिन, श्रीकंठ सिंह अब लालबिहारी को अपने साथ रखने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं थे। अन्त में लालबिहारी अपना पछतावा प्रकट करते हुए घर से जाने लगा तब आनंदी ने कहा – ''तुम्हें मेरी सौगन्ध, अब एक पग भी आगे न बढ़ाना।''

आनंदी और लालबिहारी की बातें सुनकर श्रीकंठ का हृदय पिघल गया। अन्त में दोनों भाइयों को गले मिलते देख बेनीमाधव सिंह बोले उठे – 'बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं। बिगड़ता हुआ काम बना लेती हैं।'

७.३ कहानी का संदेश

बड़े घर की बेटी एक चरित्र प्रधान कहानी है। इस कहानी के माध्यम से लेखक यह संदेश देना चाहता है कि कोई भी व्यक्ति किसी परिवार में जन्म लेने से बड़ा या छोटा नहीं होता बल्कि अपने कर्मों से बड़ा या छोटा होता है। संयुक्त परिवार की इस कहानी में छोटी सी बात पर लालबिहारी और आनंदी के बीच अहं को लेकर झगड़ा बढ़ता है और स्थिति परिवार के विभाजन तक पहुँच जाती है। ऐसे अवसरों पर गाँव के लोगों की मानसिकता का भी लेखक ने सुंदर चित्रण किया है। परिवार के सभी सदस्य बिगड़ती हुई परिस्थिति को विषम होने के पूर्व ही बदलते हुए दिखाई देते हैं। बेनीमाधव सिंह प्रारंभ में तो लालबिहारी का पक्ष लेते हैं लेकिन श्रीकंठ सिंह के बढ़ते क्रोध को देखकर एक तरह से बेटे के समक्ष आत्मसमर्पण कर देते हैं। वहीं क्रोध के पागलपन में अपनी ही भाभी को खड़ाऊँ से मारने वाला लालबिहारी अब घर छोड़कर जाने लगा है। ये सभी परिस्थितियाँ

आनंदी के हृदय को द्रवित कर देती हैं और वह पति से लालबिहारी की शिकायत करने के लिए स्वयं को ही धिक्कारने लगती है। शायद उसे यह पता होता कि, पति से देवर की शिकायत इतनी बड़ी समस्या बन जायेगी तो वह शिकायत करती ही नहीं। यही कारण है कि कहानी के अंत में वह लालबिहारी को जाने से रोकती है और अपने पति श्रीकंठ सिंह को शांत होकर लालबिहारी को माफ करने के लिए कहती है। आनंदी का यही प्रयास उस परिवार को बिखरने से बचा लेता है। घर का विभाजन रूक जाने पर बेनीमाधव सिंह को यह अहसास होता है कि बड़े घर की बेटियाँ बिगड़ते हुए काम को बना लेती हैं। इस रूप में यहाँ लेखक का उद्‌देश्य मनोवैज्ञानिक चित्रण के द्वारा एक ऐसा आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करना है जो यथार्थ की गलियों से होकर निकलता है। इस चरित्रप्रधान कहानी में बहू को बड़े घर की बेटी का गौरव उसके सद्‌गुणों के कारण और उसकी क्षमाशील प्रवृत्ति के कारण मिलता है।

७.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

अवतरण : ''लालबिहारी जल गया, थाली उठाकर ''पलट दी, और बोला – जी चाहता है, जीभ पकड़ कर खींच लूँ।''

सन्दर्भ : प्रस्तुत अवतरण आधुनिक हिन्दी साहित्य के कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द द्वारा लिखित 'बड़े घर की बेटी' कहानी से अवतरित है। इस कहानी में लेखक ने क्षमा और प्रेम को मानव का सर्वश्रेष्ठ गुण बताया है।

प्रसंग : आनंदी जब दोपहर का भोजन बना चुकी थी उस समय लालबिहारी चिड़िया का माँस पकाने को कहने लगा। उसके लिए घी कम होने की बात को लेकर दोनों में बहस हुई। उस समय आनंदी ने कहा कि जितना घी यहाँ आता है उतना तो मेरे मायके में नौकर–चाकर खा जाते हैं। यह बात सुनकर लालबिहारी चिढ़ गया और आनंदी को डाँटते हुए उक्त बातें कहने लगा।

स्पष्टीकरण : आनंदी ने जब कहा कि जितना घी यहाँ आता है, उतना तो मेरे घर के नौकर चाकर खा जाते हैं। तब लालबिहारी को अपने परिवार का अपमान महसूस हुआ। उसे लगा कि आनंदी उसे तुच्छ समझ रही है और उसके घर वालों की तुलना अपने मायके के नौकरों–चाकरों से कर रही है। इसलिए अत्यन्त क्रोधित होकर उसे दण्ड देने की बात कहने लगा। भूख और क्रोध के कारण उसने अपना विवेक खो दिया और भोजन की थाली पलट दी। इस समय लालबिहारी क्रोध से पागल हो रहा था इसलिए वह उचित–अनुचित का भेद करना भी भूल गया था और अपनी बड़ी भाभी की जीभ खींचने की बात कह दिया।

विशेष -

१. क्रोध से बावले व्यक्ति का चित्रण किया गया है।
२. मुहावरे का प्रयोग हुआ है – जीभ खींचना।

७.५ बोध प्रश्न

१. इस कहानी में बड़े घर की बेटी किसे कहा गया है? क्यों?
२. प्रस्तुत कहानी का उद्‌देश्य स्पष्ट कीजिए।
३. श्रीकंठ सिंह के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

७.६ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरीय प्रश्न

१) भूपसिंह कौन थे?
उत्तर : भूपसिंह आनंदी के पिताजी थे।

२) श्रीकंठ सिंह ने अपना रूप और गुण किसके लिए न्यौछावर कर दिया था?
उत्तर : श्रीकंठ सिंह ने अपना रूप और गुण बी.ए. की डिग्री के लिए न्यौछावर कर दिया था।

३) लालबिहारी और आनंदी का झगड़ा किस दिन हुआ था?
उत्तर : लालबिहारी और आनंदी का झगड़ा गुरूवार को हुआ था?

४) श्रीकंठ सिंह किस संस्कृति के समर्थक थे?
उत्तर : श्रीकंठ सिंह भारतीय संस्कृति के समर्थक थे।

५) माँस पकाने में आनंदी ने कितना घी डाला था?
उत्तर : माँस पकाने में आनंदी ने पाव भर घी डाला था।

६) लालबिहारी ने आनंदी पर क्या फेंक कर उसे मारा था?
उत्तर : लालबिहारी ने आनंदी पर खड़ाऊँ फेक कर मारा था?

७) बेनीमाधव के अनुसार बड़े घर की बेटियाँ क्या करती हैं?
उत्तर : बड़े घर की बेटियाँ बिगड़ता हुआ काम बना लेती हैं।

८) श्रीकंठ सिंह घर पर कब आते थे?
उत्तर : श्रीकंठ सिंह शनिवार की शाम को घर आते थे।

❖❖❖❖

७.१

'पुरस्कार'

– जयशंकर प्रसाद

इकाई की रूपरेखा :

७.१.० इकाई का उद्‌देश्य
७.१.१ प्रस्तावना
७.१.२ कहानी का सार
७.१.३ कहानी का संदेश
७.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
७.१.५ बोध प्रश्न
७.१.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

७.१.० उद्‌देश्य

- इस इकाई के अन्तर्गत हम हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार जयशंकर प्रसाद के जीवन परिचय से अवगत होंगे। साथ ही प्रसाद जी के रचना संसार से परिचित हो सकेंगे।
- कहानी के कठिन शब्दों एवं मुहावरों का अर्थ समझ सकेंगे।
- कहानी के सारांश से अवगत हो सकेंगे।
- प्रस्तुत कहानी के संदेश को समझ सकेंगे।
- कहानी की भाषा शैली से परिचित हो सकेंगे।

७.१.१ प्रस्तावना

लेखक परिचय - प्रसाद जी छायावाद के श्रेष्ठ कवि और नाटककार के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनकी कहानियाँ और निबंध भी हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। प्रसाद जी का जन्म सन 1889 में काशी (बनारस) में हुआ था। इनके पिता का नाम देवीप्रसाद था। परिवार में तंबाकू का व्यापार होने के कारण यह परिवार सुंघनी साहू के नाम से प्रसिद्ध था। पारिवारिक समस्याओं के कारण प्रसाद जी केवल आठवीं तक ही स्कूली शिक्षा प्राप्त कर सके। बाद में स्वाध्याय के द्वारा संस्कृत, पाली, उर्दू और अंग्रेजी आदि भाषाओं का उन्होंने गहन अध्ययन किया। सन 1937 में ही प्रसाद जी का देहावसान हो गया।

प्रसाद जी मूल रूप से नाटककार और कवि थे। फिर भी उन्होंने अनेक कहानियों और निबंधों की रचना की। उनकी प्रमुख रचनायें निम्नलिखित है :–

काव्य संग्रह : प्रेमपथिक, आँसू, झरना, लहर, कामायनी आदि।

नाटक : स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, अजातशत्रु, ध्रुवस्वामिनी, कामना, जन्मेजय का नागयज्ञ आदि।

उपन्यास : तितली, कंकाल, इरावती (जो अधूरा रह गया)

कहानी संग्रह : आँधी, प्रतिध्वनि, इन्द्रजाल, छाया और आकाशदीप।

प्रसाद जी मूलतः कवि थे। यही कारण है कि उनकी कहानियों में भावात्मकता की प्रधानता दिखाई देती है। ऐतिहासिकता और देशप्रेम उनके साहित्य के प्रधान अंग हैं।

७.१.२ कहानी का सार

'पुरस्कार' कहानी प्रसाद जी की सर्वाधिक चर्चित कहानियों में से एक है। यह कहानी स्पष्ट करती है कि व्यक्तिगत प्रेम और राष्ट्रप्रेम में से यदि एक का चुनाव करना हो तो राष्ट्रप्रेम का स्थान सर्वप्रथम आना चाहिए।

कहानी का प्रारंभ कोसल राज्य में प्रति वर्ष आयोजित होने वाले उस उत्सव से होता है जो बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया जाता था। इस उत्सव में आस–पास के सभी राजाओं को निमन्त्रित किया जाता था और पूरी प्रजा उसमें शामिल होती थी। सैनिकों द्वारा एक किसान का खेत चुना जाता था जिसके बदले में खेत की कीमत से चार गुना मूल्य की स्वर्णमुद्रायें उसे दी जाती थीं। इस उत्सव में इन्द्र की पूजा होती है और एक दिन के लिए राजा को हल चलाना पड़ता। खेत का मालिक राजा को बीज देने का काम करता था। उत्सव के बाद वह खेत राजा का हो जाता था।

इस वर्ष उत्सव के लिए मधूलिका का खेत चुना गया था। हल के पीछे राजा को बीज देने का काम वही कर रही थी। जब उसे राजा द्वारा स्वर्ण मुंद्रायें उसके खेत के पुरस्कार के रूप में दी गईं तो उसने उन मुद्राओं को राजा पर न्यौछावर करके बिखेर दिया। कारण पूछने पर बताया कि 'यह मेरे पिता–पितामहों की भूमि है। मैं इसका मूल्य नहीं ले सकती।' यह सारी घटनाएँ उस उत्सव में उपस्थित पड़ोसी राज्य मगध का राजकुमार अरूण देख रहा था।

उत्सव समाप्त हुआ। मधूलिका महुए के पेड़ के नीचे स्थित अपनी झोपड़ी में चली गई। रात में जब सभी विश्राम करने लगे उस समय अरूण मधूलिका की झोपड़ी के पास पहुँचा और कहा – मेरा हृदय आपकी छवि का भक्त बन गया है, देवी!

मधूलिका ने कहा – राजकुमार मैं कृषक बालिका हूँ आप नंदनबिहारी और मैं पृथ्वी पर परिश्रम करके जीने वाली। आज मेरी स्नेह की भूमि पर से मेरा अधिकार छीन लिया गया है। मैं दुख से विकल हूँ। मेरा उपहास न करो। मधूलिका के नकार दिए जाने पर अरूण दुखी होकर वापस लौट गया।

समय के साथ मधूलिका अपने जीवन यापन के लिए दूसरे के खेतों में काम करने लगी। अपने सद्‌गुणों से वह एक आदर्श बालिका बन गई थी। ठंडी के मौसम में एक दिन जब तेज बरसात हो रही थी और उसकी झोपड़ी की छत से पानी टपक रहा था उस समय उसे अपनी गरीबी पर दुख हो रहा था। ऐसे समय में उसे अरूण के प्रणय निवेदन की याद आने लगी और रोशनी से जगमगाता उसका महल मधूलिका की आँखों में तैर गया।

अचानक दरवाजे पर किसी ने आश्रय पाने की आवाज लगाई। मधूलिका ने देखा तो वही राजकुमार आज फिर दरवाजे पर खड़ा झोपड़ी में आश्रय माँग रहा है। अभी मधूलिका जिसे सोच ही रही थी उसे प्रत्यक्ष देख कर आश्चर्य में पड़ गई।

अरूण इस समय अपने राज्य से निर्वासित होकर जीविका की तलाश में आया था। उसके साथ सौ सैनिक भी थे। वह मधूलिका से नए राज्य की स्थापना करने की बात करने लगा। एक राजकुमार से प्रेम की बात सुनकर मधूलिका प्रसन्न हो रही थी। अरूण उसे रानी बनाने के सपने दिखा रहा था। अब उसकी बातों को मधूलिका सहर्ष स्वीकार कर रही थी।

अरूण के कहने पर मधूलिका ने अपने राजा से दुर्ग के दक्षिणी नाले के पास की जंगली जमीन को खेती के लिए माँग ली। वह राजा के वीर सैनिक सिंहमित्र की बेटी थी जो वाराणसी युद्ध में शहीद हो गए थे। इसलिए वह जमीन देने में राजा ने कोई संकोच नहीं किया।

अगले दिन अरूण के सैनिक दुर्ग के दक्षिण की जंगली जमीन को काट कर रास्ता बना रहे थे। जब शाम होने लगी तो उसने मधूलिका से झोपड़ी में चले जाने और रात को दुर्ग पर आक्रमण करके उस पर कब्जा कर लेने की बात कही।

मधुलिका जब अपनी झोपड़ी की तरफ अकेली चली तो उसका मन अपने से ही विद्रोह कर उठा। उसे लगा कि जिस देश की रक्षा के लिए उसके पिता ने अपने प्राण दे दिए उसी देश को वह परतन्त्र करा रही है – केवल अपने सुख के लिए। उसे लगा जैसे उसके पिता जी कहीं से उसे पुकार रहे हैं। इसी समय सैनिकों के साथ सेनापति सड़क पर आते दिखाई दिए। वह बीच में पागलों की तरह खड़ी हो गई और पूछने पर रात को अरूण द्वारा किए जाने वाले आक्रमण की जानकारी सेनापति को दे दी।

सेनापति उसे लेकर राजमहल गए। दुर्ग के दक्षिण तरफ से सैनिकों ने अरूण को बन्दी बना लिया। सुबह होने पर राजा द्वारा जनता के सामने अरूण को फाँसी की सजा सुनाई गई और मधूलिका से पुरस्कार माँगने के लिए कहा गया। राजा ने कहा – ''मेरे निज की जितनी खेती है, मैं सब तुझे देता हूँ।'' लेकिन, मधूलिका 'मुझे भी प्राणदण्ड मिले' कहती हुई बन्दी अरूण के पास जाकर खड़ी हो गई।

७.१.३ कहानी का संदेश

जयशंकर प्रसाद हिन्दी के एक ऐसे साहित्यकार हैं जिनके साहित्य में देशभक्ति के भाव सर्वत्र झलकते हैं। प्रस्तुत कहानी देश भक्ति की भावभूमि पर लिखी गई है। इस कहानी की प्रमुख पात्र मधूलिका कहानी के प्रारंभ में राजा द्वारा उत्सव के लिए जमीन चुने जाने पर राजाज्ञा का विरोध नहीं करती लेकिन, उत्सव के बाद अपनी जमीन के प्रतिदान में मिलने वाले पुरस्कार को स्वीकार न करते हुए कहती है –''राजकीय रक्षण की अधिकारिणी तो प्रजा है मन्त्रिवर!... महाराज को भूमि समर्पण करने में तो मेरा कोई विरोध नहीं था और न है, किन्तु मूल्य स्वीकार करना असम्भव हैं।''

मधूलिका का यह आत्मसम्मान आगे भी बना रहता है। वह मजदूरी करके अपना जीवनयापन कर लेती है लेकिन किसी से मदद की अपेक्षा नहीं करती। यहाँ तक कि उसकी खेती की जमीन ले लेने वाले राजा के पास भी सहायता माँगने नहीं जाती। इतना ही नहीं प्रथम बार प्रणय निवेदन करने वाले अरूण को नकार देने के पीछे भी उसका आत्मसम्मान ही था।

अरूण के दूसरी बार आने पर मधूलिका का हृदय उसकी तरफ आकर्षित होता है। उसके द्वारा दिखाए जाने वाले सपनों के प्रति भी मधूलिका के मन में एक स्वाभाविक आकर्षण जागता है। इसीलिए वह राजदुर्ग के दक्षिण की तरफ की जमीन राजा से माँगती है। लेकिन, जैसे ही वह अरूण के पास से अपनी झोपड़ी की तरफ चलती है उसका हृदय उसे धिक्कारने लगता हैं। वह सोचती है – जिस राज्य की रक्षा के लिए पिताजी ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिए वही राज्य मेरे लालच के कारण आज परतन्त्र हो जाएगा। यहाँ मधूलिका एक सच्चे देश भक्त के रूप में दिखाई देती है। वहीं कहानी के अन्त में पुरस्कार के बदले अरूण के पास जाकर खड़ी हो जाती है और अरूण के साथ ही अपने लिए भी प्राणदण्ड माँगती है। प्रसाद जी यहाँ स्पष्ट करना चाहते हैं कि हम अपने देश की रक्षा के लिए अपने व्यक्तिगत प्रेम को भी समर्पित कर सकते हैं। राष्ट्र प्रेम हमारे व्यक्तिगत जीवन के सुखों से भी श्रेष्ठ होता है।

७.१.४ सन्दर्भ सहित स्पष्टीकरण

''आज मधूलिका उस बीते हुए क्षण को लौटा लेने के लिए विकल थी। दारिद्रय की ठोकरों नें उसे व्यथित और अधीर कर दिया हैं।''

सन्दर्भ : प्रस्तुत अवतरण छायावाद के श्रेष्ठ साहित्यकार जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'पुरस्कार' कहानी से अवतरित है। इस कहानी में प्रसाद जी ने एक युवती के स्वाभिमान को चित्रित करते हुए देश प्रेम को सर्वश्रेष्ठ प्रेम बताया हैं।

प्रसंग : राजा द्वारा खेत ले लिए जाने के बाद मधूलिका धीरे–धीरे गरीब होती गई। बरसात में उसके छत से पानी टपक रहा था। उस समय वह अपनी गरीबी को बढ़ाकर देख रही थी और सोच रही थी कि यदि आज अरूण अपना प्रणय निवेदन लेकर आ जाता तो अवश्य स्वीकार लेती।

स्पष्टीकरण : जिस दिन उत्सव मनाया गया था उसी रात को अरूण मधूलिका के पास आकर अपना प्रेम प्रकट किया था। उस समय मधूलिका ने उसे नकार दिया था। खेती की जमीन चले जाने के बाद वह मजदूरी करने लगी थी। जीवन में अनेक चीजों का अभाव होने लगा था। इसीलिए जब बरसात हो रही है और छत से पानी टपकने लगता है तो मधूलिका को अरूण की याद आती है। वह सोचती है कि यदि उस दिन वह अरूण की बात मान लेती तो आज इतनी गरीबी का सामना उसे नहीं करना पड़ता। यदि आज अरूण वापस आ जाता तो उसकी बात अवश्य मान लेती। अब वह अपनी गरीबी से बाहर निकल जाना चाहती थी। उसकी गरीबी ने उसे व्याकुल कर दिया था।

विशेष :

१. मन के भावों की व्यग्रता प्रकट हुई है।

२. संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग।

७.१.५ बोध प्रश्न

१. पुरस्कार कहानी की संवेदना पर प्रकाश डालिए।

२. मधूलिका का चरित्र–चित्रण कीजिए।

३. प्रस्तुत कहानी के माध्यम से प्रसाद जी क्या संदेश देना चाहते हैं?

७.१.६ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरीय प्रश्न

१. उत्सव का नियम क्या था?

उत्तर : जिस व्यक्ति की जमीन उत्सव के लिए चुनी जाती उसे उस जमीन के मूल्य का चार गुना मूल्य पुरस्कार के रूप में दिया जाता था। एक दिन के लिए राजा कृषक बनते थे और जमीन का मालिक उन्हें बीज देता। बाद में वह जमीन राजा की जमीन हो जाती थी।

२. मधूलिका किसकी बेटी थी?

उत्तर : मधूलिका कौशल के शहीद वीर सैनिक सिंहमित्र की बेटी थी।

३. अरूण कौन था?

उत्तर : अरूण मगध का राजकुमार था।

४. मधूलिका की झोपड़ी किस पेड़ के नीचे थी?

उत्तर : मधूलिका की झोपड़ी मधूक (महुए) के पेड़ के नीचे थी।

५. मधूलिका अपने राजा से कहाँ की जमीन माँगी थी?

उत्तर : मधूलिका अपने राजा से राजदुर्ग के दक्षिणी नाले के पास की जंगली जमीन माँगी थी।

६. मधूलिका के पिता किस युद्ध में शहीद हुए थे?

उत्तर : मधूलिका के पिता वाराणसी के युद्ध में शहीद हुए थे।
७. अरूण को क्या दंड दिया गया था?
उत्तर : अरूण को प्राण दंड की सजा सुनाई गई थी।

८. मधूलिका नें अपने पुरस्कार में राजा से क्या माँगा?
उत्तर : मधूलिका ने अपने पुरस्कार में राजा से अपने लिए प्राणदंड माँगा।

९. राजा मधूलिका को पुरस्कार में क्या देना चाहते थे?
उत्तर : राजा मधूलिका को पुरस्कार में अपनी निज की पूरी खेती देना चाहते थे।

१०. अरूण के साथ कितने सैनिक थे?
उत्तर : अरूण के साथ एक सौ सैनिक थे।

७.२

'हार की जीत'

– सुदर्शन

इकाई की रूपरेखा :

७.२.० उद्‌देश्य
७.२.१ प्रस्तावना
७.२.२ कहानी का सार
७.२.३ कहानी का संदेश
७.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
७.२.५ बोध प्रश्न
७.२.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

७.२.० उद्‌देश्य

- इस इकाई के अन्तर्गत प्रसिद्ध साहित्यकार सुदर्शन का जीवन परिचय और उनका साहित्यिक परिचय पढ़ेगे।
- कहानी के सारांश से परिचित हो सकेंगे।
- कहानी का उद्‌देश्य समझ सकेंगे।
- कहानी की भाषा शैली के संबंध में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

७.२.१ प्रस्तावना

लेखक परिचय : हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक सुदर्शन का जन्म 1895 में सियालकोट (वर्तमान में पाकिस्तान) में हुआ था। इनका असली नाम पंडित बदरीनाथ भट्‌ट था। प्रारंभ में उर्दू में लेखन कार्य करने वाले सुदर्शन की कहानियाँ यथार्थ को लेकर आदर्श की तरफ उन्मुख दिखाई देती हैं। लाहौर की उर्दू पत्रिका 'हजार दास्ताँ' में उनकी अनेक कहानियाँ छपीं। उन्होंने कुछ समय तक फिल्म – पटकथा लेखन और निर्देशन भी किया। तीर्थ यात्रा, पत्थरों का सौदागर और पृथ्वी वल्लभ आदि सुदर्शन जी की प्रमुख रचनायें हैं। कई फिल्मों के लिए उन्होंने गीत भी लिखे। सन् 1967 में सुदर्शन जी का निधन हो गया।

अपने समय के अन्य कहानीकारों की तरह ही सुदर्शन जी भी हिन्दी और उर्दू में सहजता पूर्वक लेखन कार्य कर रहे थे। अंग्रेजों की दमनकारी नीति और महात्मा गाँधी की अहिंसात्मक नीति को इनकी कहानियों में देखा जा सकता है।

हार की जीत सुदर्शन जी की प्रथम कहानी है। यह कहानी उस समय की प्रख्यात पत्रिका सरस्वती में सन् 1920 में छपी थी।

७.२.२ कहानी का सार :

बाबा भारती को अपने घोड़े सुलतान से उतना ही प्यार था जितना एक माँ को अपने बेटे और किसान को अपनी खेती से होता है। सुलतान का रूप रंग और उसकी चाल लोगों का मन मोह लेती थी। क्षेत्र का कुख्यात डाकू खड्ग सिंह सुलतान के इन्हीं गुणों के कारण उस पर रीझ गया। वह एक दिन बाबा भारती के आश्रम पर घोड़े को देखने के बहाने पहुँचा। बाबा नें घोड़े को बड़े गर्व से दौड़ाकर दिखाया। खड्ग सिंह का लालच बढ़ गया। उसने जाते–जाते बाबा से कहा – ''बाबाजी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।''

यह सुनकर बाबाजी की चिन्ता बढ़ गई। वह सदा घोड़े की रखवाली में लगे रहते। महीनों बाद एक दिन सायंकाल बाबा घोड़े पर बैठकर कहीं जा रहे थे। अचानक एक विकलांग व्यक्ति की आवाज सुनाई दी। वह कह रहा था – ''बाबा, मैं दुखियारा हूँ। मुझ पर दया करो। रामावाला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।''

बाबा को दया आ गई। उन्होंने उस अपाहिज को घोड़े पर बैठा लिया और स्वयं घोड़े की लगाम पकड़ कर चलने लगे। अचानक उस अपाहिज नें उनके हाथ से लगाम छीन लिया और घोड़े को दौड़ाकर भागने लगा। बाबा नें ध्यान से देखा – यह तो खड्ग सिंह है। बाबा नें जोर से चिल्ला कर खड्ग सिंह को रूकने के लिए कहा। रूकने पर बाबा नें कहा – मुझे मेरा घोड़ा नहीं चाहिए। लेकिन, तुम इस घटना को किसी से मत कहना क्योंकि, लोगों को यदि इस घटना का पता चला तो वे दीन दुखियों पर विश्वास नहीं करेंगे। यह बात खड्ग सिंह के दिल को छू गयी। उसे लगा कि बाबा भारती बहुत ही ईमानदार हैं। उन्हें अपने घोड़े की नहीं बल्कि दीन–दुखियों की चिन्ता है। जिन पर से लोगों का विश्वास यदि उठ जायेगा तो कोई उनकी मदद नहीं करेगा। खड्ग सिंह का मन व्याकुल हो उठा। रात के अन्धकार में वह चुपके से बाबा का घोड़ा उनके अस्तबल में बाँधकर चला गया। जागने पर बाबा नें जब घोड़े को देखा तो बोले – 'अब कोई दीन–दुखियों से मुँह नहीं मोड़ेगा।'

७.२.३ कहानी का संदेश

सुदर्शन जी की कहानियों पर महात्मा गाँधी के अहिंसावाद और हृदय परिवर्तन के सिद्धांत का विशेष प्रभाव था। प्रस्तुत कहानी का प्रमुख पात्र खड्ग सिंह घोड़े को चुराने की योजना बनाता है। वह अपाहिज के रूप में आकर घोड़े को प्राप्त भी कर लेता है। लेकिन बाबा भारती की आवाज –''लोगों को यदि इस घटना का पता चला तो वे दीन–दुखियों पर विश्वास न करेंगे।'' यह उसके हृदय को व्याकुल कर देती है। उसे बाबा भारती की वह दयालुता दिखाई देती है। अपाहिज के रूप में आकर घोड़ा छीन लेने वाले अपने कार्य को वह अत्यंत तुच्छ समझने लगता है। बाबा भारती के प्रति उसका हृदय उमड़ पड़ता है और वह घोड़े को वापस उनके आश्रम में बाँध कर चला जाता है।

यह निश्चित है कि बाबा भारती यदि घोड़े को प्राप्त करने के लिए खड्ग सिंह के साथ बल का प्रयोग करते तो शायद इतनी सरलता पूर्वक वह घोड़ा वापस नहीं करता। लेकिन, बाबा की भलमनसाहत के समक्ष उसका हृदय पिघल जाता है। यह घटना इस बात को सिद्ध करती है कि जो काम दण्ड से नहीं हो सकता वहाँ प्रेम और अहिंसा का प्रयोग ही सर्वोचित होता है। सुदर्शन जी प्रस्तुत कहानी के माध्यम से अपनी इसी विचारधारा को अभिव्यक्त करते हैं।

७.२.४ सन्दर्भ सहित स्पष्टीकरण

''उन्हें केवल यह खयाल था कि कहीं लोग दीन–दुखियों पर विश्वास करना न छोड़ दें। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं देवता है।''

सन्दर्भ : प्रस्तुत अवतरण आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कहानीकार सुदर्शन द्वारा लिखित 'हार की जीत' शीर्षक कहानी से अवतरित है। इस कहानी में लेखक नें अहिंसा के माध्यम से हृदय परिवर्तन को श्रेष्ठ सिद्ध किया है।

प्रसंग : बाबा भारती के घोड़े को खड्ग सिंह एक अपाहिज के रूप में आकर छीन लेता है। बाबा उससे कहते हैं कि इस घटना को किसी को मत बताना। उस समय बाबा के प्रति खड्ग सिंह के मन में उठने वाले विचारों का वर्णन यहाँ किया गया है।

व्याख्या

खड्गसिंह की नजर पिछले कई महीनों से बाबा भारती के घोड़े पर लगी थी। इसके लिए वह अपाहिज का रूप धारण कर छल के माध्यम से बाबा का घोड़ा छीन लेता है। बाबा ने जब उससे कहा कि यदि इस घटना को लोग जान जायेगें तो कोई दीन–दुखियों, अपाहिजों पर विश्वास नहीं करेगा। यह सुनकर उसका हृदय पिघल गया। उसे लगा कि एक अपाहिज का वेष धारण कर मैनें उस अपाहिज वर्ग को कलंकित किया है जिसका जीवन परोपकारियों की भावना पर ही आधारित होता है। ऐसे अपाहिजों से जब लोगों का विश्वास उठ जाएगा तब कोई सचमुच के अपाहिजों की भी मदद कोई नहीं करेगा। बाबा को ऐसे सचमुच के अपाहिजों की ही चिन्ता है। उन्हें अब अपने घोड़े का मोह नहीं। जो घोड़ा उनके लिए कभी सर्वाधिक प्रिय था अब उससे अधिक प्रिय उनके लिए लाचार और अपाहिज लोग बन चुके हैं।

बाबा भारती की यह उदारता देख कर खड्गसिंह को लगा कि इतनी दयालुता तो केवल देवताओं में ही देखी जाती है। बाबा की इसी उदारता ने उसका हृदय परिवर्तन कर दिया और वह चुपके से बाबा का घोड़ा उनके आश्रम में बाँध कर चला गया।

विशेष

1. इन पंक्तियों में भावनात्मक परिवर्तन दिखाया गया है।
2. उदारता को दैवीय गुण के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
3. हिंसा पर अहिंसा की विजय दिखाई गई है।

७.२.५ बोध प्रश्न

१. बाबा भारती से खड्ग सिंह ने घोड़ा किस प्रकार छीन लिया?
२. सुलतान की प्रमुख विशेषाएँ बताइये।
३. खड्ग सिंह ने बाबा का घोड़ा कब और क्यों वापस कर दिया?
४. खड्ग सिंह का हृदय परिवर्तन कब और क्यों हो गया।

७.२.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न /लघुत्तरीय प्रश्न

१. बाबा भारती के घोड़े का नाम क्या था?
उत्तर : बाबा भारती के घोड़े का नाम सुलतान था।

२. बाबा भारती की चिन्ता क्यों बढ़ गई थी?
उत्तर : खड्ग सिंह द्वारा घोड़े को लेकर चले जाने की धमकी सुनकर बाबा भारती की चिन्ता बढ़ गई थी।

३. अपाहिज के रूप में कौन आया था?
उत्तर : अपाहिज के रूप में डाकू खड्ग सिंह आया था।

४. बाबा ने खड्ग सिंह से घोड़ा चुराने की बात किसी से न बताने के लिए क्यों कहा?
उत्तर : बाबा ने खड्ग सिंह से घोड़ा चुराने की बात किसी से न बताने के लिए कहा क्योंकि लोगों का विश्वास दीन–दुखियों, अपाहिजों से उठ जाएगा।

५. खड्ग सिंह द्वारा घोड़ा वापस कर देने पर बाबा खड्ग सिंह नें क्या कहा?
उत्तर : घोड़ा वापस मिल जाने पर बाबा ने कहा कि अब कोई दीन–दुखियों से मुँह नहीं मोड़ेगा।

८

'चीफ़ की दावत'

– भीष्म साहनी

इकाई की रूपरेखा :

८.० इकाई का उद्देश्य
८.१ प्रस्तावना
८.२ कहानी का सारांश
८.३ कहानी का संदेश
८.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
८.४ बोध प्रश्न
८.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

८.० उद्देश्य

- इस इकाई के अंतर्गत प्रसिद्ध साहित्यकार भीष्म साहनी के जीवन परिचय और उनके साहित्यिक योगदान से अवगत हो सकेंगे।
- कहानी का सार समझ सकेंगे।
- कहानी के उद्देश्य से परिचित हो सकेंगे।
- कहानी में प्रयुक्त मुहावरों, लोकोक्तियों को समझ सकेंगे।
- कहानी की भाषा–शैली से परिचित हो सकेंगे।

८.१ प्रस्तावना

लेखक परिचय - हिन्दी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार भीष्म साहनी का जन्म 8 अगस्त सन 1915 ई. को रावलपिण्डी (अब पाकिस्तान) में हुआ था। इनके पिता श्री हरबंस लाल साहनी और माता श्रीमती लक्ष्मीदेवी दोनो समाजसेवी थे। परिवार का वातावरण साहित्यिक होने के कारण बचपन से ही भीष्म साहनी का झुकाव साहित्य की ओर था। हिन्दी और संस्कृत की प्रारंभिक शिक्षा उन्होंने अपने घर पर ही प्राप्त की। बाद में लाहौर से अंग्रेजी में एम.ए. किया और पंजाब विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। हिन्दी, अंग्रेजी और पंजाबी के मर्मज्ञ साहनी जी उर्दू, फारसी और रूसी भाषाओं के भी अच्छे जानकार थे। विभाजन के बाद ये अपने भाई बलराज साहनी और पत्नी शीला साहनी के साथ मिलकर कुछ फिल्मों में भी कार्य किए। भीष्म जी अपने अंतिम दिनों तक लेखन कार्य करते रहे। इन्होंने लगभग एक सौ पचास कहानियों की रचना की जो भाग्यरेखा, पहला पाठ, भटकती राख, पटरियाँ, वाङचू, शोभा यात्रा, निशाचर, पाली और डायन आदि कहानी संग्रहों में संकलित हैं।

इनके प्रमुख उपन्यासों में झरोखा, कड़ियाँ, तमस, बसंती, मय्यादास की माड़ी तथा कुंतो और नीलू नीलिमा निलोफर का नाम विशेष रूप से लिया जाता है।

हानूश, कबिरा खड़ा बाजार में, माधवी, मुआवजे और रंग दे बसंती चोला जैसे प्रसिद्ध नाटकों के साथ–साथ भीष्म साहनी ने बाल साहित्य, निबंध और जीवनी जैसी विधाओं में भी लेखन कार्य किया।

८.२ कहानी का सार

मिस्टर शामनाथ ने अपने घर पर अपने दफ्तर के चीफ़ को दावत दिया था। जिस दिन वह उनके घर आये, यह कहानी उसी दिन की है।

शामनाथ अपनी पत्नी के साथ साफ़–सफ़ाई और सजावट कर रहे हैं। घर की सभी पुरानी चीजें छिपाते समय उनकी नज़र माँ के ऊपर जाती है। समस्या यह है कि बूढ़ी माँ को कहाँ छिपाया जाये। शामनाथ की पत्नी ने कहा कि माँ को पड़ोस की बुढ़िया के पास भेज देते है। वहीं रात भर पड़ी रहेंगी। लेकिन, शामनाथ को डर था कि यदि माँ उस पड़ोसी के घर चली जाएँगी तो वह बुढ़िया भी इनके घर आने लगेगी। जो उन्हें पसंद नहीं था। फिर माँ को खिला–पिला कर कमरे में बंद कर देने की उपाय भी सोची गई लेकिन ऐसा करने में यह डर था कि यदि माँ सो गईं और खर्राटें भरने लगीं तो सब काम बिगड़ जाएगा। अन्त में यह निश्चित किया गया कि जब तक अतिथि लोग बैठक में रहेंगे तब तक माँ बरामदे में बैठेंगी और जब वे लोग बरामदे में आयेंगे तो माँ गुसलखाने (बाथरूम) के रास्ते अन्दर चली जायेंगी। माँ को उस दिन खाना नहीं मिला क्योंकि उस दिन मांस–मछली बन रहा था और माँ शाकाहारी हैं। इसलिए उन्हें कुछ अलग से खाने की व्यवस्था नहीं की गई। इसके बाद भी माँ प्रसन्न थीं और माला फेरते हुए अपने बेटे की दावत अच्छी तरह पूरी हो जाने के लिए भगवान से प्रार्थना कर रही थीं।

शामनाथ ने देखा कि माँ के कपड़े पुराने लगे। उन्हें इस बात का डर था कि यदि चीफ़ की नजर माँ पर पड़ गई तो उनकी बेइज्जती हो जाएगी। इसलिए उन्होंने माँ से नए कपड़े और गहने पहनने के लिए कहा। माँ ने कहा कि गहने बेचकर वो पैसा तो तुम्हारी पढ़ाई में लग गया बेटे। यह बात शामनाथ को अच्छी नहीं लगी। उन्होंने उसे डाँटते हुए जितना पढ़ाई में लगा है उससे दो गुना ले लेने की बात कहने लगे। बेटे की इस प्रकार की बातें सुनकर माँ स्वयं को धिक्कारने लगीं।

साढ़े पाँच बजते–बजते घर के सभी लोग सजधज कर तैयार हो गए। माँ को हिदायत दे दी गई कि यदि चीफ कुछ पूछें तो उत्तर अवश्य दे देना। माँ अनपढ़ थी इसलिए वह उत्तर देने की बात से डरने लगीं। जैसे–जैसे अतिथियों के आने का समय नज़दीक आता, माँ के दिल की धड़कन बढ़ने लगी। वह डरी हुई थी कि चीफ यदि कुछ पूछ लिया तो उसे क्या उत्तर देगी।

पार्टी देर रात तक चलती रही। अपने–अपने गिलास खाली कर लोग खाने के लिए बरामदे में जाने लगे। शामनाथ रास्ता दिखाते आगे–आगे चल रहे थे। उन्होंने देखा कि माँ बरामदे में कुर्सी पर पैर ऊपर किए हुए बैठी–बैठी सो गई हैं। जोर–जोर से उसके खर्राटे आ रहे हैं और सिर कभी इधर तो कभी उधर झूल रहा है। यह देखते ही शामनाथ आग बबूला हो उठे और चीफ के साथ चल रहे

भारतीय अधिकारी एवं उनकी पत्नियाँ हँसने लगीं। हँसी की आवाज सुनकर माँ हड़बड़ाकर उठ बैठी। चीफ को माँ पर दया आ गई। उसने माँ से 'हाऊ डू यू डू' कह कर हाथ मिलाने लगा। घबरा कर माँ ने अपना बायाँ हाथ ही उसके हाथ में रख दिया। यह देखकर शामनाथ का क्रोध बढ़ गया। चीफ के कहने पर माँ ने एक लोकगीत की कुछ पंक्तियाँ सुनाई। जिसे सुनकर देसी अफसरों की स्त्रियों ने तालियाँ बजाई। अंग्रेज चीफ उस बूढ़ी माँ की सादगी देखकर बहुत खुश हुआ।

चीफ़ द्वारा पंजाब के गाँवों की दस्तकारी के संबंध में पूछने पर शामनाथ की माँ ने बहुत पहले की बनाई हुई एक फुलकारी लाकर दिखाई। चीफ को बड़े ही प्यार से फुलकारी का निरीक्षण करते देखकर शामनाथ ने कहा कि वह उन्हें नई फुलकारी माँ से बनवा कर दे देंगे। माँ चुप रहीं। फिर डरते–डरते धीरे से बोलीं – अब मेरी नजर कहाँ है, बेटा। बूढ़ी आँखे क्या देखेंगी। साहब के आगे बढ़ते ही माँ सबकी नजरें बचाती हुई अपने कमरे में चली गईं और उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। वह बार–बार भगवान से अपने बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना करने लगीं।

मेहमानों के चले जाने और आधी रात बीत जाने के बाद भी उन्हें नींद नहीं आ रही थी। अचानक उन्हें शामलाल ने आवाज लगाई। माँ अपने बेटे की आवाज सुनते ही काँप उठीं। उन्हें लगा कि बेटे ने अब भी क्षमा नहीं किया है। दरवाजा खोलने पर शामलाल अंदर आये और माँ को गले लगा लिया। फिर बोले – 'ओ, अम्मा तुमने तो रंग ला दिया। साहब तुमसे इतना खुश हुआ कि क्या कहूँ।' इसी समय माँ ने कहा कि 'मुझे हरिद्वार भेज दो।' माँ की बात सुनते ही शामनाथ की प्रसन्नता समाप्त हो गई। उसने माँ से कहा – कि तुम हरिद्वार चली जाओगी तो दुनिया कहेगी कि बेटा माँ को पास नहीं रख सका। साथ ही तुम्हारे जाने के बाद साहब को देने के लिए फुलकारी कौन बनाएगा। साहब फुलकारी पाकर खुश होगा तो मेरी तरक्की हो जाएगी।

बेटे की तरक्की की बात सुनते ही माँ का चेहरा प्रसन्न हो उठा। वह फुलकारी बनाने के लिए तैयार हो गई और मन ही मन बेटे के उज्ज्वल भविष्य की कामना करने लगी।

८.३ कहानी का संदेश

'चीफ की दावत' साहनी जी की चर्चित कहानी है। जिसमें वर्तमान के सामाजिक जीवन की मूल्यहीनता एवं भ्रष्ट आचरण की तरफ संकेत किया गया है। आजादी के बाद एक तरफ जहाँ शिक्षा एवं अन्य वैज्ञानिक संसाधन मानव जीवन में विकास की लहर लेकर आये वहीं अंग्रेजी शिक्षा से प्रभावित वर्ग दिखावेपन के मार्ग पर लगातार अग्रसर होता गया। भारतीय मूल्यों एवं पारिवारिक संस्कारों को तो वह खुरच–खुरच कर मिटा देना चाहता था। उसे न तो अपनी भाषा पसंद थी और न ही अपना संस्कार। भारतीयता का संपूर्ण त्याग ही इनके लिए आधुनिकता की पहचान बनती जा रही थी। ऐसे में भारतीय संस्कृति के संवाहक माता–पिता एवं परिवार के अन्य वृद्ध जनों को साथ रखना इनके लिए बोझ बन गया था। चीफ की दावत कहानी में इसी बोझ की प्रतीक है शामनाथ की माँ। जब शामनाथ द्वारा अपने चीफ को दावत दी जाती है और तैयारियों के क्रम में पुरानी वस्तुएँ छिपा दी जाती हैं, तब उनके सामने एक बड़ी समस्या खड़ी हो जाती है – 'माँ का क्या होगा?' भारतीय संस्कृति जिस माँ को सर्वथा पूजनीय मानती है वही माँ शामनाथ के लिए व्यर्थ की वस्तु बन गई है। जिसे वे अपने अतिथियों के सामने जाने देना

नहीं चाहते। माँ को छिपाने के लिए जो उपाय सोचे जाते हैं उनमें कुछ न कुछ शंकायें उत्पन्न होती हैं और शामनाथ ऐसी कोई कमी नहीं छोड़ना चाहते जिससे चीफ का सामना माँ से हो जाये। सच्चाई तो यह है कि शामनाथ को न केवल माँ से बल्कि संपूर्ण वृद्ध वर्ग से ही घृणा है। इसीलिए माँ को उसकी सहेली के घर जाने देने से रोकते हुए कहते हैं–''मैं नहीं चाहता कि उस बुढ़िया का आना–जाना यहाँ फिर से शुरू हो। पहले ही बड़ी मुश्किल से बंद किया था।'' इतना ही नहीं, माँ के प्रति उनके मन की दुर्भावना वहाँ भी दिखाई देती है जब अपनी पत्नी को डॉटते हुए कहते हैं–''अच्छी भली यह भाई के पास जा रही थीं। तुमने यूँ ही खुद अच्छा बनने के लिए बीच में टाँग अड़ा दी।'' इसके बाद शामनाथ की पत्नी द्वारा जो उत्तर मिलता है वह तो माँ–बेटे और बहू के रिश्तों को तार–तार कर देता है। बहू कहती है–''तुम माँ और बेटे की बातों में मैं क्यो बुरी बनूँ, तुम जानो और वह जानें।'' यहाँ लेखक उन अंग्रेजीदाँ लोगो की सोच पर करारी चोट करता है, जहाँ माँ को व्यर्थ समझकर कहीं छिपा देने की उपाय की जा रही है। उनके लिए माँ अनपढ़ है, बद्सूरत हैं और उसे अंग्रेजी नहीं आती इसलिए अंग्रेज चीफ के नाराज हो जाने की संभावना से शामनाथ डरे हुए हैं।

इस कहानी में जो प्रसंग निर्मित किया गया है वह समाज की अनेकानेक सच्चाइयों से हमें अवगत कराता है। कहानी का चीफ अमेरिकी है। शामनाथ उसी के दफ्तर में एक पदाधिकारी हैं। उनके द्वारा चीफ को दावत देने का उद्देश्य है–नौकरी में पदोन्नति पाना। इसी उद्देश्य से वह अपनी बूढ़ी माँ से फुलकारी बनवाने की बात भी कहते हैं। इस संबंध में माँ पूछती हैं तो कहते हैं–'कहा नहीं, मगर देखती नहीं, कितना खुश हो गया है। कहता था, जब तेरी माँ फुलकारी बनाना शुरू करेगी, तो मैं देखने आऊँगा की कैसे बनती है। जो साहब खुश हो गया, तो मुझे इससे बड़ी नौकरी भी मिल सकती है, मैं बड़ा अफसर बन सकता हूँ।'' बड़ा अफसर बनने की यह कामना रिश्वतखोरी की प्रवृत्ति की तरफ संकेत करती है। भीष्म साहनी यहाँ यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि शामनाथ धीरे–धीरे 'चीफ' से नजदीकियाँ स्थापित कर उसका लाभ उठाना चाहते हैं। इसीलिए उनके द्वारा वह हर उपाय किया जाता है जिससे चीफ खुश हो सके। यहाँ तक कि जिस माँ को शामनाथ छिपा देना चाहते हैं उसी माँ का गीत सुनकर और उसकी सादगी देखकर जब 'चीफ' खुश हो जाता तो उनके विचार बदल जाते हैं और कहते हैं 'ओ अम्मा! तुमने तो आज रंग ला दिया! साहब तुमसे इतना खुश हुआ कि क्या कहूँ।'' शामनाथ के विचारों की स्वार्थपरता की हद तो तब हो जाती है जब माँ हरिद्वार चले जाने की बात कहती है तो उसे डाँटते हुए कहते हैं–''माँ, तुम मुझे धोखा देकर यूँ चली जाओगी? मेरा बनता काम बिगाड़ोगी? जानती नहीं, साहब खुश होगा, तो मुझे तरक्की मिलेगी।'' माँ के प्रति शामनाथ के बदलते ये विचार पूर्णतः स्वार्थ पर आधारित हैं। यहाँ लेखक की सूक्ष्म दृष्टि नैतिक मूल्यहीनता के उस सूत्र को पकड़ती है जहाँ माँ केवल स्वार्थसाधना का एक माध्यम मात्र रह गई है। शामनाथ की माँ उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती है जो अपने बच्चों की सफलता में ही अपनी सफलता देखती थी। उसने अपने गहने आदि बेचकर बच्चों को पढ़ाया लेकिन इस नई पीढ़ी ने पुरानी पीढ़ी के सपनों को ध्वस्त कर दिया। उसके मन–मस्तिष्क पर बड़े हो जाने का दंभ इस प्रकार जम गया है कि वह अपने पुराने दिनों की और पिछली पीढ़ी की गरीबी को सुनना भी नहीं चाहती।

इस कहानी में माँ के रूप में भीष्म साहनी ने एक ऐसे पात्र की सर्जना की है जो त्याग की प्रतिमूर्ति है। कहानी के आरंभ में ही जब शामनाथ माँ को व्यर्थ की वस्तु समझ कर कहीं छिपा देना चाहते हैं उसी समय माँ भगवान की प्रार्थना करते हुए 'सारा काम सुभीते से चल जाये' की बात सोच रही हैं। शामनाथ द्वारा

माँ को जो आदेश दिये जाते हैं उसे माँ बिना किसी विरोध के मान लेती है। अपने बेटे और बहू के सुख के लिए ही तो वह हरिद्वार जाना चाहती है। एक माँ के हृदय का यह टूटना उन अनेकानेक माताओं के हृदय का टूटना है जो अपनी ही संतानों द्वारा बोझ समझी जाने लगी हैं।

साहनी जी एक संवेदनशील कहानीकार थे। उनके द्वारा माँ की ममता को जिस ढंग से यहाँ चित्रित किया गया है वह एक दुर्लभ उदाहरण है। बेटे और बहू द्वारा अपमानित होने के बाद भी शामनाथ की माँ को जैसे ही पता चलता है कि फुलकारी बनाना 'बेटे की पदोन्नति को सरल बनाना है, वैसे ही वह हामी भर देती हैं। इतना ही नहीं बेटे की पदोन्नति की बात सुनकर माँ के चेहरे का रंग बदलने लगा, धीरे–धीरे उनका झुर्रियों भरा मुँह खिलने लगा, हल्की–हल्की चमक आने लगी।'' वास्तव में इस घटना के माध्यम से साहनी जी यह सिद्ध करना चाहते हैं कि 'माता कुमाता न भवति, पुत्रः कुपुत्रो जायते।'

कहानी की कथावस्तु जितनी संदेशप्रद है, उसकी भाषा उतनी ही सरल और बोधगम्य। हिंदी, अंग्रेजी एवं उर्दू के शब्दों का आवश्यकतानुसार प्रयोग इसकी बोधगम्यता को बढ़ा देता है। शब्द चयन सर्वथा पात्रों के अनुकूल है। शामनाथ की माँ द्वारा अंग्रेजी बोलने की कोशिश, उसकी गीत और कुर्सी पर बैठे–बैठे सो जाने का दृश्य आदि सभी मिलकर कहानी को अत्यधिक रोचक बना देते हैं। कहानी की कथावस्तु उस भारतीय परिवेश से सम्बद्ध है जहाँ माता–पिता अपने बच्चों के प्रति अपना सर्वस्व समर्पित कर देने हेतु सदैव तत्पर रहते हैं और उन्हीं की सफलता एवं सुख में स्वयं की सफलता देखते हैं। यह कहानी उस सांस्कृतिक ह्रास का यथार्थ अंकन करती है जहाँ अंग्रेजीदाँ युवा पीढ़ी अपनी पदोन्नति के लिए बड़े अधिकारियों की चाटुकारिता करती है लेकिन अपनी पुरानी पीढ़ी के प्रति अमानवीय व्यवहार करने में उसे कोई झिझक नहीं होती। करूणा मिश्रित व्यंग्य इस कहानी की धार को तीव्रता प्रदान करती है।

८.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

''तरक्की यूँ ही हो जाएगी? साहब को खुश रखूँगा, तो कुछ करेगा, वरना, उसकी खिदमत करने वाले कम थोड़े हैं?''

संदर्भ : प्रस्तुत अवतरण आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक भीष्म साहनी द्वारा लिखित 'चीफ़ की दावत' कहानी से अवतरित है। इस कहानी में समाज में बढ़ती स्वार्थपरता और माँ की ममता का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया गया है।

प्रसंग : अतिथियों के चले जाने के बाद शामनाथ माँ के कमरे में जाते हैं और साहब को देने के लिए फुलकारी बनाने की बात कहते हैं। माँ अपनी आँख से दिखाई न देने की बात कहती हैं लेकिन, शामनाथ के अनुसार साहब को खुश करने पर ही तरक्की हो सकेगी।

व्याख्या : शामनाथ द्वारा चीफ को खुश करने के लिए ही दावत का आयोजन किया गया था। इसलिए वह हर तरह से ऐसा कार्य करना चाहते थे जिससे अंग्रेज साहब खुश हो सके। साहब की रूचि जब फुलकारी में दिखती हैं तो उन्हें लगता है कि अच्छी फुलकारी देने पर साहब खुश हो जाएँगे और उनकी तरक्की हो जाएगी।

शामनाथ जब माँ से फुलकारी बनाने की बात कहते हैं तो वह असमर्थता व्यक्त करती हैं। जिससे उन्हें क्रोध आता है। फिर अपनी तरक्की की बात साहब के खुश होने पर निर्भर बताते हैं तो माँ का चेहरा खिल उठता है। शामनाथ के अनुसार तरक्की उसी की होगी जो साहब को खुश रखेगा और उस साहब को खुश रखने वालों की संख्या बहुत है। शामनाथ के प्रति माँ की ममता उमड़ पड़ती है और वह हर तरह से अपने बेटे का विकास देखना चाहती है। इसीलिए आँख से कम दिखाई देने के बाद भी वह फुलकारी बनाने के लिए तैयार हो जाती है।

विशेष

१. प्रश्न वाचक चिन्हों का प्रयोग।
२. खिदमत और तरक्की जैसे उर्दू के शब्दों का प्रयोग किया गया है।

८.५ बोध प्रश्न

१. 'चीफ की दावत' कहानी का उद्‌देश्य स्पष्ट कीजिए।
२. शामनाथ अपनी माँ को छिपाना क्यों चाहते थे? माँ ने आयोजन में किस प्रकार रंग भर दिया?
३. शामनाथ के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

८.६ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरीय प्रश्न

१. शामनाथ अपनी माँ को सहेली के यहाँ क्यों नहीं जाने दिया?
उत्तर : शामनाथ की माँ यदि अपनी सहेली के घर जायेंगी तो वह भी इनके घर आने लगेगी। इसलिए नहीं जाने दिया।

२. खाने की व्यवस्था कहाँ की गई थी?
उत्तर : खाने की व्यवस्था बरामदे में की गई थीं।

३. माँ के गहने क्यों बिक गए थे?
उत्तर : माँ के गहने बेटे शामनाथ की पढ़ाई के लिए बिक गए थे।

४. साहब को कौन सी चीज अधिक पसंद आई?
उत्तर : साहब को फुलकारी अधिक पसंद आई।

५. माँ कहाँ जाना चाहती थी?
उत्तर : माँ हरिद्वार जाना चाहती थी।

६. साहब को कहाँ की दस्तकारी देखनी थी?
उत्तर : साहब को पंजाब के गाँवों की दस्तकारी देखनी थी।

८.१

'पाजेब'

– जैनेंन्द्र कुमार

इकाई की रूपरेखा :

८.१.० इकाई का उद्देश्य
८.१.१ प्रस्तावना
८.१.२ कहानी का सारांश
८.१.३ कहानी का संदेश
८.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
८.१.५ बोध प्रश्न
८.१.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

८.१.० इकाई का उद्देश्य

- इस इकाई के अंतर्गत श्रेष्ठ कथाकार जैनेंन्द्र के जीवन परिचय और उनकी साहित्यिक रचनाओं का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- कहानी का सार समझ सकेंगे।
- कहानी के उद्देश्य से परिचित हो सकेंगे।
- कहानी की भाषा–शैली एवं कहानी में प्रयुक्त लोकोक्तियों और मुहावरों का अर्थ समझ सकेंगे।

८.१.१ प्रस्तावना

लेखक परिचय - हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक जैनेंन्द्र कुमार का जन्म 2 जनवरी, 1905 में अलीगढ़ के कौड़ियागंज गाँव में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा हस्तिनापुर में हुई थी और उच्च शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से पूरी हुई। सन 1921 में कांग्रेस के असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के लिए उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी। स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेते हुए ही उन्होंने लेखन कार्य प्रारंभ किया। 24 दिसंबर, 1988 को हिन्दी साहित्य का यह चमकता हुआ नक्षत्र सदा–सदा के लिए अस्त हो गया।

रचनायें : उपन्यास : परख, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, विवर्त, सुखदा, व्यतीत और अनाम स्वामी आदि।

कहानी संग्रह : फाँसी, वातायन, नीलम देश की राजकन्या, एक रात, पाजेब, जान्हवी, अभागे लोग, दो सहेलियाँ, महामहिम आदि।

निबंध संग्रह : साहित्य का श्रेय और प्रेम, जड़ की बात, राष्ट्र और राज्य, कहानी अनुभव और शिल्प, साहित्य और संस्कृति आदि।

कहानीकार जैनेंन्द्र ने अपनी कहानियों में अपने चिंतन को ही सर्जनात्मक रूप प्रदान किया है। उन्होंने अपनी कहानियों में मनुष्य के अवचेतन में चलने वाले विचारों का विश्लेषण मुख्य रूप से किया है। उनके पात्रों की सहजता और सरलता पाठकों को विशेष रूप से आकर्षित करती हैं।

८.१.२ कहानी का सार

पाजेब बालमनोविज्ञान पर आधारित कहानी है। आत्मकथात्मक शैली के माध्यम से लेखक ने एक चार वर्षीय बालिका के मन का बड़ा ही सुन्दर विश्लेषण किया है। साथ ही आभूषणों के प्रति नारी वर्ग के प्राकृतिक लगाव का भी यहाँ यथार्थ चित्रण किया गया है।

कहानी का प्रारंभ एक छोटी सी घटना से होता है। बाजार में एक ऐसी पायल आई है जो जिस पैर में पड़ती है उसी के अनुकूल हो जाती है। लेखक की बेटी मुन्नी भी उस पायल को पहनने की जिद्द करती है। लेखक द्वारा पायल खरीदने के लिए टाल–मटोल किया जाता है लेकिन, अगले रविवार को बुआ मुन्नी के लिए वह पायल खरीद कर लाती हैं। मुन्नी उसे पहन कर सबको दिखा रही थी। उसका भाई आशुतोष कुछ देर तो बहन को लिए घूमता रहा फिर अपने लिए बाइसिकिल खरीदने की हठ करने लगा। बुआ ने उससे कहा – छी–छी, तू कोई लड़की है, जिद तो लड़कियाँ किया करती हैं। और लड़कियाँ रोती हैं। इस प्रकार उसे समझाते हुए बुआ ने उसके जन्म दिन पर नई बाइसिकिल लाने का वादा किया। शाम होते–होते उसी पायल जैसा एक पायल अपने लिए बनवाने की इच्छा लेखक की श्रीमती जी की भी हो गई। कुछ रात होने तक मुन्नी की पायल कहीं गायब हो गई। पूरा घर छान देने के बाद भी वह पायल नहीं मिली। उसे ढूँढ़ते हुए पति–पत्नी में पारिवारिक जिम्मेदारियों को लेकर नोक–झोंक भी हुई। श्रीमती जी ने घर के नौकर बंसी के ऊपर पायल चोरी की शंका प्रकट कर दी। लेकिन, लेखक को विश्वास है कि बंसी चोरी नहीं करेगा। लेखक को अपने बेटे आशुतोष पर शंका हुई जिसका विरोध उनकी पत्नी द्वारा किया गया। आशुतोष को पतंग उड़ाने का शौक है। वह आज ही एक नयी पतंग लाया है। यह सुनकर लेखक की शंका उसके प्रति और बढ़ गई।

अगले दिन लेखक ने आशुतोष को बुलाकर पूछा तो वह पाजेब की जानकारी होने से मना करने लगा। इस समय लेखक के मन में यह विचार आया कि ऐसे समय में बच्चों से प्रेमपूर्वक बातें करनी चाहिए। इसलिए वह श्रीमती जी से कहते हैं कि – 'मुझे ऐसा मालूम होता था कि ठीक इस समय आशुतोष को हमें अपनी सहानुभूति से वंचित नहीं करना चाहिए। बल्कि कुछ अतिरिक्त स्नेह इस समय बालक को मिलना चाहिए। मुझे यह एक भारी दुर्घटना मालूम होती है।'

८.१.३ कहानी का संदेश

जैनेद्र कुमार हिन्दी साहित्य के एक ऐसे साहित्यकार हैं जो वर्तमान को भविष्य के संदर्भ में रखकर देखते हैं। बालपन मानव का अतीत नहीं बल्कि उसकी आपबीती होती है। बच्चा अपने माँ–बाप के समक्ष कुम्भकार की उस मिट्टी की तरह होता है जिसे माँ–बाप जैसा चाहें वैसा निर्मित कर सकते हैं। किसी भी बच्चे के मानसिक विकास और व्यवहार में उसकी पारिवारिक भूमिका बहुत ही महत्त्वपूर्ण होती है। इस कहानी में पाजेब के गायब हो जाने पर पिता–पुत्र के बीच शंका और विद्रोही की चिनगारी छिपी हुई है। वह चिनगारी भविष्य में बेटे को विद्रोही बनाने में अहम भूमिका अदा करेगी। लेखक ने पिता–पुत्र के इन भावों को बड़ी बारीकी से समझ कर उसे इस कहानी में अभिव्यक्त किया है। स्थिति यह है कि पिता को अपने नौकर पर अपने बेटे से अधिक विश्वास है। यहाँ लेखक एक पिता से अधिक एक चिन्तक के रूप में दिखाई देता है। समस्या सामान्य है लेकिन, भिन्न इस मामले में है कि जिस नौकर पर पत्नी शंका करती हैं उसी नौकर पर लेखक को दृढ़ विश्वास है। प्रस्तुत कहानी में जीवन के सम्बन्ध में एक अन्वेषण का उपक्रम दिखाई देता है। इस कहानी के पिता–पुत्र जैसे पात्र हमारे आस–पास भी देखे जा सकते हैं।

आत्मकथात्मक शैली में रचित इस कहानी की भाषा अत्यंत सरल और बोधगम्य है। समस्या का न सुलझना पाठकों में एक कौतूहल उत्पन्न करता है। संवादों में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है।

८.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

''वह गुम हो गया। जैसे नाराज हो। उसने सिर हिलाया कि उसनें नहीं ली। पर मुँह नहीं खोला।''

संदर्भ : प्रस्तुत अवतरण आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कहानीकार जैनेंन्द्र कुमार द्वारा लिखित 'पाजेब' कहानी से अवतरित है। इस कहानी में लेखक द्वारा बालमनोविज्ञान का सुन्दर चित्रण किया गया है।

स्पष्टीकरण : लेखक ने जब बेटे से कहा कि मुन्नी की एक पाजेब नहीं मिल रही है। तुम्हें पता हो तो बताओ। पिता जी की बात सुनकर आशुतोष एकदम चुप हो गया। वह एक शब्द भी नहीं बोल रहा था। उसे लग रहा था कि पिता जी उसके ऊपर चोरी का आरोप लगा रहे हैं। उसका क्रोध इतना बढ गया था कि वह मुँह से एक भी शब्द नहीं बोल रहा था। अपनी सफाई में भी वह एक शब्द नहीं बोल सका। इधर उसका न बोलना लेखक के मन में एक शंका पैदा करता है। इस रूप में पिता–पुत्र दोनों के मन में शंका एवं क्रोध की भावना बढ़ जाती है लेकिन लेखक परिस्थितियों को समझते हुए क्रोध के बदले प्यार से काम लेने का निर्णय लेता है।

विशेष

१. यहाँ किशोर मन के क्रोध का चित्रण किया गया है।
२. मनोवैज्ञानिक भावों का चित्रण किया गया है।
३. वाक्य बिल्कुल छोटे एवं सरल हैं।

८.१.५ बोध प्रश्न

१. एक पिता के रूप में लेखक के व्यवहार की समीक्षा कीजिए।
२. प्रस्तुत कहानी के आधार पर महिलाओं की आभूषण प्रियता पर प्रकाश डालिए।
३. 'पाजेब' कहानी में बालमनोविज्ञान का चित्रण किस प्रकार किया गया है।

८.१.६ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरीय प्रश्न

१. बुआ ने आशुतोष को लड़का और लड़की में क्या भेद बताया?
उत्तर : बुआ ने आशुतोष को बताया कि लड़कियाँ जिद्द करती हैं और सामान न मिलने पर रोती भी हैं। लड़के ऐसा नहीं करते हैं।

२. लेखक ने पाजेब की क्या क्या विशेषताएँ बताई है?
उत्तर : लेखक ने पाजेब के संबंध में बताया कि जिसके पैर में जाती है उसी के अनुकूल बन जाती है।

३. पाजेब किसके द्वारा खरीदी गई थी?
उत्तर : पाजेब बुआ द्वारा खरीदी गई थी।

४. पाजेब न मिलने पर लेखक की पत्नी ने किस पर शंका प्रकट की?
उत्तर : पाजेब न मिलने पर लेखक की पत्नी ने नौकर बंसी पर शंका प्रकट की?

५. बुआ किस दिन पाजेब लेकर आई थीं?
उत्तर : बुआ रविवार को पाजेब लेकर आई थीं।

६. पाजेब के लिए जिद्द करने वाली लड़की का नाम और उम्र बताइए।
उत्तर : पाजेब के लिए जिद्द करने वाली लड़की मुन्नी चार वर्ष की थी।

❖❖❖❖

८.२

'सदाचार का तावीज'

– हरिशंकर परसाई

इकाई की रूपरेखा :

८.२.० इकाई का उद्‌देश्य
८.२.१ प्रस्तावना
८.२.२ कहानी का सारांश
८.२.३ कहानी का संदेश
८.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
८.२.५ बोध प्रश्न
८.२.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

८.२.० इकाई का उद्‌देश्य

- इस इकाई के अंतर्गत प्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई के जीवन परिचय और उनकी साहित्यिक उपलब्धियों से परिचित होंगे।
- व्यंग्य का सार समझ सकेंगे।
- प्रस्तुत व्यंग्य के उद्‌देश्य से अवगत हो सकेंगे।
- व्यंग्य की भाषा–शैली की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- व्यंग्य में प्रयुक्त मुहावरों, लोकोक्तियों का अर्थ समझ सकेंगे।

८.२.१ प्रस्तावना

लेखक परिचय - हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त सन 1924 ई. में मध्यप्रदेश में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा गाँव में पूरी करने के बाद उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से एम.ए. की पढ़ाई पूरी की। कुछ दिनों तक अध्यापन कार्य करने के बाद सन 1947 से स्वतंत्रता पूर्वक लेखन कार्य में लग गए। उन्होंने जबलपुर से 'वसुधा' नामक पत्रिका निकाली जो हिन्दी की पत्रिकाओं में एक प्रमुख पत्रिका मानी जाती है। हँसते हैं–रोते है, जैसे उनके दिन फिरे, और भोलाराम का जीव परसाई जी के प्रमुख कहानी संग्रह हैं। उपन्यासों में तट की खोज, ज्वाला और जाल, रानी नागफनी की कहानी प्रमुख हैं। निबंध संग्रहों में भूत के पीछे, सदाचार का तावीज़, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, शिकायत मुझे भी है, आदि उल्लेखनीय हैं। 10 अगस्त, 1995 को परसाई जी का निधन हो गया।

परसाई जी की रचनाओं में समाज के सभी आडंबरों पर करारी चोट की गई है। भारतीय समाज के पाखंडों की बखिया उधेड़ने वाले परसाई जी के व्यंग्य समाज में परिवर्तन की चेतना पैदा करते हैं। परसाई जी के व्यंग्य व्यक्तिगत राग–द्वेष से ऊपर उठकर समाज की विसंगतियों को उजागर करते हैं और आवश्यकतानुसार हास्य–विनोद का दृश्य भी उपस्थित करते चलते हैं। परसाई जी का सम्पूर्ण लेखन उद्‌देश्यपूर्ण और मानव को सतर्क करने का प्रयास है।

८.२.२ व्यंग्य का सार

इस व्यंग्य में लेखक द्वारा समाज में फैलते हुए भ्रष्टाचार को समाप्त करने की उपायों पर व्यंग्य किया गया है। एक राजा को अपने राज्य में फैलते भ्रष्टाचार की बात सुनकर चिन्ता हुई। उन्होंने अपने दरबारियों को बुलाकर भ्रष्टाचार का पता लगाने की बात कही। दरबारियों ने भ्रष्टाचार जैसी बारीक चीज देखने में असमर्थता व्यक्त की और उसके लिए विशेषज्ञों की आवश्यकता बताई। राजा ने पाँच विशेषज्ञों को वह काम दे दिया। दो महीने बाद विशेषज्ञो ने भ्रष्टाचार के मिल जाने का दावा करते हुए कहा कि – 'हुजूर, वह हाथ की पकड़ में नहीं आता। वह स्थूल नहीं सूक्ष्म है, अगोचर है। पर वह सर्वत्र व्याप्त है। उसे देखा नहीं जा सकता, अनुभव किया जा सकता है।' उनके अनुसार भ्रष्टाचार अब सर्वव्यापी हो गया है। यहाँ तक कि आपके सिंहासन में भी विद्यमान है। इस सिंहासन की रंगाई करने के लिए खर्च की जो बिल लगी है वह दोगुने दाम की है। साथ ही विशेषज्ञों ने ठेका पर काम कराने की परम्परा बन्द करने की सलाह दी। इस प्रकार विशेषज्ञ भ्रष्टाचार मिटाने की अपनी पूरी योजना राजा के पास रखकर चले गए।

उस योजना को पढ़कर राजा बीमार हो गए। राजा को परेशान देखकर दरबारियों ने उस योजना को आग के हवाले करने की बात कही। उनके अनुसार ऐसी योजना नहीं चाहिए जो राजा की परेशानी बढ़ा दे। उन्हें बिना उलट–फेर किए भ्रष्टाचार मिटाने वाली तरकीब की आवश्यकता थी। इसी बीच एक दरबारी ने तावीज़ बनाने वाले एक साधु को लाया। तावीज़ के संबंध में साधु ने बताया कि – इस तावीज़ में से सदाचार के स्वर निकलते हैं। जब किसी की आत्मा से बेईमानी के स्वर निकलने लगते हैं तब इस तावीज़ की शक्ति आत्मा का गला घोंट देती है और आदमी को तावीज़ से ईमान के स्वर सुनाई पड़ने लगते हैं। वह इन स्वरों को आत्मा की पुकार समझकर सदाचार की ओर प्रेरित होता है।

तावीज़ की विशेषता सुनकर राजा बहुत खुश हुए। एक मंत्री की सलाह पर राजा द्वारा उसी साधु को पूरी प्रजा के लिए तावीज़ बनाने का ठेका दे दिया गया और पाँच करोड रूपये उसके लिए कारखाना खोलने के लिए पेशगी में दिए गए। फिर प्रत्येक कर्मचारी की भुजा पर यह सदाचार की तावीज़ बाँध दिया गया।

राजा इस कार्य से बहुत खुश थे। वह वेश बदल कर एक कर्मचारी के पास महीने की दो तारीख को गए। उसका वेतन एक दिन पहले ही मिला था। राजा ने अपना काम कराने के बहाने उसे पाँच रूपये देना चाहा। उस कर्मचारी ने ईमानदारी दिखाते हुए रिश्वत लेने से मना कर दिया। राजा को खुशी हुई कि तावीज़ ने अपना प्रभाव दिखाना शुरू कर दिया है।

कुछ दिन बाद पुनः वेश बदलकर राजा उसी कर्मचारी के पास महीने की इकतीस तारीख को गए और काम के बहाने उसे पाँच रूपए दिए। इस बार उस कर्मचारी ने रिश्वत के पाँच रूपये ले लिए। राजा ने अपना परिचय देते हुए इस बार उससे रूपये लेने का कारण पूछा तो उसने अपनी बाँह में बँधी तावीज़ दिखाई और बताया कि आज इकतीस तारीख है इसलिए रिश्वत ले रहा है।

८.२.३ व्यंग्य का संदेश

प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से परसाई जी स्पष्ट करना चाहते हैं कि भ्रष्टाचार अब सर्वव्यापी हो गया है। राजा के सिंहासन की रंगाई में भी यदि रिश्वत ली जाती है तो वह राजा के लिए चिंता का कारण बनना ही चाहिए। कर्मचारियों द्वारा भ्रष्टाचार को न देखना सत्ता की हाँ में हाँ मिलाने का संकेत है। विशेषज्ञों द्वारा राजा को ठेकेदारी समाप्त करने की जो सलाह दी गई वह स्वीकार नहीं की गई और एक कर्मचारी द्वारा बुलाए गए साधु को ताबीज बनाने का ठेका दे दिया गया। लेखक यह संकेत करना चाहता है कि बड़े पदों पर बैठे अधिकारी और सत्ताधीशों की मिली भगत के परिणामस्वरूप ही भ्रष्टाचार का व्यापार फलफूल रहा है।

व्यंग्य के अंत में दो तारीख को रिश्वत न लेने वाला कर्मचारी इकत्तीस तारीख को रिश्वत लेता है क्योंकि महीने के अंतिम दिन तक उसके पास का पैसा खर्च हो जाता है। इसलिए, न चाहते हुए भी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए रिश्वत ले लेता है। साधु की ताबीज अंधविश्वास के माध्यम से होने वाले लूटपाट की ओर एक संकेत है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत व्यंग्य के माध्यम से लेखक ने बढ़ते हुए भ्रष्टाचार और अंधविश्वासों पर करारा व्यंग्य किया है।

८.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

''राजा असमंजस में पड़ गए। फिर ऐसा क्या हो गया?''

संदर्भ : प्रस्तुत अवतरण आधुनिक हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित 'सदाचार का तावीज़' शीर्षक व्यंग्य से लिया गया है। इस व्यंग्य के माध्यम से लेखक ने समाज में फैलते भ्रष्टाचार और अंधविश्वास इन दोनों पर करारी चोट की है।

प्रसंग : राजा द्वारा अपने सभी कर्मचारियों को सदाचार की तावीज़ दे दी गई। उसका प्रभाव जाँचने के लिए राजा अपनी प्रजा के बीच दो बार गए। पहली बार उस कर्मचारी ने रिश्वत नहीं लिया जबकि दूसरी बार ले लिया। यह देख कर राजा चकित रह गए।

स्पष्टीकरण : तावीज़ का प्रभाव जाँचने के लिए राजा महीने की दो तारीख को गए और काम कराने के लिए कर्मचारी को पाँच रूपये की रिश्वत देने की बात कही। उस दिन कर्मचारी ने रिश्वत लेने से मना किया। फिर इकतीस तारीख को राजा उसी कर्मचारी के यहाँ गए और रिश्वत की बात की तो वह सहर्ष रिश्वत लेने को तैयार हो गया। यह देखकर राजा चकित रह गए। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था

कि जो कर्मचारी पहले दिन रिश्वत नहीं ली है वही दूसरे दिन क्यों रिश्वत ले रहा है। प्रस्तुत पंक्तियों में राजा की इसी उधेड़बुन का चित्रण किया गया है।

विशेष :

१. प्रश्नवाचक चिन्ह का प्रयोग।
२. वक्ता के मन में आश्चर्य का भाव।
३. यथार्थ का प्रकट होना दिखाया गया है।
४. व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग।

८.२.५ बोध प्रश्न

१. प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
२. राजा कब और क्यों परेशान हो गए? कर्मचारियों ने उनकी परेशानी दूर करने के लिए क्या किया?
३. विशेषज्ञों की आवश्यकता कब पड़ी? उन्होंने क्या सुझाव दिया?

८.२.६ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरीय प्रश्न

१. दरबारियों से राजा ने किसका पता लगाने की बात कही?
उत्तर : दरबारियों से राजा ने भ्रष्टाचार का पता लगाने की बात कही।

२. कितने विशेषज्ञ भ्रष्टाचार का पता लगाने आए?
उत्तर : पाँच विशेषज्ञ भ्रष्टाचार का पता लगाने आए।

३. भ्रष्टाचार का पता लगा कर विशेषज्ञ कितने दिनों में लौटे?
उत्तर : भ्रष्टाचार का पता लगा कर विशेषज्ञ दो महीने में लौटे।

४. सिंहासन की रंगाई में किस प्रकार का भ्रष्टाचार हुआ था?
उत्तर : सिंहासन की रंगाई में दोगुने दाम की बिल लगाई थी। उसमें खर्च से दोगुना पैसा लेने का भ्रष्टाचार हुआ था।

५. राजा किन तारीखों को रिश्वत का पता लगाने गए थे?
उत्तर : राजा दो तारीख और इकतीस तारीख को रिश्वत का पता लगाने गए थे।

६. राजा द्वारा ताबीज बनवाने का ठेका किसे, कितने रूपए में दिया गया था।
उत्तर : राजा द्वारा सदाचार की ताबीज बनवाने का ठेका एक साधु को पाँच करोड़ रूपए में दिया गया था।

❖❖❖❖

९

'डिप्टी - कलेक्टरी'

– अमरकान्त

इकाई की रूपरेखा :

९.० इकाई का उद्देश्य
९.१ प्रस्तावना
९.२ कहानी का सारांश
९.३ कहानी का संदेश
९.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
९.५ बोध प्रश्न
९.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

९.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत हम हिन्दी साहित्य के अमिट हस्ताक्षर अमरकान्त के संबंध में जानकारी प्राप्त करेंगे। उनकी प्रसिद्ध कहानी डिप्टी कलेक्टरी का विवेचनात्मक अध्ययन करेगें। इसके माध्यम से बेरोजगारी से उत्पन्न समस्याओं के संबंध में चर्चा करते हुए पारिवारिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण का विश्लेषण करेंगे। इस कहानी के अध्ययन के उपरांत हम –

- अमरकांत के जीवन एवं उनकी साहित्यिक विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।
- कहानी का सारांश बता सकेंगे।
- कहानी के उद्देश को समझ सकेंगे।
- कहानी की भाषा–शैली से परिचित हो सकेंगे।
- कहानी में प्रयुक्त मुहावरों, लोकोक्तियों एवं कठिन शब्दों का भाव समझ सकेंगे।

९.१ प्रस्तावना

लेखक परिचय . अमरकांत का जन्म 1 जुलाई 1925 को हुआ था। इनके पिता श्री सीताराम वर्मा और माता श्रीमती अनंती देवी ने बेटे का नाम 'श्रीराम लाल' रखा। बाद में उन्होंने परिवर्तन करके अपना नाम अमरकांत रख लिखा। हिन्दी कथा साहित्य में प्रेमचन्द के वाद यथार्थवादी धारा के प्रमुख कहानीकार अमरकांत का देहावसान 17 फरवरी 2014 को हुआ। अमरकांत ने उपन्यास, कहानी, संस्मरण और बाल साहित्य आदि विधाओं में लेखन कार्य किया। उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नवत हैं:

उपन्यास – सूखा पत्ता, आकाश पक्षी, सुखजीवी, बीच की दीवार, सुन्नर पांडे की पतोहू आदि।

कहानी संग्रह : जिंदगी और जोंक, देश के लोग, मौत का नगर, कुहासा, एक धनी व्यक्ति का बयान आदि। अमरकांत नई कहानी आंदोलन से संबंधित कथाकार थे। उनकी कहानियों में भारतीय समाज का यथार्थ झलकता है। विशेष रूप से आम आदमी ही उनकी कहानियों के केन्द्र में है। समाज के जिस क्षेत्र में उन्होंने लोगों को संघर्ष करते देखा उसी को अपने कथ्य का आधार बनाया। उनकी कहानियों के पात्र भी हमारे बीच के ही होते हैं। इस रूप में कहें तो सामान्य कथावस्तु और अपने सामान्य पात्रों के माध्यम से ही अमरकांत समाज की दुखती रग पर हाथ रखने का कार्य करते हैं।

९.२ कहानी का सार

डिप्टी कलेक्टरी कहानी बेरोजगारी से संघर्ष करते एक सामान्य परिवार की कहानी है।

शकलदीप बाबू कचहरी में मुहर्रिर का काम करके अपना जीवन यापन करते थे। उनकी पत्नी यमुना अपने बड़े बेटे नारायण द्वारा डिप्टी कलेक्टरी की परीक्षा में बैठने के लिए फॉर्म भरने की फीस के लिए रूपये माँगती हैं।

शकलदीप बाबू पहले तो नाराज होते हैं लेकिन जब उन्हें पता चलता है कि इस वर्ष डिप्टी कलेक्टरी की जगहें अधिक हैं और पत्नी जब कुछ आशाजनक बातें करती है तो सौ रूपये फीस के लिए देते हैं। अगले दिन ब्रह्मवेला में ही जब अपने बेटे को पढ़ाई करते देखते हैं तो उनकी आशा बलवती हो जाती है। उन्हें लगता है कि इस बार बेटा डिप्टी कलेक्टरी की परीक्षा में अवश्य पास हो जाएगा। इसलिए वे अब इस बात का पूरा ख्याल रखने लगे हैं कि नारायण को किसी प्रकार की परेशानी न हो। उनकी उम्मीदें बेटे के प्रति लगातार बढ़ने लगी हैं। वह पढ़ाई अच्छी तरह करे इसके लिए सूखे मेवे भी ले आते हैं। इतना ही नहीं काम की व्यस्तता के बीच भी समय निकाल कर भगवान की पूजा में मन लगाने लगे हैं और घर के अन्य लोगों को भी पूजा करने के लिए प्रेरित करते हैं। अचानक उनके व्यवहार में परिवर्तन दिखाई देने लगा है। घर में झाड़ू लगाने से लेकर बेटे का बिस्तर ठीक करने तक के कार्य वह स्वयं करने लगे हैं।

जिस दिन नारायण को डिप्टी कलेक्टरी की परीक्षा देने इलाहाबाद जाना था उस दिन स्वयं रेलवे स्टेशन पर उसे छोड़ने गए। नारायण की पत्नी निर्मला ने भी सुबह उठ कर भोजन बना दिया। बेटे की परीक्षा की बातें शकलदीप बाबू बड़े ही गर्व से लोगों को बताया करते थे।

परीक्षा में नारायण का पर्चा अच्छा हुआ। यह सुनकर परिवार के सभी लोगों में एक अतिरिक्त उत्साह भर गया। इंटरव्यू के लिए बुलाये जाने पर शकलदीप बाबू को बेटे के डिप्टी कलेक्टर बन जाने का पूरा विश्वास हो गया। उन्होंने पत्नी से एक दिन कहा –''तुमको अब भी सन्देह है? लो, मैं कहता हूँ कि बबुआ जरूर आयेंगे, जरूर आयेंगे! नहीं आये, तो मैं अपनी मूँछ मुड़वा दूँगा।''

घर के लोग अब नारायण को डिप्टी कलेक्टर के रूप में ही देखने लगे थे। अन्तिम रिजल्ट आना अभी बाकी था। शकलदीप बाबू का खाना–पीना, जागना–सोना आदि सब प्रभावित हो रहा था। अत्यधिक प्रसन्नता के कारण उन्हें पूरी रात नींद नहीं आती और हमेशा कुछ न कुछ करने में लगे रहते। इसी अतिरिक्त सक्रियता के कारण वह बीमार भी पड़ गए। आस–पास के लोग उन्हें बधाई देते और वह अपने बेटे की तारीफ के पुल बाँधने लगते। इसी दौरान इंटरव्यू का रिजल्ट आया और परीक्षा में नारायण असफल हो गए। नारायण की इस असफलता ने परिवार को दुख के सागर में डुबा दिया। नारायण चुपचाप अपने कमरे में मुँह नीचे करके पड़ा रहा। माँ ने भी दुख व्यक्त किया लेकिन शकलदीप बाबू बोले – ''अरे, कुछ नहीं, सब कल्याण होगा, चिन्ता की कोई बात नहीं। पहले यह तो बताओ, बबुआ को तुमने कभी यह तो नहीं बताया था कि उनकी फीस तथा खाने–पीने के लिए मैने 600 रूपये कर्ज लिए हैं।'' परिवार के लोग नारायण की निराशा से इतने घबराए हुए हैं कि जब वह सो जाता है तो शकलदीप बाबू उसकी साँस सुनने के लिए उसकी नाक के पास कान ले जाते हैं। साँस चलते देखकर उनकी आँखों में आँसू भर आते हैं।

९.३ कहानी का संदेश

अमरकान्त द्वारा लिखित 'डिप्टी कलेक्टरी' कहानी एक निम्न मध्यवर्गीय बेरोजगार परिवार के मनोभावों पर आधारित है। अपनी मेहनत के बल पर परिवार का पालन–पोषण करने वाले शकलदीप बाबू बेटे की असफलता से दुखी हैं, पत्नी द्वारा परीक्षा फॉर्म की फीस का नाम सुनकर उन्हें क्रोध भी आता है। फिर भी एक आशा उनके मन में कहीं न कहीं बैठी है कि बेटा इस बार परीक्षा अवश्य उत्तीर्ण कर लेगा। यह आशा उस भारतीय पिता की आशा है जो उसे निरन्तर सक्रिय बनाये रहती है। बेटे को पढ़ते देख उनका मन पुलकित हो उठता है। बेटे की पढ़ाई में उन्हें वह संभावना दिखाई देती है जो उनके परिवार की सभी समस्याओं का अंत कर देगी। बेटे के प्रति नारायण की माँ यमुना के हृदय में ममता की धारा उमड़ती रहती है। वैसे नारायण की हर परीक्षा उस परिवार में आशा की किरण बन कर आती है लेकिन परिणाम निराशाजनक ही होता है। इस बार पदों की संख्या अधिक होने के कारण कुछ संभावना अधिक है। इण्टरव्यू का पत्र न केवल परिवार बल्कि पास–पड़ोस के लिए भी खुशियाँ लेकर आता है। यहाँ लेखक द्वारा उस परिवार की सुखमय कल्पनाओं में डूबने–उतराने का यथार्थ चित्रण किया गया है। कहानी के अन्त में पिता के उस प्यार को अभिव्यक्त किया गया है जिसमें वह सभी परेशानियों का सामना स्वयं करेगा लेकिन अपने बच्चों को उन परेशानियों का आभास भी नहीं होने देगा। अमरकांत की 'डिप्टी कलेक्टरी' कहानी में भारतीय व्यक्ति की मनोभावों, संस्कारों और सामाजिक रूढ़ियों का हर पक्ष देखा जा सकता है। प्रस्तुत कहानी के शकलदीप बाबू को बेटे की डिप्टी कलेक्टरी में, भगवान की प्रसन्नता भी आवश्यक लगती है। वह स्वयं तो पूजा करने ही लगे हैं पत्नी को भी इसके लिए प्रेरित करते हैं। कहानी की भाषा सर्वथा पात्रानुकूल एवं प्रसंगानुकुल है।

९.४ संन्दर्भ सहित स्पष्टीकरण

''अच्छा तो खाओं तुम और तुम्हारे लड़के! खूब मजे में खाओं। ऐसे खाने पर लानत है।''

संदर्भ : प्रस्तुत अवतरण नई कहानी के प्रमुख हस्ताक्षर अमरकांत द्वारा रचित 'डिप्टी कलेक्टरी' शीर्षक कहानी से अवतरित है। इस कहानी में बेराजगार युवक के परिवार की विविध समस्याओं का चित्रण किया गया है।

प्रसंग : शकलदीप बाबू को जब पता चलता है कि उनका बेटा नारायण इस बार डिप्टी कलेक्टरी की परीक्षा के लिए पढ़ाई कर रहा है तो उसके लिए मेवे आदि लाते हैं। उसमें से कुछ उनकी पत्नी यमुना द्वारा छोटे बेटे को दे देने के कारण शकलदीप बाबू क्रोधित हो गए हैं।

स्पष्टीकरण : छोटे बेटे को खाने के लिए मेवा देने की बात सुनकर शकलदीप बाबू आग बबूला हो उठते हैं। उन्होंने वह मेवे इसलिए लाए थे कि नारायण खाएगा तो परीक्षा की तैयारी अच्छी तरह कर सकेगा। छोटे लड़के के संबंध में उन्होंने इस समय सोचना भी छोड़ दिया था। उनके अनुसार घर के सभी लोगों को नारायण के लिए हर प्रकार की सुख–सुविधाएँ उपलब्ध करानी चाहिए लेकिन यहाँ तो माँ ही उनकी बातों पर ध्यान नहीं दे रही है और मेवा दूसरे बच्चों को खिला रही है। शकलदीप बाबू की बातों से ऐसा लगता है कि वर्तमान में उन्हें नारायण के किसी भी कार्य में किसी भी प्रकार की असुविधा स्वीकार्य नहीं है।

विशेष :

१. आवेश पूर्ण भाव दृष्टिगत होता है।
२. अर्थ और भाव में विरोधाभास है।

९.५ बोध प्रश्न

१. शकलदीप बाबू के परिवार की आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डालिए।
२. नारायण के लिए इंटरव्यू में बुलावा आने पर घर और बाहर के लोगों के व्यवहार में क्या परिवर्तन आ गया था।
३. प्रस्तुत कहानी का उद्‌देश्य स्पष्ट कीजिए।

९.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१. शकलदीप बाबू कहाँ, क्या काम करते थे?
उत्तर : शकलदीप बाबू कचहरी में मुहर्रिर का काम करते थे।

२. डिप्टी कलेक्टरी की परीक्षा की फीस कितनी थी?
उत्तर : डिप्टी कलेक्टरी की परीक्षा की फीस 100 रूपये थी।

३. नारायण के चुने जाने की संभावना इस वर्ष अधिक क्यों थी?
उत्तर : इस वर्ष डिप्टी कलेक्टरी की जगहें अधिक थीं इसलिए नारायण के चुने जाने की संभावना अधिक थी।

४. शकलदीप बाबू कितना कर्ज लिए थे?
उत्तर : शकलदीप बाबू 600 रूपये का कर्ज लिए थे।

५. डिप्टी कलेक्टरी की परीक्षा किस शहर में होने वाली थी?
उत्तर : डिप्टी कलेक्टरी की परीक्षा इलाहाबाद में होने वाली थी।

६. नारायण की पत्नी का नाम बताइए?
उत्तर : नारायण की पत्नी का नाम निर्मला था।

७. यमुना ने कुछ मेवे नारायण के अतिरिक्त किसे खिलाया?
उत्तर : यमुना ने कुछ मेवे छोटे बेटे टुनटुन को खिला दिया था।

९.१

अपना गाँव

– मोहनदास नैमिशराय

इकाई की रूपरेखा :

९.१.० इकाई का उद्देश्य
९.१.१ प्रस्तावना
९.१.२ कहानी का सारांश
९.१.३ कहानी का संदेश
९.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
९.१.५ बोध प्रश्न
९.१.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

९.१.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत हम हिन्दी साहित्य में दलित चेतना के प्रसिद्ध साहित्यकार मोहनदास नैमिशराय के जीवन और उनके साहित्य से परिचित हो सकेंगे। 'अपना गाँव' कहानी में आजादी के बाद उभरती हुई चेतना का जो चित्रण किया है, उसका विवेचन – विश्लेषण किया जाएगा। ग्रामीण जीवन की जातिवादी व्यवस्था के साथ–साथ मोहनदास नैमिशराय की भाषा–शैली पर भी विचार किया जाएगा। इस पाठ को पढ़ने के बाद –

- आप लेखक के जीवन और उनकी साहित्यिक मान्यताओं का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- कहानी का सारांश पढ़ सकेंगे।
- कहानी के उद्देश्य से अवगत हो सकेंगे।
- ग्रामीण जीवन में दलितों पर होने वाले अत्याचार से परिचित हो सकेंगे।
- कहानी की भाषा–शैली से परिचत हो सकेंगे।

९.१.१ प्रस्तावना

लेखक परिचय - मोहनदास नैमिशराय का जन्म उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में हुआ था। एम.ए., बी.एड. की शिक्षा पूरी करने वाले मोहनदास नैमिशराय हिन्दी के साथ–साथ अंग्रेजी और मराठी भाषा का भी पर्याप्त ज्ञान रखते हैं। दलित चेतना के हिन्दी साहित्यकारों में मोहनदास नैमिशराय की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। आजादी

के बाद दलित जीवन में होने वाले परिवर्तनों का यथार्थ चित्रण इनकी कहानियों में मिलता है। नैमिशराय की कहानियाँ दलित समाज को अपने अधिकारों के प्रति सजग करती हैं।

प्रमुख रचनाएँ : अपने–अपने पिंजरे – आत्मकथा (भाग 1 और 2), जख्म हमारे (उपन्यास), अदालतनामा (नाटक), सफदर एक बयान (कविता संग्रह) आदि।

१.१.२ कहानी का सार

प्रस्तुत कहानी मोहनदास नैमिशराय द्वारा लिखित ग्रामीण जीवन की जातिवादी व्यवस्था के विरूद्ध एक आवाज है।

गाँव की दलित महिला कबूतरी (छमिया) को गाँव के ठाकुर के मझले बेटे सुलतान सिंह द्वारा अपने लठैतों के बल पर नंगा करके पूरे गाँव में घुमाया जाता है। उसकी गल्ती मात्र इतनी है कि उसका पति ठाकुर से पाँच सौ रूपये का कर्ज लेकर शहर में नौकरी करने चला गया है। ठाकुर द्वारा पहले उसे खेत में काम करके वह पैसा भरने की बात कही गई। लेकिन मना करने पर उसे नंगा करके घुमाया गया। कबूतरी के ददिया ससुर अस्सी वर्ष के बूढ़े हरिया ने जब बहू का बचाव किया तो उस पर भी कोड़े बरसाए गए। साथ ही गाँव की अन्य औरतों को भी ठाकुर की बात न मानने पर ऐसे ही दण्ड की धमकी दी गई। डर के मारे लोगों ने अपने दरवाजे बंद कर लिए और लाचार लोगों ने अपनी आँखों पर कपड़ा डाल लिया लेकिन, ठाकुर के डर से किसी ने मदद की हिम्मत नहीं की। शाम तक कबूतरी वापस लौट आई। उसके ससुर हरफूल और देवर भी औंधे मुँह पड़े रहे। रात को परिवार के किसी सदस्य ने भोजन नहीं किया। सुबह होने के पहले ही जब उसकी सास सन्तों बहू को आवाज लगाई तो घर की सभी महिलाएँ एक साथ जोर–जोर से रोने लगीं। उन्हें रोते सुनकर आस–पास की महिलाएँ भी एकत्र होकर रोने लगी। सभी एक स्वर से कल वाली घटना की निन्दा कर रहे थे। पड़ोसी महिलाओं को जब पता चला कि इनके घर में रात को परिवार के किसी भी सदस्य ने भोजन नहीं किया। दोपहर तक सबने मिलकर इस अत्याचार के विरूद्ध अनशन करने का निर्णय ले लिया। शाम तक कबूतरी के पति संपत के घर आ जाने पर इस कार्य को और बल मिल गया। रात को एक सभा हुई और यह तय किया गया कि कल शहर जाकर पुलिस में रिपोर्ट कराई जाएगी।

अगले दिन दलित बस्ती के कुछ पुरूष और तीन महिलायें पुलिस चौकी पहुँचे। पुलिस ने पहले तो जमीदार के खिलाफ रिपोर्ट लिखने से मना किया लेकिन बार–बार कहने पर रिपोर्ट लिखवाने गए सभी ग्यारह लोगों को एक गन्दे कमरे में बन्द कर दिया। यह बात पूरे शहर में फैल गई। शहर के दलित भी पुलिस चौकी पर जमा हो गए। लोगों के बढ़ते दबाव के कारण लहना गाँव के सभी दलितों को छोड़ दिया गया और ठाकुर के खिलाफ रिपोर्ट भी लिखी गई। इसलिए अगले दिन सुबह ही सभी लोग वापस गाँव लौट गए। इसी बीच शहर से कुछ पत्रकार भी आ गए थे जो पूरी जानकारी ले रहे थे। उसी दिन शाम को दलित बस्ती में पंचायत हुई और यह तय किया गया कि उस गाँव से बाहर जाकर वे सभी अपना गाँव बसायेंगे। वैसे कोई उस पुराने गाँव को छोड़ना नहीं चाहता था लेकिन फैसले के बाद आवश्यकता की कुछ चीजे लेकर सभी अपने घरों को छोड़कर शहर की तरफ निकल पड़े। उनके निकलने के पहले मंत्री द्वारा भी

समझाया गया लेकिन उसका कोई प्रभाव उन पर नहीं पड़ा। शहर के नजदीक पहुँचकर उन्होंने एक ईंट भठ्ठे पर नौकरी करने का निश्चय किया। वहीं उन्होंने अपना नया गाँव बसाया। उस नए गाँव की खुली हवा में सभी दलितों ने, विशेष कर महिलाओं ने आजादी का अनुभव किया। शाम को जब नए गाँव की प्राथमिक आवश्यकताओं के लिए सभा हुई तो विद्यालय और अस्पताल को पहली आवश्यकता बताया गया।

९.१.३ कहानी का संदेश

मोहनदास नैमिशराय की कहानियाँ दलित जीवन को ग्रामीण प्रचलित रूढ़ियों – अंधविश्वासों को दरकिनार करते हुए आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करती हैं। प्रस्तुत कहानी में अत्याचारी ठाकुर के विरूद्ध तीव्र आक्रोश पूरी दलित बस्ती में दिखाई देता है। ऐसे अत्याचारों के निषेध का सबसे कारगर उपाय है सार्वजनिक विरोध। और, यही विरोध इस कहानी के दलित वर्ग में झलकता है। पूर्व पीढ़ियों से चली आती परम्पराओं को तोड़ना एक कठिन काम है। उसके लिए सतत् प्रयास की आवश्यकता होगी। कुछ लोगों को सामान्य जनता के बीच से ही निकल कर नेतृत्व करना होगा। प्रस्तुत कहानी में एक ऐसा ही वर्ग निकलकर पुलिस चौकी जाता है। यहाँ लेखक द्वारा यह भी संकेत किया गया है कि जो दलित शहरों में बस गए हैं उन्हें भी ग्रामीण दलितों का मार्गदर्शन और सहयोग करना चाहिए। उन्हीं शहरी दलितों के सहयोग का परिणाम रहा कि संपत की रिपोर्ट पुलिस चौकी में ठाकुर के खिलाफ लिखी गई। लेखक द्वारा पत्रकारिता जगत् के प्रति भी यह संकेत किया गया है कि उन्हें अपनी पत्रकारिता में ग्रामीण समस्याओं को भी स्थान देना चाहिए। दलित बस्ती के सभी लोगों का गाँव छोड़कर जाना इस बात की घोषणा है कि अब दलित वर्ग समाज के समस्त बन्धनों को तोड़कर मुक्त साँस लेना चाहता है जिसके लिए शहर भी इंतजार कर रहा है। ऐसे गाँव जहाँ जाति–धर्म की कोई दिवार नहीं है, जहाँ गाँववालों की पहली आवश्यकता हैं स्कूल और अस्पताल। यहाँ लेखक यह घोषणा करता है कि अब समाज का विकास मंदिर और मस्जिद बनवाने से नही बल्कि स्कूल बनवाने और अस्पताल बनवाने से होगा।

९.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

''अपने दस साल के राजनीतिक जीवन में उसका ऐसा मान–मर्दन न हुआ था। जैसा आज हरिया ने किया था। घड़ों पानी पड़ा था उस पर।''

संदर्भ : प्रस्तुत अवतरण आधुनिक हिन्दी साहित्य में दलित चेतना के प्रसिद्ध कथाकार मोहनदास नैमिशराय द्वारा लिखित 'अपना गाँव' कहानी से अवतरित है। इस कहानी में दलित जागरण का यथार्थ और मार्मिक चित्रण किया गया है।

प्रसंग : लहना गाँव की दलित महिला छमिया पर हुए अत्याचार के विरूद्ध गाँव के सभी दलितों ने गाँव छोड़कर शहर के नजदीक जाने और एक नया अपना गाँव बसाने का निर्णय लिया है। दलितों के इस निर्णय से आस–पास के क्षेत्र में खलबली मच गई है। उन्हे जाने से रोकने के लिए क्षेत्र के विधायक और सरकार के मंत्री बी. एल. कुरील आते हैं लेकिन गाँववासी उनकी बात मानने से इन्कार कर

देते हैं। वयोवृद्ध हरिया द्वारा उन्हें नकार दिए जाने पर मंत्री महोदय निराश हो जाते हैं

स्पष्टीकरण : बी. ए. कुरील मुख्यमंत्री के प्रतिनिधि के रूप में लहना गाँव में जाते हैं कि दलितों को गाँव छोड़कर जाने से रोक सकें। गाँव में अस्सी वर्ष का हरिया ऐसे नेताओं को धिक्कारता है जो चुनाव जीत कर जाने के बाद वर्षों तक क्षेत्र के जनता की खोज खबर नहीं लेते हैं। गरीबों के ऊपर हुए अत्याचारों के लिए कुछ कृपा राशि देकर अपने कर्तव्यों से मुक्त हो जाते हैं। उनके कल्याण और उनकी सुरक्षा के लिए जो सरकार कोई ठोस कदम नहीं उठा सकती ऐसे सरकार की सहायता राशि इन स्वाभिमानी दलितों को कदापि स्वीकार नहीं है। इसलिए हरिया उन्हें बड़े ही कठोर शब्दों में नकार देता है।

वे मंत्री जिन्हें लोगों का सम्मान पाने की आदत पड़ चुकी हो उन्हें यदि कोई धिक्कारता है तो उनका अहंकार चोटिल होता है। प्रस्तुत पंक्तियों में भी मंत्री महोदय असहज महसूस कर रहे हैं। सामान्य जनता के बीच एक गरीब द्वारा दिखाए गए आइने से वह बहुत शर्मिंदा हैं। उन्हें अपमान का अनुभव इस समय हो रहा है।

विशेष :

१. मुहावरे का प्रयोग – घड़ों पानी पड़ गया।
२. संस्कृतनिष्ठ शब्दावली।
३. निराशा एवं अपमानजनक भावों का चित्रण।

९.१.५ बोध प्रश्न

१. प्रस्तुत कहानी के माध्यम से दलित जागरण की भावना किस प्रकार अभिव्यक्त हुई है?
२. '' 'अपना गाँव' से ही दलितों का उद्धार संभव है।'' स्पष्ट कीजिए।
३. 'सार्वजनिक एकता से बड़ी मुसीबतें भी छोटी बन जाती हैं।' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

९.१.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१. कबूतरी के पति का नाम बताइए?
उत्तर : कबूतरी के पति का नाम संपत था।

२. कबूतरी के पति ने ठाकुर से कितना कर्ज लिया था?
उत्तर : कबूतरी के पति ने ठाकुर से पाँच सौ रूपये का कर्ज लिया था।

३. हरिया कौन था?
उत्तर : हरिया कबूतरी का ददिया ससुर था।

४. अपना गाँव में मन्दिर बनवाने से पहले क्या बनवाने का निर्णय लिया गया?
उत्तर : अपना गाँव में मन्दिर बनवाने से पूर्व स्कूल और अस्पताल बनवाने का निर्णय लिया गया।

५. हरफूल कौन था?
उत्तर : हरफूल हरिया का बेटा और संपत का बाप था।

६. रिपोर्ट लिखवाने के लिए गाँव से कितने लोग गए थे?
उत्तर : रिपोर्ट लिखवाने के लिए गाँव से ग्यारह लोग गए थे।

७. गाँव से जाते समय दलितों को रोकने के लिए कौन आया था?
उत्तर : गाँव से जाते समय दलितों को रोकने के लिए क्षेत्रीय विधायक और मंत्री बी. एन. कुरील आए थे।

८. ठाकुर के मँझले बेटे का क्या नाम था?
उत्तर : ठाकुर के मँझले बेटे का नाम सुलतान सिंह था।

१०

कहानी – १
वापसी – उषा प्रियंवदा

इकाई की रूपरेखा :

१०.० इकाई का उद्देश्य
१०.१ लेखक परिचय
१०.२ कथावस्तु
१०.३ निष्कर्ष
१०.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
१०.५ बोध प्रश्न

१०.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत प्रसिद्द कथाकार उषा प्रियंवदा का परिचय पढेंगे। कहानी के कथ्य से परिचित हो सकेंगे। कहानी का उद्देश्य समझ सकेंगे। कहानी के संवाद एवं भाषाशैली से परिचित हो सकेंगे।

१०.१ लेखक परिचय

आधुनिक हिंदी साहित्य में उषा प्रियंवदा जी का विशिष्ट स्थान है। नई कहानी में अपनी उत्कृष्ट रचनाओं के कारण उषा जी बहुचर्चित और बहुप्रशंसित रहीं। अपनी रचनाशीलता के कारण ही वे आज भी हिंदी कहानी की महत्वपूर्ण हस्ताक्षर बनी हुई हैं। उषा प्रियंवदा की कहानियों में आज के व्यक्ति की दशा और दिशा का जीवन्त चित्रण देखने को मिलता है जो पाठकों को सहज रुप में अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। हिंदी कहानियों पर होने वाली कोई भी चर्चा इनकी कहानियों की चर्चा के बिना लगभग अधूरी है।

नई कहानी के बाद हिन्दी कहानी की विषय – वस्तु में जो यथार्थवाद दिखाई देता है, उषाजी की कहानी उसी का प्रतिनिधित्व करती है। ९वापसी' कहानी में परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व है। आधुनिकता के इस दौर में

दो पीढ़ियों के बीच हो रहे बदलाव व टकराव का लेखा जोखा प्रस्तुत है। कहानी में सेवानिवृत्त हो कर घर लौटे गजाधर बाबू को अपने ही घर में पराया कर दिए जाने के कटु अनुभवों को चित्रित किया गया है।

'जिन्दगी और गुलाब के फूल', 'कितना बड़ा झूठ', 'कोई एक दूसरा', 'मेरी प्रिय कहानियाँ' उषा जी के महत्त्वपूर्ण कहानी संग्रह हैं तथा 'पचपन खम्बे लाल दीवारें', 'रुकोगी नहीं राधिका', 'शेष यात्रा',' अंतर्वंशी' उनके महत्त्वपूर्ण उपन्यास है।

१०.२ कथावस्तु

स्टेशन मास्टर की नौकरी से सेवानिवृत्त होने के बाद गजाधर बाबू बड़े उत्साह से अपने परिवार के साथ रहने की इच्छा लिए घर लौटते हैं। रेलवे क्वार्टर में रह कर नौकरी करते हुए गजाधर बाबू को पैंतीस सालों तक परिवार से दूर रहना पड़ा था ताकि उनका परिवार शहर में सुख-सुविधाओं के बीच रह सके। शहर में रहने से उन्हें किसी प्रकार की कमी का बोध न होने पाए। नौकरी से सेवानिवृत्त होने के बाद उन्होंने सोचा कि अब जिंदगी के बचे दिन अपने परिजनों के साथ प्यार और आराम से बिताएंगे। एक सुंदर और सुखद घर का सपना संजोए वे घर लौटे तो उन्होंने पाया कि परिवार के लोग अपने - अपने ढंग से जी रहे हैं। बेटा घर का मालिक बना हुआ है। बेटी और बहू घर का कोई काम नहीं करतीं और यदि उन्हें रसोई बनाने को कहा जाए तो वे जानबूझ कर आवश्यकता से अधिक राशन खर्च कर देती हैं इसलिए उनकी पत्नी ने रसोई की सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली है। घर के अन्य कामों के लिए नौकर रखा गया है, जिसकी कोई आवश्यकता ही नहीं है। जिस परिवार के लिए सालों छोटे - मोटे स्टेशन के क्वाटर में अकेले रहकर उन्होंने अपना जीवन गुजार दिया उसी परिवार के किसी सदस्य के मन में उनके प्रति कोई लगाव नहीं है। बच्चों के लिए वे केवल पैसा कमाने के साधन मात्र हैं। गजाधर बाबू की उपस्थिति व किसी कार्य में उनका हस्तक्षेप बेटे बहू को स्वीकार नहीं हो पाता। उनके होने से उन्हें अपने मन से जीने की स्वतंत्रतता नहीं मिल पाती। उनकी अपनी बेटी भी एक छोटी सी डांट पर मुँह फुला देती है तथा उनसे कटकर रहने लगती है। उनकी पत्नी उन्हें समझने की बजाय उलटे उन्हीं को बच्चों के फैसलों के बीच में न पड़ने की सलाह देती है।

परिवार में गजाधर बाबू की वापसी आधुनिक परिवार में टूटते पारिवारिक संबंधों के साथ परिवार के बूढ़े व्यक्ति की लाचारी की झांकी प्रस्तुत करती है। गजाधर बाबू अपने बच्चों के साथ उनके मनोविनोद में शरीक होना चाहते हैं लेकिन बच्चे उन्हें देखते ही गंभीर हो जाते हैं। घर के सभी सदस्य गजाधर बाबू के फैसले का निरादर कर देते हैं। कुछ समय बाद घर में उनकी उपस्थिति बच्चो को अखरने लगती है। घरेलू मामले में उनके किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप को उनकी पत्नी तथा बच्चे स्वीकार नहीं करते उलटे उनके फैसले का विरोध करने लगते हैं। उनके कारण घर में दोस्तों के बीच चलने वाली चाय पार्टी में अवरोध न हो इसलिए बैठक से उनकी चारपाई हटाकर माँ के कमरे में लगा दी जाती है। उनके लिए सबसे दुःखद बात यह होती है कि जिस पत्नी का स्नेह और सौहार्द नौकरी के समय निरंतर उनके स्मरण में रहा करता था, अब वही पत्नी घर की रसोई सम्हालने में ही संतोष का अनुभव करती है तथा पति से अधिक बच्चों के बीच रहने में अपने जीवन की सार्थकता समझती है। कुल मिलाकर गजाधर बाबू अपने परिजनों के बीच पराया हो जाना बर्दाश नहीं कर पाते। अपनी पत्नी और बच्चों से निराश हो कर पुन; चीनी मील को नयी नौकरी खोज कर घर से चले जाने का फैसला ले लेते हैं।

१०.३ निष्कर्ष

'वापसी' आधुनिक युग के वास्तविक यथार्थ को प्रस्तुत करती है कहानी यह दर्शाती है कि आधुनिक पीढ़ी के लिए परिवार में पुराने मूल्यों की तरह पिता का भी कोई स्थान नहीं रह गया है। वह पत्नी व बच्चों के लिए केवल धनोपार्जन के निमित्त मात्र बन गया है। पत्नी भी जिस व्यक्ति के अस्तित्व से पत्नी मांग में सिंदूर डालने की अधिकारिणी है तथा समाज में प्रतिष्ठा पाती है। उसके सामने वह दो वक्त भोजन की थाली रख देने से ही अपने सारे कर्तव्यों से छुट्टी पा जाती है। गजाधर बाबू की परेशानी यह है कि वह जीवन यात्रा के अतीत के पन्नों को पुनः वैसे ही जीना चाहते हैं किन्तु अब ये संभव नहीं है। क्योंकि अब उनके लिए घर और परिवार में कोई जगह नहीं है। इसप्रकार यह कहानी वर्तमान युग मे बिखरते मध्यवर्गीय परिवार की त्रासदी तथा मूल्यों के विघटन की समस्या पर प्रकाश डालती है।

१०.४ सन्दर्भ सहित स्पष्टीकरण

"उन्होंने अनुभव किया कि वह पत्नी और बच्चों के लिए केवल धनोपार्जन के निमित्त मात्र हैं जिस व्यक्ति के अस्तित्व से पत्नी माँग से सिन्दूर डालने की अधिकारिणी है, समाज में उसकी प्रतिष्ठा है, उसके सामने वह दो वक़्त भोजन की थाली रख देने से सारे कर्तव्यों से छुट्टी पा जाती है।"

संदर्भः- प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रथम वर्ष कला हिन्दी के पाठ्यपुस्तक 'श्रेष्ठ हिंदी कहानियां' में निर्धारित कहानी ९वापसी" से ली गयी हैं। इस कहानी की लेखिका ९उषा प्रियंवदा" जी हैं। लेखिका ने इस कहानी में गजाधर बाबू के रूप में नौकरी से सेवानिवृत्त हो कर घर लौटे पुरुष मन की व्यथा का चित्रण किया है।

प्रसंगः- प्रस्तुत अवतरण द्वारा लेखिका यह दर्शाती हैं कि गजाधर बाबू घर के अव्यवस्था के संदर्भ में अपनी पत्नी से बात करना चाहते हैं, लेकिन उनकी पत्नी अपने पति की बातों को समझने की बजाय उन्हें बच्चों के मामले में हस्तक्षेप न करने की बात करती है। जिससे गजाधर बाबू का मन बहुत दुखी हो जाता है।

व्याख्याः- लेखिका गजाधर बाबू के घर की बिगड़ी हुई स्थिति का वर्णन करते हुए बताती हैं कि गजाधर बाबू परिवार के लोगों के लिए धन पाने का जरिया रह गए हैं। उन्होंने अपने जीवन के पैंतीस साल नौकरी करते हुए अपने घर से दूर रह कर बिताये और आज उसी नौकरी से सेवानिवृत्त होकर जब वह अपने घर आते हैं तो देखते है कि परिवार में लौटने पर उन्होंने अपने लोगों से जो अपेक्षा की थी वैसा यहाँ कुछ भी नहीं है। वे समझ जाते हैं कि यहां पर ऐसा कोई भी नहीं है जो उनकी मन की स्थिति को समझे अथवा उनका साथी बने। गजाधर बाबू यह अनुभव करते हैं, कि अब उनकी पत्नी का लगाव भी उनके प्रति उतना नहीं रहा जितना कि पहले हुआ करता था। पत्नी की इस व्यवहार से गजाधर बाबू अत्यंत दुखी हो जाते हैं। पत्नी उनके सामने दो वक्त के भोजन की थाली रख कर अपने सारे कर्तव्य से छुट्टी पा जाती है। यह देख कर पत्नी और बच्चों के साथ रहने की इच्छा समाप्त हो जाती है गजाधर बाबू को इस बात का आघात लगता है कि उनके अपने ही घर में उनके लिए कोइ स्थान नहीं है। इसलिए वे परिवार में हस्तक्षेप करना बंद कर देते हैं और एकांत एक

चारपाई पर पड़े रहकर अपने स्थिति को सुधारने के लिए उपाय खोजते रहते हैं।

विशेष:- 'वापसी' कहानी पुरुष पर केन्द्रित कहानी है। गजाधर बाबू कहानी के मुख्य पात्र होने के साथ परिवार के मुखिया भी हैं किन्तु अपने ही परिवार में वे उपेक्षित हो कर जीने पर विवश हैं। स्नेही स्वभाव के व्यक्ति होने पर भी वे परिवार के स्नेह से वंचित हैं। परिवार से जुड़ कर जीने की इच्छा को मन में लिए घर लौटे तो हैं फिर भी परिवार के बीच अकेले जीने पर विवश हैं।

१०.५ बोध प्रश्न

बोध प्रश्न : -

१) 'वापसी' कहानी के माध्यम से गजाधर बाबू का चरित्र – चित्रण कीजिये।

२) 'वापसी' कहानी के माध्यम से मध्यमवर्गीय परिवार की विवशताओं पर प्रकाश डालिए।

एक वाक्य में उत्तर लिखिए : -

१) 'वापसी' कहानी किसकी रचना है?

उत्तर – 'वापसी' कहानी उषा प्रियंवदा जी की रचना है।

३) गजाधर बाबू कहाँ नौकरी करते थे?

उत्तर – गजाधर बाबू रेलवे में नौकरी करते थे?

४) गजाधर बाबू का स्वभाव कैसा था?

उत्तर – गजाधर बाबू स्वभाव से बहुत स्नेही व्यक्ति थे और स्नेह के आकांक्षी भी थे।

५) गजाधर बाबू ने रेलवे में कुल कितने साल नौकरी की?

उत्तर – गजाधर बाबू ने रेलवे में कुल पैतीस साल नौकरी की।

६) गजाधर बाबू को दोबारा कहाँ नौकरी मिली?

उत्तर – गजाधर बाबू को सेठ रामजीमल की चीनी मिल में नौकरी मिली।

❖❖❖❖

१०.१

कहानी – २

'अकेली' - मन्नू भंडारी

इकाई की रूपरेखा :

१०.१.० इकाई का उद्देश्य
१०.१.१ लेखक परिचय
१०.१.२ कहानी की कथावस्तु
१०.१.३ निष्कर्ष
१०.१.४ संदर्भ सहित व्याख्या
१०.१.५ बोध प्रश्न

१०.१.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत प्रसिद्द कथाकार मन्नू भंडारी का परिचय पढेंगे। कहानी के कथ्य से परिचित हो सकेंगे। कहानी का उद्देश्य समझ सकेंगे। कहानी के संवाद एवं भाषाशैली से परिचित हो सकेंगे।

१०.१.१ लेखक परिचय

आधुनिक हिंदी साहित्य जगत में मन्नू भंडारी आधुनिक कथा लेखिकाओं की पहली पंक्ति की लेखिका है। उनकी रचनाओं में अभिव्यक्त व्यक्ति और युग जीवन का यथार्थ मूल्यांकन है। मन्नू भंडारी हिंदी कहानी के उस दौर की एक महत्वपूर्ण लेखिका है जिसे नई कहानी आंदोलन के नाम से जाना जाता है। उनकी कथा यात्रा हिंदी कथा साहित्य में एक नया मोड़ लेकर सामने आती है। पारिवारिक संबंधों की गहरी होती हुई दरारें, **अंर्तद्वंद** से उठता हुआ सैलाब, पात्रों की उठती-गिरती मानसिकता मन्नू जी के कथा साहित्य के सबसे महत्वपूर्ण व केंद्रीय बिंदु हैं। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य के विकास में नारी जीवन के मूक क्षणों को वाणी देने वाली सुप्रसिद्ध लेखिका मन्नू भंडारी का आधुनिक कहानीकारों में विशिष्ट स्थान है।

कृतियाँ – महाभोज, आपका बंटी, स्वामी, एक इंच मुस्कान, कलवा (उपन्यास), एक पलेट सैलाब, मैं हार गयी, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, त्रिशंकु, श्रेष्ठ कहानियाँ, आँखों देखा झूठ (कहानी संग्रह), बिना दीवारों के घर (नाटक) । मन्नू भंडारी जी को हिन्दी अकादमी, दिल्ली का शिखर सम्मान, बिहार सरकार, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, व्यास सम्मान और उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कृत किया गया है।

मन्नू जी के 'अकेली' कहानी का जैसा शीर्षक है वैसी ही इसकी कथा भी है। सोमा बुआ बूढी परित्यक्ता तथा अकेली स्त्री है। इस कहानी में मन्नू जी ने सोमा बुआ का चरित्र-चित्रण बहुत ही संवेदनापूर्ण ढंग से चित्रित किया है।

१०.१.२ कहानी की कथावस्तू

सोमा बुआ बुढ़िया परित्यक्ता और अकेली है। बुढ़िया सोमा बुआ पिछले बीस वर्षों से अकेली रहती हैं। उनका इकलौता जवान बेटा हरखु समय से पहले ही चल बसा। उनके पति पुत्र वियोग का सदमा सह न सके तथा घर छोड़ कर तीर्थवासी हो गये। सोमा बुआ के सन्यासी पति साल में एक महीना घर आते हैं। बुआ को अपना जीवन पड़ोस वालों के भरोसे ही काटना पड़ता है। दूसरों के घर के सुख-दुख के सभी कार्यक्रमों में वह दम टूटने तक यों काम करती हैं, मानो वह अपने ही घर में काम कर रही हो। जब बुआ के पति घर पर होते हैं तब बुआ का अन्य घरों में सक्रिय बना रहना बंद हो जाता है। तब उनकी जीभ ही सक्रिय हो उठती है। पड़ोसन राधा के समक्ष बुआ मन का गुबार निकालती है राधा के यह पूछने पर कि सन्यासी महाराज क्यों बिगड़ पड़े? बुआ बोल पड़ती है कि उनका औरों के घर आना जाना उनके पति को नहीं सुहाता। पति का स्नेहहीन व्यवहार तथा बुआ के पास पड़ोस से बिन बुलाये निभाए जाने वाले व्यवहारों पर पति द्वारा लगाया जाने वाला अंकुश उन्हें कष्ट देता है। पति से होने वाली कहा सुनी पर बुआ रोने लगती है। वे राधा से कहती हैं कि, 'ये तो हरिद्वार रहते हैं, मुझे तो सबसे निभानी पड़ती है। मेरा अपना हरखू होता और उसके घर काम होता तो क्या मैं बुलावे के भरोसे बैठी रहती। मेरे लिए जैसा हरखू वैसा किशोरीलाल। आज हरखू नहीं है इसी से दूसरे को देख देखकर मन भरमाती रहती हूं।' दरअसल सोमा बुआ अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए सबसे जुड़ना चाहती है इसलिए बिन

बुलाये ही सबके घर जाकर काम में जुट जाती हैं। जैसे- "अमरक के बिखरे हुए कल रह-रहकर धूप में चमक जाते हैं ठीक वैसे ही जैसे किसी को भी गली में घुसता देख बुआ का चेहरा चमक उठता है। मन के बहलने प्रसंगों को वह तलाश थी रहती है। कहीं थोड़ी देर के लिए दिल बहल जाता है तो कहीं फिर से गहरी चोट मिल जाती है।

जिन दिनों उनके पति आये हुए होते है उसी समय सोमा बुआ के दूर के रिश्ते में किसी का ब्याह पड़ जाता है। बुआ की आदत को जानते हुए उनके पति साफ निर्देश देते हैं कि जब तक उनके घर से न्योता न आये सोमा बुआ वहाँ नहीं जाएँगी। उनकी विधवा ननद उनके जख्मों पर नमक छिड़कते हुए झूठ ही कहती है कि निमंत्रण की लिस्ट में बुआ का भी नाम है बुआ न्योते का इंतजार करती है साथ ही मन में न्योते की प्रसन्नता लिए ब्याह में भेंट देने के जुगाड़ में भी लग जाती है वे लोग पैसे वाले हैं साथ ही दूर के रिश्तेदार भी। यूँ तो सामाजिक बंधन बनाना मर्दों का काम है, किन्तु सोमाबुआ मर्द वाली होकर भी बेमर्द की तरह है इसलिए व्याह में भेट देने के लिए अपने मरे हुए बेटे की एकमात्र निशानी 'सोने की अँगूठी' बेचकर पड़ोसन राधा से चांदी की सिंदूरदानी तथा साड़ी-ब्लाउज का इंतजाम करवाती हैं। अपने हाथों में लाल-हरी चूड़ियां पहन कर जाने वाली साड़ी को पीले रंग मांड दे कर बुआ पाँच बजे के मुहूर्त के निमंत्रण का इंतजार करने लगती है। सात बज जाते हैं किन्तु निमंत्रण न आने पर वह दु:खी हो जाती है। इतनी तैयारियों के साथ पल पल निमंत्रण के इंतजार के बाद बुआ को विश्वास ही नहीं होता कि सात कैसे बज सकते है जबकि मुहूर्त पांच बजे का था।" उस दिन सोम बुआ को ब्याह का बुलावा नहीं आया था। ऐसे ही उन्हें किसी के घर से बुलावा नहीं आता फिर भी बुआ बिन बुलाये ही सबके घर चली जाती हैं और खूब काम भी करती हैं।

१०.१.३ निष्कर्ष

इस कहानी में बुआ एक ऐसा चरित्र है जो सामाजिक संबंधों को निरंतर बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील है। आज भी उनके मन में परंपरागत अधिकार को बनाए रखने का मोह है। जिसके लिए वह अपने को गाँव वालों से जोड़ें रखती हैं। कहानी में मन्नू जी ने आधुनिक परिवेश में व्यक्तिवादिता और उपयोगितावादिता को प्रस्तुत किया है। आज

पारस्परिक संबंधों में जैसे दरार सी पड़ गई है। विशेषतः दीन और दु:खी लोगों के साथ कोई अपना रिश्ता बनाए रखना नहीं चाहता। व्यक्ति का एकाकीपन आधुनिक समाज का शाप है।

वस्तुतः पति-पत्नी सुख-दुख के सहचर होते हैं पर बुआ की व्यथा यह है कि जिसके साथ वह निज-दु:ख बाँट सके वही उन्हें दुखी कर देता है। बुआ के सन्यासी पति की उपस्थिति में उनकी जीवन गति का निषेध हो जाता है। उनका घूमना, फिरना, मिलना, जुलना बंद हो जाता है अर्थात जिंदगी ठहर कर सन्यासी जी के इर्द-गिर्द केंद्रित हो जाती है। सामाजिकता से कट जाना और पति का संग साथ भी न मिल पाना दुखी और अकेली सोमा बुआ के लिए बोझिल बन जाता है लेकिन सन्यासी जी को बुआ के दु:ख से कोई सरोकार नहीं है, बल्कि किसी बात पर ताने मार कर वे उन्हें नियंत्रित करने का प्रयत्न भी करते रहते हैं। पति के जाते ही सोमा बुआ की दिनचर्या का यह रुका बांध फूट जाता है और आस पड़ोस के सुख दुख में शामिल होकर अपना जीवन काटने की कोशिश में जुट जाती है। दू:सह पति संग और पुत्र-वियोग दोनों को भुलाने का उपाय भी बुआ के पास अपने श्रम के बल पर समाज में शामिल होने का प्रयत्न में छुपा है। इसलिए बुआ किसी के बुलावे का इंतजार नहीं करती। बिन बुलावे के उनकी उपस्थिति बड़ी मर्मभेदक है। बुलावा ना भेजने पर वे पड़ोस को माफ कर देती हैं और उपाय भी क्या है? यह माफ कर देना एक तरह से स्वयं को दिलासा देना है। इस दिलासे में भी अपना होना भी खोजती चलती हैं। "बेचारे इतने हंगामे में बुलाना भूल गए तो मैं भी मान करके बैठ जाती? मैं तो अपनेपन की बात जानती हूं....आज हरखू नहीं है.... इसी से दूसरों को देख-देखकर मन भरमाती रहती हूं। लाख उपेक्षा के बावजूद यह पास-पड़ोस ही है, जो बुआ के जीने का सहारा है ना कि पति का संग साथ।

पति की दुनिया समानांतर संसार है जिसमें पत्नी की जगह नहीं है परंतु गृहणी धर्म में उनकी जरा भी लापरवाही सन्यासी जी को बर्दाश्त नहीं है। वे वैरागी जरूर है पर खासे दुनियादार भी है समाज को अच्छी तरह समझते तो हैं पर मनुष्य के सुख दुख में शामिल नहीं होना चाहते बल्कि सन्यास लेकर पुत्र शोक से उत्पन्न यथार्थ की समस्याओं से भागते ही हैं। अपने दुख को वे सन्यास में महिमामंडित करके जी रहे हैं और सोमा बुआ का दुख? इसके लिए उनके पास सांत्वना का कोई शब्द नहीं

है। इस तरह घर और समाज दोनों तरफ से बुआ के हिस्से में अकेलापन ही आता है।

सोमा बुआ जो अपना बेटा खो चुकी है, अपने पति द्वारा त्याज्य जैसी स्थिति में है। समाज उन्हें बार-बार तिरस्कृत करता है फिर भी बुआ के भीतर गहरे पड़े दुख में भी सांस लेने की इच्छा जीवन का उत्साह, उमंग, इच्छाएं सब दबाव पड़ा है उनमें। वे कुछ देर को अपना दुख भूल कर दूसरों के सुख में प्रसन्न हो जाने की सामर्थ्य रखती है पर सन्यासी जी नहीं।

स्त्रीत्व, मातृत्व और पत्नीत्व से अलग है। बुआ का लाल हरी चूड़ियों के बंद पहनकर शादी में जाने की तैयारी के लिए मन ही मन उत्साहित होना, साड़ी पीले रंग में रंगना, शादी में दिए जाने वाले सामान की तैयारी करना आदि उनके भीतर की स्त्री से परिचित कराता है, जो सारे दुखों, उपेक्षाओं, तिरस्कार के बावजूद स्त्री है और विवाह में शामिल होने की अपनी बेहद सामान्य सी हुलस को रोक नहीं पाती है।

१०.१.४ सन्दर्भ सहित व्याख्या

इस स्थिति में बुआ को अपनी जिन्दगी पास पदोस्वलों के भरोसे ही काटनी पड़ती थी. किसी के घर मुंडन हो, छठी हो, जनेऊ हो, शादी हो या गमी, बुआ पहुँच जाती और फिर छाती फाड़कर कम करतीं, मानो वे दूसरे के घर में नहीं, अपने ही घर में काम कर रही हो।"

संदर्भ :-प्रस्तुत अवतरण प्रथम वर्ष हिंदी कला के पाठ्य पुस्तक 'श्रेष्ठ हिंदी कहानियां' में निर्धारित कहानी 'अकेली' से लिया गया है। इसकी लेखिका 'मन्नू भंडारी' जी है। इस कहानी द्वारा लेखिका एक अकेली स्त्री के मनोभाव का चित्रण करती है।

प्रसंग :-प्रस्तुत कहानी में एक स्त्री जो कि अकेली है। वह अपना मन बहलाने के लिए आस पड़ोस में जाकर उन्हें अपना मानकर, उनके साथ रहकर अपना जीवन काटती रहती हैं। लेखिका कहानी द्वारा एक स्त्री के अकेलेपन तथा उसके जीवन जीने की आशा पर प्रकाश डालती है। लेखिका उस स्त्री के मन में उठने वाले भावों को बहुत खूब तरीके से बताती हैं।

व्याख्या :- कहानी में लेखिका सोमा बुआ के माध्यम से एक अकेली स्त्री के चरित्र का चित्रण करती है। कहानी में सोमा बुआ के पति सन्यासी हैं।

साल के कई महीने वे बाहर रहते हैं, और एक महीने भर के लिए घर आते हैं। सोमा बुआ के एक ही बेटा था वह भी अब जीवित न रहा। बेटे के साथ पति की अनुपस्थिति में बुआ अपने जीवन में एकदम अकेली हो चुकी थी। अपने इसी अकेलेपन को दूर करना चाहती है। इसलिए आस पड़ोस के घरों में शादी, मुंडन, छठी या फिर जनेऊ जैसे कार्यक्रमों में बिन बुलाये जाकर छाती फाड़कर काम करती है। लोगों को अपना मानकर उनमें घुलने मिलने की कोशिश करती रहती। अपना सारा दुख भूल कर लोगों की खुशी में शामिल हो जाती।

लेखिका ने सोमा बुआ के जीवन में इस अकेलेपन का सहारा आस-पड़ोस को बताया है। अनजान लोगों में भी वह अपने लोगों का आभास करती है। पूरी जिंदगी सोमा बुआ अपने पति की प्रतीक्षा या उनकी राह देखने में गुजारती है। अपने मन को खुश करने के लिए वह सबके यहां बिन बुलाए जाती और यह भी कहती कि, अपनों के यहां से कोई बुलावा थोड़े ही आता है, शायद वे लोग भूल गए होंगे मुझे बुलाना। यह सब कहकर वह अपना मन बहलाती है और खुश रहने की कोशिश करती है। लेखिका अपना सारा जीवन ऐसे ही बिताती है तथा किसी से कोई उम्मीद न रख कर सब को अपना मानती हैं।

<u>विशेष :-</u> इस प्रकार इस कहानी में सोमा बुआ अकेली होने के कारण सबको अपना मान कर जीने वाली सबके दुख-सुख में तत्पर रहने वाली लाचार स्त्री है। उनकी इसी लाचारी के कारण वे अपने पास पड़ोस के लोगों द्वारा छली जाती हैं। वे धन भी लुटाती हैं जीतोड़ मेहनत भी करती हैं फिर भी लोगों से सम्मान नहीं पा पाती।

१०.१.५ बोध प्रश्न

१) 'अकेली' कहानी के माध्यम से सोमाबुआ के अकेलेपन के दुःख का विस्तार से वर्णन कीजिये।

२) कहानी के माध्यम से पुत्र के खो देने के बाद सोमाबुआ और उनके पति की स्थिति का चित्रण कीजिये।

<u>एक वाक्य में उत्तर लिखिए : -</u>

१) 'अकेली' की रचनाकार का नाम लिखिए।

उत्तर :- 'अकेली' मन्नू भंडारी जी की रचना है।

२) सोमाबुआ के पति को किस बात का सदमा लगा था?

उत्तर :- सोमाबुआ के पति को पुत्र वियोग का सदमा लगा था।

३) सोमाबुआ को अपनी जिंदगी किसके भरोसे काटनी पड़ती थी?

उत्तर :- सोमाबुआ को अपनी जिंदगी पास – पड़ोसिनों के भरोसे काटनी पड़ती थी।

४) सोमाबुआ के पति साल के ग्यारह महीने कहाँ रहते थे?

उत्तर :- सोमाबुआ के पति साल के ग्यारह महीने हरिद्वार में रहते थे।

५) सोमाबुआ के पास पुत्र की एकमात्र निशानी क्या थी?

उत्तर :- सोमाबुआ के पास मृत पुत्र की एकमात्र निशानी अंगूठी थी।

१०.२

कहानी - ३

'सिक्का बदल गया' - कृष्णा सोबती

इकाई की रूपरेखा :

१०.२.० इकाई का उद्देश्य
१०.२.१ लेखक परिचय
१०.२.२ कथावस्तु
१०.२.३ निष्कर्ष
१०.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
१०.२.५ बोध प्रश्न

१०.२.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत प्रसिद्ध कथाकार कृष्णा सोबती का परिचय पढेंगे। कहानी के कथ्य से परिचित हो सकेंगे। कहानी का उद्देश्य समझ सकेंगे। कहानी के संवाद एवं भाषाशैली से परिचित हो सकेंगे।

१०.२.१ लेखक परिचय

भारतीय साहित्य के परिदृश्य पर कृष्णा सोबती अपने संयमित अभिव्यक्ति और सुथरी रचनात्मकता के लिए मशहूर हैं। कविता में गद्य के क्षेत्र में पदार्पण करने वाली हिंदी की प्रख्यात कथाकार कृष्णा सोबती का लेखन आज भी काव्य की कोमलता एवं माधुर्य से ओतप्रोत है। हिंदी कथा साहित्य को नए रचनात्मक आयाम देती भाषा शैली उनके पास है। नारी के अंतर्मन को पहचानने की कला में निपुण हैं। उनकी कहानियाँ कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से उनके रचनात्मक वैविध्य को रेखांकित करती हैं। आज के बदलते परिवेश में भी इनकी कहानियों की प्रासंगिकता बनी हुई है।

कृतियाँ – डार से बिछुड़ी, मित्रों मरजानी, यारों के यार, तीन पहाड़, बादलों के घेरे, सूरजमुखी अँधेरे के, जिंदगीनामा, ए लड़की, दिलोदानिश, हम हशमत (भाग १ – २)। साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्यता समेत कई राष्ट्रीय पुरस्कारों से सुशोभित कृष्णा सोबती ने पाठकों को निज के प्रति सचेत और समाज के प्रति चैतन्य किया है। उन्हें हिन्दी अकादमी दिल्ली की ओर से शलाका सम्मान से सम्मानित किया गया है। इसी वर्ष उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ सम्मान से नवाजा गया है।

देश विभाजन से संबंधित कृष्णा सोबती की कहानियों में सबसे चर्चित एवं प्रसिद्ध कहानी है- "सिक्का बदल गया। इसका प्रकाशन 'प्रतीक' में 1948 में हुआ था। अज्ञेय जी इस पत्रिका के संपादक थे। इसमें विभाजन से उत्पन्न दारुण परिस्थितियों के मार्मिक चित्रण के साथ मानवीय संबंधों और मूल्यों में आए विघटन का भी काफी वर्णन हुआ है।

१०.२.२ कहानी की कथावस्तु

'सिक्का बदल गया' एक विधवा नारी की पराधीनता तथा विवशता एवं शोषित वर्ग के बदलते सामाजिक मानदंडों का सफल चित्रण है। प्रस्तुत कहानी देश विभाजन की पृष्ठभूमि में लिखी गई है। सत्ता परिवर्तन मानव को नहीं देखता, देखता है तो केवल सिक्के को।

इस कहानी के मुख्य पात्र 'शाहनी' है जिसके पति शाहजी का देहांत हो चुका है। शाहनी रोज पौ फटने पर चनाब में नहाने जाया करती थी। एक दिन अचानक उसके मन में एक भय छाने लगा। 'जम्मीवाला' कुआं, मीलों फैले उनके खेत सब पर उसकी दृष्टि पड़ती है। मन अस्वस्थ होने के कारण हवेली जाने के पहले वह शेरा के घर जाती है। शेरा जो पहले शाहजी का सेवक था। उसकी मां की मृत्यु के पश्चात शाहनी के यही पलकर बड़ा हुआ था। उस समय शेरा साहनी की ऊंची हवेली की अंधेरी कोठरी में रखी सोने-चांदी की संदूकचीयाँ उठाने की सोच में था। इसलिए स्नेह का पर्दा डालकर वह शाहनी से कुशल पूछता है। शाहनी उसके सम्मुख यह शंका रखती है कि पिछली रात कुल्लूवाल के लोग यहां आए होंगे। यदि शाहजी जीवित रहते तो ऐसा ना होता। तब शेरा के मन में यह विचार आता है कि आज शाहजी नहीं है अतः कोई कुछ नहीं कर सकता। पहले गांव के पीड़ित असामियों से सूद वसूल करके शाहजी ने सोने की

बोरियां भरी थी। आज वही लोग इसका बदला ले रहे हैं। शेरा शाहनी को घर तक छोड़ने आता है। शाहनी के साथ चलने पर भी उसका मन इधर उधर भटकता है कि कहीं कोई देख तो नहीं रहा है। शाहनी की बड़ी हवेली को लूटने के लिए बाहर पूरा गांव खड़ा है। बीती रात ही इस बड़ी हवेली को लूट लेने की बात तय हुई थी। शाहनी सबकुछ जानती थी। उसने उन लोगों को बात करते सुना। किन्तु सबकुछ जानकर भी वो अंजान बनी हुई थी, क्योंकि आज वो बात नहीं रही अब सिक्का बदल गया है। रसूली के सूचित करने पर कि ट्रकें आ गयी हैं और अब उसे उनकी योजनानुसार इस हवेली को छोड़ कर चले जाना है। शाहनी किसी को बुरा भला न कहकर किसी पर दोषारोपण न कर हवेली से बाहर निकलती है। थानेदार दाऊद खां उसके पास आकर कहता है हवेली छोड़ने से पहले यदि वो अपने साथ कुछ साथ लेना चाहे तो ले सकती है किन्तु शाहनी अपनी ही सम्पत्ति में से सोना-चांदी पैसा कुछ भी ले कर चलने से इंकार कर देती है वहां खड़े सारे लोग जो कभी उसके इशारे पर नाचते थे जिन्हें कभी उसने अपने नातेदारों से कम नहीं समझा, आज उनमे से कोई उसका अपना नहीं है आज उन गाँव वालों के भीड़ के बीच भी वो अकेली हैं बिलकुल अकेली। बेगू पटवारी और मुल्ला इस्माल जैसे लोग शाहनी के पास खड़े हो कर भी उससे नजरे नहीं मिला पा पाते। शेरा आकर कहता है कि बहुत देर हो रही है। यह सुनकर शाहनी चौक पड़ती उसका मन आहात हो उठता है किसी समय वह इस हवेली की रानी थी, मालकिन थी। आज उसे अपने ही घर में देर हो रही है। आँखों के आँसू पोछ कर वह शान से उस हवेली की ड्योढ़ी पार कर लेती है। भीगी पलकों से हवेली की कुलवधू आज उसके अंतिम दर्शन कर प्रणाम करती है शाहनी ट्रक की ओर चल देती है उसका बडा सा भवन पीछे छूट जाता है। सत्ता पलट जाने पर जो लोग बूढी साहनी को अपने पास रख न सके उन सभी को जाते समय भर्राये हुए गले से शाहनी आशीर्वाद भी देती है कि ईश्वर उनका भला करें, उन्हें सलामत रखें। ट्रक में बैठने पर शेरा शाहनी के पांव छूते हुए कहता है कि वह कुछ नहीं कर सकता, क्योंकि राज पलट गया है, सिक्का बदल गया है। शाहनी के लिए सिक्का नहीं बदलेगा क्योंकि वह उसे गांव में ही छोड़कर जा रही है। रात को कैंप में पहुंचकर भी उसके मन में यह प्रश्न उठता रहा कि सिक्का क्या बदलेगा? वो खुद सबकुछ छोड़ कर आयी है

इस प्रकार पीड़ित वर्ग के साथ-साथ अकेली, असहाय बूढी धनाढ्य नारी की शोचनीय दशा का चित्र कृष्णा सोबती जी ने इस कहानी में खींचा

है। प्रस्तुत कहानी में शोषक और शोषित वर्ग के बीच के संघर्ष का चित्रण है। शाहों के घर में नौकरी करने वाले असामी आज शोषक वर्ग के विरुद्ध इकट्ठा हो गए हैं। जमाना बदल गया है, सिक्का बदल गया है। इस प्रकार कृष्णा सोबती जी ने विभाजन के कटु सत्य को उचित तथ्यों के साथ कहानी में प्रस्तुत किया है।

१०.२.३ निष्कर्ष

हम कह सकते हैं- प्रस्तुत कहानी में एक विधवा नारी की पराधीनता का मनोवैज्ञानिक चित्रण हुआ है। मालिक के जीवित रहते उसका सलाम करनेवाले उसकी मृत्यु पर मालकिन को लूटने का मार्ग ही सोचते हैं। स्वार्थी व्यक्ति मन से सच्चा नहीं हो सकता।

शाहनी समझ गयी है कि सिक्का बदल गया है। शाहजी भी नहीं है कोई उसके लिए सोचने वाला नहीं है वह किसी भी बात का विरोध नही करती और चुप चाप हवेली की ड्योढ़ी पर कर ट्रक में बैठ जाती है। घर से निकाले जाने पर भी शाहनी उन सब को खुले दिल से आशीर्वाद भी देती है। यहां शाहनी की ऊंची मनोवृत्ति का सबल चित्रण कृष्णा जी ने किया है- शाहनी ने उठती हुई हिचकी को रोककर रुँधे-रुँधे गले से कहा, 'रब तुम्हें सलामत रखे बच्चा, खुशिया बक्शे....।शाहजी की मृत्यु के बाद शाहनी अकेली रह गई। उस घर के नौकर शेरे पिछले दिनों कई कत्ल कर चुका था। शेरे के साथियों ने शाहनी को मार डालने का सुझाव दिया था ताकि उसके बाद हवेली का सारा माल बराबर – बराबर बाँट लिया जाए इस स्थिति से अंजान शाहनी आज भी शेरे पर विश्वास करती है, उसकी सलामती की दुआ मांगती है। आज शाहनी क्या, कोई भी कुछ नहीं कर सकता। यह हो कर रहेगा- क्यों ना हो? हमारे ही भाई-बंधु से सूद लेकर शाहजी सोने की बोरियां तोला करते थे। प्रति हिंसा की आग शेरे की आंखों में उतर आई। शाहों से पीड़ित असामियों का पुनःजागरण ही शोषक-शोषित संघर्ष का आधार है।

१०.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

"इसी दिन के लिए छोड़ गये थे शाहजी उसे? बेजान सी शाहनी की ओर देख कर बेगू सोच रहा है – "क्या गुजर रही है शाहनी पर. मगर क्या हो सकता है.सिक्का बदल गया।"

सन्दर्भ :- प्रस्तुत अवतरण प्रथम वर्ष हिंदी कला के पाठ्यपुस्तक 'श्रेष्ठ हिंदी कहानियां' में निर्धारित कहानी 'सिक्का बदल गया' से लिया गया है इस कहानी की लेखिका 'कृष्णा सोबती' जी हैं। कहानी में लेखिका ने बदलते वक्त की त्रासदी का चित्रण किया है। वक्त बदलने के साथ-साथ लोगों की सोच में भी परिवर्तन आ जाता है।

प्रसंग :- प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने शाहनी पर होने वाले अत्याचार पर प्रकाश डाला है। वह बताती हैं कि कैसे शाहनी चाहकर भी अपने ही घर में नहीं रह पा रही है। पति के गुजर जाने के बाद उसे उसके ही घर से निकाला जा रहा है। लेखिका यह समझाती है कि वक्त बदलने से लोगों में भी परिवर्तन आ जाता है। शाहनी की उम्र हो जाने पर उसे मारने की भी बात लोग सोचने लगते हैं ताकि उसकी सारी जमीन जायदाद हड़पी जा सके।

व्याख्या :- इस कहानी में लेखिका ने शाहनी के जीवन का वर्णन किया है। शाहजी के गुजर जाने के बाद शाहनी बहुत अकेली हो जाती है। धीरे-धीरे उसकी उम्र भी होती जाती है। उम्र के एसाख्री पड़ाव में भी वह पहले की भांति अपनी दिनचर्या निभाती है। अपने अकेलेपन में वह पहले की बातों को याद करती है और मन ही मन यह सोचती भी है कि आज इस असहाय स्थिति में उसका पति उसके साथ नहीं है उसके पति के गुजर जाने के एक लम्बे समय के बाद शाहनी अपनी ही हवेली छोडनी पड़ती है। वक्त के बदल जाने के साथ लोगों की मानसिकता भी बदल जाती है। शेरा जिसने उसे अपने बच्चे की तरह पाला वो भी शाहनी के पीछे अपना फायदा देखता है।

एसी लाचार स्थिति में शाहनी सोचती है कि क्या इसी दिन के लिए शाहजी उसे छोड़ गए थे। बेगू भी बेजान सी शाहनी की इस विवशता पर तरस खाता है, लेकिन कोइ कुछ नहीं कर सकता क्योंकि अब राज पलट गया है, सिक्का बदल गया है।

विशेष :- इस कहानी के माध्यम से लेखिका समय के बदल जाने पर लोगों में होने वाले परिवर्तन का वर्णन करती है। वक्त के बदल जाने पर लोग भी कैसे बदल जाते हैं, इसका उदाहरण जिवंत उदहारण इन चरित्रों के माध्यम से उकेरती हैं। लोगो की स्वार्थपरक नीति का उल्लेख कर उनकी ह्रदय हीनता को दर्शाने का प्रयास करती हैं।

१०.२.५ बोध प्रश्न

१) 'सिक्का बदल गया' कहानी के सन्देश को अपने शब्दों में लिखिए।

२) 'सिक्का बदल गया' कहानी की कथावस्तु को अपने शब्दों में लिखिए।

एक वाक्य में उत्तर लिखिए :-

१) 'सिक्का बदल गया' की मुख्य स्त्री पात्र का नाम लिखिए।

उत्तर :- 'सिक्का बदल गया' की मुख्य पात्र शाहनी है।

२) शेरा का पालन पोषण किसने किया?

उत्तर :- शेरा का पालन – पोषण शाहनी ने किया।

३) हसैना कौन है?

उत्तर :- हसैना शेरा की पत्नी हैं।

४) शेरा कितने क़त्ल कर चुका था?

उत्तर :- शेरा तीस – चालीस क़त्ल कर चुका था।

५) दाऊद खान कौन था?

उत्तर :- दाऊद खान थानेदार था?

❖❖❖❖

११

कहानी – ४

गदल – रांगेय राघव

इकाई की रूपरेखा :

११.० इकाई का उद्देश्य
११.१ लेखक परिचय
११.२ कथावस्तु
१०.३ निष्कर्ष
१०.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
१०.५ बोध प्रश्न

११.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत प्रसिद्द कथाकार रांगेय राघव का परिचय पढेंगे कहानी के कथ्य से परिचित हो सकेंगे कहानी का उद्देश्य समझ सकेंगे कहानी के संवाद एवं भाषाशैली से परिचित हो सकेंगे।

११.१ लेखक परिचय

डॉ रांगेय राघव आधुनिक हिन्दी के बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं। उन्होंने विविध विधाओं के माध्यम से हिन्दी में सृजन कार्य किया है। डॉ रांगेय राघव का वंश दक्षिण भारतीय अहिन्दी भाषी है। फिर भी हिन्दी के प्रति उनका विशेष लगाव है। उनका सर्जन मात्रात्मक एवं गुणात्मक दृष्टि से अपना महत्व रखता है। हिंदी साहित्य में उनका असाधारण योगदान है - कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, रिपोतॉज के अतिरिक्त आलोचना सभ्यता और संस्कृति पर शोध व व्याख्या के क्षेत्रों को उन्होंने १५० से भी अधिक पुस्तकों से समृद्ध किया है। अपनी अद्भुत प्रतिभा, असाधारण ज्ञान और लेखन क्षमता के राघव जी सर्वमान्य

अद्वितीय लेखक हैं। डॉ. रांगेय राघव जी 'हिन्दुस्तानी अकादमी पुरस्कार, डालमिया परसकर, उत्तर प्रदेश सरकार पुरस्कार, राजस्थान साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा महात्मा गाँधी पुरस्कार से सम्मानित हैं। ड़ॉ रांगेय राघव की कहानियों में उत्तरप्रदेश तथा राजस्थान और दक्षिण भारत के तमिलनाडु के समाज का अंकन है। डॉ रांगेय राघव ने समाज में स्थित धर्म तथा धर्म से सम्बंधित गतिविधियों को अपनी कहानियों में चित्रित किया है। भारतीय समाज रूढ़ि परम्परावादी समाज है। रुढ़ी परम्पराएं ग्रामीण जीवन की अभिन्न अंग होती हैं। ग्रामवासी पूरी निष्ठा से उसका पालन करते है। ग्रामीण अंचलों में इनका विशेष महत्व है। रांगेय राघव जी ने अपनी रचनाओं में ग्रामजीवन के साथ उनकी रूढ़ि परंपरा को भी दर्शाया है। गदल कहानी में रूढ़ि परंपरा के रूप में मृत्यु भोज कारज का करुण चित्रण रांगेय राघव जी ने किया है।

कहानी की कथावस्तुः- गदल कहानी में ग्राम जीवन का चित्रण है। गदल अपने पति गुन्ना की मृत्यु के बाद खारी गुजर जाति की होते हुए भी अपने से कम उम्र के लौहारे गुजर मौनी से व्याह करके उस के घर जा बैठती है। इससे खारी गुजर जाति मे कोलाहल मच जाता है। बेटों – बहुओं वाली गदल के इस कार्य से उसके परिवार वालों की बड़ी बदनामी होती है।

जिस दिन गदल मौनी के घर जा बैठी उसी दिन संध्या समय उसके बेटे निहाल और नारायण मिलकर उसे जबरदस्ती पकड़कर घर ले आते हैं। उस समय डोडी निहाल और परिवार के बहुओं के बीच कहा सुनी होती है। अगली सुबह गदल पुनः अपने नये पति मौनी के घर चली जाती है।

'गदल' गूजरों में यह रूढ़ि परम्परा रही है की यदि बड़े भाई की मृत्यु होती है तो उसकी पत्नी के साथ उसका पुनः विवाह रचाया जा सकता है। देवर - भाभी के बीच इस प्रकार की स्थिति में किया गया ब्याह समाज सम्मत है। गदल के पति गुन्ना की मृत्यु के बाद उसका देवर डोडी उससे पुनर्विवाह कर अपने घर में रख सकता था। किन्तु लोकलाज के कारण डोडी ने गदल को पत्नी के रूप में स्वीकार नहीं किया। डोडी की पत्नी बहुत पहले ही गुजर चुकी थी उसके बच्चे भी नहीं रहे। भाई गुन्ना की मृत्यु के बाद डोडी ने ही उसके तीनों बेटों व बेटियों को पाला था। बेटे - बेटियों की

शादियाँ हो चुकि थीं उनके बच्चे हो चुके थे इतने बड़े परिवार को छोड़ कर गदल लौहारे मौनी से ब्याह करके उसके घर जा बैठी थी।

दरअसल गदल स्वाभिमानी स्त्री थी। वह पति के रूप में डोडी के लिए चूल्हे – चौके का काम करने के लिए तैयार थी लेकिन जीवन भर अपने अनुसार चलने वाली गदल को इस उम्र में बहुओं की टहल बजाना उनके हिसाब से चलना स्वीकार न था। गदल चाहती थी कि डोडी उससे ब्याह कर ले। डोडी उसका देवर है। वह बेहद सज्जन पुरुष है भाई के परिवार को उसने अपना ही परिवार माना। वह जो कुछ कमाता अपनी भाभी गदल को ही ला कर देता किन्तु भाई गुन्ना की मृत्यु के पश्चात् अपनी भाभी गदल को पत्नी के रूप में स्वीकार करना डोडी को उचित न लगा। गदल जानती थी कि डोडी उसे मन ही मन चाहता है उसके परिवार को अपना मानता है लेकिन फिर भी भाभी से शादी कर उसे पत्नी के रूप में स्वीकार करने कि हिम्मत न थी। गदल इसी कारण उससे नाराज थी उससे ब्याह न करने पर उससे बदला लेना चाहती थी इसलिए उसने डोडी को छोड़ कर अपने से कम उम्र के गुजर नामक आदमी से ब्याह करके उसके घर चली गयी थी। उसी के कहने पर निहाल और नारायण गदल को जबरजस्ती घर ले आते हैं उस रात गदल और डोडी के बीच कहा सुनी होती है अगली सुबह गदल अपने नए पति के घर लौट जाती है। गदल का यूँ चले जाना और उसके कारण जातिबंधुओं के बीच उसके व उसके परिवार का अपमानित होना डोडी बर्दाश नहीं कर पाता वह किसी से कुछ कह भी नहीं पाता । उसका शरीर बुखार से तपने लगता है उसी रात डोडी की मृत्यु हो जाती है। डोडी के मृत्यु की खबर पा कर गदल अपने पति से विरोध कर अपने घर लौट आती है।

गदल अपने देवर डोडी का मृत्युभोज बड़े पैमाने पर करना चाहती है। राज्य और कानून का विधान था कि किसी भी विशिष्ट समारोह में केवल पच्चीस आदमियों को भोजन के लिये बुलाया जाये। किन्तु गदल अपने पति गुन्ना के मृत्यु भोज में अधिक लोगों को बुला ना सकी इस बात का उसे खेद है। अतः वह अपने देवर डोडी का मृत्युभोज बड़े पैमाने पर करना चाहती है। इस कार्य के लिए गदल ने दरोगा को रिश्वत भी दी। गिर्राज ने गदल की सारी बाते मौनी को जाकर बता दी कि डोडी के मृत्युभोज में गदल बड़ा इंतजाम कर रही है। लोग कहते है उसे अपने मरद का इतना गम नहीं हुआ था जितना अब लगता है। इस खबर से

मौनी का मन प्रतिशोध से भर गया और उसने कारज में व्यवधान डालने के लिए बड़े दरोगा के पास शिकायत की। फलस्वरूप जब कारज चल रहा था तभी रिश्वत खाये दरोगा के सिपाही पहुँच कर दावत बंद करने का आदेश देते है। इतना ही नहीं तो वे बताते हैं कि बड़े दरोगा आ गये है। किन्तु गदल आये हुये अतिथियों को सौगन्ध खिलाकर भोजन करने का आग्रह करती है। अन्ततः गोलियाँ चलती है गदल बेटे – बहुओं व गाँव वालों को पीछे के रास्ते से निकाल कर अकेले ही बंदूक सम्हाल लेती है दोनों ओर से गोली बारी होती है अन्ततः गदल के पेट में गोली लग जाती है। पुलिस उसके घर की तलाशी लेती है घर में गदल के अलावा पुलिस को कोई नहीं मिलता। उसे अकेली पा कर पुलिस पूछती है कि तू कौन है गदल जवाब में कहती है कि "जो मेरे बिन एक दिन भी न रह सका उसी की...।" उसी समय गदल की भी मृत्यु हो जाती है। मरते समय गदल को इस बात का संतोष था कि डोडी के मरणोपरान्त का काज उसकी इच्छानुसार सकुशल सम्पन्न हुआ। इस घटना के साथ कहानी समाप्त हो जाती है।

११.३ निष्कर्ष

रांगेय राघव की यह कहानी गदल एक ऐसे स्त्री की कहानी है जो अपनी संस्कारगत सीमाओं में रहकर अपना विद्रोह प्रकट करती है। गदल कहानी में गदल का डोडी के प्रति अदृश्य और काफी कुछ मूक लगाव है। गदल और गुन्ना के सगाई के समय से ही गदल डोडी की ओर आकर्षित हुयी थी। गूजर समुदाय की यह गदल अपने पति की मृत्यु होने पर अपना भरा पूरा परिवार छोड़कर दूसरे परिवार में शादी का निर्णय लेती है क्यूंकि पति की अनुपस्थिति में वह बहुओं के सामने अपना कद छोटा होते नहीं देखना चाहती। पर अपने आत्मसम्मान की रक्षा के साथ अपने देवर से ब्याह न करने पर उससे बदला लेना चाहती है। इसलिए मौनी से शादी कर लेती है। देवर पर गदल की मनोवैज्ञानिक चोट उसके लिए प्राणघातक सिद्ध होती है। इसके बाद गदल का उठाया गया कदम कहानी और गदल के चरित्र को एक दूसरे ही स्तर तक उठा ले जाता है।

गदल की चारित्रिक संरचना बेहद पारदर्शी है। जो भीतर है वही एक ईमानदार अभिव्यक्ति के साथ बाहर भी है। दुराव-छिपाव और छल से गदल

कोसों दूर है। गदल में डोडी के प्रति विशेष प्रेमभाव है। डोडी भी गदल से प्रेम करता है। 30 वर्षों तक एक ही घर में वे रहते हैं। फिर भी वह दोनों अपने दायित्व और नैतिक मर्यादाओं से बंधे हुए रहते हैं। परंतु गुन्ना की मृत्यु के बाद गदल के मन का सुप्त प्रेमभाव उभरकर आ जाता है। उम्र, मर्यादा और दायित्व व समग्र परिस्थितियां उसकी इच्छा को दबा नहीं पाते।

एक ही स्थिति को लेकर दोनों की प्रतिक्रियाएं अलग-अलग हैं। डोडी सज्जन और कमजोर है, लोग क्या कहेंगे उसे इस बात की चिंता है। परंतु गदल डोडी के इन विचारों प्रति विद्रोह कर लुहारे मौनी के घर पर जाकर बैठती है। परिणामस्वरुप डोडी की मृत्यु होती है। गदल निडर औरत है। वह वही करती है जो उसे ठीक लगता है इसलिए वो अपने नये पति को छोड़ कर अपने घर चली आती है औरत होते हुए भी अपने बल पर देवर का कार्य सम्पन्न करवाती है इसी कोशिश में सशस्त्र पुलिस बल से मोर्चा लेते हुए मर जाती है, किंतु मरते समय भी उसे इस बात का आत्मसंतोष रहता है कि उसने परंपरानुसार अपने देवर का मरणोपरांत कार्य सम्पन्न किया। कहानी के प्रारंभ में वह जितनी मुखर, ढीठ और निडर है कहानी के अंतिम में उसका बलिदान पाठकों के मन पर अमिट छाप छोड़ जाता है।

१०.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

"देवर तो मेरा अगले जन्म में भी रहेगा। उसी ने मुझसे रुखाई दिखायी नहीं तो क्या ये पाँव कटे बिना उस देहली से बाहर निकल सकते थे? उसने मुझसे मन फेरा, मैंने उससे. ऐसा बदला लिया उससे।"

संदर्भ :- प्रस्तुत अवतरण प्रथम वर्ष हिंदी कला के पाठ्यपुस्तक 'श्रेष्ठ हिंदी कहानियां' में निर्धारित कहानी 'गदल' से लिया गया है। इसके लेखक 'रांगेय राघव' जी हैं। इस कहानी में उन्होंने एक महत्वाकांक्षी और निडर महिला का वर्णन किया है, जो अपने बल पर अपना लक्ष्य सिद्ध करती है।

प्रसंग :- प्रस्तुत कहानी में लेखक यह बताना चाहते हैं कि एक कठोर हृदय वाली महिला अपने चरित्र पर कोई भी दाग नहीं लगने देती। उसे किसी का भय नहीं होता, न समाज का और ना ही घर के किसी भी

रिश्तेदारों का। महिला के पति न होने पर उसे अपने घर में अपने देवर से बहुत सारी उम्मीदें रहती है, परंतु वह सब उसे नहीं मिल पाता। लेखक ने इस कहानी में एक स्त्री के मन की व्यथा को दर्शाया है।

व्याख्या :- लेखक के कहानी के माध्यम से गदल और डोडी के व्यक्तिगत जीवन पर प्रकाश डाला है। लेखक बताते हैं कि, घर में गदल के पति के गुजर जाने पर गदल पर सारे गृहस्थी का भार आ जाता है। उसका देवर डोडी जो कि उसके पति का सगा भाई था, वो घर को संभालने की जिम्मा उठाता है। गदल उससे शादी के प्रस्ताव की बात करती है, तो डोडी उसे अस्वीकार करता है। गदल उससे बदला लेने के लिए अपने ही गांव के विधुर युवक मौनी से शादी कर लेती है। डोडी उसका दूर जाना सह नहीं पाता और उसकी मृत्यु हो जाती है। यह खबर गदल को पता चलती है, तो वह उसे देखने के लिए जाना चाहती है, परंतु उसका पति मौनी उसे मना कर देता है। तब गदल झनझनाती हुई कहती है, कि देवर तो मेरा वो अगले जन्म में भी रहेगा। उसी ने गदल से रुखाई दिखाई, तभी वह डोडी से बदला लेने के लिए उसने मौनी से शादी की।

डोडी के शादी न करने का फैसला सुनकर गदल उससे मुंह फेर लेती है। गदल उससे मन फेरने का बदला लेना चाहती है। बदले की भावना को लेकर ही वह उसकी देहलीज से बाहर आने का फैसला करती है। उसे समाज की बातें और घरवालों के सोचने का कोई प्रभाव ना पड़ता।

विशेष :- गदल कहानी के माध्यम से ग्रामीण महिला के रूप में एक निडर, साहसी व महत्वाकांक्षी महिला के चरित्र को उभारने का प्रयास किया गया है, उसके सच्चे प्यार व बलिदान का भी वर्णन किया है।

१०.५ बोध प्रश्न

१) कहानी के माध्यम से गदल का चरित्र – चित्रण कीजिये।
२) गदल ने डोडी से किस बात का बदला लिया – विस्तार से लिखिए।

एक वाक्य में उत्तर लिखिए :-
१) 'गदल' कहानी में गदल किसका नाम है?
उत्तर :- कहानी में गदल मुख्य स्त्री पात्र का नाम है।
२) डोडी कौन था?
उत्तर :- डोडी गदल का देवर था।

३) डोडी किसका जाना न सह सका?

उत्तर :- डोडी गदल का जाना न सह सका।

४) गदल के नये पति का नाम लिखिए।

उत्तर :- गदल का नया पति मौनी है।

५) गदल किससे शादी करना चाहती थी?

उत्तर :- गदल डोडी से शादी करना चाहती थी।

११.१

कहानी – ५
'घुसपैठिये' - ओमप्रकाश वाल्मीकी

इकाई की रूपरेखा :

११.१.० इकाई का उद्देश्य
११.१.१ लेखक परिचय
११.१.२ कथावस्तु
१०.१.३ निष्कर्ष
१०.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
१०.१.५ बोध प्रश्न

११.१.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत प्रसिद्ध कथाकार ओमप्रकाश वाल्मीकि का परिचय पढेंगे। कहानी के कथ्य से परिचित हो सकेंगे। कहानी का उद्देश्य समझ सकेंगे। कहानी के संवाद एवं भाषाशैली से परिचित हो सकेंगे।

११.१.१ लेखक परिचय

ओमप्रकाश वाल्मीकि वर्तमान दलित साहित्य के प्रतिनिधि रचनाकारों में से एक हैं। हिंदी में दलित साहित्य के विकास में ओमप्रकाश की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने डॉ. भीमराव अंबेडकर की रचनाओं का अध्ययन किया, जिससे उन्हें दलित साहित्य के अध्ययन में काफी प्रेरणा मिली। वाल्मीकि जी की मान्यता है कि दलितों द्वारा लिखा गया साहित्य ही दलित साहित्य है। उनका मानना है कि दलित की पीड़ा दलित ही बेहतर समझ सकता है और वही उसके अनुभव को सत्य रूप में अभिव्यक्त कर सकता है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने 80 के दशक में लिखना प्रारंभ किया। उन्होंने हर विधा में अपनी लेखनी चलाई - कविता संग्रह, आत्मकथा, आलोचना

साहित्य, दलित साहित्य, नाटक और कहानी संग्रह आदि। उनके कहानी संग्रहों में सलाम, अम्मा एंड अदर स्टोरीज, छतरी और घुसपैठिए आदि।

घुसपैठिए एक ऐसी कहानी है जो मेडिकल कॉलेज के दलित छात्रों पर लिखी गई है। वाल्मीकि जी ने इस कहानी द्वारा समाज में फैली जाति व्यवस्था को प्रकाश में लाने का प्रयास किया है। मेडिकल कॉलेज के एक-एक दलित छात्र कैसे बली की वेदी पर चढ़ता है? क्या दलित डॉक्टर या इंजीनियर नहीं बन सकते? उनके दलित होने के कारण उन्हें आरक्षण मिलता है, तो इसमें उनका क्या दोष? कहानी में इन्ही सवालों को उठाने का प्रयास हुआ है।

११.१.२ कहानी की कथावस्तु

ओमप्रकाश वाल्मीकि की यह कहानी मेडिकल कॉलेज में अध्ययन कर रहे दलित छात्रों की कहानी है। घुसपैठिए कहानी का परिवेश मेडिकल कॉलेज है। जहाँ दलित छात्र सवर्ण छात्रों की दृष्टि में एक अपराधी समझे जाते हैं। उन्हें आरक्षण द्वारा कॉलेज में प्रवेश मिला है यही उनकी सबसे बड़ी गलती है। दलित छात्रों को अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने की मनाही है। पूरा माहौल शहरी है जहां सब सुशिक्षित है। सब ऊंचे-ऊंचे पदों पर आसीन हैं। कोई दलित व्यक्ति अफसर तो कोई अधिकारी है लेकिन किसी में इतनी हिम्मत नहीं है कि अन्याय के विरोध में खड़ा हो या उसके खिलाफ कोई कार्यवाही करें। कोई इतना साहस नहीं जुटा पाता कि इन दलित छात्रों की पुकार सुन ले। सारे अफसर और अधिकारी अपनी-अपनी कुर्सी संभालते नजर आ रहे हैं।

पूरा वातावरण इसी तानाकशी से भरा है। समस्त विभाग वालों को ऐसा लगता है कि दलित छात्र घुसपैठी हैं। आरक्षण के चलते ही उन्हें प्रवेश मिला है।

इस कॉलेज में अमरदीप, विकास चौधरी और नितिन मेश्राम तथा सुभाष सोनकर जैसे दलित छात्र ने डॉक्टर बनने के लिए प्रवेश लिया है। वे अपने मां-बाप के सपनों को पूरा करने के जद्दोजहद में लगे हुए हैं। कॉलेज में सवर्ण छात्र दलित छात्रों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं, जिससे दलित छात्र बिल्कुल परेशान हो गए हैं। इतना ही नहीं शहर से कॉलेज जाने वाली बसों में उन्हें चमरटे जैसे अभ्रद्र शब्दों से बुलाकर बस की सबसे पीछे सीट पर ले जाकर लात-घूंसे से पीटा जाता है। यहां तक कि

उन्हें हॉस्पिटल में भी अलग रखा जाता है। यही हाल गर्ल्स हॉस्टल का भी है। वहां की सभी दलित लड़कियां एक ही साथ रहती हैं। यदि छात्र हॉस्पिटल गार्डन से इसकी शिकायत करें तो उल्टी उन्हें ही चेतावनी दी जाती है कि अपनी औकात में रहें वरना हॉस्टल से निकाल दिए जाएंगे।

कहानी में एक किरदार राकेश है जो एक अफसर है, वह भी दलित जाति का है। कहानी का प्रमुख पात्र रमेश चौधरी है। वह एक सामाजिक कार्यकर्ता है, जो बिल्कुल बेबाक और गलत का विरोध करने में तत्पर है जबकि राकेश बिल्कुल शांत प्रवृत्ति का है। राकेश दलित वर्ग पर होने वाले अत्याचारों के खिलाफ बोलना तो चाहता है, लेकिन अपनी पत्नी के डर से चुप्पी साध लेता है। उसे यही सही लगता है। रमेश चौधरी अक्सर किसी-न-किसी बहाने राकेश से मिलता है। उसके आने से राकेश बिल्कुल अव्यवस्थित हो जाता है। वह जितना उससे पीछा छुड़ाना चाहता है उतना ही वह किसी-न-किसी बहाने आ ही जाता है।

रमेश, राकेश के इस व्यवहार से वह एक बार कुछ ऐसा कहता है - "तुम लोग अपने आप को समझते क्या हो? तुम लोगों को सिर्फ बड़े-बड़े प्रमोशन चाहिए, वह भी आरक्षण के भरोसे। बच्चों को स्कूल, कॉलेज में एडमिशन भी कोटे से ही चाहिए। लेकिन इस कोटे को बचाए रखने की नौबत आती है तो तुम लोगों को जरूरी काम निकल आते हैं या फिर दफ्तर से छुट्टी नहीं मिलती तब रमेश चौधरी ही बनेगा बलि का बकरा। गालियां भी वही खाएगा। देखो साहब..... अगर भीड़ का हिस्सा बनने में आप लोगों को खतरा दिखाई देता है तो ऐसी संस्थाओं को चंदा दो जो तुम्हारे हितों के लिए काम करती हो.... तुम लोग इसी तरह उदासीन बने रहे तो वह दिन दूर नहीं जब यह लोग आरक्षण को हजम कर जाएंगे..... बाबा साहब तो है नहीं.....□ उसकी ऐसी बातों से राकेश हमेशा बचने की कोशिश करता है, क्योंकि उसकी पत्नी इंदू चाहती थी वह इन सब पचड़ों से दूर रहे। इंदु का ऐसा नजरिया इस सामाजिक प्रताड़ना का फल था। वह एक सहज जीवन जीना चाहती थी। ऐसा लगता है कि अपने दलित होने का भय उसे खाए जा रहा है।

उस कॉलेज में दिन-प्रतिदिन दलित छात्रों के साथ दुष्कर्म बढ़ता जाता है। एक दिन अचानक राकेश के घर पर रमेश चौधरी कॉलेज के कुछ दलित छात्रों अमरदीप, विकास चौधरी, नितिन मेश्राम और सुभाष सोनकर को लेकर आया। रमेश चौधरी सबका परिचय कराता है। वे अपनी सारी

तकलीफें राकेश से बताते हुए कहते हैं कि वें कितनी यातनाओं से गुजर रहे हैं उसका दर्द वही समझ सकते हैं। अमरदीप अपनी तकलीफ बताते हुए कहता है कि एक रोज तो उसने आत्महत्या करने का निश्चय कर लिया था। इन बातों से उसके हृदय में उठने वाली चीत्कारें साफ-साफ सुनाई पड़ती हैं। एक दिन उन्हें हॉस्टल के कमरे में बंद करके पूरे दिन रखा गया था। कुछ दिन पहले ऐसे ही बस में फाइनल के प्रणव मिश्रा ने चिल्लाकर आवाज़ लगाई की बस में चमार कौन है? उस बस में सुभाष सोनकर नाम का विद्यार्थी था जो चुपचाप बैठा रहा। उसके पास बैठे छात्र ने इशारे से बताया इतने में प्रणव मिश्रा तिलमिला गया और सोनकर के बाल पकड़ खींचलिया और बोला क्यों बे चमरटे सुनाई नहीं दिया। सोनकर ने जवाब दिया कि मैं चमार नहीं हूं। मिश्रा ने उसे जोरदार थप्पड़ मारा और कहा □चमार हो या सोनकर ब्राह्मण तो नहीं है। है तो कोटे वाला ही बस इतना ही काफी है।□उसने लात-घूंसों से मार कर उसे अधमरा कर दिया। उन छात्रो को एक-एक दिन इसी प्रकार की यंत्रणा से गुजार कर जीना पड़ता था।

शिकायत करने पर दलित छात्रों को इस बात का हवाला दिया जाता है कि आरक्षण से आए हो तो थोड़ा-बहुत तो सहना पड़ेगा। लेखक कहते हैं कि,ये आरक्षण के विरोध से उत्पन्न हुआ आक्रोश है। डीन ही नहीं, प्रोफेसर भी इस प्रकार की बातें करके प्रणव मिश्रा जैसे छात्रों को राह देते हैं।

सुभाष सोनकर ने अपनी मेडिकल रिपोर्ट बनवाई, जिसे लेकर वह पुलिस थाने गया रपट लिखवाने के लिए, तो उससे इंस्पेक्टर ने ये कह कर रिपोर्ट लिखने से साफ मना कर दिया कि □यें अंदरूनी मामला है पुलिस को क्यों घसीटते हो।" इस स्थितियों में उनके लिए एकाग्र होकर पढ़ाई कर पाना बहुत ही मुश्किल था। रमेश चौधरी ने अखबारों में रपट भेजी तो वहां रैंगिंग कहकर छाप दिया गया। दलित छात्रों के साथ होने वाली ज्यादतियों का कोई जिक्र नहीं था।

राकेश और रमेश ने सोचा कि डीन से मिलकर समस्या का समाधान निकालेंगे, तो वहां भी उन्हें निराशा ही मिली। डीन ने यह कहकर बात खत्म करने की कोशिश की, कि यहां पर दलित उत्पीड़न जैसा कुछ नहीं है। राकेश और रमेश चौधरी बौखलाकर उठ आए। दलित छात्रों का मेडिकल में आना डीन की दृष्टि में घुसपैठ थी।

वह अनेक अधिकारियों के पास गए वहां भी वह असफल रहे। दस-पन्द्रह दिन के अथक प्रयासों के बाद भी उन्हें कोई सफलता नहीं मिली। राकेश भी अधिकारी था, वह अपना सामाजिक उत्तरदायित्व समझकर छात्रों की मदद करना चाहता था। सरकारी अफसर ऐसे कामों से बचने की कोशिश करते थे, उन्हें भय था की कहीं इसका असर उनके ऊपर भी ना पड़ जाए। उन्हें दलित होने का भय हर वक्त सालता है। यहां तक कि रमेश ने जुलूस निकालने की योजना भी बना ली और तारीख भी तय की। लेकिन सुभाष इतना सब सहन न कर सका। हद तो तब हो गई जब सोनकर को पहली परीक्षा में ही फेल कर दिया गया, क्योंकि उसने प्रणव मिश्रा के खिलाफ पुलिस में नामजद रपट लिखाने का दुस्साहस किया था। डीन और अन्य प्रोफेसरों तक शिकायत पहुंचाने की हिमाकत की थी। वह यह भूल गया था कि वह इस चक्रव्यूह में अकेला फँसा था, जहां से बाहर आने के लिए उसे कौरवों की कई अक्षौणियीं सेना और अनेक महारथियों से टकराना पड़ेगा। परीक्षाफल का चक्रव्यूह भेद कर सोनकर बाहर नहीं आ पाया और अंततः हार कर उसने आत्महत्या कर ली। लेकिन यह आत्महत्या आत्महत्या नहीं बल्कि उन महारथियों द्वारा सोनकर की हत्या की गई थी, जिसे आत्महत्या कहकर प्रचारित किया जा रहा था।

राकेश को जब रमेश चौधरी ने यह ख़बर बताई तो वह बिल्कुल कांप गया। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि इतनी कुशाग्र बुद्धि का सोनकर आत्महत्या कर सकता है। रमेश चौधरी ने राकेश को फोन करके धीर-गंभीर आवाज में बोला, " राकेश साहब, कल पोस्टमार्टम के बाद सोनकर की लाश का अंतिम संस्कार कॉलेज के मुख्य गेट पर होगा.... आप में साहस हो तो पहुंच जाना...." उसने रमेश चौधरी के शब्दों की आंच को महसूस कर लिया। सोनकर की जद्दोजहद राकेश की अपनी पीड़ा बन गई थी। वह एक झटके से खड़ा हुआ और उसने तय किया कि वह सोनकर की अंतिम यात्रा में शामिल ही नहीं होगा बल्कि उसे कंधा भी देगा।

`इसी के साथ कहानी अपने चरम उत्कर्ष पर पहुंचते हुए समाप्त हो जाती है।

११.१.३ निष्कर्ष

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी घुसपैठिए कहानी के द्वारा दलित समाज की समस्याओं पर ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं। वे दलित वर्ग की पीड़ा को अपनी पीड़ा मानते हैं और यही पीड़ा घुसपैठिए कहानी में मेडिकल कॉलेज में अध्ययन करने वाले दलित छात्रों की है। लेखक इस कहानी के द्वारा यह दर्शाना चाहते हैं कि आरक्षण और कोटे के विरोध की आड़ में सवर्ण छात्र किस प्रकार से दलित छात्रों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं। ऐसी संस्थाओं में उन्हें इतनी यातना दी जाती है कि वह आत्महत्या तक करने को मजबूर हो जाते हैं। वाल्मीकि जी बताना चाहते हैं कि कॉलेजों और कई संस्थाओं में इनके (दलितों) साथ भेदभाव किया जाता है। दलितों को रहने के लिए अलग रूम और सवर्ण को अलग रूम दिया जाता है। कहानी में बताया गया है कि मेडिकल कॉलेज के ऐसे हालात है कि वहां दलित छात्रों का पढ़ाई करना बहुत ही कठिन हो गया है। दलित छात्र कहते हैं कि कई बार तो ऐसा लगता है पढ़ाई छोड़ कर लौट जाएं, लेकिन मां-बाप की उम्मीदें रास्ता रोककर मजबूर कर देती है। कॉलेज के प्रोफेसर और डीन भी प्रणव मिश्रा जैसे लोगों को शह देते हैं और इतना ही नहीं प्रैक्टिकल परीक्षाओं में भी भेदभाव किया जाता है। वो क्लासेस अटेंड करें या ना करें उनको अटेंडेंस की भी समस्या नहीं होती और दलित छात्र इसका विरोध करें तो उसे सीधा फेल कर दिया जाता है। अतः वाल्मीकि जी ने इन सारी समस्याओं को 'घुसपैठिए' कहानी में दर्शाने का प्रयास किया है।

११.१.४ सन्दर्भ सहित व्याख्या

□क्यों बे चमरटे सुनाई नहीं पड़ा हमने क्या कहा था?' सोनकर ने अपने बाल छुड़ाने की कोशिश की...मैं चमार नहीं हूँ. बालों की पकड़ मजबूत थी. सोनकर करह उठा। प्रणव मिश्र का झन्नाटेदार थप्पड़ सोनकर के गाल पर पड़ा...(गाली)....चमार हो या सोनकर ब्राह्मण तो नहीं हो...हो तो सिर्फ कोटेवाले...बस इतना ही काफी है।□

<u>संदर्भ :-</u> प्रस्तुत गद्यांश बी.ए. प्रथम वर्ष की पाठ्यपुस्तक में रचित "घुसपैठिए" कहानी से लिया गया है। इसके रचयिता "ओमप्रकाश वाल्मीकि"

जी हैं। लेखक ने इस कथा के माध्यम से दलित समाज के साथ होने वाले अन्याय और दुर्व्यवहारों का वर्णन किया है।

प्रसंग :- इस गद्यावतरण में ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने भारत में दलित समाज के लोगों के साथ होने वाले दलित उत्पीड़न की व्याख्या की है। लेखक बताना चाहते हैं कि कॉलेजों या अन्य संस्थाओं में इन दलितों के साथ कैसे कैसे बर्ताव और ज्यादतियां की जाती है।

व्याख्या :- कहानी घुसपैठिए में दिखाया गया है कि मेडिकल कॉलेज में दलित, ब्राह्मण और अन्य सवर्ण जाति के लोगों ने अध्ययन के लिए प्रवेश लिया है। लेकिन वहां आरक्षण या कोटे से आए हुए दलित छात्रों के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता है। अमरदीप, विकास चौधरी, नितिन मेश्राम और सुभाष सोनकर जैसे दलित मेडिकल कॉलेज के छात्र हैं। वे मेडिकल कॉलेज में होने वाली दिन प्रतिदिन की कठिनाइयों से एकदम परेशान हैं। उन्हें किन किन यातनाओं से गुजरना पड़ता है, जिसका दर्द केवल वही जानते हैं। ब्राह्मण या दूसरे सवर्ण छात्रों द्वारा दलित छात्रों को अलग खड़ा करके अपमानित करना तो रोज का किस्सा बन गया है।_लेखक कहते हैं यदि उन्हें आरक्षण या फिर कोटे द्वारा मेडिकल कॉलेज में प्रवेश मिला है, तो इसमें उनका क्या दोष है?

दलित छात्रों के प्रवेश परीक्षा के प्रतिशत अंक पूछकर थप्पड़ या घूसों से पीटा जाता है। अगर जरा भी विरोध किया तो लातों से मारा जाता है। इतना ही नहीं शहर से कॉलेज तक जाने वाली बसों में चिल्लाकर ब्राह्मण छात्र कहता है, कि अगर कोई चमार है तो खड़ा हो जाए। फिर उन दलित छात्रों को पीछे की सीट पर लेकर अभद्र शब्द बोल बोल कर मारा पीटा जाता है।

बिल्कुल ऐसा ही सुभाष सोनकर के साथ हुआ। उससे पूछा गया और जब वह बस में चुपचाप बैठा रहा तो उसके बगलवाले ने इशारे से बताया दिया, जिससे प्रणव मिश्रा नाम का छात्र गुस्से से तिलमिला उठा और उसने सुभाष सोनकर को अभद्र शब्दों से पुकारा- 'क्यों बे चमरटे सुनाई नहीं पड़ा हमने क्या कहा था?' सोनकर ने अपने बाल छुड़ाने की कोशिश की और उसने कहा- 'मैं चमार नहीं हूं।' मिश्रा ने सोनकर के बालों को कसकर पकड़ रखा था। सोनकर दर्द से कराह रहा था। तभी प्रणव मिश्रा ने सोनकर के गाल पर झन्नाटेदार थप्पड़ मारा और गाली देते हुए कहा- चमार हो या सोनकर.....ब्राह्मण तो नहीं.... हो तो सिर्फ कोटवाले..... बस

इतना ही काफी है। फिर क्या इतना कहकर प्रणव मिश्रा ने सोनकर को लात घूसों से मार-मारकर लगभग अधमरा कर दिया था। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि दलित छात्रों को आरक्षण से प्रवेश मिलता है, तो इसमें उनकी क्या गलती है?

<u>विशेष :-</u> शिक्षा क्षेत्र अन्य संस्थाओं में दलितों पर होने वाले अत्याचार पर बल दिया गया है। समाज में फैली जातिवाद जैसी समस्या को प्रस्तुत किया गया है। कथा की भाषा बोलचाल की खड़ी बोली है, और कहीं-कहीं पर अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग हैं।

११.१.५ बोध प्रश्न

१) 'घुसपैठिये' कहानी की मुख्य समस्या को अपने शब्दों में लिखिए।
२) कहानी के माध्यम दलित छात्रों की चुनौतियों पर प्रकाश डालिए।

<u>एक वाक्य में उत्तर लिखिए : -</u>

१) मेडिकल कॉलेज के किस छात्र ने आत्महत्या कर ली थी?
उत्तर :- मेडिकल सिलेज में सुभाष सोनकर ने आत्महत्या कर ली थी।
२) सुभाष सोनकर को किसने पीटा था?
उत्तर :- सुभाष सोनकर को प्रणव मिश्रा ने पीटा था।
३) रमेश चौधरी कौन है?
उत्तर :- रमेश चौधरी सामाजिक कार्यकर्ता है।
४) रमेश की पत्नी का नाम लिखिए।
उत्तर :- रमेश की पत्नी का नाम इंदु है।
५) सुभाष सोनकर का अंतिम संस्कार कहाँ किया गया?
उत्तर :- सुभाष सोनकर का अंतिम संस्कार मेडिकल कॉलेज के मुख्य गेट पर किया गया।

❖❖❖❖

११.२

कहानी – ६

गणपति गणनायक – सूर्यबाला

इकाई की रूपरेखा :

११.२.० इकाई का उद्देश्य
११.२.१ लेखक परिचय
११.२.२ कथावस्तु
१०.२.३ निष्कर्ष
१०.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
१०.२.५ बोध प्रश्न

११.२.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत प्रसिद्द कथाकार ओमप्रकाश वाल्मीकि का परिचय पढेंगे। कहानी के कथ्य से परिचित हो सकेंगे। कहानी का उद्देश्य समझ सकेंगे कहानी के संवाद एवं भाषाशैली से परिचित हो सकेंगे।

११.२.१ लेखिका परिचय

समकालीन कथा-साहित्य में सूर्यबाला का लेखन विशिष्ट भूमिका और महत्व रखता है। समाज, जीवन परंपरा, आधुनिकता और उससे जुड़ी समस्याओं को सूर्यबाला एक खुली, मुक्त और नितांत दृष्टि से देखने की कोशिश करती हैं। उसमें ना अंधश्रद्धा है ना एकांगी विद्रोह।

सूर्यबाला की पहली कहानी 1972 में 'सारिका' में प्रकाशित हुई। डॉ. सूर्यबाला जी ने अब तक 150 से अधिक कहानियां, उपन्यास व हास्य व्यंग्य लिखे हैं। इनकी प्रमुख रचनाओं में – मेरे संधिपत्र, सुबह के इंतजार तक, अग्निपंखी यामिनी – कथा, दीक्षांत (उपन्यास), एक इन्द्रधनुष, दिशाहीन थाली थर चाँद, मुंडेर पर, गृह प्रवेश, सांझवाती, कात्यायनी

संवाद, इक्कीस कहानियां, पांच लम्बी कहानियाँ, सिस्टर प्लीज आप जाना नहीं, मनुश्गंध, वेणु का न्य घर, प्रतिनिधि कहानियाँ, सूर्यबाला की प्रेमकहानियाँ, इक्कीस श्रेष्ठ कहानियाँ (कहानीसंग्रह) अजगर करे न चाकरी, धृतराष्ट्र टाइम्स, देश सेवा के अखाड़े में, भगवान ने कहा था और झगड़ा निपटारक दफ्तर (व्यंग्य) आदि है।

प्रस्तुत कहानी 'गणपति गणनायक' में लेखिका ने यह दर्शाया है कि किस प्रकार से धनाद्य और बड़े लोग गणेश उत्सव के नाम पर अपना मनोरंजन करते हैं। वहीं दूसरी और चाल में रहने वाले छोटे-मोटे गरीब व्यक्ति किस प्रकार अपनी श्रद्धा भक्ति ईश्वर पर लुटाते हैं।

११.२.२ कहानी की कथावस्तू

'गणपति गणनायक' की कथा मुंबई शहर में व्यापक तौर पर मनाये जाने वाले गणेश उत्सव पर आधारित है। कहानी के प्रारंभ में मुंबई शहर के सड़कों, गलियों, फुटपाथों और सोसाइटी तथा चालों में गणेशोत्सव की तैयारी पूरे धूमधाम हो रही है। गलियों और सड़कों पर हर जगह गणेश प्रतिमाओं की दुकानें लगी हुई है। हर दुकान पर खरीददारों की भीड़ उमड़ी हुई है। एक-से-एक मन को भा जाने वाले गणपति- जरी किनारे वाले गणेश, तो रंग-बिरंगे वस्त्रों वाले गणेश तो कहीं सुनहलें आभूषणों वाले गणेश ही गणेश हर कहीं दिखाई दे रहे हैं।

कलाकार पांडुरंग मोरे की दुकान पर भी गणेश की मूर्तियां सजी हैं। इतने दिनों तक एक साथ रहते-रहते सारे गणपति एक दूसरे के बहुत करीब हो गए थे। हंसी-ठिठोली करते हुए सब का समय एक साथ कट जाता था। कुछ खरीददार मूर्तियां खरीदने पहले से टूट पड़े। इतने दिनों से साथ-साथ रहने वाली गणेश प्रतिमाएँ आपस में बात करती हैं साथ रहते-रहते उनके मन जुड़ गए है, अब जब खरीददार उन्हें लेने आ रहे हैं तो उन गणेश प्रतिमाओं को अलग होना अखरने लगता है दोनों प्रतिमाएँ सोचती हैं कि क्या जाने कब मिलेंगे? पहला खरीदार छोटी ट्राली लाया था। उसने एक गणेश प्रतिमा खरीद कर अपनी ट्राली पर रखकर शीश नवाया, गुलाल छिड़का और बाकी के 8-10 साथी तुरही-नगाड़े की तड़ातड़ के साथ नाचते-कूदते गणेश जी को ले कर चल दिए।

दूसरे खरीददार आसमानी रंग की मिनी वैन लेकर आये थे। साथ में सफारी और तुरही की जगह लाल सुनहरे डब्बों वाला बैंड। वैन में पहले से कई लोगों की चहल-पहल थी। ड्राईवर तथा अन्य लोगों की सहायता से 3:30 फुट के गणेश को वैन में रखा गया और लोगों से लदी-फंदी वैन अपनी हैसियत और ट्राली की औकात दिखाई और सर्र से निकल गई। लेकिन भीड़ के कारण वाहन वैन हो या ट्राली रुक-रुक कर ही चल पा रहे थे।

तभी बड़े गणपति को वैन से उचकते देख ट्राली वाले गणपति ने पहचान लिया। और हम दोनों साथ-साथ चलते हुए बात करने लगे। वैन वाले गणपति ने जैसे ट्राली वाले गणपति का मन रखने के लिए बात की साथ ही यह भी जताया कि तुम इतनी नीचे ट्राली में और मैं यहां ऊपर वैन में। वैन वाले गणपति पर अपने खरीददारों की हैसियत हावी हो रही थी। जिस प्रकार बड़े लोग केवल अपने बड़प्पन और अमीर होने का दिखावा करते हैं लेकिन असल जिंदगी में अपने कर्मों से बहुत ही तुच्छ होते हैं। और वही ट्राली वाले गणपति के समान मध्यम वर्ग के भक्त या फिर श्रद्धा-भाव रखने वाले लोग जो केवल अपने कर्मों से स्वयं कुछ बनना चाहते हैं। उन्हें इससे कुछ फर्क नही पड़ता कि वे कितने अमीर या पैसे वाले है। उन्हें सिर्फ ईश्वर के समक्ष अपनी भक्ति प्रस्तुत करनी होती है न की दिखावे का झूठा मिथ्याचार। इतनी सी देर में दोनों गणपतियों के संबोधन और लहजे भी बदल गए थे। ट्राली वाले वैन वाले को 'आप' और वैन वाले ट्राली वाले को 'तुम' कह रहे थे। इसका अर्थ यह हुआ कि इस बड़े शहर में अमीरी और गरीबी के हिसाब से लोगों को सम्मान मिलता है। जिसके जितने ठाट-बाट उसे उतना ही सम्मान मिलता है। ट्रैफिक हटा और गाड़ियां आगे बढ़ी। वैन फिर सर्र से निकल गयी। फिर बड़े गणपति ने चैन की साँस ली। जिस प्रकार से ऊंची शानो-शौकत वाले परिवार में यदि उसमें कोई मध्यम वर्गीय रिश्तेदार आ जाए तो वह लोग उससे पीछा छुड़ाना चाहते हैं। ठीक उसी प्रकार वैन वाले गणपति ट्राली वाले गणपति के साथ वही व्यवहार कर रहे थे। सामने सिग्नल था। वैन ड्राइवर ने जल्दी से निकालना चाहा, लेकिन तभी ट्रैफिक पुलिस को देखकर धच्च से ब्रेक मार दिया सांवरिया और गणपती औंधे मुंह गिरते बचे।

तब खड़खड़ाती ट्राली बगल में आ पहुंची। नीचे वाले गणपति को रहा नहीं गया और बोले "मैंने सोचा आप की वैन निकल गई होगी।□ वैन

वाले गणपति ने पूरा रौब झाड़ते हुए कहा कि निकल तो आराम से जाती लेकिन ड्राइवर जरा फुलिश और शिट है।

वैन वाले गणपति तो बड़े लोगों के बीच में अब रहने वाले हैं तो भाई इतनी इंग्लिश आनी तो बनती है और नीचे वाले ठहरे सीधे-साधे चाल के तो उनको कुछ समझ नहीं आया। नीचे वाले ने उत्साह के साथ बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि यह लोग मुझे चेंबूर की आंगनवाड़ी के सामने वाली चॉल में ले जा रहे हैं। इन लोगों ने मिलाकर 'गजानन मित्र मंडल' बनाया है।

नीचे वाले गणपति ने चाल वालों की सामर्थ्य के अनुसार बोला यह लोग मुझे गौरी सहित पांचवें दिन विदा करेंगे। और आप का कुछ पता चला? ऊपर वाले गणपति ने अपने बड़प्पन का दिखावा करते हुए बोला कि यह लोग तो मुझे 10 दिन के पहले छोड़ने वाले नहीं हैं। वह शेखी बघारते हुए कहते हैं कि जाने क्या-क्या फिक्स कर रखा काफी बिजी रहना पड़ेगा। लेखिका ने ट्राली वाले गणपति को 'गजानन' और हंसी-ठठोली की सुविधा के लिए वैन वाले गणपति को 'गणनायक' का नाम दिया।

गणनायक ने पूरे गंभीर होते हुए कहा- यह लोग प्रोग्राम डिस्कस कर रहे हैं कि क्या-क्या करना है इतने में गजानन बोले इसमें करना क्या है- वही भजन-भाव, रंगोली, गायन स्पर्धा और गणपति बप्पा मोरया....। मस्तमौला गजानन हँसे। गणनायक ने बड़े लोगों सा ठाठ-बाट दिखाया और कहा यह लोग बप्पा-शप्पा नहीं चिल्लाते। ये लोग एक दिन मैजिक शो एक दिन डांस कंपटीशन, एक दिन वेराइटी इंटरटेनमेंट, हाउ जी, ब्यूटी कॉन्टेस्ट और न जाने क्या-क्या? रास्ता खुला दोनों गणपति अपने-अपने स्थान पर जाने लगे इस बार गणनायक भी थोड़े भावुक हो गए। फिर क्या था गाजे-बाजे के साथ पंडाल में गणनायक का स्वागत हुआ। बैंड और डांस के शोर-शराबे में मंत्रोच्चार का कहीं अता पता ही नहीं था। गणनायक की गर्दन अलबत्ता मोटी-मोटी मालाओं से लद गई। सिंहासन के सामने प्रसाद, भोग थालों की कतार लग गई थी। कलाकार जी की दुकान में पैदा होने के बाद अब तक गणनायक ने कैसेटों में ही 'लड्डू को भोग' सुना था आज सामने व्यंजनों, मिष्ठानों का अंबार देखकर बरबस मुस्कुराए- सोचा महाभोग तो आज लगेगा। प्रमुख आराधक का सम्मान 'टॉवर' के सबसे धनाढ्य सेठ और सेठानी को दिया गया था।

सेठ सेठानी द्वारा पूजा-अर्चना संपन्न हुई और पंडित जी दक्षिणा लेकर विदा हो गए और भक्तजन से भरपूर पेपर प्लेटे ले पंडाल के बीच झुंडों में तितर- बितर हो गए थे। तात्पर्य यह है कि ईश्वर (गणेश) की स्थापना तो एक बहाना मात्र था, लोग वहां केवल अपनी स्वार्थ सिद्धि कर रहे थे। अचानक गणनायक का ध्यान उन महिलाओं पर गया, जो उनकी मूर्ति में कमियां निकालने में मशगूल थी। लेखिका कहती है कि- जिसको जिन-जिन चीजों में संतुष्टि मिलती वह अपना मन संतुष्ट कर लेता। गणेशोत्सव मनाना तो केवल एक बहाना था।

गणनायक प्रसाद और व्यंजनों के थाल की प्रतीक्षा करते रहे लेकिन वहां उनके समीप केवल नुचे हुए फूल, अक्ष, हल्दी और दुष बड़े पानी के पात्र के अलावा कुछ नहीं छोड़ा गया। लेखिका कहती है ऐसा लग रहा था मानो वे लोग गणेश पूजा की प्रतीक्षा और होने वाले फास्ट म्यूजिक पर नृत्य की परीक्षा ज्यादा कर रहे हो। अधेड़ और जवान सब अजीबोगरीब तरह से नृत्य कर रहे थे।

यह कैसा चलन हो गया है जहां अब व्यक्ति ईश्वर की भक्ति को भी एक जरिया बनाकर मनोरंजन करने के अलग-अलग उपाय ढूंढता है।यह सब दृश्य देख फिर वह स्वयं को समझाते है कि यह नृत्य या चाहे जो हो यह मेरे ही उपलक्ष्य में तो कर रहे हैं। अगली सुबह देखा कि कितनी देर हो गई लेकिन पूजा आरती की कोई संभावना नहीं दिखाई दे रही है। सब एक दूसरे पर आरोप लगाते दिखाई दे रहे हैं। पंडित का कहना था कि वह आया था, लेकिन किसी ने भी दरवाजा नहीं खोला और अब वह दूसरी जगह है। अंततः सर्व सम्मति से तय हुआ कि पंडित को मारो गोली और ले आओ आरती की कैसेट। किसी प्रकार से आरती संपन्न हो गई। देखते ही देखते सब अपने-अपने काम धंधे पर चले गए। अब गणनायक अकेले। लेखिका कहती है कि अब समय कितना बदल गया। किसी को समय नहीं है ईश्वर की पूजा आराधना के लिए। अपराह्न में धमाचौकड़ी मचाते छोटे बच्चे जमा हो गये। बच्चे भी आपस में गणनायक की कमियां निकालते। कोई कहता वहां गणपति इससे अच्छा है, कोई कहता मेरे पापा के ऑफिस के सामने इससे ऊंचा गणपति है।

फिर उनमें एक मैकडोनाल्ड जाने की बात की तो दूसरी लड़की ने 'पिज़्ज़ा हट'। उसमें से तीसरे ने बोला क्यों नहीं हम मैकडोनाल्ड फेस्टिवल भी सेलिब्रेट करते? ....रबिश! "तीसरा बोला गणपति इज गॉड? "सो

व्हाट?..... इधर भी हाउजी, उधर भी हाउजी, इधर भी डांस, उधर भी डांस। गॉड होने ना होने से क्या फर्क पड़ता है?

सही भी तो है जैसा संस्कार मां-बाप देंगे बच्चे वही तो सीखेंगे। कैसा समय आ गया है ईश्वर के होने ना होने से किसी को फर्क नहीं पड़ता। अंधेरा होने के बाद पूजा आरती हुई और जमकर नाच गाना हुआ। फिर रात को गणनायक के पास सोने को लेकर लोगों में झिकझिक होनी शुरू हुई। काफी झिकझिक के बाद समाधान निकला की सोसाइटी का हेड चौकीदार सौ रुपए ओवरटाइम और रात के खाने की शर्त पर गणपति के पास सोएगा। हर दिन का पैसा वह पहले ही ले लेगा।

मनुष्य कैसा हो गया है ईश्वर की शरण में रहने के लिए बहुत पैसे वसूलता है और उसी पैसे से वह दारू पीता है और वही उनकी बगल में खर्राटे मारता है। इधर गणनायक को नींद नहीं आ रही थी। उनका मन, मान-अपमान, प्रतिष्ठा और अवहेलना आदि बातों पर अशांत था कि वह यह सब सही समझे या फिर गलत। सिक्योरिटी हेड के बगल में पढ़े मोबाइल की घंटी बजी। गणनायक ने थोड़ी देर तो बजने दिया फिर उठा लिया। उधर से गजानन की चहकती हुई आवाज आई - "अभिवादन महाराज! कैसे हैं? "गणनायक थोड़ा अटके- "ठीक हूं अचानक तुम कैसे?".... दोनों गणपति में अपने-अपने तरफ के लोगों के बारे में बातचीत हुई।

गजानन ने अपने चाल वाले लोगों का बखान करते हुए बताया कि यह लोग जितने सामान्य साधन हीन लोग प्रसाद में इतना चिवड़ा, उपमा, नारियल वड़ी, मोदक आदि चढ़ाते हैं। तो आप वाले- "गजानन का तात्पर्य जब सामान्य लोग इतनी सेवा करते हैं तो धन-धान्य से पूर्ण लोग तो और अधिक सेवा सत्कार करते होंगे लेकिन इसका विपरीत था, उन्हें स्वयं से ही फुर्सत नहीं मिलती है। लेकिन गणनायक सच बोलते कैसे?

गणनायक सोचते थे वह चाहे जिस स्थिति में हो, लेकिन गजानन की आंखें तो उन्हें प्रतिष्ठा और सम्मान के शिखर पर ही देख रही है। सच भी है यही हर किसी को चाहिए होता है चाहे वह मनुष्य हो या फिर देवता। एक शाम बाहर की सारी दुकानें टॉवर के अहाते में बुला ली गई जहां चाट, गोलगप्पे, डोसे, समोसे और चायनीज आदि खाने की चीजें थी। खाना पकाने खिलाने की तकलीफ से बचने के लिए लोग अपने-अपने घरों से नीचे उतर खाने के लिए और देखते थे यहां-वहां पेपर प्लेटों का ढेर लग

गया। वहां के चड्डा साहब को यह कहने में हिचक तक नहीं हुई कि हम खाने-पीने के लिए ऐसे अवसरों का इंतजार क्यों करते हैं? सब खाने-पीने में इतने मस्त की आरती-पूजा की किसी को सुध ही नहीं थी और अंतिम दिन बच्चों ने अलग-अलग प्रतिस्पर्धा में हिस्सा लिया। किसी ने गीत में तो किसी ने नृत्य, ब्यूटी कॉन्टेस्ट, फैंसी ड्रेस आदि में बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। एक-एक करके सभी बच्चों ने अपनी प्रतिभाएं प्रदर्शित की। कुछ समय बाद नृत्य की स्पर्धा प्रारंभ हुई तेज लाउडस्पीकरों आते संगीत की आवाज पर एक लड़की इतना उच्छृंखल नृत्य कर रही थी। इतना अभद्र दृश्य की उसे देखकर रंभा भी लज्जित हो उठे। एक दूसरी लड़की पारदर्शी कपड़े पहन कर और उसके ऊपर जैकैट पहनी थी जिसे उतार कर उछाल मारी। पूरा पंडाल सीटियों से गूंज उठा। उसकी वह जैकेट गणनायक के पैरों के पास आ कर गिरी उन्हें वह विषैले सांप के समान प्रतीत हो रही थी। गणनायक का पूरा शरीर क्रुध्द और घृणा से गिनगिना उठा।

गणपति विसर्जन का अंतिम दिन आ गया। सड़कों पर हजारों लाखों की संख्या में भीड़ उमड़ पड़ी। विसर्जन के समय भी गजानन और गणनायक की वैन और ट्राली मिल गयी दोनों में फिर बातें प्रारंभ हुईं। गजानन अपनी चाल वाले भक्तों से बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने गणनायक को बताया कि उनके ही समान उनकी छोटी-छोटी इच्छाएं भी थी जिन्हें वह मुझसे मांग रहे थे।

देखते देखते भीड़ हटी ट्राली आगे निकल गयी। गजानन को आंगनवाडी की चाल वालों ने पूरे सम्मान के साथ सिर पर उठा लिया और उन्हें गहरे समुंद्र में उतार कर विसर्जित किया जबकि वैन वाले आपस में लड़ने लगे तथा अपना समय बचने के लिए गणनायक को बिना भक्तिभाव के किनारे ही छोड़ कर चले गये।

११.२.३ निष्कर्ष

लेखिका सूर्यबाला गणपति गणनायक कहानी द्वारा यह बताने का प्रयास किया है कि है कि आज लोगों के पास ईश्वर की पूजा आराधना के लिए समय नहीं है। धनी लोग भगवान के नाम पर खुद के लिए मनोरंजन की व्यवस्था करते हैं। ईश्वर की पूजा अर्चना कम तथा एंजॉय ज्यादा हैं। आज व्यक्ति जितना अमीर और धनवान होता जा रहा है वह अपने संस्कार और रीति रिवाज भूलता जा रहा हैं।

वहीं एक ओर सामान्य और साधनहीन सामान्य मुंबईकर दिन भर भूखे प्यासे रह कर पूरी श्रद्धा से गणेश जी की पूजा अर्चना करता है और यह अपेक्षा करता है कि गणेश जी उनकी छोटी-छोटी इच्छाएं को अवश्य पूर्ण करेंगे।

११.२.४ सन्दर्भ सहित व्याख्या

"नहीं, स्वास्थ्य के प्रति बहुत सतर्क रहते हैं वे लोग... और लड्डू वड्डू तो बिलकुल नहीं खाते तभी तो फ़ूड इन्फेक्शन से वगैरह से जुडी सारी ख़बरें तुम्हारी जैसी चाल वालों की ही होती है.

'सो बात नहीं महाराज, इन बेचारों को भी इलाज की सुविधा होती तो खबर बन्ने की नौबत नहीं आती-' "

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश बी.ए.प्रथम वर्ष की पाठ्यपुस्तक में रचित "गणपति गणनायक" कहानी से लिया गया है। इसकी लेखिका "सूर्यबाला जी' हैं। लेखिका ने इस कहानी द्वारा समाज में रहने वाले एक उच्च वर्ग और दूसरे मध्यम वर्ग के लोगों के बारे में वर्णन किया है। दोनों वर्गों द्वारा ईश्वर के प्रति श्रद्धा भाव का दृष्टिकोण अंकित किया गया है।

प्रसंग :- इस गद्यांश में उच्च वर्ग और मध्यम वर्ग की स्थितियों के बारे में वर्णन किया गया है। उच्च वर्ग के पास स्वास्थ्य से संबंधित हर सुख सुविधाएं उपलब्ध होती है और वही मध्यम वर्ग के पास इन सारी चीजों का अभाव होता है, जिससे उन्हें स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती है-

व्याख्या :- लेखिका कहती है कि गजानन को तो पता था ही गणनायक सोसाइटी में स्थापित है, और वहां तो बड़े अमीर लोग होंगे, तो चढ़ावा भी उन्हें खूब भर-भरकर चढ़ता होगा। यही सोचकर जब गजानन उनसे (गणनायक) से पूछते हैं कि महाराज तब तो आपके भक्त भोग में रोज लड्डू चढ़ाते होंगे। गणनायक ने टॉवर में रहने वालों सा ही मुंह बिचकाया- कहां, वहाँ ऐसे-ऐसे मिष्ठान होते हैं कि लड्डुओं को तो कोई पूछता ही नहीं।फिर गजानन बड़ी उत्सुकता से बोले फिर तो वे लोग प्रतिदिन वहीं खाते होंगे न।गणनायक अपने आत्मसम्मान की रक्षा करते हुए बोले- नहीं, स्वास्थ्य के प्रति बहुत सतर्क रहते हैं वे लोग.....और लड्डू-वड्डू तो बिल्कुल नहीं खाते। गणनायक कहते हैं तभी तो (भोजन) फूड इन्फेक्शन आदि से जुड़ी बीमारियां तुम्हारे चॉल वाले जैसे लोगों को होती है। गजानन

अपने चॉल वालों के पक्ष में बोलते हैं कि महाराज, ऐसी बात नहीं। यदि स्वास्थ्य से संबंधित सारी सुख सुविधाएं और इलाज के साधन यहां भी उपलब्ध हो, तो ऐसी खबरें बनने की नौबत नहीं आती।

लेखिका बताना चाहती हैं कि खान-पान, रहन-सहन और आधी सुख-सुविधाएं यह निश्चित नहीं करती के इंसान का स्वाभाव या ईश्वर के प्रति उसका श्रद्धा-भाव कैसा है? बल्कि मनुष्य की अच्छी सोच और ईश्वर के प्रति उसका श्रद्धा-भाव से ऊंचा और बड़ा बनाता है। ईश्वर के प्रति अपनी आस्था और भावना व्यक्त करने के लिए बड़े-बड़े दिखावे करने की आवश्यकता नहीं है। कहानी में इस बात पर भी बल दिया गया है कि आज मनुष्य ईश्वर की पूजा-अर्चना के नाम पर बड़े-बड़े उत्सव आदि रखता है, और उनके समक्ष ही बिल्कुल अभद्र तरीके से नृत्य आदि करेंगे। ईश्वर के समीप ही बैठकर शराब पिएंगे, जुए-ताश खेलेंगे। अपने मनोरंजन के हर तरीके ढूंढ लेंगे और उसका प्रबंध करेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य आज आगे निकलते-निकलते इतना आगे निकल गया है कि अपने संस्कार और सभ्यता भूलते जा रहा है।

<u>विशेष :-</u> इस कथा में गणपति मूर्तियों को सजीव कर उनके आपसी संवादों के माध्यम से शहर के भिन्न – भिन्न वर्गों के लोगों तथा उनके विचारों पर व्यंग्य किया गया है। भाषा-बोलचाल की हिंदी भाषा है। कहानी का परिप्रेक्ष्य मुम्बई है इसलिए भाषा में एकाध स्थान पर अंग्रेजी और मराठी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। कहीं-कहीं पर मुहावरेदार शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। जैसे- ठहाके मारना।

११.२.५ बोध प्रश्न

<u>बोधप्रश्न :-</u>

१) 'गणपति – गणनायक' रचना के व्यंग्य को अपने शब्दों में लिखिए।

२) गणपति और गणनायक के मध्य हुए संवादों की चर्चा कीजिये।

<u>एक वाक्य में उत्तर लिखिए :-</u>

१) लेखिका ने ट्राली वाले गणेश तथा मिनी वैन वाले गणेश का क्या नाम रखा?

उत्तर :- लेखिका ने ट्राली वाले गणेश का नाम गजानन तथा मिनी वैन वाले गणेश का नाम गणनायक रखा।

२) गजानन और गणनायक को किसकी दुकान से ख़रीदा गया?

उत्तर :- गजानन और गणनायक को कलाकार पांडुरंग मोरे की दुकान से ख़रीदा गया।

३) गजानन और गणनायक कहाँ स्थापित किये गये?

उत्तर :- गजानन को चेम्बूर की एक आंगनवाडी के सामने वाली चाल में और गणनायक को लोटस टावर के मैदान में स्थापित किया गया।

४) गणनायक के आरती की जिम्मेदारी किसे मिली थी?

उत्तर :- गणनायक के आरती की जिम्मेदारी सेठ जी को मिली थी।

५) कहानी के अंत में कौन से गणेश ख़ुशी – ख़ुशी विदा हुए?

उत्तर :- कहानी के अंत में चाल वाले गजानन ख़ुशी- ख़ुशी विदा हुए।

❖❖❖❖

१२

कहानी – ७
'कब्र का मुनाफा' - तेजेंद्र शर्मा

इकाई की रूपरेखा :

१२.० इकाई का उद्देश्य
१२.१ लेखक परिचय
१२.२ कथावस्तु
१२.३ निष्कर्ष
१२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
१२.५ बोध प्रश्न

१२.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत प्रसिद्द कथाकार तेजेंद्र शर्मा का परिचय पढेंगे। कहानी के कथ्य से परिचित हो सकेंगे। कहानी का उद्देश्य समझ सकेंगे। कहानी के संवाद एवं भाषाशैली से परिचित हो सकेंगे।

१२.१ लेखक परिचय

तेजेंद्र शर्मा द्वारा लिखी गई कहानी 'कब्र का मुनाफा' दो पाकिस्तानी परिवारों की कथा है। ये इंग्लैंड में अपने अपने परिवार के साथ रहते हैं। खलील और नजम दोनों में गहरी दोस्ती है। खलील को सिगरेट की बुरी लत है तो नजम को शराब की। लेकिन इन दोनों की यह आदतें दोनों के दोस्ती के कभी आड़े नहीं आती। खलील की बीवी नादिरा है जो फिल्मी सितारों और उनके फिल्मों की बहुत शौकीन है लेकिन पाकिस्तानी फिल्मों की नहीं बल्कि भारतीय फिल्मों की। क्योंकि वह दिल्ली में पली बढ़ी है। खलील की पत्नी नादिरा है जो शादी से पहले हिंदुस्तान में रहती थी। वह लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.ए.पास है। वह नौकरी करना चाहती है लेकिन

खलील बिल्कुल कट्टर मुस्लिम पंथी पाकिस्तानी मुसलमान है। जिसके कारण वह नादिरा को इस काम की इजाजत नही देता है।

कहानीकार ने यह प्रस्तुत किया है कि दोनों विदेश में हैं उनके पास अपना खुद का मकान तथा गाड़ी है उन्हें खाने पीने की कोई कमी नहीं है लेकिन फिर भी उन्हें खुद का कारोबार करना है। वह अपना सब कुछ पहले से ही व्यवस्थित करके रखना चाहते हैं। यहां तक कि दफन होने के लिए कब्र भी। इसी कथ्य को आधार बनाकर यह कहानी प्रस्तुत है।

१२.२ कहानी का कथावस्तु

'कब्र का मुनाफा' इंग्लैंड में रहने वाले दो पाकिस्तानी परिवारों की कहानी है। कहानी का परिवेश बिल्कुल विदेशी है। क्योंकि कहानी के सारे पात्र इंग्लैंड में रहते हैं। सभी पात्र पढ़े लिखे हैं। दोनों पात्र खलील और नजम यूरोप की कंपनियों में काम करते हैं। खलील जब इस कंपनी में आया था तो बिल्कुल युवा अफसर बनकर।_खलील और नजम ने अपने-अपने घरों में अपना दबदबा बनाकर रखा है। वे अपनी बीवियों को किसी मामले में बोलने नहीं देते। खलील अपनी पत्नी नादिरा को इतने दबाव में रखता है कि वह बिल्कुल शांत और चुप सी रहती है। खलील और नजम दोनों ने अभी से ही अपनी बीवियों के लिए कब्रें बुक कर रखीं हैं। नादिरा को जब इस बात का पता चलता है तो वाज नाराज हो कर कहती है कि □घर को कब्रिस्तान बना रखा है यह कम था क्या जो बाहर भी कब्र बुक कर आये।□ नादिरा और आबिदा दोनों भी उनकी इन हरकतों से परेशान है लेकिन आबिदा को इस खबर से इतना फर्क नहीं पड़ता जबकि नादिरा कब्रों की अडवांस बुकिंग की बात से परेशान हो जाती है।

नजम और खलील दोनों 33 साल से यूरोप की कंपनियों में काम करते हैं। खलील ने अपनी मेहनत और लगन से कंपनी को यूरोप की फाइनेंसियल कंपनियों की श्रेणी में खड़ा कर दिया है।

वे चाहते हैं कि उनकी खुद की कोई कंपनी हो या काम हो जिससे लोग उन्हें मरने के बाद भी याद करें। मरने की बात सुनकर नजम, खलील से कहता है "भाई! आपने कब्र बुक कर ली है या नहीं? देखिए उस

कब्रिस्तान की लोकेशन, उसका लुक और माहौल एकदम यूनिक है.... अब जिंदगी भर तो काम, काम और काम से फुर्सत नहीं मिली। कम से कम मरकर तो चैन की जिंदगी जिएंगे।"

इंसान जब तक जिंदा रहता है वह जीवन के हर ऐशो आराम ढूंढता है। वह सोचता है कि ऐसा क्या करूं की आलीशान जिंदगी जीने के लिए मुझे हर चीज मिले। लेकिन यहां तो खलील और नज़म को मरने के बाद भी कब्रिस्तान का सारा माहौल एकदम यूनिक चाहिए। अब मरने के बाद क्या होगा यह कौन जानता हैं? खलील एकदम कट्टर शिया मुसलमान है। उसके मरने के बाद भी उसके आस-पास में कोई सुन्नी और ना ही कोई टोपी वाला गुजराती चाहिए। बल्कि वह सोचता है कि शिया लोगों के लिए कोई अलग से कब्रिस्तान हो। अचानक नजम खलील को किसी नई स्कीम के बारे में बताता है। कार्पेण्डर्स पार्क जिसमें 10 पाउंड महीने की प्रीमियम पर इंसान को शान से दफनाने की अपनी पूरी जिम्मेदारी ली जाती है। खलील को लगता है जो वह सोचता है वो सही है बाकी सब गलत इसलिए दोनों इस स्कीम का फायदा उठ कर अपनी बीवियों को बिना बताए कब्रें बुक करवा लेते हैं। खलील, नजम से पूछता है "उनकी कोई स्कीम नहीं है जैसे बाई वन गेट वन फ्री।" वह कहता है अगर ऐसा है तो हम अपने बेटों को भी शामिल कर सकते हैं। खलील जो बेटे को बिजनेस के लिए पैसे नहीं देना चाहता वही अपनी कट्टर विचारधारा के चलते बेटे के जीते जी उसके लिए कब्र बुक करवाने की सोचता है।

खलील की बीवी नादिरा भारत से है इसलिए खलील नादिरा से बहुत चिढ़ता है। नजम को भारत से कोई चिढ़ नहीं। वो कहता है कि उसे हिंदुस्तान छोड़े 40 साल हो गये लेकिन लाहौर अब भी उसे अपना नहीं लगता। जबकि खलील के मन में भारत व हिन्दुओं के प्रति इतनी चिढ़ है कि उसका बस चले तो हिंदुओं को एक कतार में खड़ा करके गोली मार दे।

आबिदा और नादिरा सोचती है कि उनके पतियों के पास उनको देने के लिए समय नहीं है। वह उन्हें घर के खर्चे के लिए पैसे देते हैं लेकिन उसका पूरा पूरा हिसाब किताब रखते हैं। आबिदा तो अपने नादिरा आपा के पास अपना सारा रोना रो लेती है लेकिन नादिरा अपना हर दुख दर्द अपने सीने में दबाए रखती है।

खलील के साथ रोज की गाली गलौज और कभी कभार तो मारपीट पर भी। किन्तु नादिरा पर इसका कोई असर नहीं होता। इस तकलीफ को वो एक स्थायी हंसी के पीछे छुपाए रखती है। खलील को नादिरा की इस बात से भी परेशानी होती थी।

एक घटना का जिक्र करते हुए लेखक लिखते हैं कि नादिरा और खलील एक दिन किसी महफ़िल में गए। वहां डेमोक्रेसी की बात छिड़ी और नादिरा ने भारत के प्रजातंत्र की तारीफ कर दी। खलील उस पर गुस्से से वही फट पड़ा। उसने नादिरा को तलाक तक देने को कह दिया। महफिल में कब्रिस्तान जैसी चुप्पी छा गई। घर पर भी कब्रिस्तान पहुंच चुका था। वैसे नादिरा खलील के पत्र छूती नहीं क्योंकि वह जानती है कि उसे इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। लेकिन पत्र पर श्री एवं श्रीमती लिखा था तो उसे लगा ये निमंत्रण पत्र होगा और पत्र खोला तो दंग रह गई। पहले से ही कब्रिस्तान बुक करने का मतलब वह कुछ समझ नहीं पाई। क्या उसका घर एक जिंदा कब्रिस्तान नहीं।

खलील को इस बात का गर्व रहता है कि उसने अपने परिवार वालों को जमाने भर की सुविधाएं मुहैया करवाई है। वह चाहता है कि नादिरा इसके लिए उसकी कृतज्ञ रहे। नादिरा नें खलील से पूछा आपने अभी से कब्रे क्यों बुक करवा ली है? और वह भी इतनी दूर? “भई एक बार लाश रॉल्स राइस में रखी गई तो हैम्पस्टैंड क्या और कार्पेण्डर्स पार्क क्या। यह कब्रिस्तान जरा पॉश किस्म का है फाइनेंसियल सेक्टर के हमारे ज्यादातर लोगों ने वहीं दफन होने का फैसला लिया है। खलील कहता है कम से कम मरने के बाद अपने स्टेटस के लोगों के साथ रहेंगे।”

नादिरा का कहना था कि मरने के बाद तो शरीर मिट्टी ही है फिर उस मिट्टी का नाम चाहे अब्दुल (कामवाला) हो नादिरा या फिर खलील। नादिरा का कहना था कि मरने के बाद तो सब को दफन होना ही है तो इसमें अपने जैसे क्या और मोची या पलंबर क्या? सब को तो एक ही मिट्टी में मिलना है।

नादिरा, खलील से कहती है कि वह न उसे किसी फाइव स्टार कब्रिस्तान में दफन होने देगी और ना खुद होगी। आप ऐसी सोच से बाहर आइए। दूसरे दिन नादिरा, आबिदा को फोन करती है और उसका हाल पूछँती लेती है। इतने में आबिदा फिल्मी हीरो की खबरें उसे सुनाने लगती

हैं। नादिरा उसे कहती है- तुम फिल्मी दुनिया से बाहर आओ और हकीकत की दुनिया देखो। क्या तुम्हें कार्पेण्डर्स पार्क के कब्रिस्तान की बुकिंग के बारे में पता है? आपा हमें क्या फर्क पड़ता है वह एक के बदले चार-चार बुक करें और चारों में रहे। जब जीते जी उन्हें सात-सात बेडरूम का घर कम पड़ता है तो क्या मरने के बाद 2 गज जमीन काफी होगी इन के लिए।

आबिदा अपने और नजम के रिश्ते के बारे में बताते हुए कहती है वह 4 साल से बुश्रा के साथ वक्त बिता रहे हैं। और हमारा रिश्ता तो भाई-बहन जैसा हो गया है। नादिरा का जी धक्क से कर गया कि पिछले 5 साल से ऐसा ही रिश्ता उसका और खलील का है। वह कहती है कि क्या यह जो कर रहे हैं वह ठीक है।

आबिदा कहती हैं आपा मुझे कुछ फर्क नहीं पड़ता। मरने के बाद कौन कहां दफन होता है लेकिन नजर मुझसे पहले मरे तो उन्हें गरीब कब्रिस्तान में ले जाकर दफन करूंगी। अगर मैं पहले मर गई तो फिर बचा ही क्या?

लेखक कहते हैं कैसी सोच लेकर यह जीते हैं। इंसान अभी जिंदा है लेकिन उनके लिए कब्रे पहले से आरक्षित हैं। इस बात को बीते साल भर हो चुके थे। अब दोनों फिर से किसी नए धंधे के बारे में सोचने में जुट गए और इस विषय को भूल गए।

लेकिन कार्पेण्डर्स पार्क को नहीं भूला था। चिट्ठी आई जिसमें लिखा था मुद्रा स्फीति के साथ-साथ मासिक किस्त में भी पैसे बढ़े हैं। इतना देखते ही नादिरा का खून खौल उठता है। खलील और नजम बेडरूम में शराब के घुट और सिगरेट के कश के साथ अपने नए काम के बारे में सोचते विचारते रहते हैं। इतने में नादिरा भुनभुनाते हुए कमरे में जाती है और खलील से फोन करके कैंसिल करने को कहती है, तो वह कहता है कि कैंसिलेशन चार्ज अलग से लगेंगे। क्यों नुकसान करवाती हो? वह कहती है तो ठीक हे मैं ही फोन करती हूं। उसकी भरपाई मैं खुद कर दूंगी नादिरा गुस्से में नंबर मिलाती है। सिगरेट का धुआं कमरे में एक डरावना माहौल पैदा करता है। फोन लग जाता है और वह अपना रेफरेंस नंबर देकर बात करती है।

खलील और नज़म बेबस और परेशान है। नादिरा थैंक्स कहकर फोन रख देती है। वह खलील से कहती है कि हमने कैंसिलेशन का ऑर्डर दे दिया है। उनका कहना है कि आपने साढ़े तीन सौ पाउंड एक कब्र के लिए जमा कराए हैं और यानी कि दो कब्र के सात सौ पाउंड और अब इन्फ्लेशन की वजह से उन कब्रो की कीमत बढ़कर **ग्यारह सौ** पाउंड यानी कि आपको कोई **चार सौ** पाउंड का लाभ हो रहा है।

खलील चौंक जाता है – "चार सौ पाउंड का फायदा, बस साल भर में...." कब्र के इस नए धंधे की बात तुरंत उसके दिमाग में कौंध जाती है उसकी उसकी आँखें चमक उठती है क्योंकि अब उन्हें नया धंधा मिल गया है।

१२.३ निष्कर्ष

तेजेंद्र शर्मा द्वारा रचित कहानी "कब्र का मुनाफा" कब्र की अडवांस बुकिंग से प्रारंभ होती है और वही समाप्त भी होती है। खलील और नजम गहरे मित्र हैं और दोनों पाकिस्तानी है, लेकिन इंग्लैंड के रहने वाले हैं।

खलील का स्वभाव ऐसा है कि वह शिया मुसलमान के अलावा हर धर्म के इंसान से चिढ़ता है इसीलिए उसने अपने मरने से पहले ही कब्रे अपने स्तर के लोगों के साथ बुक की हैं, ताकि उसके पास मोची प्लंबर की कब्रे न हों। खलील सब कुछ अपने कंट्रोल में रखना चाहता है, चाहे उसके बीवी-बच्चे हो या फिर कंपनी के क्लर्क। उसे अपनी पत्नी से भी चिढ़ है क्योंकि वह हमेशा हिंदुस्तान के पक्ष मे बात करती है। खलील को ऐसा लगता है जो वो करती है वही सही है। अचानक जब नादिरा कब्रे कैंसिल करने को कहती है तो खलील कहता है कैंसिलेशन से नुकसान हो जायेगा। लेकिन यह कहकर कब्रे कैंसिल करती है कि उसकी भरपाई वह खुद कर देगी। जब बाद में कैंसिलेशन के बाद पता चलता है कि अब इन्फ्लेशन की वजह से कब्रो की कीमत सात सौ पाउंड से बढ़कर ग्यारह पाउंड हो गयी है यानि कि कुल चार सौ पाउंड का मुनाफा हो गया है।

१२.४ संदर्भ सहित व्याख्या

"देखिए मैं पाकिस्तान में कोइ धंधा नहीं करूँगा. एक तो आबिदा वहाँ जाएगी नहीं, दूसरे अब तो बुश्रा का भी सोचना पड़ता है, और तीसरा यह कि अपना तो सारा मुल्क ही कर्सिओं का मारा हुआ है. इतनी रिश्वत देनी पड़ती है कि दिल करता है सामने वाले को चार जूते लगा दूँ ऊपर से नीचे तक सब करप्ट अगर हम दोनों को मिल कर कोइ काम शुरू करना है तो यहीं इंग्लैंड में रह कर करना होगा।"

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश बी.ए.भाग प्रथम के पाठ्य पुस्तक "कब्र का मुनाफा" नामक कहानी से लिया गया है। इसके लेखक "तेजेंद्र शर्मा जी" हैं। इस कथा में लेखक ने विदेश में रहने वाले दो मुसलमान परिवारों के बारे में वर्णन किया है। विदेश में होते हुए भी इनके पास वह सब कुछ है जो अच्छा जीवन जीने के लिए चाहिए होता है, लेकिन इन्हें अपना खुद का कारोबार करना है, ताकि मरने के बाद भी इन्हें सब याद करें।

प्रसंग :- लेखक ने यह कहानी भारत और पाकिस्तान के बंटवारे के बाद भारत से पाकिस्तान जाकर बसने वाले दो मुसलमान परिवारों के बारे में लिखी है, जो अब विदेश (इंग्लैंड) में रहते हैं। खलील और नजम ने अपने जीवन के **तैंतीस** साल यूरोप की कंपनियों में होम कर दिया। लेकिन अब वे चाहते हैं कि उनका खुद का कोई कारोबार हो। इसी का वर्णन इस कहानी में किया गया है।

व्याख्या :- खलील और नजम दोनों ड्राइंग रूम में बैठकर योजना बनाते हैं कि क्या काम और कहां किया जाए। पूरे लंदन में एक नजम ही है जो खलील के घर शराब पी सकता है और एक खलील ही है जो नजम के घर सिगरेट पी सकता है। लेकिन दोनों अपना-अपना नशा खुद साथ लाते हैं- सिगरेट भी और शराब भी।दोनों अपने बीवी बच्चों को अपना समय देने के अलावा सब कुछ देते हैं।

नजम, खलील से कहता है कि देखिए भाई साहब मैं पाकिस्तान में काम नहीं करुंगा। क्योंकि उसकी पत्नी भारत में पढ़ी-लिखी और वही की रहने वाली है, तो वह पाकिस्तान में बिल्कुल नहीं रहेगी। और दूसरी तरफ वह दूसरी औरत बूश्रा है जिससे उसका (नजम) का संबंध है, वह इंग्लैंड में

रहती है। नजम, खलील से यह भी कहता है कि दूसरा हमारा मुल्क भी तो करप्शन से भरा हुआ है। वह गुस्से में यह भी कहता है कि इतनी रिश्वत देनी पड़ती है, दिल तो करता है सामने वाले को चार जूते लगा दूँ। ऊपर से लेकर नीचे तक सब के सब करप्ट।

नजम का स्वभाव खलील से अलग है वह अगर कुछ गलत है तो निष्पक्ष बोलता है चाहे वह उसके ही मुल्क के बारे में क्यों ना हो। लेकिन खलील, नजम से बिल्कुल अलग है। वह रहता जरूर इंग्लैंड में है लेकिन वह बिल्कुल अपने मुल्क के ही पक्ष में रहकर बोलता है।

फिर नजम सब कुछ सोचने, बताने और समझने के बाद कहता है कि अगर हमें कोई काम करना है तो मिलकर यही करना होगा।

<u>विशेष:-</u> कहानी का पूरा वातावरण विदेश का है। पात्रों के बोलचाल की भाषा में उर्दू और अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है। कहीं-कहीं पर खलील द्वारा अभद्र शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। कहानी प्रारंभ ही होती है कब्र से और अंत भी कब्र पर होता है। धर्म और धंधा दोनों के प्रति खलिल के विचार प्रस्तुत करना कहानी का उद्देश्य है।

१२.५ बोध प्रश्न

१) 'कब्र का मुनाफा' कहानी के परिवेश पर प्रकाश डालिए।
२) कहानी के माध्यम से खलील और नजम के संवादों की चर्चा कीजिये।

<u>एक वाक्य में उत्तर लिखिए :-</u>
१) खलील जैदी और नजम जमाल कहाँ रहते हैं?
उत्तर :- खलील जैदी और नजम जमाल इंग्लैंड में रहते हैं।
३) खलील और नजम को कौन सी बुरी लत थी?
उत्तर :- खलील को सिगरेट और नजम को शराब पीने की बुरी लत थी।
४) खलील और नजम ने कब्रें कहाँ बुक करवायीं थीं?
उत्तर :- खलील और नजम ने कब्रें कार्पेड्स पार्क में बुक करवायीं थीं।
५) कब्रें कैंसिल करवाने पर उन्हें कितने पाउंड का फायदा हुआ?
उत्तर :- कब्रें कैंसिल करने पर उन्हें कुल चार सौ पाउंड का फायदा हुआ।
६) 'कब्र का मुनाफा' कहानी के रचनाकार का नाम लिखिए।
उत्तर :- 'कब्र का मुनाफा' के रचनाकार तेजेंद्र शर्मा जी हैं।

❖❖❖❖

१२

कहानी – ८
'दलित ब्राह्मण' – सत्यप्रकाश

इकाई की रूपरेखा :

१२.१.० इकाई का उद्देश्य
१२.१.१ लेखक परिचय
१२.१.२ कथावस्तु
१२.१.३ निष्कर्ष
१२.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण
१२.१.५ बोध प्रश्न

१२.१.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत प्रसिद्ध कथाकार सत्यप्रकाश जी का परिचय पढेंगे। कहानी के कथ्य से परिचित हो सकेंगे। कहानी का उद्देश्य समझ सकेंगे कहानी के संवाद एवं भाषाशैली से परिचित हो सकेंगे।

१२.१ लेखक परिचय

'दलित ब्राह्मण' कथा "सत्यप्रकाश" द्वारा रचित है। 'दलित ब्राह्मण' सत्य प्रकाश जी की चर्चित कहानी है। सत्यप्रकाश जी को भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा अंबेडकर फेलोशिप सम्मान से सम्मानित भी किया गया है।

यह कहानी तीन मित्र विजयरंजन कुरील, शिवदत्त और गौरी शंकर माहेश्वरी की है जो भद्रजन सरकार में अधिकारी हैं। यह कहानी जातिवाद की समस्या पर आधारित है। शिवदत्त धर्म के पैमाने से बौद्ध है। विजयरंजन और गौरीशंकर दलित हैं। विजयरंजन का धर्म उन्हें स्वयं ही मालूम नहीं है। वैसे उसे धर्म के नाम से चिढ़ है।

लेकिन उन तीनों की दोस्ती में धर्म बाधा नहीं है। शिवदत्त अपना सामाजिक दायित्व सच्चाई और न्याय से करता है। कुरील केवल समाज और दुनिया के नाम पर अपना गुस्सा दिखाता तो है लेकिन स्वयं अपना दायित्व सही ढंग से नहीं निभाता। इसी के आधार पर यह पूरी कहानी लिखी गई है।

१२.२ कथावस्तु

दलित ब्राह्मण कहानी का परिवेश कानपुर शहर से लिया गया है। जहां तीन मित्र विजयरंजन कुरील, गौरीशंकर माहेश्वरी और शिवदत्त तीनों भद्रजन भारत सरकार में उच्चाधिकारी है। पूरा वातावरण समाज, धर्म और जात पात को लेकर दर्शाया गया है। कुरील को ऐसा लगता है कि केवल ब्राह्मण या किसी और सवर्ण जाति के लोग दलितों के साथ अन्याय करते हैं। लेकिन वह स्वयं अपनी जिम्मेदारी पूरे सही तरीके से नहीं निभाता है। कहानी का वातावरण ऐसा दिखाया गया है कि शोषण कोई भी करें लेकिन दोष केवल ब्राह्मणों या दूसरे सवर्णों पर लगाया जाता है।

कहानी प्रारंभ में एक दिन कुरील साहब गुस्सा होते हुए समाज को कोसते कहते हैं कि समाज ने मुझे क्या दिया? मैं समाज की परवाह क्यों करूं? शिवदत्त उन्हें समझाते हुए कहता है कि आज हम, आप जिस पद पर हैं हमें वहां पहुंचाने में समाज ने भी त्याग और अपना योगदान दिया है। समाज ने इसमें अपनी अहम भूमिका निभाई है। तो हमें भी अपने सामाजिक दायित्वों को कभी नहीं भूलना चाहिए। समाज के हितों की रक्षा के प्रति कटिबद्ध होना चाहिए।

गौरीशंकर माहेश्वरी स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि सब मिला कर देखें तो आज जाति-पात, धर्म आदि ये चीजें और बढ़ रहे है। जाति, वर्ग, धर्म, संप्रदाय के नाम पर वैमनस्य बढ़ रहा है। फर्क बस इतना है पहले जातिय घृणा लोगों में बाहर थी अब अंदर है। खाली छुआछूत खत्म होने का मतलब यह थोड़े ही है कि जात पात या जातिय घृणा खत्म हो गई।

तीनों जब दफ्तर से छूटते तो घंटों बैठकर बातें करते और गप्पे-शप्पे मारते फिर घर जाते। एक रोज कुरील को दफ्तर आने को लेट हो जाता है माहेश्वरी और शिवदत्त उसका इंतजार करते हैं। कुरील जब आए तो दोनों

ने पूछा कहां रह गए थे इतनी देर कैसे हो गई?बार-बार पूछने पर कुरील कहता है कि मै आपकी तरह दब्बू अधिकारी नहीं हूं। मैं आज तक एक भी डी.पी.सी की बैठक में नहीं गया। मैं तो साफ कह देता हूं। फाइल घर लाओ। जिसे जरूरत होती है सारी फाइलें तैयार करके घर लाता है। घंटों बैठता हूं, तब जाकर हस्ताक्षर करता हूं। खुशामद भी करते हैं, चढ़ावा भी चढ़ाते हैं। वह भी खुश, हम भी खुश।

दोनों मित्र कुरील की और दोनों आश्चर्य से देखते हैं कि जो व्यक्ति कुछ दिन पहले समाज को कोस रहा था कि समाज ने उसे क्या दिया है? आज वही समाज की व्यवस्था को भ्रष्ट कर रहा है। वैसे अब तक तो यह सारे दोष ब्राह्मणों या दूसरे सवर्णों पर लगाये जाते थे। आमतौर पर अब तक ब्राह्मणों पर यह आरोप लगता रहा है कि उन्होंने दलित समाज के साथ अन्याय किया है।

माहेश्वरी, कुरील को समझाते हुए कहते हैं कि सही- गलत तो विवाद का विषय हो सकता है। शिवदत्त, कुरील साहब को समझाते हुए कहते हैं कि मुझे संतोष है कि मैंने किसी के साथ ना अन्याय किया है और ना होने दिया। एक-दूसरे को कहने-सुनाने और समझाने के बाद तीनों एक दूसरे को परस्पर नमस्कार करते हुए वह अपने-अपने घरों को चल देते हैं।

घटना के 6 महीने बाद एक दिन कुरील साहब समय के अनुसार नहीं पहुंचे, तो शिवदत्त और माहेश्वरी साहब चिंतित हुए और बोले चलिए देख आते हैं। तो कुरील साहब रास्ते में ही मिल जाते हैं वे बताते हैं कि उनके साथ बड़ा अन्याय हुआ है।

दरअसल बात ये होती है कि प्रमोशन की लिस्ट में कुरील साहब का नाम नहीं आता, उनसे जूनियर को प्रमोशन मिल जाता है, लेकिन उनको नहीं। कुरील साहब कहते हैं धांधलेबाजी चल रही है। कुरील साहब गुस्सा दिखाते हुए बताते हैं हेडक्वार्टर की डी.पी.सी में भी एस.सी. / एस.टी. का मेंबर भी होता है। जरूर उसी ने फाइल बिना स्टडी किए हस्ताक्षर कर दिया होगा। वह भड़कते हुए बोलते हैं एक बार बस पता लगा लूं फिर गद्दार समाजद्रोही को छोड़ूंगा नहीं। माहेश्वरी कहते हैं मैं आपको यही बता देता हूं इसमें हेड क्वार्टर से पता करने की क्या बात है? कुरील साहब ने जिज्ञासा प्रकट की और पूछा कौन हो सकता है।

माहेश्वरी साहब के मुंह से यंत्रवत निकल गया, "और कौन होगा कुरील साहब, होगा कोई दलित ब्राह्मण। यह सुनते ही कुरील साहब का चेहरा पीला पड़ जाता है। काटो तो खून नहीं। शिवदत्त जी कुरील साहब के कंधे पर हाथ रखते हुए कहते हैं, "चलो कुरील साहब, घर चलो। निकालना ही होगा कोई ना कोई तरीका इन दलित ब्राह्मणों से निपटने का।"

१२.१.३ निष्कर्ष

'दलित ब्राह्मण' कहानी में लेखक ने जात पात के नाम पर होने वाली लापरवाही व भ्रष्टाचार का चित्रण किया है। कहानी में तीन मित्र शिवदत्त, गौरीशंकर माहेश्वरी और विजय रंजन कुरील है। शिवदत्त धर्म से बौद्ध धर्म और शेष दोनों दलित हैं। माहेश्वरी और शिवदत्त समाज के प्रति अपने दायित्व को पूरी ईमानदारी के साथ निभाते रहे हैं। किन्तु कुरील साहब एक तरफ तो समाज को कोसते हैं कि समाज ने उन्हें क्या दिया। और खुद समाज के प्रति उनके क्या दायित्व है वह भूल जाते हैं।_जिसका खामियाजा भी उन्हें भुगतना पड़ता है। उनके जैसे ही काम करने वाला कोई भ्रष्ट पदाधिकारी अपनी लापरवाही से कुरील जी का नुक्सान कर देता है। धन के लालच में किये गये कार्य का खामियाजा हमें खुद ही भुगतना पड़ सकता है। कुरील जी के माध्यम से इस कथा में यही बताने का प्रयास किया गया है।

१२.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

"फर्क तो खैर बहुत पड़ गया माहेश्वरी साहब, हम ब्राह्मणों या सवर्णों की आलोचना और शिकायत कर लेते थे उन्हें कोस लेते थे कि वे हमारे साथ अन्याय कर रहे हैं वे हमारा भला नहीं चाहते इसलिए हमें हर क्षेत्र में प्रातिनिधित्व चाहिए. अब चूकि कूरिल साहब भी दलित हैं, इन महाशय की शिकायत हम उस रूप में नहीं कर सकते।"

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश बी.ए.प्रथम वर्ष की पाठ्य पुस्तक से संकलित "दलित ब्राह्मण" नामक कहानी से लिया गया है। इसके लेखक "सत्यप्रकाश जी" हैं। लेखक ने इस कहानी में मनुष्य के सामाजिक दायित्वों के बारे में बताया है कि सभी को अपने कर्तव्य निभाने चाहिए चाहे वह ब्राह्मण या सवर्ण हो या फिर दलित।

प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने व्यक्ति के सामाजिक दायित्वों के बारे में बताया है, कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने सामाजिक दायित्वों को कभी नहीं भूलना चाहिए। समाज के हितों की रक्षा के प्रति कटिबद्ध होना चाहिए। चाहे वह दलित हो या फिर ब्राह्मण या अन्य कोई सवर्ण।

व्याख्या :- जब शिवदत्त और माहेश्वरी साहब को पता चलता है कि कुरील साहब ने रिश्वत लेकर फाइल बिना पढ़े हस्ताक्षर कर दिये, तो उन्हें बहुत आश्चर्य होता है। माहेश्वरी तब कहते हैं कि कुरील साहब अभी-अभी आप ही व्यवस्था की बातें कर रहे थे। व्यवस्था के तहत ही तो आपको दलितों का प्रतिनिधि बनाया गया है।

माहेश्वरी साहब ने स्पष्ट करते हुए कहा कि आमतौर पर अब तक ब्राह्मणों पर यह आरोप लगता रहा है कि उन्होंने दलित समाज के साथ अन्याय किया है। जब आपने भी यही किया तो क्या फर्क पड़ता है? शोषण भी करें। इसका अर्थ यह हुआ कि आप भी ब्राह्मण है।

शिवदत्त माहेश्वरी साहब से कहता है कि फर्क तो बहुत पड़ा है। क्योंकि तब हम ब्राह्मणों या दूसरे सवर्णों की बुराई और शिकायत करके खुद को संतुष्ट कर लेते थे। उन्हें कोस लेते थे कि वह हमारे साथ अन्याय कर रहे हैं। सवर्ण जाति के लोग हमारा भला नहीं चाहते, इसलिए दलित समाज को हर क्षेत्र में प्रतिनिधित्व चाहिए। शिवदत्त स्पष्ट करते हुए कहते हैं चूँकि अब कुरील साहब भी दलित हैं, इन महाशय की शिकायत हम उस रूप में नहीं कर सकते हैं। कुरील साहब की इन हरकतों से शिवदत्त साहब के हृदय पर बहुत आघात पहुँचता है।

तात्पर्य यह है कि व्यक्ति चाहे कोई भी हो दलित हो या ब्राह्मण या दूसरे सवर्ण समाज की व्यवस्था को बनाये रखने के लिये उन्हें अपने कर्तव्यों और दायित्वों का पालन पूरी ईमानदारी के साथ करना चाहिए न की एक जाति दूसरे जाति पर दोष लगाये। व्यक्ति को ऐसा अवसर ही नही देना चाहिए कि जात-पात पर प्रश्न उठे या फिर भेद-भाव की भावना उत्पन्न हो।

विशेष :- समाज में फैली जातिवाद की समस्या के आड़ में होने वाले भ्रष्ट कार्यों पर प्रकाश डाला गया है। भाषा-बोलचाल की सरल और प्रवाहपूर्ण भाषा है। एकाध स्थान पर अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है। कहीं-कहीं पर

मुहावरों का प्रयोग हुआ है, जिससे कथन में स्पष्टता आ गई है जैसे-ठगे से रह जाना, चेहरा पीला पड़ जाना।

१२.५ बोध प्रश्न

१) 'दलित ब्राह्मण' कहानी के तीनों पात्रों के संवादों को अपने शब्दों में लिखिए।

२) कहानी की मूल समस्या पर प्रकाश डालिए।

<u>एक वाक्य में उत्तर लिखिए : -</u>

१) शिवदत्त, माहेश्वरी और कुरील तीनों कहाँ कार्यरत हैं?

उत्तर :- तीनों भद्रजन भारत सरकार में उच्चाधिकारी हैं।

२) कुरील साहब के साथ क्या अन्याय हुआ?

उत्तर :- कुरील साहब के साथ ये अन्याय हुआ कि उनके जूनियर्स को प्रोमोट कर दिया गया और उनका प्रमोशन नहीं हुआ।

३) रिश्वत लेकर हस्ताक्षर करने की ग़लती कौन से साहब करते थे?

उत्तर :- रिश्वत लेकर हस्ताक्षर करने का काम कुरील साहब करते थे।

४) किसकी बात से कुरील साहब का चेहरा पीला पड गया?

उत्तर : - माहेश्वरी साहब की 'दलित ब्राह्मण' वाली बात सुन कर कुरील साहब का चेहरा पीला पड़ गया।

५) 'दलित ब्राह्मण' कहानी के लेखक कौन हैं?

उत्तर :- दलित ब्राह्मण कहानी के लेखक सत्यप्रकाश जी हैं।

❖❖❖❖

१३

पत्र लेखन

इकाई की रूप रेखा

१३.१ इकाई का उद्देश्य
१३.२ प्रस्तावना
१३.३ पत्र लेखन की विशेषताएँ
  क) सरल भाषाशैली
  ख) विचारों की सुस्पष्ठता
  ग) संक्षेप और सम्पूर्णता
  घ) प्रभान्विति
  ड) बाहरी सजावट
१३.४ पत्र लिखते समय ध्यान देने योग्य बाते ।
१३.५ पत्र लेखन से सम्बंधित अभिवादन व सम्बोधनों की सूची
१३.६ पत्र लेखन के प्रकार
  क) औपचारिक
  ख) अनौपचारिक
१३.७ पत्र लेखन के प्रारूप
१३.८ संभावित प्रश्न

१३.१ उद्देश्य :

पत्र लेखन की इस इकाई में विभिन्न प्रकार के पत्रों की चर्चा की गयी है। पत्र हमारे जीवन में महत्वपूर्ण क्यों है? यह बताया गया है। अलग-अलग स्थितियों में पत्रों का प्रारूप बदलता रहता है। इस दृष्टि से विभिन्न परिस्थितियों में पत्र लेखन सिखाना इस इकाई का उद्देश्य है।

१३.२ प्रस्तावना :

पत्र के द्वारा हम अपनी बात या संदेश दुसरों तक पहुँचा सकते है। जिस प्रकार मानव सभ्यता का विकास हुआ उसी प्रकार पत्र लेखन मे भी कई परिवर्तन हुये। अत: पत्र लेखन का इतिहास काफी पुराना माना जा सकता है। पत्र के द्वारा एक राज्य या देश अपना व्यापार करने के लिए पत्रों का आदान प्रदान करतें है। इसके अतिरिक्त अन्य कार्यो के लिए भी पत्र लिखे जाते हैं।

१३.३ पत्र की विशेषताएँ

पत्र की विशेषताएँ निम्नलिखित है जो की इस प्रकार है ।

क) सरल भाषाशैली
ख) विचारो की सुस्पष्टता
ग) संक्षेप और सम्पूर्णता
घ) प्रभान्विति
ड) बाहरी सजावट

क) सरल भाषाशैली : पत्र की भाषा साधारणतः सहज, सरल साफ–सुथरी होनी चाहिए। शब्दों के प्रयोग के समय ध्यान रखना चाहिए की जो बात या संदेश देना चाहते है वो सही रूप मे हो, अर्थात भाषा सटीक, सरल और मधुर हों, ताकि समझने में आसानी हो ।

ख) विचारों की सुस्पष्टता : पत्र इस प्रकार लिखना चाहिए जिससे लेखक के विचार स्पष्ट हो, उसमे सरलता और सहजता होना अनिवार्य है। इस तरह की बाते न लिखी जाए, जिससे प्राप्तकर्ता के दिमाग पर जोर पड़े।

ग) संक्षेप और सम्पूर्णता : कम से कम शब्दों मे अपनी बात कहे ताकि पत्र अधिक लंबा ना हो। वह अपने में सम्पूर्ण और संक्षिप्त हो । इसमें बातों को बढ़ा-चढ़ा कर ना लिखा जाए। इसके अतिरिक्त ध्यान देने योग्य ये बाते हैं कि एक ही शब्द या वाक्य का दुहराव ना हो, पत्र में एक ही बात को बार-बार दुहराना से पत्र का प्रभाव कम हो जाता है। पत्र में मुख्य बाते ं आरम्भ में लिखी जानी चाहिए । सारी बातें एक क्रम मे लिखनी चाहिए। कोई भी आवश्यक तथ्य छूटने न पाया।

पत्र लेखन समय प्राप्तकर्ता को ध्यान में रख कर पत्र लिखे ताकि पाठक को समझने में आसानी हो ।

घ) प्रभावान्वित : पत्र इस प्रकार हो जो प्राप्तकर्ता को प्रभावित कर सके । पत्र के आरंभ और अंत का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए ।

ड) बाहरी सजावट :

१. पत्र के लिए अच्छे कागज या पेपर का उपोयग करे ।
२. भाषा सरल हो । साफ-सुथरी हो ।
३. आवश्यकतानुसार विरामादि चिह्नों का प्रयोग किया जाय। लिखावट इस प्रकार हो ताकि आसानी से समझा जा सके उसमे पर्याप्त जगह हो ।
४. शीर्षक तिथि, अभिवादन, अनुच्छेद और अन्त अपने- अपने स्थान पर क्रमानुसार होने चाहिए ।

१३.४ पत्र लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें

- पता और दिनांक
- संबोधन तथा अभिवादन शब्दावली का प्रयोग
- पत्र की सामग्री
- पत्र की समाप्ति, स्वनिर्देश और हस्ताक्षर

१३.५ पत्र लेखन से सम्बंधित अभिवादन व सम्बोधनों की सूची

सम्बन्ध	सम्बोधन	अभिवादन	अभिनिवेदन
पिता – पुत्र	प्रिय महेश	शुभाशीर्वाद	तुम्हारा शुभाकांक्षी
पुत्र – पिता	पूज्य पिताजी	सादर प्रणाम	आपका स्नेहाकांक्षी
माता-पुत्र	प्रिय पुत्र	शुभाशीष	तुम्हारी शुभाकांक्षिणी
पुत्र-माता	पूजनीय माताजी	सादर प्रणाम	आपका स्नेहाकांक्षी
मित्र-मित्र	प्रिय भाई या मित्र या प्रिय रमेश आदि	नमस्कार	आपका स्नेहाकांक्षी
गुरू-शिष्य	प्रिय कुमार या चि. कुमार	शुभाशीर्वाद	तुम्हारा सत्यैषी याशुभचिन्तक
शिष्य-गुरू	पूजनीय या आदरणीय गुरूदेव	सादर प्रणाम	आपका शिष्य
दो परिचितव्यक्ति	प्रिय महोदय	सप्रेम नमस्कार	भवदीय
अग्रज-अनुजा	प्रिय राहुल	शुभाशीर्वाद	तुम्हारा शुभाकांक्षी
अनुज – अग्रज	पूज्य भैया या भ्राता जी	प्रणाम	आपका स्नेहाकांक्षी
स्त्री-पुरूष (अनजान)	प्रिय महाशय		भवदीया
पुरूष-स्त्री (अनजान)	प्रिय महाशय		भवदीय
पुरूष-स्त्री (परिचित)	कुमारी कमलाजी		भवदीय
स्त्री-पुरूष (परिचय)	भाई कमलजी		भवदीया

१३.६ पत्रों के प्रकार या भेद

पत्र के प्रकार या भेद २ प्रकार के होते है ।
क) औपचारिक ख) अनौपचारिक

क) औपचारिक पत्र : औपचारिक पत्र का प्रयोग प्राय: दफ्तर कार्यालय संस्थानो आदि के द्वारा दुसरों को सूचनाओं, जानकारियों तथा तथ्यों आदि के आदान प्रदान में किया जाता है । इन पत्रो को लिखते समय औपचारिकताओं का ध्यान रखा जाता है ।

१. सामाजिक पत्र (Social letters)

२. व्यापारिक पत्र (Commercial letters)

३. सरकारी पत्र (Official letters)

१. सामाजिक पत्र (Social letters) : ये पत्र अपने मित्रों, सगे-सम्बन्धियों एवं परिचितों को लिखे जाते है। उसके अतिरिक्त सुख-दुख, शोक, विदाई तथा निमन्त्रण आदि के लिए जो पत्र लिखे जाते है, वे भी सामाजिक पत्र कहलाते हैं ।

२. व्यापारिक पत्र (Commercial letters) व्यापार में सामान खरीदने व बेचने अथवा रूपयों के लेन-देन के लिए जो पत्र लिखे जाते हैं, उन्हें व्यापारिक पत्र कहते है ।

३. सरकारी पत्र (Official letters) जो पत्र सरकारी काम-काज के लिए लिखे जाते हैं, वे सरकारी पत्र कहलाते हैं ।

ख) अनौपचारिक पत्र लेखन

इस प्रकार के पत्र अपने नजदीकी संबंधी या मित्र को भेजे जाते हैं। इन पत्रों का विषय निजी एवं व्यक्तिगत भी हो सकता है। इन पत्रों को लिखते समय अत्याधिक औपचारिकता का निर्वाह करना आवश्यक नही है।

औपचारिक पत्र लेखन

१. बिजली की समस्या के संबंध में शिकायती - पत्र

३०५, नवजीवन सोसायटी
ग्रांट रोड, मुंबई - २८,
दिनांक – १० अप्रैल २०१४.

सेवा में,
बेस्ट मुंबई बिजली विभाग,
ताडदेव मुंबई,

विषय : अत्यधिक राशि के बिलो के संदर्भ में

महोदय,

मै पिछले ८ वर्षो से ताड़देव नगर मे रहती हूँ। नियमित रूप से हर महीने बिजली की राशि का भुगतान करती हूँ भूगतान किए गए सभी दस्तावेज मेरे पास सुरक्षित हैं। मेरे घर के बिजली की राशि लगभग ६५० रू. प्रति महीने आता है । इस बार ३५०० बिजली का बिल आया है, जो की औसत से भी अधिक हैं । इसे देखकर मैं अत्याधिक हैरान हूँ । मेरे घर में बिजली की खपत के किसी भी बिंदु पर कोई बढोतरी नहीं हुई हैं। पिछले किसी भी बिल का भुगतान नहीं बकाया है बावजूद इसके इतनी राशि का कारण समझ नहीं आ रहा है ।

मीटर –रीडिंग के भेजे गए इस अत्यधिक राशि के बिल का भुगतान मेरे लिए संभव नहीं है । कृपया संशोधित बिल भेजे ताकि मैं समय पर भुगतान कर सकूं।
आशा है आप मेरे अनुरोध पर शीघ्र विचार करेंगे ।

धन्यवाद सहित,
भवदीय

(हस्ताक्षर .....)

२. टेलीफोन का कनेक्शन कटने संबंधी पत्र

५०, हेम कुंज
गांधी चौक,दिल्ली – ५७.
दिनांक – २० मार्च २०१४.

सेवा में,
प्रबंधक,
महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड
जनकपुरी, नई दिल्ली – ११००५८.

विषय : टेलीफोन कनेक्शन कटने के संदर्भ में

महोदय,

मेरा टेलीफोन नंबर २५५२३५४० विगत दस दिनों से काम नहीं कर रहा है। पता करने पर बताया गया है कि यह कनेक्शन काट दिया गया है। इस मास मेरे पास टेलीफोन बिल नहीं आया था । अत:मै बिल समय पर जमा नहीं करा पाया । बाद में मैने डुप्लीकेट बिल बनवाकर जमा भी कर दिया। इसके बावजूद मेरा टेलीपोन कनेक्शन काट दिया गया है । मैं इस प्रार्थनापत्र के साथ जमा किए गए बिल की फोटो प्रति संलग्न कर रहा हूँ । अत: आपसे अनुरोध हैं कि मेरा टेलीफोन तत्काल चालू करवाने की व्यवस्था करवाएँ। घर में पिताजी अस्वस्थ रहते हैं। अत: डॉक्टर से संपर्क बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है ।
आशा है आप इस कार्य को शीघ्र करेंगे ।

भवदीय
हस्ताक्षर .....
C-5/70, जनक पुरी
नई दिल्ली – ११००५८.
दिनांक २५ सितंबर, २०१६
संलग्न जमा किए गए बिल की फोटो प्रति

३) अपने क्षेत्र में बढ़ती हुई गंदगी के बारे में स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए ।

३२ कृष्ण नगर,
वजीरा नाका, बोरीवली
दिनांक २६-७-२-१५.

श्रीमान स्वास्थ्य अधिकारी
महानगर पालिका
मुंबई ।

विषय : नगर मे फैले गंदगी के संबंध में

महोदय,

इस पत्र के द्वार में आपको अपने क्षेत्र में फैंले गंदगी के बारे में जानकारी देना चाहती हूँ । लगातार फैलती गंदगी के कारण हमारे क्षेत्र में बीमारियाँ बढ़ती ही जा रही हैं। पिछले महीने से लगातार वर्षा के कारण हमारे क्षेत्र का हाल बेहाल हो गया है, जिसके कारण बीमारियों का प्रकोप बढ़ता ही जा रहा है ।

बीमारियों के कारण तीन चार लोगो की मौत हो गयी । इसके पहले भी स्वास्थ्य विभाग को पत्र भेजा गया है, लेकिन संतोषजनक कार्यवाही नहीं की गयी ।

आपसे अनुरोध है की आप इस समस्या के समाधान के उपाय करे ताकि बढ़ती हुई गंदगी को रोका जा सके।
धन्यवाद

४) बहन की शादी के लिए अवकाश पत्र।

००३, शांति नगर,
मिरा रोड, मुंबई १०१.
दिनांक – १६जुलाई २०१७

सेवा में
प्रधानाचार्या
मारवाड़ी विद्यालय, मुंबई ।

विषय : अवकाश हेतु निवदेन पत्र,

महोदय,

निवेदन है की मै आपके विद्यालय की ८वी कक्षा बी वर्ग की छात्रा हूँ । मेरे बड़े भाई का विवाह दिनांक ०५-०८-२-१७ को होना निश्चित हुआ है । विवाह उत्सव एवं घर के कार्यो के कारण ४ दिनो तक विद्यालय में उपस्थित न हो पाऊँगी ।

कृपा दिनाकं ३-०८-२०१७ से ७-०८-२०१७ तक मुझे ४ दिनो का अवकाश प्रदान करे। मैं आपकी आभारी रहूँगी ।

आपकी आज्ञाकारी शिष्या
स्मिता
कक्षा ८ ब

५) दैनिक समाचार पत्र के लिए उपसंपादन के पद के लिए अपनी योग्यता का विवरण देते हुए आवेदन पत्र लिखिए ।

४७८, गल्ली नं, -४
पटेल नगर, मंबई
दिनांक : २० मार्च २०१७

संपादक
नवभारत टाईम्प
चर्चगेट मुंबई ।

विषय : उपसंपादक पद के लिए आवेदन – पत्र

महोदय आपने अपने समाचार - पत्र के लिए उपसंपादक के पद के रिक्त स्थान के लिए १८ मार्च के समाचार – पत्र में विज्ञापन दिया था । मै अपने को इस पद के उम्मीदवार के रूप में प्रस्तुत करना चाहता हूँ । मेरी योग्यता व अन्य विवरण निम्नलिखित है ।

नाम	:	रमेश शुक्ला
पिता का नाम	:	चन्दन कुमार शुक्ला
जन्म तिथि	:	१७-०८-१९८६
स्थायी पत्ता	:	४७८, गल्ली नं. ४, पटेल नगर, मुंबई
शिक्षा	:	बी. ए. हन्दी में प्रथम स्नातकोत्तर उपाधि
अनुभव	:	जनसत्ता में दो वर्ष तक उपसम्पाद्क के पद पर कार्यानुभव
अतिरिक्त योग्यता	:	टंकन तथा आशुलिपि में डिप्लोमा, कंप्यूटर में डिप्लोमा

यदि आप मुझे इस पद पर कार्य करने का अवसर दे तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि समाचार–पत्र की उन्नति के लिए भरसक प्रयत्न करूँगा ।

धन्यवाद
भवदीय
रमेश शुक्ला

अनौपचारिक पत्र

१. माताजी को पत्र

९५०, सेक्टर – ३८, बोकारी
दिनांक – १० अक्टूबर, २००६

परमपूज्य माताजी,
चरण – वंदना ।

कल आपका पत्र मिला, पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि घर में सब सकुशल हैं। आपने पत्र में मुझे लिखा है कि मैं पढ़ाई के अतिरिक्त अन्य क्रिया–कलापो में भी भाग लूँ, क्योकि आज के परिवेश में अतिरिक्त क्रिया-कलापों का महत्वपूर्ण स्थान है। मैने आपके निर्देशानुसार अपने विद्यालय की वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा संगीत कार्य कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए नामांकन करवा दिया है तथा तैयार भी आरंभ कर दी है। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि विद्यालय की हॉकी टीम मे भी मेरा चयन हो गया है। सहपाठियों के साथ मेरा अच्छा संपर्क स्थापित हो गया है। मेरी पढ़ाई भी ठीक प्रकार से चल रही हैं। स्वाति और दिव्या को मेरा बहुत-बहुत प्यार तथा पिताजी को सादर प्रणाम

आपका प्रिय पुत्र
राहुल

२. छोटे भाई को पत्र

१२-१५, शास्त्री नगर , धनबाद
१५ नवंबर, २०१७.

प्रिय धनव
शुभाशीष ।

तुम्हारे विद्यालय की और से प्रथम अवधि परीक्षा की अंक-तालिका आज ही मिली है। इसे पढ़कर अच्छा नहीं लगा, क्योंकि दो विषयों में तुम्हारे अंक संतोषजनक नही हैं। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तुम नियमित रूप से पढ़ाई नहीं कर रहे हो। तुम्हें यह बात तो ज्ञात ही हैं कि पिताजी का स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा हैं, फिर भी वे किसी न किसी तरह तुम्हें पढ़ाई का खर्चा नियमित भिजवा रहे हैं।

तुम्हारा भी कर्तव्य है कि तुम मन लगाकर पढ़ाई करो। हमें तुम्हारी क्षमता पर पूरा विश्वास है। ऐसा लगता है कि तुम समय को ठीक प्रकार से नियोजित नहीं कर पा रहे हो।

स्मरण रखो, कठोर परिश्रण, ही सफलता का मूलमंत्र है। समय का नियोजन इस प्रकार करो कि पढ़ाई के लिए भी समय रहे और अन्य गतिविधियों के लिए भी। बीता समय कभी लौटकर नहीं आता ।

तुम स्वयं समझदार हो । हमें विश्वास है कि तुम भविष्य में शिकायत का अवसर नहीं दोगे ।

शुभकामनाओं के साथ,
तुम्हारा शुभेच्छु
मनोज कुमार

१३.७ संभावित विषयों पर पत्र लिखिए।

१) परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त होने पर पिताजी को पत्र लिखिए।
२) मित्र के जन्मदिन पर शुभकामना देने हेतु पत्र लिखिए।
३) रुपये की सहायता हेतु मित्र के लिखा गया पत्र।
४) गायन प्रतियोगिता में प्रथम आने पर मित्र को बधाई पत्र लिखिए।
५) पुस्तक मँगाने के लिए प्रकाशक को लिखा गया पत्र।
६) विवाह पर अवकाश के लिए प्रार्थना पत्र।
७) छात्रवृत्ति के लिए प्रधानाचार्य को प्रार्थना पत्र।
८) अपने क्षेत्र में बढ़ते अपराधों की समस्या के बारे में बताते हुए थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए।

१४

निबंध लेखन

इकाई की रूप रेखा

१४.१ इकाई का उद्देश्य
१४.२ प्रस्तावना
१४.३ निबंध लेखन में ध्यान देने योग्य बाते ।
१४.४ निबंध के प्रकार
क) वर्णनात्मक निबंध
ख) विवरणात्मक निबंध
ग) विचारात्मक निबंध
घ) भावात्मक निबंध
ड) व्यक्तिपरक निबंध - निबंध के भाग
१४.५ निबंध के प्रारूप
१४.६ संभावित प्रश्न

१४.१ इकाई का उद्देश्य

निबंध लेखन से संबंधित इस इकाई में निबंध के विविध प्रकार की चर्चा की गई है। निबंध व्यक्ति के विचारों की अभिव्यक्ति करने का माध्यम है। इस माध्यम का प्रयोग कैसे किया जाए बताया गया है । निबंध कैसे लिखा जाए यह बताना इकाई का उद्देश्य है ।

१४.२ प्रस्तावना

साहित्य को दो विधाओं में विभाजित किया गया गद्य और पद्, गद्द साहित्य को अनेक विधाओं में बाँटा गया है। जिसमे से निबंध एक है। निबंध का शाब्दिक अर्थ है नि+बंध अर्थात क्रमबध्द और व्यवस्थित लेख । इसे अंग्रेजी के कंपोजिशन और एस्से के अर्थ में ग्रहण किया जाता है ।

निबंध व्यक्ति के विचार और व्यक्तित्व को प्रकाश में लाने का माध्यम है । लेखक निबंध के माध्यम से किसी विषय की संपूर्ण जानकारी देता है ।

१४.३ निबंध लेखन में ध्यान देने योग्य बाते

१. विषय की विस्तृत जानकारी होनी चाहिए।
२. विषय का शोध करना चाहिए।
३. विषय से संबंधित सामग्री इकट्ठी करनी चाहिए ।

४. विषय की भाषा सरल और सुंदर हो । ताकि पाठक वर्ग उसे आसानी से समझ सके ।
५. विषय रूचिपूर्ण होना चाहिए ।
६. मुहावरों और लोको क्तियों के द्वारा निबंध को आकर्षक बनाया जा सकता है ।
७. शब्दों के चयन में सावधानी बरतनी चाहिए ।
८. संपूर्ण जानकारी देना ।
९. लेखक के विचार निबंध के माध्यम से स्पष्ट हो ।
१०. भाषा सरल एवं सहज़ हो ।

१४.४ निबंध के प्रकार

निबंध के निम्नलिखित प्रकार है, जो इस तरह है –

१. **वर्णनात्मक निबंध :** वर्णनात्मक निबंध में लेखक की सच्ची परीक्षा इसमें होती है । कल्पना तथा दर्शन के सहारे वस्तु अथवा स्थान का चित्रण किया जाता है, वर्णनात्मक निबंध कल्पना प्रधान होते है।

२. **विवरणात्मक निबंध :** इस प्रकार के निबंधो में कल्पना का महत्वपूर्ण स्थान है। आत्मकथा, ऐतिहासिक घटना, जीवन चरित्र आदि का आकर्षक रूप में प्रस्तुत करना।

३. **विचारात्मक निबंध :** इस प्रकार के निबंधों में लेखक को अपनी बुध्दिमत्ता को सिध्द करना होता है। मनुष्य का संपूर्ण चितंन अध्ययन और मनन इस प्रकार के निबंधो का विषय होता है। तर्क-वितर्क और खण्डन–मण्डन इसकी शैली है। ऐसे निबंधो के रचनाकार स्पष्ट एंव सुलझे हुए होते है।

४. **भावात्मक निबंध :** इस प्रकार के निबंधो में भावनाओं का महत्व है। इसका संबंध ह्रदय अथवा भावना से अधिक होता है। बुध्दि–तत्व से यहाँ अधिक कार्य नहीं लिया जाता। ऐसे निबंध सीधे-सीधे लेखक की भावनाओ से जुड जाता है।

५. **व्यक्तिपरक निबंध :** यह भावात्मक निबंध का ही मिलता-जुलता रूप है। ऐसे निबंधो का आधार या तो लेखक स्वयं होता है अथवा उसके निज के संपर्क से आये व्यक्ति सभी प्रकार के संस्मरण और जीवनीपरक निबंध इसके उदाहरण है ।

निबंध के भाग : निबंध के लेखन से समानता नहीं है अतएव उसके शिल्प को तीन भागो में बॉटा जा सकता है।

१. प्रस्तावना अथवा भूमिका
२. व्याख्या एवं प्रतिपादन
३. उपसंहार अथवा निष्कर्ष

१) **प्रस्तावना :** निबंध का पहला भाग है । निबंध की शुरूवात इस तरह करनी चाहिए, ताकि पाठक विषय से बंध जाए ।

२) **व्याख्या एवं प्रतिपादन :** विषय की व्याख्या करते समय ध्यान देना चाहिए कि उसके वाक्य छोटे हो क्रम–बध्द हो। वाक्य या परिस्थिति के अनुसार मुहावरा या कहावतों का प्रयोग किया जाए । व्याख्या इस प्रकार हो कि लेखक के ह्रदय पर अमिट छाप छोड़ सके ।

३) **उपसंहार :** निबंध में की गई व्याख्या का सारांश हो, निबंध का अंत इस प्रकार करना चाहिए कि वह अधूरा न लगे। भाषों के अनुरूप भाषा में उतार -चढाव हो। लेकिन किसी भी प्रकार की जटिलता का अनुभव पाठक को ना हो ।

१४.५ निबंध का प्रारूप

१) विज्ञान का अविष्कार

प्रस्तावना : उन्नीसवी शताब्दी से विज्ञान के विकास का युग आरंभ होता है। विज्ञान शब्द 'वि' और 'ज्ञान' से बना है। जिसका अर्थ है विशिष्ट ज्ञान। मनुष्य आज एक देश में रहकर दुसरे देश की जानकारी आसानी से प्राप्त कर लेता है। विज्ञान के द्वारा मनुष्य वर्तमान समय में चाँद पर पहुँचने में समर्थ हुआ।

प्रादुर्भाव : विज्ञान के अविष्कार के कारण आज दुनिया का नक्शा ही बदल गया है। पहले जो कार्य असंभव लगता था। अब विज्ञान के अविष्कार के कारण संभव हो पाया है प्राचीनकाल से जो अंधविश्वास और परम्परा चली आ रही थी उसे विज्ञान को माननेवालों ने तर्क–वितर्क द्वारा अमान्य सिद्ध कर दिया। अब हर पहुलओं पर वैज्ञानिक रूप से विचार किया जाता है। पुरानी बातों पर विश्वास करने वालों ने भी इस बात को स्वीकार किया।

योगदान : विज्ञान हर क्षेत्र में लगातार विकास कर रहा है। चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो या कृषी का क्षेत्र या फिर अन्य कोई। विज्ञान के अविष्कार के कारण मनुष्य का जीवन सरल और सुलभ बना। कप्युटर, टी. वी. लेपटॉप सिंचाई के नये–नये साधन हवाई जहाज आदि विज्ञान का परिणाम है। युध्द क्षेत्र में विज्ञान के विध्वंसकारी अविष्कारों ने विश्व को हिलाकर रख दिया। मगंल ग्रह तक पहुँचना ये विज्ञान के कारण ही हो सका। कैंसर, टीबी जैसी खतरनाक बिमारीयों से छुटकारा इसकी ही देन है। चिकित्सा के क्षेत्र में विज्ञान ने मानवजीवन को नया जन्म दिया है।

विकलांगो के लिए विज्ञान जीवन दान है, मुक-बधिरो के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, इसने हमे आंनदमय जीवन प्रदान किया। जिससे भौतिक सुख – सुविधाओ का लाभ उठा रहे है । मीलों की दुरियाँ हम कम – से कम समय में तय करते हैं ।

उपसंहार : विज्ञान के लगातार विकास के कारण अब हमारे लिए कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है। यह सत्य है कि विज्ञान ने हमे लाभ पहुँचाया है, किंतु उससे हानि भी कम नहीं है। विज्ञान के अस्त्र-शस्त्र के कारण आतंकवाद को बढ़ावा मिल रहा है। मनुष्य मशीन बन कर रह गया है। भौतिक–सुख सुविधाओं ने मनुष्य को आलसी बना दिया है। यदि मानव–समाज इसका सकारात्मक रूप से उपयोग करे और विज्ञान को ईश्वर की देन समझे तो हमारा देश लगातर विकास करेगा।

२) भ्रष्टाचार की समस्या :

भ्रष्टाचार दो शब्दों को मिलाकर बना है – भ्रष्ट+आचार। भ्रष्ट का अर्थ है, 'बुरा' और आचार का अर्थ आचरण अर्थात भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ हुआ वह 'आचरण' जो किसी भी प्रकार से अनैतिक और अनुचित हो ।

सामान्य शब्दो में हम कह सकते है कि अपना काम करवाने के लिए या कार्य को कम समय में पूरा करने के लिए अनैतिक तरीके को अपनाना ।

जब व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए न्याय व्यवस्था द्वारा बनाये गये नियम कानूनों का उल्लंघन करता है, तो वह भ्रष्टाचार के अंतर्गत आता है ।

भ्रष्टाचार कहाँ से शुरू हुआ ? यदि इस पर विचार किया जाएँ तो हम पाते है कि यह समस्या अब की नहीं है, बल्कि अँग्रेजों के समय से चली आ रही है। अंग्रेज भारतीयो. को आपस में लड़ाने के लिए कुछ स्वार्थी प्रवृत्ती वाले व्यक्ति को लालच देते थे, और भारतीयों में फूट डालते थे । यह समस्या वहीं से शुरू हुई।

लोग अपना काम शीध्रता से कराने के लिए छोटे से लेकर सभी तरह के अफसरों को घूस देकर भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे है। हर दिन अखबार में भ्रष्टाचार की खबरे पढ़ते है। कोयला घोटाला चारा घोटाला २ जी स्पेक्ट्म घोटाले या घूसखोरी की खबरे हम देखते है।

भ्रष्टाचार कई तरह से होते है लोग अपना काम कम से कम समय में करवाने के लिए पियून, क्लर्क जैसे लोगों को घूस देते है। इस तरह का कार्य छोटे से लेकर बड़े व्यक्ति तक करते है । मीडिया में लोग पैसे देकर अपने स्वार्थवश किसी भी तरह की खबरे छापते है। हर व्यक्ति के पास सोशल नेटवर्किंग के साधन, टीवी, लेपटॉप, मोबाईल आदि उपकरण लोगो के पास है । इन उपकरणो पर खबरे जल्द ही वायरल होती है इस तरह से कई लोग अनैतिक तरीके से पैसा कमाते है ।

भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिलाने में सरकार भी पीछे नही है चुनाव के समय पैसे देकर वोट खरीदते है । ताकि चुनाव में उनकी सरकार बन सके। सत्ता में आते ही नेतागण स्वार्थपूर्ति के लिए भ्रष्टाचार मे लिप्त हो जाते है । कोई ऐसा क्षेत्र नही है जहाँ भ्रष्टाचार नही होता। व्यापार जगत में टेंडर खरीदने के लिए सरकारी अधिकारी को पैसे दिये जाते हैं। सड़को की हालत, राशन का कोटा सरकारी काम – काज इसके उदाहरण है ।

शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र हो जहाँ भ्रष्टाचार ने अपने पंख नही फैलाये है। भ्रष्टाचार केवल आर्थिक रूप से ही नहीं होता है ।उसके कई रूप है, जैसे, स्वार्थपूर्ति के लिए गलत जानकारी देना या झूठ बोलना, चीजो में मिलावट करना, कालाबाजारी आदि। इसके अलावा वे सभी कार्य को अनैतिक तरीके से किये जाते हो, जो देश या समाज के लिए हानिकारक है। भ्रष्टाचार के बढ़ते विकराल रूप को रोकने की आवश्यकता है। यदि इसे रोका न गया तो देश को यह दीमक की तरह खोखला कर देगी।

सोशल मीडिया का समाज पर बढ़ता प्रभाव

सोशल मीडिया का सामान्य अर्थ है सामाजिक माध्यम अर्थात ऐसा माध्यम जो समाज की गतिविधियों से जोड़ सके। सोशल मीडिया अन्य मीडिया से भिन्न है। यह पूरी दुनिया को एक

नेटवर्क से जोडता है। आज भारत में रहनेवाला व्यक्ति बड़े ही आसानी से विदेश में रहनेवाले के साथ जुड़ जाता है । यह सोशल मीडिया के ही कारण संभव हो सका हैं।

यह व्यक्तियों और समुदायों के साझा सहभागी बनाने का माध्यम है। इसका उपयोग सामाजिक संबंध के अलावा उपयोग कर्ता सामग्री के संशोधन के लिए उच्च पारस्परिक मंच बनाने के लिए मोबाईल और वेब आधारित उपकरण के द्वारा भी देखा जा सकता है।

इंटरनेट, सोशल – नेटवर्किंग साईट- स्काईप वाट्सेप, इस्टाग्रांम, फेसबुक, विभिन्न ब्लॉग्स आदि सभी सोशल मीडिया का हिस्सा है । इन्ही माध्यमो के कारण आज पूरी दुनिया की खबर पलक झपकते ही उपलब्ध हो जाती है।

आज के दौर में सोशल मीडिया जिदंगी का अहम हिस्सा बन चुका है। यह देश–विदेश की सुचनाओ को आदान–प्रदान करने का जरिया बना। सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही रुपों में इसका समाज पर प्रभाव पड़ता है। इससे व्यक्ति अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है। और साथ ही दुसरो के विचारों से जुड़ता है।

सोशल मीडिया के माध्यम से ''निर्भया' को न्याय दिलाने के लिए पूरा विश्व एक जुट हो गया था। अन्ना हजारे ने भ्रष्टाचार के खिलाफ जो मुहिम छेडी थी । उसे पूरे विश्व में फैलाने का माध्यम सोशल मीडिया से ही संभव हो सका था।

चुनाव के समय में उम्मीदवारों ने इसका खुब उपयोग किया, व्यक्ति की कला अभिव्यक्ति का अच्छा-खासा प्लेटफार्म है। लोग सोशल साइटस पर अपनी कला को अभिव्यक्त करते हैं। जिसे पूरी दुनिया देखती है। और उससे कलाकार को भविष्य में आगे बढ़ने का मौका मिलता है ।

कई वर्ष से बिछडे हुए परिवार फेसबुक के माध्यम से मिले। आज फिल्मों के ट्रेलर, टी.वी. प्रोग्राम, का प्रसारण, भी सोशल मीडिया के माध्यम से किया जा रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में सोशल मीडिया ने अहम भूमिका निभाई है। विद्यार्थियो को अब पहले की तरह जानकारी प्राप्त करने के लिए परेशानियों का सामना नही करना पडता है । यू ट्यूब, एक ऐसा माध्यम है, जो गणित, अंग्रेजी, हिन्दी आदि विषयो से संबंधित जानकारियाँ देता रहता है ।

सोशल मीडिया का एक तरफ सकारात्मक पहलु है तो दुसरी तरफ नकारात्मक भी इससे धोखाधडी, आत्महत्याएँ, लूट आदि घटनाओं को बढावा मिला है। लेकिन यह व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह इसका उपयोग किस रूप में करे ।

फूल की आत्मकथा

मैं एक फुल हूँ । मेरा नाम गुलाब है सभी लोग मुझसे प्रेम करते हैं। दुसरे फूल मेरी सुंदरता को देख इर्ष्या करते है। मैं पूथ्वी पर ईश्वर की सबसे सुंदर देन हूँ। सभी लोग मुझे पाने की इच्छा रखते है। जिसके भी घर जाती हूँ उसके घर की शोभा बढ़ाती हूँ।

नेताओ के कपडों पर विराज-मान हो चार चाँद लगाती हूँ। प्रेमी जब भी मुझे अपनी प्रेमिका को देते है वो खुश हो जाती है। बच्चे मेरे साथ खेलते हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक सभी अवसरों में मेरा उपयोग किया जाता है।

मेरे जीवन में बदलाव तब आया, जब एक सेठ मुझे अपने घर ले गये। मुझे ले जाते समय वे बहुत खुश थे। मुझे देखते ही घर के सभी लोग झूम उठे। कई दिनों तक उन्होंने मेरा बहुत ख्याल रखा। मुझे ऐसा लगा मानों मैं स्वर्ग में आ गयी। फिर कुछ दिनों बाद कली के रूप में मेरा जन्म हुआ। एक दिन जब उषा की किरण मुझ पर पड़ी तब मैं पत्तीयों का पर्दा हटाकर बाहर आयी मेरा सौंदर्य देखकर सभी के चेहरों पर खुशी की लहर दौड़ पडी।घर में उत्सव जैसा माहौल बन गया ।

मेरे रूप-रंग की चर्चा सभी जगह होने लगी। आस-पास के फूल भी मेरी तरह प्यार और स्नेह पाना चाहते थे। सभी मुझे छु-कर अपना मन बहलाते थे। धीरे-धीरे मेरा यौवन निखरता गया। एक नन्ही-सी लड़की मुझे देखकर खुश हुई और चुपके से मुझे डाली से तोडकर अपने घर ले गयी। एक अच्छे –से फूलदान में उसने मुझे रखा। दुसरे दिन वह मुझे मंदिर ले गई और उठाकर भगवान के चरणों में समर्पित कर दिया। ईश्वर के चरणों मे जाकर मेरा जीवन धन्य हो गया।

दुसरे ही दिन मंदिर के पुजारी ने मुझे बाहर फेक दिया। दिन–ब–दिन मेरा यौवन मुरझाता गया। आते–जाते लगो मुझ पर पैर रखकर जाते । मेरी तरफ कोई देखता भी नही। अब मैं एक ही जगह पड़ी हुई हूँ। प्रकृति का नियम है कि जो एक दिन धरती पर आया है, वह एक दिन यहाँ से जायेगा भी। अब सिर्फ धरती पर से अपने जाने का दिन गिन रही हूँ ।

१४.६ संभावित प्रश्न

१) निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखिए ।
१) गाँव का मेला
२) १५ अगस्त
३) किसान की आत्मकथा
४) स्वदेश प्रेम
५) साहित्य और समाज
६) मुबई की बारिश
७) प्रदूषण समस्या
८) यदि मैं क्रिकेटर होता
९) यदि मैं शिक्षा मंत्री होता
१०) नोटबंदी का प्रभाव

❖❖❖❖

१५

भाषा दक्षता

अशुध्दि शोधन (शब्दगत व अर्थगत)

इकाई की रूप रेखा

१५.१ प्रस्तावना
१५.२ इकाई का उद्देश्य
१५.३ अशुध्दि शोधन (शब्दगत)
१५.४ अशुध्दि शोधन (अर्थगत)
१५.५ संभावित प्रश्न

१५.१ प्रस्तावना :

भावों की अभिव्यक्ति प्राय: दो प्रकार से हुआ करती है। एक, वाणी द्वारा हम अपने विचारों को बोलकर प्रकट करते हैं तथा दूसरे, लेखनी द्वारा हम अपनी भावनाओं को लिपिबध्द करते हैं । भावों को लिपिबद्ध करने के लिए आवश्यक है कि भाषा पर हमारा पूर्ण अधिकार हो, अन्यथा अस्पष्ट, अशुध्द और दूषित भाषा के माध्यम से हमारे भावों का अर्थ स्पष्ट नहीं हो पाएगा । भाषा को परिमार्जित, सशक्त और आकर्षक बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हम प्रत्येक शब्द की आत्मा को समझें, उसका शुध्द- शुध्द प्रयोग करें और उस पर अधिकार करे उसे अपनी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बना लें ।

१५.२ उद्देश्य :

मनुष्य के मन के भावों को अभिव्यक्त करने के लिए वाक्यों में शब्दों का उपयुक्त और क्रमबध्द प्रयोग अत्यंत आवश्यक है । अच्छी हिन्दी लिखने के लिए यह आवश्यक है कि हम शब्दों और वाक्यों के शुद्ध प्रयोग को जानें। इस प्रकरण में हम शब्दगत, अर्थगत अशुद्धियों पर प्रकाश डालेंगे। यही हमारा उद्देश्य है ।

१५.३ अशुध्दि शोधन (शब्दगत)

शब्दों के वर्ण - क्रम को वर्तनी कहते हैं।

वर्तनी के बदलते ही शब्द के अर्थ बदल जाते हैं, या वे निरर्थक हो जाते हैं। उदाहरणतया 'मार' शब्द की मात्रा का स्थान बदल जाए तो वह 'मरा' हो जाएगा। यदि मात्रा लगाना भूल जाएँ तो 'मर' हो जाएगा । यदि 'र' और 'म' बदल जाएँ तो 'राम' या 'रमा' हो जाएगा। इसलिए वर्तनी का पूरा ध्यान रखना चाहिए ।

वर्तनी दोष : भूल, असावधानी, उच्चारण – दोष, क्षेत्रीय प्रभाव या भ्रम के कारण वर्तनी में अनेक दोष आ जाते हैं। कुछ दोष निम्नलिखित हैं :

१. बहुवचन रुपों की अशुद्धियाँ :

ईकारांत और ऊकारांत शब्दों के बहुवचन रुपों 'ई' और 'ऊ' क्रमश 'इ' और 'उ' में बदल जाते हैं जैसे-

लड़की	-	लड़कियाँ	पत्नी	-	पत्नियाँ
सर्दी	-	सर्दियाँ	हिंदू	-	हिंदुओं
खिड़की	-	खिड़कियाँ	उल्लू	-	उल्लुओं

२. 'आ' की जगह 'अ' की मात्रा

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
असान	-	आसान	अवाज	-	आवाज़
संसारिक	-	सांसारिक	सप्ताहिक	-	साप्ताहिक
अगामी	-	आगामी	बजार	-	बाज़ार

३. 'अ' की जगह 'आ' की मात्रा

			अशुद्ध		शुद्ध
अशुध्द	-	शुध्द	बारात	-	बरात
लागान	-	लगान	तालाशी	-	तलाशी
आसाम	-	असम	हस्ताक्षेप	-	हस्तक्षेप
आधीन	-	अधीन			

४. 'इ' की जगह 'ई' की मात्रा

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
क्योंकी	-	क्योंकि	प्राप्ती	-	प्राप्ति
तिथी	-	तिथि	बधाईयाँ	-	बधाइयाँ
अभीमान	-	अभिमान	दावाईयाँ	-	दवाइयाँ

५) 'उ' और 'ऊ' मात्रा का दोष

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
जरुरत	-	जरुरत	मुल्य	-	मूल्य
करूणा	-	करुणा	पुज्य	-	पूज्य
उधम	-	ऊधम	लहु	-	लहू
रुचि	-	रूचि	शुरु	-	शुरू

६) 'ऋ' और 'रि' अशुध्दि

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
रितु	-	ऋतु	अनुग्रहीत	-	अनुगृहीत
रिषि	-	ऋषि	बृजभूमि	-	ब्रजभूमि
मात्रभूमि	-	मातृभूमि	आकृमण	-	आक्रमण
श्रंगार	-	श्रृंगार	प्रथक	-	पृथक

७) 'ए' और 'ऐ' लिखने में अशुद्धियाँ

अशुध्द	-	शुध्द
नेतिक	-	नैतिक
एतिहासिक	-	ऐतिहासिक
एनक	-	ऐनक
सेनिक	-	सैनिक

८) 'ई' की जगह 'इ' मात्रा की अशुध्दि

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
बिमारी	-	बीमारी	पत्नि	-	पत्नी
परिक्षा	-	परीक्षा	बेइमान	-	बेईमान
किजिए	-	कीजिए	अधिन	-	अधीन
दिवाली	-	दीवाली	श्रीमति	-	श्रीमती

९) 'इ' मात्रा का लोप

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
सरोजनी	-	सरोजिनी	विरहणी	-	विरहिणी
नायक	-	नायिका	परस्थिति	-	परिस्थिति

१०) 'उ' और 'ऊ' मात्रा संबंधी अशुध्दि

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
तुफान	-	तूफ़ान	बिन्दू	-	बिंदु
प्रभू	-	प्रभु	हेतू	-	हेतु
दयालू	-	दयालु	कूआँ	-	कुआँ
फूलवारी	-	फुलवारी	दुध	-	दूध

११. 'ओ' और 'औ' की अशुद्धियाँ

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
त्यौहार	-	त्योहार	गौतम	-	गौतम
नोकरी	-	नौकरी	पकोड़ी	-	पकौड़ी
मोन	-	मौन	कोरव	-	कौरव
ओद्योगिक	-	औद्योगिक	भोतिक	-	भौतिक
रौपना	-	रोपना	दौना	-	दोना
			आंख	-	आँख

१२. अनुस्वार और अनुनासिक की अशुध्दियाँ

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
कांच	-	काँच	दिनाँक	-	दिनांक
प्राँत	-	प्रांत	ऊंधना	-	ऊँधना
गुँजन	-	गुंजन	गूंगा	-	गूँगा
अँकुर	-	अंकुर	दांत	-	दाँत
झांसी	-	झाँसी	भांति	-	भाँति
कांटा	-	काँटा	बांस	-	बाँस

१३. संधि के अज्ञान की अशुध्दियाँ

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
निरोग	-	नीरोग	सन्यासी	-	संन्यासी
अध्यन	-	अध्ययन	निरस	-	नीरस
उपरोक्त	-	उपर्युक्त	पीतंबर	-	पीतांबर
उज्वल	-	उज्ज्वल	अनाधिकार	-	अनधिकार

१४) 'ट' और 'ठ' की अशुद्धियाँ

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
मिष्टान्न	-	मिष्ठान्न	बलिष्ट	-	बलिष्ठ
यथेष्ठ	-	यथेष्ट	परिशिष्ठ	-	परिशिष्ट
श्रेष्ट	-	श्रेष्ठ	कनिष्ट	-	कनिष्ठ

१५) 'ड़' और 'ण' की अशुद्धियाँ

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
रँड़भूमि	-	रणभूमि	गड़ना	-	गणना
रामायड़	-	रामायण	टिप्पड़ी	-	टिप्पणी
गुड़	-	गुण	गड़ेश	-	गणेश

१६) 'ऩ' और 'ण' की अशुद्धियाँ

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
रामायन	-	रामायण	हिरन	-	हिरण
निरीक्षन	-	निरीक्षण	प्रान	-	प्राण
रनभूमि	-	रणभूमि	किरन	-	किरण

१७) 'र', 'ल','ड' की अशुद्धियाँ

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
बूड़ा	-	बूढ़ा	उजारना	-	उजाड़ना
प्रौड़ा	-	प्रौढ़ा	खिढ़की	-	खिड़की
टेड़ा	-	टेढ़ा	चिड़ना	-	चिढ़ना
मड़ना	-	मढ़ना	लराई	-	लड़ाई

१८) 'व' और 'ब' की अशुद्धियाँ

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
बन	-	वन	बर्षा	-	वर्षा
बिष	-	विष	बिलास	-	विलास
बाणी	-	वाणी	बनस्पति	-	वनस्पति

१९) 'स' और 'श' की अशुद्धियाँ

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
नास	-	नाश	आदर्स	-	आदर्श
प्रसंसा	-	प्रशंसा	देस	-	देश
सायद	-	शायद	साम	-	शाम
साखा	-	शाखा	सासन	-	शासन
अमावश्या	-	अमावस्या	प्रशाद	-	प्रसाद
शुषमा	-	सुषमा	नमश्कार	-	नमस्कार
ज्योत्शाना	-	ज्योत्सना	सर्मीला	-	शर्मीला
सोभा	-	शोभा	दुश्परिणाम	-	दुष्परिणाम

२०) 'क्ष' और 'छ' की अशुद्धियाँ

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
कछा	-	कक्षा	छमा	-	क्षमा
छुद्र	-	क्षुद्र	छेत्र	-	क्षेत्र
दीछा	-	दीक्षा	लछ्मण	-	लक्ष्मण
शिछा	-	शिक्षा	लछण	-	लक्षण

२१) प्रत्यय संबंधी अशुद्धियाँ

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
कौशलता	-	कुशलता, कौशल	मान्यनीय	-	माननीय
निरपराधी	-	निरपराध	पूज्यनीय	-	पूजनीय
महत्व	-	महत्त्व	चातुर्यता	-	चतुरता, चातुर्य
पोरूषत्व	-	पौरूष/पुरुषत्व	बुध्दिमानता	-	बुध्दिमत्ता

२२) 'ज्ञ' और 'ग्य' की अशुद्धियाँ

अशुध्द	-	शुध्द	अशुध्द	-	शुध्द
आग्या	-	आज्ञा	योश	-	योग्य
ग्यान	-	ज्ञान	प्रतिग्या	-	प्रतिज्ञा
यग्य	-	यज्ञ	कृतग्य	-	कृतज्ञ

अपेक्षित प्रश्न : निम्नलिखित शब्दों के शुध्द रूप लिखिए :- (उत्तर- सहित)

अशुध्द रूप		**शुद्ध रुप**	**अशुद्ध रुप**		**शुद्ध रुप**
विदवान	-	विद्वान	समुन्दर	-	समुद्र
महातमा	-	महात्मा	अगनि	-	अग्नि
उजवल	-	उज्ज्वल	आर्शिवाद	-	आशीर्वाद
ईशवर	-	ईश्वर	प्रीक्षा	-	परीक्षा
दुरदशा	-	दुर्दशा	अग्यान	-	अज्ञान
प्रस्पर	-	परस्पर	बिमार	-	बीमार
जाग्रति	-	जागृति	बाणी	-	वाणी
अस्मरण	-	स्मरण	प्रशाद	-	प्रसाद

१५.४ अशुध्दि शोधन (अर्थगत)

वाक्या रचना में अशुध्दियाँ होने के अनेक कारण होते हैं –

व्याकरण के नियमों तथा लिंग – वचन का ज्ञान न होना, पदों का सही क्रम न रखना, रूपातंरण के नियमों का अभाव, शब्दों के सही अर्धों से अनभिज्ञता आदि ।

यहाँ पाठ्यक्रम के अनुसार शब्दों के सही अर्थ से संबंधित अनभिज्ञता के कारण होने वाली अशुध्दियों को उदाहरण सहित दिया जा रहा है —

अशुध्द	**शुध्द**
१) मैं अभी ग्रह कार्य कर लूँगा ।	१) मैं अभी गृहकार्य कर लूँगा ।
२) टहलना स्वस्थ्य के लिए अच्छा है ।	२) टहलना स्वास्थ्य के लिए अच्छा है
३) उसका अचार अच्छा नहीं है ।	३) उसका आचार अच्छा नहीं है।
४) बेफिजूल में क्यों झगड़ रहे हो ?	४) फ़िज़ूल में क्यों झगड़ रहे हो ?
५) दोनों मित्रों में घोर संबंध है।	५) दोनों मित्रों में घनिष्ठ संबंध है।
६) रीमा की नई बहु आई है।	६) रीमा की नई बहू आई है।
७) मुझे घूमने-फिरने का शोक है ।	७) मुझे घूमने-फिरने का शौक है।
८) नीता समान लेने बाजार जा रही है।	८) नीता सामान लेने बाजार जा रही है।
९) उसे चरम रोग है।	९) उसे चर्म रोग है।
१०) हमें बड़ों की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।	१०) हमें बड़ों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।
११) पिताजी का कहना बिल्कुल उपर्युक्त है।	११) पिताजी का कहना बिल्कुल उपयुक्त है।
१२) अयोध्या की बोली अवधि है।	१२) अयोध्या की बोली अवधी है।
१३) झूठे हाथ प्रासाद न लो।	१३) झूठे हाथ प्रसाद न लो।
१४) दु:शासन ने द्रौपदी का चिर हरण किया था ।	१४) दु:शासन ने द्रौपदी का चीर हरण किया था।
१५) परीक्षा के परिमाण आने ही वाले हैं।	१५) परीक्षा के परिणाम आने ही वाले हैं।

इस प्रकार, हमने देखा कि उपर्युक्त उदाहरणों में अशुध्द वाक्य रेखांकित शब्दों के कारण अशुध्द हैं, जिनमें अशुध्द शब्दार्थ के कारण पूरे वाक्य का अर्थ बदल जात है। लेकिन उन शब्दों का सही रूप लगाते ही वाक्य शुध्द हो जाता है ।

अपेक्षित प्रश्न (उत्तर सहित)

अशुध्द	शुध्द
१) इस वर्ष खेतों में खूब अन्य उपजा है।	१) इस वर्ष खेतों में खूब अन्न उपजा है।
२) हल्दी और बेसन चेहरे पर लगाने से त्वचा में त्वचा में क्रांति आ जाती है।	२) हल्दी और बेसन चेहरे पर लगाने से त्वचा में कांति आ जाती है।
३) वह अकथ परिश्रम करता है।	३) वह अथक परिश्रम करता है।
४) इस देश की आबादी १३५ क्रोड़ है।	४) इस देश की आबादी १३५ करोड़ है।
५) हमें क्रम में विश्वास रखना होगा ।	५) हमें कर्म में विश्वास रखना होगा।

१५.५ संभावित प्रश्न

१) निम्नलिखित शब्दों के शुध्द रूप लिखिए :

१) चिन्ह	१४) विधालय	२७) श्रीमति	४०) दवाईयाँ
२) विदया	१५) व्यक्तितव	२८) रिषि	४१) क्योंकी
३) समेलन	१६) एतिहासिक	२९) रितु	४२) लेकीन
४) उजवल	१७) भोगोलिक	३०) हिन्दु	४३) किंतू
५) क्रिपा	१८) समाजिक	३१) रूचि	४४) परन्तू
६) महत्व	१९) आंख	३२) खुन	४५) अवाज
७) श्रृंगार	२०) गांव	३३) पत्नि	४६) गुँजन
८) सजन	२१) किजिए	३४) प्रभू	४७) उपरोक्त
९) सन्यासी	२२) भोतिक	३५) भांति	४८) निरोग
१०) योज्ञ	२३) पुज्य	३६) संसारिक	४९) श्रेष्ट
११) आर्शिवाद	२४) पापि	३७) असान	५०) गुड़ा
१२) ग्रहस्थ	२५) पुण	३८) आसाम	
१३) एक्य	२६) इंदू	३९) पूर्ती	

२) निम्नलिखित अशुध्द वाक्यों को (अर्थगत दृष्टि से) शुध्द कीजिए।

१) मुझे किसी की प्रवाह नहीं है ।

२) मैं सेठ धनामल का सपुत्र हूँ ।

३) मेरा लक्ष डॉक्टर बनना है ।

४) बड़े-बूढ़ों को समान दो ।

५) यह बहू-मंजिला भवन है ।

६) भोजन –ग्रह में आना मना है ।

७) तुम श्याम को घर आना ।

८) सरोवर में हँस तैर रहै हैं ।

९) बुरे कार्य का प्रमाण अच्छा नहीं होता

१०) नदी के कुल पर चले जाओ ।

११) सुदामा मथुरा के बड़े-बड़े प्रसाद देखकर चकित रह गए ।

१२) वृक्ष के पते मत तोड़ो ।

१३) वह बहुत दिन है ।

१४) हमें भूलकर भी सज्जनों का उपकार नहीं करना चाहिए।

१५) हमें वहाँ अवलंब पहुँचना चाहिए ।

१६) मैं सर्कस देखकर विषमय से भर गया।

१७) तालाब में जलद खिले हैं ।

१८) वह नशे का आदि है ।

१९) मुझे खाने में आचार पसंद है ।

१५.१

संज्ञा, सर्वनाम

इकाई की रूपरेखा :

१५.१.१ प्रस्तावना
१५.१.२ इकाई का उद्देश्य
१५.१.३ संज्ञा : परिभाषा और उसके भेद
१५.१.४ सर्वनाम : परिभाषा और उसके भेद
१५.१.५ संभावित प्रश्न
१५.१.६ प्रस्तावना
१५.१.७ उद्देश्य
१५.१.८ विशेषण की परिभाषा और उसके भेद
१५.१.९ क्रिया की परिभाषा और उसके भेद
१५.१.१० संभावित प्रश्न

१५.१.१ प्रस्तावना :

'राम ने आगरा में सुंदर ताजमहल देखा ।' इस वाक्य में हम पाते हैं कि 'राम' व्यक्ति का नाम है । 'आगरा' स्थान का नाम है, 'ताजमहल ' एक विशेष वस्तु का नाम है। इस प्रकार ये क्रमशः व्यक्ति, स्थान, वस्तु के नाम हैं । व्याकरण में किसी भी नाम को संज्ञा कहते हैं।

"राधा ने राधा के मन में सोचा कि राधा कल अवश्य राधा की सहेली के घर राधा की गाड़ी से जाएगी।" उपर्युक्त वाक्य को पढ़ने से हमें यह वाक्य भद्दा – सा जान पड़ता है । यदि इसमें निहित दोष को दूर करके लिखा जाए तो यह वाक्य निम्न प्रकार होगा।

'राधा ने अपने मन में सोचा कि वह कल अवश्य अपनी सहेली के घर अपनी गाड़ी से जाएगी।'

इस प्रकार हम पाते हैं कि संज्ञा शब्दों के स्थान पर क्रमशः अपने, वह तथा अपनी शब्दों का प्रयोग हुआ है। इस प्रयोग से वाक्य के अर्थ में कहीं कोई परिवर्तन नहीं आया और वाक्य का भद्दापन भी दूर हो गया है । ये संज्ञा शब्द के स्थान पर प्रयोग में लाए जाने वाले शब्द ही सर्वनाम शब्द हैं ।

१५.१.२ उद्देश्य :

इस अध्याय का उद्देश्य है विद्यार्थियों में संज्ञा, सर्वनाम और उनके भेदों की समझ विकसित करना क्योंकि भाषा में स्पष्टता , सुंदरता, संक्षिप्तता, सुविधा और सरलता लाने के लिए संज्ञा और सर्वनाम का सटीक प्रयोग आवश्यक है।

१५.१.३ संज्ञा की परिभाषा और उसके भेद :

संज्ञा की परिभाषा : किसी प्राणी, व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव का बोध कराने वाले शब्द को संज्ञा कहते हैं। जैसे, मोहन, गाय, आगरा, गंगा, पुस्तक, सोना-चाँदी, मित्रता , सज्जनता इत्यादि।

संज्ञा के भेद : संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद हैं।

१) व्यक्ति वाचक संज्ञा
२) जातिवाचक संज्ञा
३) भाववाचक संज्ञा

उदाहरण सहित इन्हें यूँ भी समझा जा सकता है –

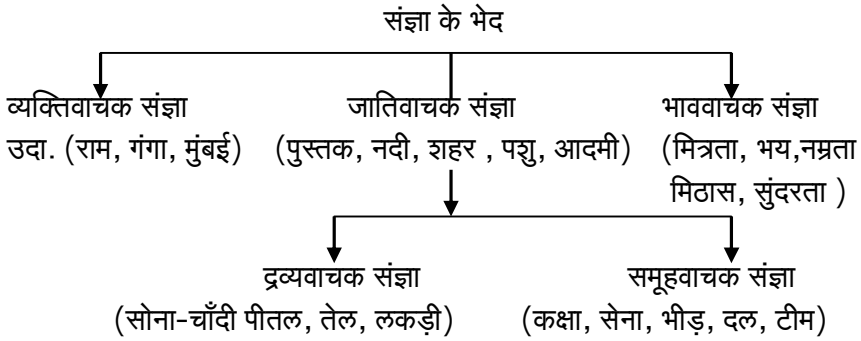

१. **व्यक्तिवाचक संज्ञा :** जो शब्द या पद किसी विशेष व्यक्ति, विशेष वस्तु, विशेष स्थान या विशेष प्राणी के नाम का बोध कराते हैं वे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं, जैसे राम, कृष्ण, ताजमहल, आगरा, कभी खुशी कभी गम आदि।

२. **जातिवाचक संज्ञा :** जो पद या शब्द किसी प्राणी, पदार्थ, वस्तु, समुदाय या जाति का बोध कराते हें उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं । जैसे, स्त्री, पुरूष, नदी, पर्वत, देश गाय, बच्चा, शहर , गाँव आदि ।

जातिवाचक संज्ञा के दो उपभेद हैं - १) द्रव्य वाचक २) समूह वाचक संज्ञा

१) **द्रव्यवाचक संज्ञा :** कुछ संज्ञा शब्द ऐसे द्रव्य या पदार्थों का बोध कराते हैं, जिनसे अनेक वस्तुएँ बनती हैं । द्रव्य या पदार्थ का बोध कराने वाली संज्ञा को द्रव्य वाचक संज्ञा कहते हैं जैसे - तेल, दूध, पानी, सोना - चाँदी- पीतल, प्लास्टिक, ऊन, लकड़ी आदि ।

२) **समूहवाचक संज्ञा :** जो संज्ञा शब्द किसी समुदाय या समूह का बोध कराते हैं, समूहवाचक संज्ञा कहलाते हैं जैसे, दरबार, सेना, झुण्ड, टीम, भीड़, दल आदि।

३) **भाववाचक संज्ञा :** जो शब्द अथवा पद किसी भाव, दशा, स्थिति, स्वभाव, गुण, धर्म, कार्य, मनोभाव अथवा विशेषता के नाम का बोध कराता है वह भाव वाचक संज्ञा कहलाता है जैसे, सुंदरता, चतुराई, वीरता, पवित्रता, बुढ़ापा, सहानुभूति, अमीरी, शत्रुता, स्वार्थ आदि ।

विशेष : निम्नलिखित प्रकार से परीक्षा में प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

१. निम्नलिखित संज्ञा शब्दों के भेदों को पहचान कर उन्हें अलग – २ लिखिए ।
कड़वाहट, रामायण, कानपुर, रवि, महाभारत, दिल्ली, ताजमहल, बैचैनी, मित्रता, महीना, साल, नदी, पर्वत, हिमालय, गंगा, रामपुर, खेत, खट्टापन, सरलता, बुराई, गर्मी, पुरूषत्व

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
रामायण	साल	कड़वाहट
कानपुर	नदी	बेचैनी
रवि	पर्वत	मित्रता
महाभारत	खेत	महीना
दिल्ली		खट्टापन
ताजमहल		सरलता
हिमालय		बुराई
गंगा		गर्मी
रामपुर		पुरुषत्व

२) निम्नलिखित वाक्यों में से संज्ञा शब्द पहचान कर लिखिए ।

१) उसमें मानवता है। ——————————————– मानवता

२) मुझे अपनी मित्रता पर गर्व है। ——————————- मित्रता

३) बच्चे मैदान में खेल रहे हैं। ——————————– बच्चे, मैदान

४) मुझे पटना जाना है। ——————————————— पटना

५) मैं कलकत्ता जा रही हूँ । ——————————————– कलकत्ता

६) उसकी झुँझलाहट बढ़ती जा रही है । ——————————– झुँझलाहट

७) मुझे इस बात की बहुत खुशी है । ——————————————— खुशी

८) मुझे पानी पीना है और तेल खरीदना है । ——————————पानी, तेल

९) वहाँ भीड़ इकट्ठी है । ——————————— भीड़

१०) पूरा परिवार सोना खरीदने गया है। ——————————– परिवार, सोना ।

१५.१.४ सर्वनाम की परिभाषा और उसके भेद

सर्वनाम की परिभाषा :- सर्वनाम का अर्थ है सबका नाम । जो शब्द सबके नामों के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, वे सर्वनाम कहलाते हैं। इसे हम यूँ भी कह सकते हैं – संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहा जाता है ।

सर्वनाम के भेद :- सर्वनाम के निम्नलिखित छह भेद हैं ।

१. पुरुषवाचक सर्वनाम
   - उत्तम पुरूष (मैं, हम, हम लोग)
   - मध्यम पुरूष (तुम, आप, आप लोग)
   - अन्य पुरूष (यह, वह, ये, वे)
२. निश्चयवाचक सर्वनाम
३. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
४. प्रश्नवाचक सर्वनाम
५. संबंध वाचक सर्वनाम
६. निजवाचक सर्वनाम

१. पुरुषवाचक सर्वनाम :- तीन प्रकार के व्यक्ति होते हैं जिसके बदले में पुरूषवाचक सर्वनाम का प्रयोग होता है – स्वयं बोलने वाला , सुननेवाला तथा तीसरा कोई अन्य, जिनके बारे में बात की जा रही है । इस दृष्टि से पुरुषवाचक के निम्नलिखित तीन भेद हैं –

क) उत्तम पुरूषसर्वनाम : बोलने वाला, लिखनेवाला स्वयं अपने लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है उन्हें हम उत्तम पुरूष सर्वनाम कहते हैं । जैसे – मैं, मेरा, मैंने, मुझे, मुझको हम, हमारा, हमने, हमें, हमको आदि।

ख) मध्यम पुरूष सर्वनाम :- वक्ता या लेखक सुननेवाले अथवा पढ़ने वाले के लिए जिस सर्वनाम का प्रयोग करता है, उन्हें मध्यम पुरूषवाचक सर्वनाम करते हैं । जैसै – तू, तेरा, तुम, तुम्हारा, तुमको, तुम्हें, तुझको, तुमसे, आपको, आपने, आपके, आपमें, आपसे आदि

ग) अन्य पुरूष सर्वनाम :- वक्ता या लेखक अपने या सामने वाले के अतिरिक्त अन्य व्यक्तियों के लिए जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग करता है, उन्हें अन्य पुरूष सर्वनाम कहते हैं जैसे – वह, वे, यह, ये, उसे, उसको, उसने, उससे, उन्हें, उन्होंने आदि।

२. निश्चयवाचक सर्वनाम – जो सर्वनाम पास की या दूर की वस्तु या व्यक्ति की ओर निश्चय संकेत करते हैं, वे निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं । जैसे यह, ये, वह, वे आदि।

३. अनिश्चयवाचक सर्वनाम :- जिस सर्वनाम के प्रयोग से किसी निश्चित प्राणी या वस्तु का बोध न हो, वे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं, जैसे कोई, कुछ आदि।

४. संबंध वाचक सर्वनाम :- वाक्य में प्रयुक्त दूसरे संज्ञा या सर्वनाम शब्दों से संबंध दिखाने वाले सर्वनाम को संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे जो, सो, जिसने, उसने, जहाँ, वहाँ जिसकी, उसकी आदि।

५) प्रश्न वाचक सर्वनाम :- जिस सर्वनाम का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए होता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे, कौन, किसे, किन्हें, क्या, किससे आदि ।

६) निजवाचक सर्वनाम : वक्ता या लेखक जिन सर्वनामों को अपने लिए प्रयुक्त करता है, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे – स्वयं, खुद, अपने आप, स्वतः आदि ।

विशेष : परीक्षा में निम्न प्रकार से प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

१) निम्नलिखित वाक्यों में से सर्वनाम शब्दों को पहचान कर लिखिए ।

१. वह कौन है ?
२. पानी में कुछ गिरा है ।
३. कौन आया था ?
४. जैसा करोगे, वैसा भरोगे ।
५. जो सोता है, सो खोता है ।
६. वह अपने-आप ही चला गया ।
७. मैं खुद पत्र लिखूँगा
८. तुम बहुत होशियार हो ।
९. आपकी दादी कैसी है ?
१०. कमरे में कौन बैठा है ।
११. आप जो कहेंगे वही होगा ।
१२. मैंने माँ को बुलवाया है ।
१३. मुझसे चला नहीं जाता ।
१४. इस प्रश्न का उत्तर मुझे नहीं मालूम है ।
१५. तुम्हें कितनी बार समझाना पड़ेगा ?
१६. यह चित्र किसका है ?
१७. जिस आदमी ने यह बात कही है, वह झूठा है ।
१८. यह कार्य किसने किया है ?
१९. आज ड्यूटी पर कौन है ?
२०. सारा काम मैं खुद करूँगा।

१५.१.५ संभावित प्रश्न

१) निम्नलिखित वाक्यों में से संज्ञा शब्द की पहचान कीजिए ।

१. मुझे पढ़ाई करनी है ।
२. उसकी लिखावट सुंदर है ।
३. आसमान में कालिमा छाई है ।

४. आपको अपनी निर्बलता दूर करनी होगी ।

५. तुम वह सारी बातें भूल जाओ ।

६. माँ को दीदी की शादी के लिए सोने-चाँदी के गहने लेने हैं।

७. मेरी टीम के सभी विद्यार्थी आ गए हैं ।

८. आते समय कपड़े लेते आना ।

९. मुझे लकड़ी की कुर्सियाँ चाहिए ।

१०. पूरे शहर में मातम पसरा है।

११. हम साल में एक बार गाँव जाते हैं।

१२. वहाँ भीड़ इकट्ठी हो गई है।

१३. कक्षा के सभी विद्यार्थी तेज हैं।

१४. ताजमहल आगरा में स्थित है।

१५. नदी पूरे उफ़ान पर है।

१६. हिमालय पर्वत हमारे देश के उत्तर में स्थित है।

१७. मेरे परिवार में कुल छह लोग हैं।

१८. उसने हमसे ठगी की है।

१९. वह चाहे कुछ भी हो जाए अपना ब्राह्मणत्व नहीं छोड़ेगा।

२०. मुझे उससे अपनापन मिलता है।

२१. रोहन विद्यालय नहीं गया है।

२२. भोलेबाबा सबकी रक्षा करते हैं।

२३. मेरे घर समाचार - पत्र आता है।

२४. हमें जनवरी में जाना है।

२५. अब दिवाली आने वाली है।

२) निम्नलिखित वाक्यों में से सर्वनाम शब्दों की पहचान कीजिए।

१. जो जागे सो पावे ।

२. दरवाजे पर कौन खड़ा है ?

३. शायद बाहर कोई आया है ।

४. जो करना है वह करो ।

५. मेरी चाबी खो गई है।

६. उसका काम कर दो ।

७. मैं अपने-आप चला जाऊँगा ।

८. स्वयं के लिए जीना व्यर्थ है ।

९. वह स्वत: ही जान जाएगा ।

१०. उसे खुद की ही परवाह नहीं है ।

११. मैं बहुत दूर से आया हूँ ।

१२. तुम बहुत कुछ कहना चाहते हो ।

१३. तुम्हारी मति मारी गई है ।

१४. कौन सी किताब लाऊँ।

१५. वे कल दिल्ली जाएँगे ।

१६. मैं् अपना काम खुद करता हूँ ।

१७. तुम कौन हो ?

१८. जिसकी लाठी उसकी भैंस होगी ।

१९. उसका काम कर दो।

२०. कल तुम किससे बातें कर रहे थे ?

२१. आप लोग कब तक आने वाले हैं ?

२२. हम सब काफी थक चुके हैं।

२३. यह काम वह अपने आप नहीं कर सकता है ।

२४. जिसने कहा था उसी से जाकर बात करो ।

२५. तुम आजकल बहुत जिद्द करने लगे हो ।

१५.२

विशेषण और क्रिया

इकाई की रूपरेखा :

१५.२.१ प्रस्तावना
१५.२.२ इकाई का उद्देश्य
१५.२.३ विशेषण की परिभाषा और उसके भेद
१५.२.४ क्रिया की परिभाषा और उसके भेद
१५.२.५ संभावित प्रश्न

१५.२.१ प्रस्तावना :

'रमेश' ने काली कमीज पहनी है । वह बाजार से मीठे संतरे, पाँच लीटर दूध, कुछ किसमिस, थोड़ी सी मिठाइयाँ लेने जा रहा है क्योंकि उसके बेटे के साथ दस-बारह लोग खाने पर आने वाले हैं।'

उपर्युक्त वाक्य में 'काली', 'मीठे' शब्द अपनी संज्ञाओं की विशेषता बता रहे हैं कि कमीज की रंग काली और संतरों का स्वाद मीठा है। 'पाँच लीटर', 'कुछ' और थोड़ी – सी शब्द अपनी- अपनी संज्ञाओं के परिमाण (मात्रा) बता रहे हैं। ' दस-बारह ' से लोगो की संख्या का पता चल रहा है तथा 'उसके'बेटे के विषय में बता रहा है कि वह किसका बेटा है। कहने का तात्पर्य है कि समस्त रेखांकित शब्द किसी-न-किसी रूप में अपने आगे आने वाली संज्ञाओं की किसी न किसी विशेषता को प्रकट कर रहे हैं। व्याकरण में ये शब्द संज्ञा के पहले लगकर उसकी विशेषता बताते हैं। अतः इन्हें विशेषण कहा जाता है ।

' राम खाना खा रहा है ' 'बच्चे फुटबाल खेल रहे हैं' यदि इन वाक्यों के साथ हम 'राम क्या कर रहा है, बच्चे क्या कर रहे हैं?' आदि प्रश्नों को जोड़कर उनका उत्तर ढूँढें तो क्रमशः 'खाना खा रहा है' तथा 'फुटबाल खेल रहे है' उत्तर प्राप्त होंगे । इस प्रकार यह कहा जा सकता है वाक्य का जो अंश इन प्रश्नों का उत्तर देता है, उसे क्रिया कहते हैं । बिना क्रिया के कोई भी वाक्य पूर्ण नहीं होता । काल का ज्ञान भी क्रिया से ही होता है।

१५.२.२ इकाई का उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य विद्यार्थियों के मन में विशेषण और क्रिया की परिभाषा तथा उनके भेदों के विषय में जानकारी उपलब्ध कराना है ताकि वे इनकी पहचान कर के अपनी भाषा को समृद्ध बना सकें।

१५.२.३ विशेषण की परिभाषा और उसके भेद :

परिभाषा : जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता (गुण, संख्या, मात्रा या परिमाण) बताते हैं, वे विशेषण कहलाते हैं । जैसे सुन्दर, छोटा, थोड़ा-दस-बारह, कुछ पाँच लीटर आदि।

विशेषण शब्द जिस शब्द (संज्ञा या सर्वनाम) की विशेषता बताते हैं, उन शब्दों को 'विशेष्य' नाम से जाना जाता है। जैसे, लड़की, राम, वह, तुम, आदि ।

विशेषण के भेद : अर्थ की दृष्टि से
विशेषण के चार भेद हैं –

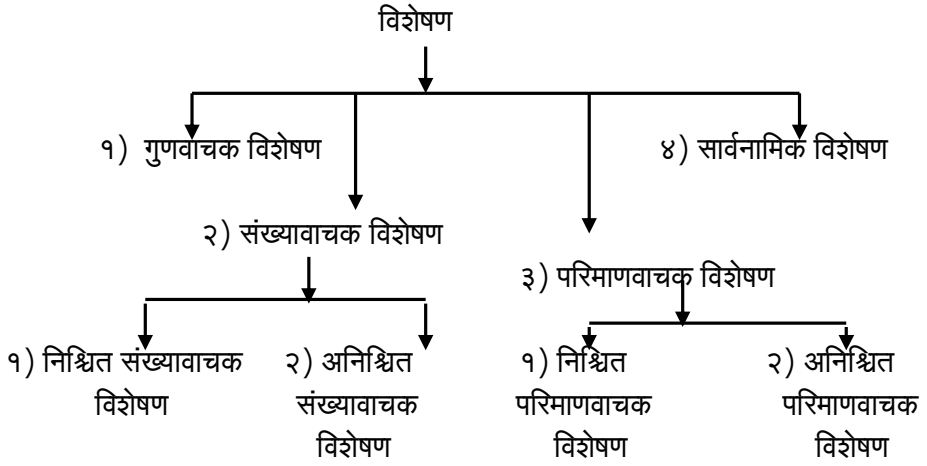

१) गुणवाचक विशेषण :- संज्ञा या सर्वनाम के गुण या दोष का बोध कराने वाले शब्द गुणवाचक कहलाते हैं। जैसे वह व्यक्ति दयावान है ।

२) संख्यावाचक विशेषण :- जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध होता है, वे संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं । उसके दो भेद हैं –

अ) निश्चित संख्यावाचक विशेषण : जिनसे निश्चित संख्या का बोध होता है, वे निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं , जैसे – दस बच्चे, चार पेड़, पाँच केले आदि।

ब) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण : इनसे निश्चित संख्या का बोध नहीं होता , जैसे कुछ आम, थोड़े केले, कुछ लड़के, कई दर्शक गण आदि ।

३) परिमाणवाचक विशेषण : मात्रा या तोल बताने वाले विशेषणों को परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे दस लीटर दूध, चार किलो चीनी, चार गज जमीन, थोड़ा अनाज आदि। इसके दो भेद हैं -

अ) निश्चित परिणाम वाचक विशेषण : जिन शब्दों से निश्चित परिमाण या मात्रा का बोध होता है, वे निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं । जैसे – पाँच किलो दाल, दो मीटर कपड़ा, एक मन चावल, चार लीटर तेल आदि ।

ब) अनिश्चित परिमाण वाचक विशेषण :- जिन शब्दों से परिमाण की अनिश्चितता का बोध हो, वे अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे – कुछ दाल, थोड़ा आटा, बहुत चीनी, थोड़ा नमक आदि ।

विशेष : संख्यावाचक और परिमाणवाचक विशेषण में यह अंतर है कि संख्यावाचक विशेषण का प्रयोग गिनती किये जाने वाले वस्तुओं के लिए होता है जैसे सेव, केले, लड़के आदि, जब कि परिमाणवाचक विशेषण का प्रयोग उन वस्तुओं के लिए होता हैं जिनकी गिनती नहीं की जा सकती हैं बल्कि तौला या नापा जा सकता है जैसे चावल, तेल, पानी, जमीन, कपड़ा, चीनी, सोना आदि।

सार्वनामिक विशेषण :- जिन सर्वनामों का प्रयोग विशेषण के रूप में होता है, वे सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं, जैसे- वह लड़का भला है, यह पुस्तक तुम्हारी है कोई स्त्री द्वार पर खड़ी है। इन वाक्यों में वह, यह, कोई सर्वनाम शब्द हैं और वे संज्ञा के पहले आए हैं। अतः 'सार्वनामिक' विशेषण सर्वनाम ही होते हैं, किन्तु उनका प्रयोग यदि संज्ञा से पहले होता है तो वे सार्वनामिक विशेषण या संकेतवाचक विशेषण कहलाते हैं जैसे-इन किताबों को पढ़िए । ये पेड़ बहुत अच्छे लगते हैं । यहाँ 'इन' 'ये' सार्वनामिक विशेषण शब्द हैं ।

विशेष : परीक्षा में निम्न प्रकार से प्रश्न पूछे जा सकते हैं –

निम्नलिखित विशेषण शब्दों की पहचान कीजिए।

१) वहाँ गहन अंधकार है । —————————————— अंधकार
२) हिन्दी एक मधुर भाषा है । ——————————————– मधुर
३) यह पुस्तक अच्छी है । ——————————– अच्छी
४) मुझे कुछ रुपए चाहिए । ——————————- कुछ रुपए
५) मुझे सुंदर फूल चाहिए । ——————————- सुंदर फूल
६) थोड़ा घी लाया हूँ । ——————————– थोड़ा घी
७) भारत में कई दर्शनीय स्थल हैं। ——————————– कई दर्शनीय स्थल
८) उसे दो किलो आलू चाहिए । ——————————– दो किलो
९) राम गरम दूध पीता है । ——————————————गरम
१०) काला घोड़ा सुंदर लग रहा है । ——————————— काला सुन्दर
११) कोई सज्जन आए हैं । ——————————————— कोई
१२) वह लड़का विद्यालय जाएगा । ——————————— वह लड़का
१३) इस बच्चे को कहाँ लिए जा रहे हो ? ——————————– इस बच्चे
१४) मेरी कक्षा में तीस विद्यार्थी हैं । ——————————— तीस
१५) फलों का सलाद बनाने के लिए दस केले चाहिए । ————————- दस
१६) महान लोगों के कारनामों से इतिहास भरा है । ————————— महान
१७) अभी सरोवर में थोड़ा जल है । ——————————– थोड़ा
१८) गीता अच्छी लड़की है। ————————– अच्छी
१९) पाँच कबूतर उड़ते हुए हमारी छत पर आ गए । ————————— पाँच
२०) सोहन बहुत बुद्धिमान है परन्तु बहुत शरारती भी है । ————————-- बुद्धिमान, शरारती।

१५.२.४ क्रिया की परिभाषा और उसके भेद

क्रिया की परिभाषा

जिस शब्द से कार्य का करना या होना पाया जाए, उसे क्रिया कहते हैं । जैसे – राम – पुस्तक पढ़ रहा है, बच्चे खेल रहे हैं, आदि।

धातु : धातु का अर्थ है मूल या बीजाक्षर।

किसी क्रिया के विभिन्न रूपों में जो अंश समान रूप में मिलता है, उसे उस क्रिया की धातु कहा जाता है। इस प्रकार, क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। जैसे –पढ़, लिख, सो, खा, पी आदि ।

जिस प्रकार सोना या चाँदी से अनेक तरह के गहने जैसे झुमका, कंगन, हार आदि बनाए जाते हैं, उसी प्रकार 'चल' धातु से चला , चलना-चले चलेंगे, चलो; 'पढ़' धातु से पढ़ो, पढ़ना, पढ़ेगा, पढ़ता इत्यादि क्रिया पद रूप बनाए जाते हैं । आ, जा, खा, पी, चल, सुन, देख, पढ़ आदि प्रत्येक धातु के मूल रूप में ना जोड़कर क्रिया का सामान्य रूप बनाया जाता है, जैसे - आना, जाना, खाना, पीना, चलना, सुनना, देखना, पढ़ना इत्यादि।

क्रिया की रचना : क्रिया की रचना मुख्य तीन प्रकार से होती है :-

१)	धातु से	:	पढ़ = पढ़ना, पढ़ता
			खा = खाना, खाता
२)	संज्ञा से	:	आलस्य = अलसाना, अलसाता
			फटकार = फटकारना, फटकारता
३)	विशेषण से	:	टिमटिम = टिमटिमाना, टिमटिमाता
			भिनभिन = भिनभिनाना, भिनभिनाता

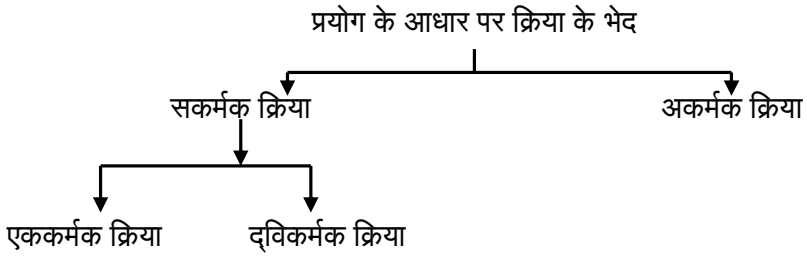

१) सकर्मक क्रिया : सकर्मक का अर्थ है कर्म के साथ। जिस क्रिया का फल कर्ता को छोड़ कर कर्म पर पड़े, वह क्रिया 'सकर्मक क्रिया' कहलाती है। जैसे – बच्चा दूध पी रहा है, राधा किताब पढ़ रही है। इन वाक्यों में से कर्ता और क्रिया के बीच यदि 'क्या ' प्रश्न किया जाए तो उत्तरस्वरूप क्रमशः दूध और किताब आते हैं। जैसे-बच्चा क्या पी रहा है, 'दूध, राधा क्या पढ़ रही है 'किताब' । सकर्मक क्रिया की सबसे बड़ी यही पहचान होती है ।

कर्म के आधार पर सकर्मक क्रिया के निम्नलिखित दो भेद होते हैं :-

क) एक कर्मक क्रिया :- जिस क्रिया में मात्र एक ही कर्म होता है, वह 'एक कर्मक क्रिया' कहलाती है। जैसे माँ कपड़े धो रही है, राधा खाना बना रही है, मैं पुस्तक पढ़ती हूँ।

ख) द्विकर्मक क्रिया :- जिस क्रिया में दो कर्म होते हैं वह 'द्विकर्मक क्रिया' कहलाती है। जैसे – माला ने राधा को पुस्तक दी । पिता ने पुत्र को पैसे दिए ।

२) अकर्मक क्रिया :- कर्म रहित क्रिया अकर्मक क्रिया कहलाती है। जिसमे कोई कर्म नहीं रहता, क्रिया का प्रभाव सीधे कर्ता पर पड़ता है। जैसे-बच्चा रोता है, रमा पढ़ती है, दिनेश हँसता है, आदि।

संरचना की दृष्टि से क्रिया के भेद

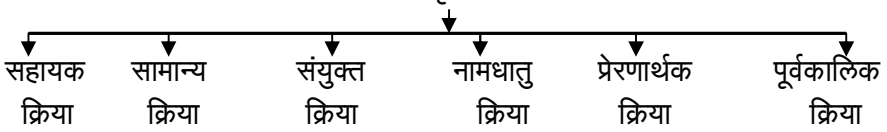

१) सहायक क्रिया : वाक्य में प्रयुक्त वे क्रियाएँ सहायक क्रिया कहलाती हैं जो मुख्य क्रिया की सहायिका के रूप में प्रयुक्त होती हैं जैसे –

क) वह खाना खा चुका है ।
ख) सुरेश रोने लगा।
ग) चोर पकड़ा गया।

उपर्युक्त वाक्यों में 'चुका है', 'लगा', 'गया' सहायक क्रियाएँ हैं।

२) सामान्य क्रिया :- जब वाक्य में एक ही क्रिया का प्रयोग हो, तो उसे सामान्य क्रिया कहते हैं जैसै –

क) मोहन गया । ग) वह बोला ।
ख) रमेश आया । घ) उसने देखा ।
इन्हें मुख्य क्रिया भी कह सकते हैं ।

३) **संयुक्त क्रिया :** जब एकाधिक क्रियाएँ जुड़कर (संयुक्त होकर) किसी क्रिया को पूर्णता देती हैं, तो क्रियाओं का वह सम्मिलित रूप संयुक्त क्रिया कहलाता है। जैसे –

क) वह कल बनारस चला गया।
ख) रमेश इस किताब को पढ़ सकता है।
ग) नरेश गाना गा चुका है।
घ) उसने सोच लिया है।
ड) वह अब तक जा चुका होगा।
रेखांकित वाक्यांश संयुक्त क्रिया हैं।

४. **नामधातु क्रिया :-** मूल धातुओं से भिन्न जो क्रियाएँ संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण आदि से बनती हैं, वे नामधातु क्रिया कहलाती हैं । जैसे –

क) बात से – बतियाना　　ख) हाथ से – हथियाना

ग) गर्म से – गर्माना　　घ) स्वीकार से – स्वीकारना

नामधातु क्रियाओं का निर्माण

नामधातु क्रियाओं का निर्माण निम्नलिखित चार प्रकार से होता है –

क) संज्ञा शब्दों से नामधातु क्रियाओं का निर्माण

चक्कर - चकराना	झूठ - झुठलाना
टक्कर - टकराना	बात - बतियाना
धक्का - धकियाना	कूट – कुटवाना
लाज - लजाना	हाथ – हथियाना
गरम - गरमाना	नरम - नरमाना

ख) सर्वनाम से नामधातु क्रियाओं का निर्माण –

अपना - अपनाना

ग) विशेषणों से नामधातु क्रियाओं का निर्माण-

साठ	–	सठियाना	दोहरा	–	दोहराना
उलटा	-	उलटना / उलटाना	गहरा	-	गहराना
लंगड़ा	-	लँगड़ाना	पागल	-	पगलाना

घ) अनुकरणात्मक शब्दों में नामधातु क्रियाओं का निर्माण-

झन - झन	-	झनझनाना	बड़ - बड़	-	बड़बड़ाना
गिड़ा – गिड़ा	-	गिड़गिड़ाना	गड़-गड़ा	-	गड़गड़ाना
मिनमिन	–	मिनमिनाना	थर – थर	-	थरथराना
खट-खट	-	खटखटाना	हिन-हिन	-	हिनहिनाना

५) प्रेरणार्थक क्रिया – जब कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करे तो वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया होती है । जैसे - 'करना' से 'करवाना', 'चलना' से 'चलवाना', दौड़वाना आदि। 'आज मैंने उसे शिक्षक से पिटवाया।' 'ठेकेदार मजदूर से ईंटें उठवाता है ।'

६) पूर्वकालिक क्रिया :- जो क्रिया किसी वाक्य में मुख्य क्रिया से पहले प्रयुक्त हुई हो, वह पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। जैसे –

१) वह खाना खाकर बाहर चला गया।
२) पुष्पा उठकर बैठ गई।
३) पप्पू बैठकर रोने लगा।
४) वह बोल-बोलकर थक गया।

इन क्रियाओं की पहचान होती है कि इनमें 'कर' लगता है ।

विशेष – परीक्षा में निम्नप्रकार से प्रश्न पूछे जा सकते हैं –

१) निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त क्रियाओं को छाँट कर लिखिए ।

१) बच्चा रोता है । ———————————— रोता है ।
२) माँ खाना खिला रही है । ———————————– खिला रही है ।
३) बहू शर्माती है । ———————————- शर्माती है ।
४) सुरेश और रमेश गाँव गए हैं । ———————————– गए हैं ।
५) कौन जा रहा है ? ———————– जा रहा है ।
६) मालिक नौकर से काम करवाता है ———————————- करवाता है ।
७) वह खाकर पढ़ रहा है । ———————————– खाकर , पढ़ रहा है ।
८) तारे टिमटिमाते रहते हैं । ———————————– टिमटिमाते रहते हैं ।

२) निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया शब्दों की पहचान कीजिए ।

१) हरिश रोता है ।
२) टायर घिस गया ।
३) बच्चे गेंद खेल रहे हैं ।
४) वह जा चुका होगा ।
५) मैं सोकर उठ गया हूँ ।
६) उसने जमीन हथियाली है ।
७) रामदास ने महल बनवाया ।
८) राम मुंबई जाएगा ।
९) तुम रोज पढ़ने आया करो ।
१०) खेतों को जुतवाया गया है ।

ये सभी रेखांकित वाक्यांश क्रिया शब्द हैं । उन्हें वाक्य के सामने लिखना अपेक्षित है ।

१५.२.५ संभावित प्रश्न

१) निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया शब्दों की पहचान कीजिए ।

१) अजय कहानी पढ़ रहा है।
२) वह रात दिन सोता है।
३) अध्यापिका बच्चों को कविता सिखा रही हैं।
४) अध्यापक ने पाठ दोहराया।
५) माँ ने मुझे दूध पिलाया।
६) दादी कहानी सुनाती थीं।
७) नानी ने कहानी सुनाई।
८) कुर्सी पर कौन बैठा है ?
९) महर्षि व्यास ने अठारह पुराण लिखे।
१०) अब बादल घिर रहे हैं।
११) मोहन गाता है।
१२) मैंने बालिका को पुस्तक दी।
१३) शेखर कार चलाता है।
१४) पिताजी से कहकर ड्राइवर रखवाया है।
१५) मैं तुम्हारा नाम लिख रहा हूँ ।
१६) सर्वेश सो रहा है।
१७) मैंने छात्राओं को पुस्तक पढ़ाई।
१८) वे हँसते हैं।
१९) तुम्हें घर कौन पहुँचाएगा।
२०) मैं घर जाकर सो गया।
२१) वह हमेशा पढ़ता रहता है।
२२) राधा हिन्दी पढ़ सकती है।
२३) मुझे तुमसे बतियाना है।
२४) उसे हार स्वीकारनी होगी।
२५) चोर पकड़ा गया।
२६) दूध गर्माना है।
२७) उसने सोच लिया है।
२८) दरवाजा खटखटाना ठीक रहेगा।
२९) प्राचार्य ने बुलवाया है।
३०) वह रह-रह कर पगलाने लगता है

२. निम्मलिखित वाक्यों में प्रयुक्त विशेषण शब्द की पहचान कीजिए ।

१) हमने काले रंग के कोट सिलवाए हैं।
२) थोड़ा दूध हमारे लिए भी लेते आना।
३) आकाश का रंग नीला है।
४) वे पुस्तकें तुम्हारी हैं और ये मेरी।
५) वह बहुत अधिक चालाक है।
६) वह पुस्तक अभी छपी है।
७) सुरेश महान पिता का पुत्र है।
८) वह कुत्ता तेज दौड़ता है।
९) वह पढ़ने में काफी तेज है।
१०) बाग में आम के अनेक वृक्ष हैं।
११) यह पुस्तक हमारी है।
१२) कोई सज्जन आए हुए हैं।
१३) घर में कोई है ?
१४) राजमहल बहुत बड़ा है।
१५) वह मेरा छोटा भाई है।
१६) मुझे थोड़ा सा दूध चाहिए।
१७) कुछ अध्यापक पढ़ाना ही नहीं चाहते।
१८) खीर बनाने के लिए पाँच लीटर दूध चाहिए।
१९) मेरा बेटा अमेरिका जा रहा है।
२०) मेरा छोटा भाई बहुत शरारती है।
२१) मुझे कुछ केले चाहिए।
२२) राजेश दस सेव लाया है।
२३) दस किलो आटा लेते आना।
२४) पाँच किलो तेल का डिब्बा चाहिए।
२५) एक गिलास दूध दो।

१५.३

अपठित गद्यांश

इकाई की रूपरेखा

१५.३.१ प्रस्तावना
१५.३.२ इकाई का उद्देश्य
१५.३.३ अपठित गद्यांश के लिए महत्त्वपूर्ण बातें
१५.३.४ कुछ अपठित गद्यांश के उदाहरण (उत्तर सहित)
१५.३.५ विद्यार्थियों के अभ्यास हेतु कुछ अपठित गद्यांश

१५.३.१ प्रस्तावना :

वह गद्यांश जो पूर्व पढ़ा हुआ नहीं होता, अपठित गद्यांश कहलाता है। यह गद्यांश पाठ्यक्रम की पुस्तकों से अलग अन्य पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं से लिया जाता है।

१५.३.२ इकाई का उद्देश्य :

अपठित गद्यांश के अनेक उद्देश्य हैं जैसे इसके अभ्यास से विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर, भाव ग्रहण शक्ति एवं सामान्य ज्ञान में वृद्धि होती है। इसके द्वारा विद्याार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा में निखार आता है। विद्यार्थियों के ज्ञान और बोध का मूल्यांकन अपठित गद्यांश द्वारा ही हो सकता है ।

१५.३.३ अपठित गद्यांश के लिए महत्त्वपूर्ण बातें :

- सर्वप्रथम अपठित गद्यांश को दो –तीन बार अवश्य पढ़ें।
- पहली बार पढ़ने के बाद गद्यांश में दिए गए प्रश्नों को भी पढ़ना चाहिए क्योंकि प्रश्न पढ़ने से भी भाव को समझने में सहायता मिलती है।
- कठिन शब्दों के अर्थ प्रसंग के अनुसार समझकर गद्यांश को दो बार फिर पढ़ना चाहिए तथा उसके मूल भाव को ग्रहण करना चाहिए ।
- प्रश्नों को पढ़कर, उन स्थलों को खोजें, जहाँ संभावित उत्तर हो सकते हैं और वहाँ हल्का सा निशान लगा लेना चाहिए।

- उत्तर यथासंभव अपने शब्दों में लिखें।
- उत्तर यथासंभव संक्षिप्त हो, पर यह अवश्य ध्यान में रखें कि प्रश्न कितने अंक का है। उसी के अनुसार शब्द सीमा निर्धारित करें ।
- यदि शीर्षक पूछा जाय तो वह अत्यन्त छोटा, संक्षिप्त, मूलभाव की स्पष्ट करने वाला होना चाहिए।

१५.३.४ कुछ अपठित गद्यांश के उदाहरण (उत्तर सहित) :

१) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

कोशल देश के वृध्द राजा के चार पुत्र थे। उन्हें चिन्ता सताने लगी थी कि राज्य का उत्तराधिकारी किसे बनाया जाए? सोच-विचार के बाद अपने चारों पुत्रों को बुलाकर राजा ने कहा- "तुम चारों में से जो सबसे बड़े धर्मात्मा को मेरे पास ले आएगा वही राज्य का स्वामी बनेगा।" तत्पश्चात चारों राजकुमार अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर चल पड़े। कुछ दिनों के बाद बड़ा पुत्र अपने साथ एक महाजन को लेकर आया और राजा से बोला - "ये महाजन लाखों रूपयों का दान कर चुके हैं, अनेक मंदिर व धर्मशालाएँ बनवा चुके हैं तथा साधु-संतों और ब्राह्मणों को भोजन कराने के उपरान्त ही ये भोजन करते हैं। इनसे बड़ा धर्मात्मा कौन होगा?"

"हाँ, वास्तव में ये धर्मात्मा हैं । " राजा ने कहा और सत्कार पूर्वक विदा किया ।

इसके बाद दूसरा पुत्र एक कृशकाय ब्राह्मण को लेकर आया और राजा से कहा - "ये ब्राह्मण देवता चारों धाम की यात्रा कर आए हैं, कोई तामसी वृत्ति इन्हें छू नहीं सकती। इनसे बढ़कर कोई धर्मात्मा नहीं है।"

राजा ब्राह्मण के समक्ष नतमस्तक हुए और दान-दक्षिणा देकर बोले - "इसमें संदेह नहीं कि ये एक श्रेष्ठ धर्मात्मा हैं "

तभी तीसरा पुत्र एक साधु को लेकर पहुँचा और बोला - "ये साधु महाराज सप्ताह में केवल एकबार दूध पीकर रहते हैं। भयंकर सर्दी में जल में खड़े रहते हैं और गर्मी से पंचाग्नि तपते हैं। ये सबसे बड़े धर्मात्मा हैं।"

राजा ने साधु को प्रणाम किया और कहा - " निश्चय ही ये एक उत्तम साधु हैं।" साधु महाराज राजा को आशीर्वाद देकर विदा हुए ।

अंत में सबसे छोटा पुत्र एक निर्धन किसान के साथ आया । किसान दूर से ही भय के मारे हाथ जोड़ता हुआ चला आ रहा था । तीनों भाई छोटे भाई की मूर्खता पर ठहाका लगाकर हँस पड़े। छोटा पुत्र बोला- "एक कुत्ते के शरीर पर लगे घाव को यह आदमी धो रहा था। पता नहीं कि यह धर्मात्मा है या नहीं। अब आप ही इससे पूछ लीजिए ।"

"तुम क्या धर्म - कर्म करते हो?" राजा ने पूछा - किसान डरते-डरते बोला - "धर्म किसे कहते हैं, यह मैं नहीं जानता, करना तो दूर रहा। मैं जिसे भी दु:खी देखता हूँ, मुट्ठी भर अन्न अवश्य दे देता हूँ ।"

"यह किसान ही सबसे बड़ा धर्मात्मा है ।" राजा ने कहा । राजा की बात सुनकर तीनों लड़के एक दूसरे का मुँह ताकने लगे । राजा ने पुनः कहा - "तीर्थ - यात्रा करना, भगवत – आराधना में लीन रहना, दान-पुण्य करना और जप-तप करना भी धर्म है किन्तु बिना किसी स्वार्थ के किसी दीन-दुखी और कष्ट में पड़े हुए प्राणी की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है। जो परोपकार करता है, वही सबसे बड़ा धर्मात्मा है ।"

प्रश्न : क) राजा को क्या चिन्ता थी ? उसने अपने पुत्रों को बुलाकर क्या कहा ?

उत्तर : कौशल देश के राजा बूढ़े हो चुके थे। उनके चार पुत्र थे । उन्हें चिन्ता थी कि उनके बाद राज्य का उत्तराधिकारी किसे बनाया जाए ।

उन्होंने अपने चारों पुत्रों को बुलाया और कहा कि तुम चारों में से जो सबसे बड़े धर्मात्मा को तलाश कर उनके पास लाएगा वही राज्य को संभालेगा और वही राज्य का स्वामी बन सकेगा ।

प्रश्न : ख) बड़े पुत्र की दृष्टि में बड़ा धर्मात्मा कौन था और क्यों ?

उत्तर : बड़े पुत्र की दृष्टि में एक महाजन बड़ा धर्मात्मा क्योंकि उसने अब तक लाखों रूपयों का दान किया था। बहुत सारे मंदिर और धर्मशालाएँ भी बनवा चुका था तथा रोज साधु-संतों को भोजन कराने के बाद ही स्वयं भोजन करता था, इसीलिए वह बड़ा धर्मात्मा था ।

प्रश्न ग) तीसरा पुत्र अपने साथ किसे लाया था ? उसने राजा से क्या कहा ?

उत्तर : तीसरा पुत्र अपने साथ एक साधु को लाया । उसने राजा से साधु के विषय में बताते हुए कहा कि ये सात दिनों में केवल एक बार दूध पीते हैं। कड़ाके की ठंड में भी जल में खड़े रहते हैं और तपती गर्मी में आग तापते रहते हैं इसलिए ये बड़े महात्मा हैं ।

प्रश्न घ) किसान को देखकर तीनों भाई क्यों हँसने लगे थे ? राजा ने किसान को सबसे बड़ा धर्मात्मा क्यों कहा ?

उत्तर : सबसे छोटा बेटा एक किसान को साथ लेकर आया। वह निर्धन था। वह काफी डरा हुआ था। हाथ जोड़े हुए था। उसे देखते ही बाकी तीनों भाई हँसने लगे। उन्होंने सोचा कि उनका छोटा भाई कितना मूर्ख है, वह किसान को ही पकड़ ले आया। छोटे बेटे ने राजा को बताया कि यह आदमी एक कुत्ते के शरीर पर लगे घाव को धो रहा था। मुझे नहीं पता कि यह धर्मात्मा है या नहीं। आप ही इससे पूछ लीजिए। राजा ने किसान से पूछा कि वह क्या काम करता है। कुछ धर्म के काम भी करता है या नहीं। किसान ने बहुत धीरे से उत्तर दिया, मैं धर्म का अर्थ नहीं जानता हूँ। मैं जिस भी दुखी व्यक्ति को देखता हूँ उसे थोड़ा सा अनाज जरूर दे देता हूँ ।

राजा ने किसान की बात सुनकर उसे सबसे बड़ा धर्मात्मा बताया, क्योंकि परोपकारी व्यक्ति ही सबसे बड़ा धर्मात्मा होता है ।

प्रश्न : ड) प्रस्तुत गद्यांश से आपको क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर : प्रस्तुत गद्यांश से हमें यह सीख मिलती है कि हमें दु:खी व्यक्तियों की मदद करनी चाहिए। भूखे को भोजन देना चाहिए। स्वार्थ को त्यागकर दु:खी प्राणियों की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है। दिखावे व नाम के कारण किए गए कार्य से हम परोपकारी नहीं कहला सकते हैं और न ही धर्मात्मा बन सकते हैं।

२) अपठित गद्यांश

निम्नलिखित गद्यांशों के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

शीलयुक्त व्यवहार मनुष्य की प्रकृति और व्यक्तित्व को उद्घाटित करता है। उत्तम, प्रशंसनीय और पवित्र आचरण ही शील है। शीलयुक्त व्यवहार प्रत्येक व्यक्ति के लिए हितकर है। इससे मनुष्य की ख्याति बढ़ती है। शीलवान व्यक्ति सबका हृदय जीत लेता है। शीलयुक्त व्यवहार से कटुता दूर भागती है इससे आशंका और संदेह की स्थितियाँ कभी उत्पन्न नहीं होतीं। इससे ऐसे सुखद वातावरण का सृजन होता है, जिसमें सभी प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। शीलवान व्यक्ति अपने संपर्क में आने वाले सभी लोगों को सुप्रभावित करता है। शील इतना प्रभुत्वपूर्ण होता है कि किसी कार्य के बिगड़ने की नौबत नहीं आती ।

अधिकारी – अधीनस्थ, शिक्षक – शिक्षार्थी, छोटों – बड़ों आदि सभी के लिए शीलयुक्त व्यवहार समान रूप से आवश्यक है। शिक्षार्थी में यदि शील का अभाव है तो वह अपने शिक्षक से वांछित शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता। शीलवान अधिकारी या कर्मचारी में आत्मविश्वास की वृध्दि स्वत: ही होने लगती है और साथ ही उनके व्यक्तित्व में शालीनता आ जाती है। इस अमूल्य गुण की उपस्थिति में अधिकारी वर्ग और अधीनस्थ कर्मचारियों के बीच शिक्षकगण और विद्यार्थियों के बीच तथा शासक और शासित के बीच मधुर एवं प्रगाढ़ संबंध स्थापित होते हैं और प्रत्येक वर्ग की कार्यकुशलता में वृद्धि होती है । इस गुण के माध्यम से छोटे से छोटा व्यक्ति बड़ों की सहानुभूति अर्जित कर लेता है ।

शील कोई दुर्लभ और दैवीय गुण नहीं हैं। इस गुण को अर्जित किया जा सकता है । पारिवारिक संस्कार इस गुण को विकसित और विस्तारित करने में बहुत बड़ी भूमिका अदा करते हैं। मूल भूमिका तो व्यक्ति स्वयं अदा करता है। चिन्तन, मनन, सत्य-संगति, स्वाध्याय और सतत अभ्यास से इस गुण की सुरक्षा और विकास होता है। यह शील सुसंस्कृत मनुष्य के चरित्र का अभिन्न अंग है।

यह गुण मनुष्य को सच्चे अर्थों में मानव बनाता है। इस अमूल्य गुण को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाना प्रत्येक मनुष्य का परम कर्तव्य है। इससे मनुष्य की गरिमा बढ़ती है और उसके व्यक्तित्व में चार चाँद लग जाते हैं।

प्रश्न क) शीलयुक्त व्यवहार की क्या विशेषता है ?

उत्तर : शीलयुक्त व्यवहार व्यक्ति के लिए हितकर होता है । इससे मनुष्य की ख्याति बढ़ती है। वह सबका हृदय जीत लेता है । शीलयुक्त व्यवहार से कटुता दूर भागती है।

प्रश्न ख) शीलवान व्यक्ति की क्या विशेषता होती है ?

उत्तर : शीलवान व्यक्ति अपने संपर्क में आने वाले सभी लोगों को प्रभावित करता है। शील इतना प्रभुत्व पूर्ण होता है कि किसी कार्य के बिगड़ने की नौबत नहीं आती ।

प्रश्न ग) शालीनता जैसे गुण की उपस्थिति के क्या फायदे हैं ?

उत्तर : इस अमूल्य गुण की उपस्थिति में अधिकारी वर्ग और अधीनस्थ कर्मचारियों के बीच, शिक्षकगण और विद्यार्थियों के बीच तथा शासक और शासित के बीच मधुर एवं प्रगाढ़ संबंध स्थापित होते हैं तथा कार्यकुशलता में वृद्धि होती है।

प्रश्न घ) शील को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाने पर क्या होता है ?

उत्तर : शील को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाने पर मनुष्य सच्चे अर्थों में मानव बनता है। मनुष्य की गरिमा बढ़ती है और उसके व्यक्तित्व में चार चाँद लगते हैं।

प्रश्न ड) मनुष्य अपने भीतर शील को किस प्रकार विकसित और सुरक्षित कर सकता है ?

उत्तर : इस गुण की सुरक्षा और इसका विकास निरंतर चिंतन, मनन, सत्संगति, स्वाध्याय और सतत अभ्यास से किया जा सकता है।

३) अपठित गद्यांश

निम्नलिखित गद्यांशों के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

तानाशाह जनमानस के जागरण को कोई महत्त्व नहीं देता। उसका निर्माण ऊपर से चलता है, किन्तु यह लादा हुआ भार स्वरूप निर्माण हो जाता है। सच्चा राष्ट्र-निर्माण वह है, जो जनमानस की तैयारी पर आधारित रहता है। योजनाएँ शासन और सत्ता बनाएँ, उन्हें कार्यरूप में परिणित भी करें, किन्तु साथ ही उन्हें चिरस्थायी बनाए रखने एवं पूर्णतया उद्देश-पूर्ति के लिए यह आवश्यक है कि जनमानस उन योजनाओं के लिए तैयार हो। स्पष्ट शब्दों में हम कह सकते हैं, कि सत्ता राष्ट्र-निर्माण रूपी फसल के लिए हल चलाने वाले किसान का कार्य तो कर सकती हैं, किन्तु उसे भूमि जनमानस को ही बनानी पड़ेगी। अन्यथा फसल या तो हवाई होगी या फिर गमलों की फसल होगी, जैसा आजकल 'अधिक अन्न उपजाओ' आंदोलनों के कर्णधार भारत के मंत्रीगण कराया करते हैं। इस विवेचन से हमने राष्ट्र-निर्माण में जनमानस की तैयारी का महत्व पहचान लिया है। यह जनमानस किस प्रकार तैयार होता है ? इस प्रश्न का उत्तर आपको समाचार पत्र देगा। निर्माण काल में यदि समाचार पत्र सत्समालोचना से उतरकर ध्वंसात्मक हो गया तो निश्चित रूप से वह कर्तव्यच्युत हो जाता है, किन्तु सत्समालोचना के लिए उतना ही आवश्यक है, जितना निर्माण का समर्थन। जनमानस को तैयार करने के लिए समाचार पत्र किस नीति को अपनाएँ यह प्रश्न अपने आप में एक विवाद लिए हुए है, क्योंकि भिन्न-भिन्न समाचार पत्र भिन्न-भिन्न नीतियों को उद्देश्य बनाकर प्रकाशित होते हैं। यहाँ तक कि राष्ट्र निर्माण की योजनाएँ भी उनके मस्तिक में भिन्न-भिन्न होती हैं। इसके लिए हमारा उत्तर यही हो सकता हैं कि समाचार पत्र का मूल कार्य सत्यों को प्रकाशित करना है। इन सत्यों के प्रकाशन में किन्हें लिया जाए और किन्हें छोड़ा जाए यह अवश्य पत्र की नीति पर निर्भर करता है, किन्तु इस नीति में राष्ट्रहित अवश्य होना चाहिए। यह राष्ट्रहित प्रगतिशील हो, प्रतिक्रियावादी नहीं, क्योंकि जिस प्रकार ईश्वर एक है, उसी प्रकार सत्य भी एक है।

प्रश्न : क) ताना शाह क्या नहीं करता तथा सच्चा राष्ट्र निर्माण किसे कहा गया है ?

उत्तर : ताना शाह जनमानस के जागरण को कोई महत्त्व नहीं देता तथा सच्चा राष्ट्र निर्माण हमेशा जनमानस की तैयारी पर आधारित रहता है।

प्रश्न ख) शासन और सत्ता को लेखक ने क्या हिदायत दी है ?

उत्तर : लेखक के अनुसार शासन और सत्ता योजनाएँ अवश्य बनाएँ। उसे कार्य रूप में परिणित अवश्य करें; किन्तु साथ ही उन्हें चिरस्थायी बनाए रखने एवं पूर्णतया उद्देश्य पूर्ति के लिए यह आवश्यक है कि जनमानस उन योजनाओं के लिए तैयार हो।

प्रश्न ग) राष्ट्र निर्माण में जनमानस की आवश्यकता पर लेखक क्या कहते हैं ?

उत्तर लेखक के अनुसार सत्ता राष्ट्र निर्माण रूपी फसल के लिए हल चलाने वाले किसान का कार्य तो कर सकती है किन्तु उसे भूमि जनमानस को ही बनाना होगा; अन्यथा फसल या तो हवाई होगी या फिर गमलों की फसल।

प्रश्न घ) समाचारपत्र जनमानस को किस प्रकार तैयार करता है ?

उत्तर : जनमानस तैयार करने के लिए समाचार पत्र सत्समालोचना का सहारा लेकर आगे बढ़े। यदि वह ऐसा नहीं करता है तो वह कर्तव्यच्युत हो जाता है क्योंकि सत्समालोचना निर्माण के लिए उतना ही आवश्यक है, जितना निर्माण का समर्थन।

प्रश्न ड) सभी समाचार पत्र किन नीतियों को उद्देश्य बनाकर प्रकाशित होते हैं तथा लेखक ने इस संदर्भ में किस बात पर अधिक जोर दिया है ?

उत्तर : सभी समाचार पत्र भिन्न-भिन्न नीतियों को उद्देश्य बनाकर प्रकाशित होते हैं यहाँ तक कि राष्ट्र निर्माण की योजनाएँ भी भिन्न-भिन्न होती हैं। समाचार नीतियों पर लेखक ने राष्ट्र हित की आवश्यकता पर अधिक जोर दिया है ।

१५.३.५ विद्यार्थियों के अभ्यास हेतु कुछ अपठित गद्यांश:

१. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

क) मेवाड़ के राजा महाराणा प्रताप बड़े स्वाभिमानी और वीर व्यक्ति थे। उन्होंने बादशाह अकबर जैसे शक्तिशाली शासक से युद्ध ठान रखा था और अनेक-अनेक मुसीबतों का सामना करने पर भी हार न मानी थी। एक बार उनके दरबार में एक भाट आया। उसने राणा की प्रशस्ति में ओजपूर्ण कविताओं का गान किया। दरबार में उपस्थित सभी व्यक्ति वाह-वाह कर उठे। महाराणा प्रताप भी अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने अपने सिर से रत्न जड़ित पगड़ी उतारी और पुरस्कार स्वरूप भाट को पहना दी। राणा की बहुमूल्य पगड़ी प्राप्त कर भाट फूला न समाया। राणा प्रताप को शत-शत आशीर्वाद दे वह प्रसन्नतापूर्वक अपने घर लौट गया।

कुछ ही दिनों में उसे दिल्ली जाने का अवसर मिला। उसने दिल्ली के बादशाह अकबर से मिलने का निश्चय कर, दरबार में जाने के लिए अनुमति माँगी। उसे अगले ही दिन दरबार में उपस्थित होने की अनुमति मिल गई। भाट ने सुंदर-सुंदर वस्त्र पहने, सिर पर राणा प्रताप द्वारा प्रदित पगड़ी पहनी और दरबार में जा पहुँचा। उसने अकबर को प्रणाम तो किया पर सिर नहीं

झुकाया। एक सभासद ने कहा - बादशाह सलामत को सिर झुकाकर प्रणाम करो। भाट ने अपनी पगड़ी उतारी, उसे हाथों में रख, सिर झुका दिया। अकबर ने उसे पगड़ी उतारते देख लिया था। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने भाट से पगड़ी उतारने का कारण जानना चाहा। भाट ने राणा प्रताप से मिली पगड़ी मिलने की पूरी घटना कह सुनाई। फिर बोला - बादशाह सलामत! यह पगड़ी स्वाभिमानी प्रताप के सिर पर शोभा पाती थी। उनका मस्तक ईश्वर के सिवाय किसी के सामने नहीं झुका। आप से युध्द कर रहे हैं; वे आपके प्रतिद्वंदी हैं; वे आपके समान शक्तिशाली बादशाह के सामने भी झुकने को तैयार नहीं। आप जानते ही हैं कि सिर पर पहनी जानेवाली हर वस्तु सम्मान का प्रतीक होती है। महाराणा के सिर पर पहनी गई पगड़ी उनके सम्मान की प्रतीक है। वे स्वाभिमानी हैं, उनके सम्मान की रक्षा के लिए मैंने आपके सामने झुकने से पहले इस अमूल्य पगड़ी को उतार लिया था।

प्रश्न १) भाट किसके दरबार में गया ? सभासदों ने भाट की प्रशंसा क्यों की ?
प्रश्न २) महाराणा प्रताप ने कविता सुनकर क्या किया ? और क्यों किया ?
प्रश्न ३) दिल्ली पर उस समय किसका राज्य था ? भाट राजा के दरबार में कैसे पहुँचा ?
प्रश्न ४) भाट ने बादशाह को झुककर प्रणाम क्यों नहीं किया ?
प्रश्न ५) भाट ने अकबर के प्रश्न का क्या उत्तर दिया ?

ख) प्राचीन काल में अष्टवक्र नाम के एक महर्षि हुए जो अत्यंत विद्वान और ज्ञानी थे। अष्टवक्र शरीर से विकलांग और आठ अंगों से टेढ़े थे। वे ठीक तरह से चल भी न सकते थे। उनकी कुरूपता को देखकर सब उन पर हँसते थे। कहते हैं कि किसी शाप के कारण ही उनका जन्म इस रूप में हुआ और नाम मिला- अष्टवक्र। अपनी कुरूपता और विकलांगता को अष्टवक्र ने कभी अपने मार्ग की बाधा नहीं बनने दिया। वे मानते थे कि शरीर से बड़ी आत्मा है। शरीर भले ही टेढ़ा-मेढ़ा हो परन्तु आत्मा सुंदर और शुद्ध होनी चीहिए। अष्टवक्र बचपन से ही ज्ञानी थे और उनमें विद्या-प्राप्ति की लालसा थी। बारह वर्ष की उम्र तक वे महान विद्वान बन गए थे। एक बार अपने पिता के बारे में पूछते हुए उन्हें ज्ञात हुआ कि उनके पिता को राजा जनक के दरबार में एक विद्वान से शास्त्रार्थ में पराजित होने के कारण अपमानित होना पड़ा था। दंड भी मिला था। बस! अष्टवक्र ने उसी समय निश्चय किया कि वे राजा जनक के दरबार में जाकर उस विद्वान से शास्त्रार्थ करेंगे और उसे हरा देंगे। वे जैसे ही राजा के सम्मुख पहुँचे कि सभी सभासद जोर-जोर से हँसने लगे। यहाँ तक कि राजा जनक भी अपनी हँसी पर नियंत्रण न कर पाए। अष्टवक्र ने जोर का ठहाका मारा। सभासदों की हँसी की आवाज इस ठहाके से दब गई। सभी स्तब्ध रह गए। राजा जनक अचंभित थे। उनसे रहा न गया। पूछा - बालक! तुम इतनी ज़ोर से क्यों हँसे ? अष्टवक्र ने प्रश्न के उत्तर में प्रश्न किया - राजन! पहले आप बताएँ कि आप सब क्यों हँसे ? राजा जनक कुछ क्षण चुप रहे पर उत्तर तो देना ही था। बोले - बालक! वास्तव में हमारे हँसने का कारण तुम्हारी कुरूपता थी। मैं अपनी और अपने सभासदों की अशिष्टता के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। अब अष्टवक्र ने कहा - राजा जनक, मैंने सुना था कि आपकी सभा में बड़े-बड़े विद्वान और ज्ञानी व्यक्ति हैं और मैं उनसे शास्त्रार्थ करने आया था, परन्तु मुझे तो यहाँ सब हाड़-मांस के शरीर के पुजारी लगते हैं। ये तो शरीर को ही देख रहे हैं, ज्ञान को तो भुला चुके हैं। राजा जनक को आश्चर्य हुआ, क्या इतनी कम उम्र में भी कोई विद्वान हो सकता है ? उन्होंने प्रश्न किया-मुझे यह बताएँ कि ज्ञान कैसे प्राप्त होता है ? और मुक्ति कैसे मिलती है ? राजन यदि ज्ञान चाहते हो तो अहंकार त्यागकर सबसे सीखो और मुक्ति चाहते हो तो भोग को विष के समान त्याग दो। क्षमा, दया, संतोष, सत्य और सरलता को हृदय में धारण करो। राजा

ने अनेक प्रश्न पूछे । अष्टवक्र ने शांत भाव से विद्वतापूर्ण उत्तर दिए। अनुमति मिलने पर उन्होंने सभापंडित से शास्त्रार्थ किया और उन्हें हरा दिया। अष्टवक्र ने अपनी पूरी आयु ज्ञान की आराधना की, उन्होंने अपने शरीर को अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति पर कभी हावी नहीं होने दिया।

प्रश्न १) अष्टवक्र कौन थे ? उनका नाम अष्टवक्र क्यों पड़ा ?

प्रश्न २) राजा जनक के दरबार में जाकर शास्त्रार्थ करने के पीछे अष्टवक्र का क्या उद्देश्य था ?

प्रश्न ३) क्या कारण था कि राजा जनक और उनके सभासद अष्टवक्र को देखकर हँसने लगे ? इस पर अष्टवक्र ने क्या किया ?

प्रश्न ४) अष्टवक्र को ऐसा क्यों लगा कि सभासद ज्ञानी नहीं हैं ?

प्रश्न ५) अष्टवक्र में ऐसे कौन-कौन-से गुण थे जिनके कारण उन्हें ज्ञानी माना गया ?

१६

भाषा दक्षता
लिंग और वचन

इकाई की रुपरेखा

१६.१ प्रस्तावना
१६.२ इकाई का उद्देश्य
१६.३ लिंग
१६.४ वचन
१६.५ संभावित प्रश्न

१६.१ प्रस्तावना :

जिस संज्ञा शब्द से पुरूष जाति और स्त्री जाति का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं। किसी संज्ञा पद के एक या एक से अधिक होने का बोध कराने वाला वचन कहलाता है। किसी भी भाषा को शुद्ध-शुद्ध बोलने लिखने के लिए इनका ज्ञान आवश्यक है।

१६.२ इकाई का उद्देश्य :

हिन्दी भाषा की शुद्धता के लिए लिंग और वचन का शुद्ध-शुद्ध ज्ञान होना आवश्यक हैं क्योंकि लिंग और वचन के कारण ही कारक और क्रिया के स्वरूप में परिवर्तन होता है। अगर इनमें अशुद्धियाँ होंगी तो क्रिया में तथा फिर पूरे वाक्य में विकार उत्पन्न होगा। अतः कहा जा सकता है कि भाषा की शुद्धता, समृद्धि और सम्पन्नता प्रदान करना लिंग और वचन का उद्देश्य है।

१६.३ लिंग :-

जिस शब्द से पुरुष जाति और स्त्री जाति का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं।

हिन्दी में लिंग दो प्रकार के होते हैं :

१) पुल्लिंग

२) स्त्रीलिंग

१) पुल्लिंग : जो शब्द पुरूष जाति का बोध कराएँ, उन्हें पुल्लिंग शब्द कहते हैं। जैसे - पुरूष, लड़का, राजा, माली, छात्र, दादा, कवि आदि।

२) स्त्रीलिगं : जो शब्द स्त्री जाति का बोध कराएँ उन्हें स्त्रीलिंग शब्द कहते हैं। जैसे स्त्री, लड़की, रानी, मालिन, छात्रा, दादी, कवयित्री, आदि।

लिंग - भेद संबंधी नियम -

हिन्दी में तीन प्रकार के शब्द हैं। पहले, जो पुरुषजाति से शारीरिक रूप से संबंधित हैं। दूसरे, जो शारीरिक लक्षणों से स्त्री जाति के हैं। तीसरे, जिनमें पुरूष या स्त्री जैसा कुछ नहीं है जैसे - पहाड़, नदी, पुस्तक, कमल आदि। तीसरे प्रकार के शब्दों का लिंग निर्णय परंपरा के आधार पर होता है। लंबे समय से जो शब्द पुल्लिंग के रूप में प्रयुक्त होते आ रहे हैं, उन्हें पुल्लिंग मान लिया गया है। शेष शब्दों को स्त्रीलिंग मान लिया गया है। वास्तव में उन्हें पुल्लिंग या स्त्रीलिंग मानने का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। इसीलिए सभी नियमों के अपवाद पाए जाते हैं। कुछ स्त्रीलिंग-पुल्लिंग ऐसे होते हैं जो सदैव स्त्रिलिंग या पुल्लिंग ही बने रहते हैं। उन्हें नित्य स्त्रीलिगं या नित्य पुल्लिंग कहा गया है। इन शब्दों के आगे स्पष्टीकरण के लिए नर या मादा लिखा जाता है।

नित्य पुल्लिंग : भेड़िया, मच्छर , पक्षी, उल्लू, गिद्ध, बिच्छू, खटमल आदि।
नित्य स्त्रीलिंग : मक्खी, मधुमक्खी, तितली, मछली, कोयल, गिलहरी, चील, जूँ आदि।
उभयलिंगी : कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो स्त्रीलिंग या पुल्लिंग दोनों में एक जैसे होते हैं। जैसे डॉक्टर, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, इंजीनियर, मैनेजर आदि। इनके लिंग का निर्णय क्रिया के प्रयोग द्वारा किया जाता है। जैसे –

डॉक्टर अभी आ रही हैं। (स्त्रीलिंग)
डॉक्टर अभी आ रहे हैं। (पुल्लिंग)

जो संज्ञाएँ प्राणीवाचक नहीं हैं, उनके लिंग-निर्धारण में कुछ समस्या अवश्य आती है परन्तु प्रयोग करते-करते ये भी समझ में आ जाते हैं। अपवादों के साथ-साथ इनसे अधिकांश शब्दों की समस्या हल हो जाती है। इनके लिंग निर्धारण के कुछ नियम यहाँ दिए जा रहे हैं।

१) प्राय : पुल्लिंग शब्द

- देशों के नाम - चीन, भारत, अमेरिका, रूस, पाकिस्तान, जापान, इंग्लैंड।
- पर्वतों के नाम - हिमालय, कैलाश, अरावली, विंध्याचल, गोवर्धन।
- पेड़ों के नाम - आम, नीम, जामुन, गुलमोहर, पीपल, बरगद
- धातुओं के नाम - सोना, ताँबा, पीतल, लोहा (अपवाद - चाँदी, कलई, पीतल)
- बहुमूल्य रत्नों के नाम - हीरा, माणिक्य, मोती, पन्ना, पुखराज, नगीना, (अपवाद - मणि)
- अनाजों के नाम - गेहूँ , चावल, चना, जौ, बाजरा, (अपवाद - मक्कई, ज्वार, जई)
- ग्रहों के नाम - सूर्य, चाँद, मंगल, बुध, वृहस्पति (अपवाद- पृथ्वी)
- समुद्रों के नाम - हिंद महासागर, प्रशांत महासागर, अरब सागर

- समय सूचक शब्द - समय, क्षण, घंटा, मिनट, सेकेंड, सप्ताह, दिन, मास, वर्ष, युग, सवेरा, सायंकाल, प्रभात (अपवाद - संध्या)
- मासों के नाम - चैत्र, आषाढ़, कार्तिक, मार्च, अप्रैल, जून, जुलाई, अगस्त, सितंबर अक्टूबर, नवंबर, दिसंबर (अपवाद - मई)
- समूहों के नाम - झुंड, समाज, वर्ग, समुदाय, समूह, दल, संघ आदि ।
- द्रव्य पदार्थ - तेल, शरबत, दूध, पानी, अर्क (अपवाद - लस्सी, शराब)
- शरीर के कुछ अंग - सिर, हाथ, पैर, बाल, नेत्र, नयन, चक्षु, अँगूठा, पेट, दाँत, गाल, कान, मुँह, पाँव, ओठ, फेफड़ा, ह्रदय आदि।

व्यवसाय सूचक शब्द : व्यापारी, सचिव, आयुक्त, सेनापति, संवाददाता, उद्योगपति, सैनिक, कहानीकार, साहित्यकार, चिकित्सक, वकील।
शब्दों के अंत में 'त्र' हो तो प्राय: पुल्लिंग होते हैं - नेत्र, पात्र, चरित्र, अस्त्र, शस्त्र, वस्त्र, मित्र
'दाता' प्रत्यय वाले शब्द - मतदाता, रक्तदाता, श्रम दाता

२) प्राय: स्त्रीलिंग शब्द –

- नदियों के नाम - गंगा, यमुना, सरस्वती, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, नर्मदा, (ब्रह्मपुत्र - अपवाद)
- लिपियों के नाम - देवनागरी, ब्राह्मी, रोमन, गुरूमुखी, फारसी, शारदा।
- भाषाओं के नाम - गुजराती, हिन्दी, कश्मीरी, नेपाली, उर्दू, असमिया, तमिल, बँगला आदि।
- तिथियों के नाम - प्रथमा, द्वितिया, चतुर्थी, त्रयोदशी, सप्तमी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, आदि।
- 'इया' प्रत्यय वाले शब्द - खड़िया, बुढ़िया, दुखिया, चिड़िया, दुनिया, पुलिया (अपवाद- भेड़िया, डाकिया, भेदिया)
- आकारान्त शब्द - सभा, दया, परीक्षा, भाषा, सूचना, कला, आशा, विपदा, बाधा आदि।
- इकारान्त और ईकारांत शब्द - हानि, नीति, विधि, सिद्धि, शांति, समिति, नदी, लेखनी, पोथी, चिट्ठी, टोपी, रोटी, उदासी, बोली, खोली, कॉपी आदि। (अपवाद - घी, दही, मोती, पानी)

लिंग परिवर्तन:

मूलत : वे शब्द प्राय: पुल्लिंग होते हैं जिनके स्त्रीलिंग बनाए जाते हैं। स्त्रीलिंग बनाने के लिए जिन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है उन्हें स्त्रीवाची - प्रत्यय कहते हैं -

१) 'अ ' का 'आ ' बनाकर

पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
छात्र	छात्रा	शिष्य	शिष्या
बाल	बाला	सदस्य	सदस्या
प्रिय	प्रिया	प्रियतम	प्रियतमा
अनुज	अनुजा	आचार्य	आचार्या
महोदय	महोदया	वृध्द	वृध्दा
अध्यक्ष	अध्यक्षा	सुत	सुता

२ 'अ ' 'आ ' का 'ई ' बनाकर

पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
बकरा	बकरी	घोड़ा	घोड़ी
देव	देवी	मुरगा	मुरगी
बेटा	बेटी	गोप	गोपी
ब्राह्मण	ब्राह्मणी	गधा	गधी
सुअर	सुअरी	बच्चा	बच्ची
चींटा	चींटी	तरूण	तरुणी
दास	दासी	नर्तक	नर्तकी
लड़का	लड़की	दादा	दादी
पुत्र	पुत्री	कबूतर	कबूतरी
हरिण	हरिणी	गूँगा	गूँगी

३) 'अक' का 'इका ' बनाकर

पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
नायक	नायिका	बालक	बालिका
गायक	गायिका	सेवक	सेविका
पाठक	पाठिका	संयोजक	संयोजिका
दर्शक	दर्शिका	परिचायक	परिचायिका
अध्यापक	अध्यापिका	लेखक	लेखिका
साधक	साधिका	प्रेषक	प्रेषिका
याचक	याचिका	निवेदक	निवेदिका
आयोजक	आयोजिका	शासक	शासिका

४) 'वान ' से 'वती ' और 'मान ' से 'मती ' बनाकर

गुणगान	गुणवती	भगवान	भगवती
बलवान	बलवती	भाग्यवान	भाग्यवती
रूपवान	रूपवती	सत्यवान	सत्यवती
पुत्रवान	पुत्रवती	श्रीमान	श्रीमती
धनवान	धनवती	शक्तिमान	शक्तिमती
विद्यवान	विद्यावती	आयुष्मान	आयुष्मती

५) 'अ /आ ' का 'इया ' बनाकर

बंदर	बंदरिया	बूढ़ा	बुढ़िया
बछड़ा	बछिया	बेटा	बिटिया
चूहा	चुहिया	चिड़ा	चिड़िया
कुत्ता	कुतिया	गुड्डा	गुड़िया

६) 'अ ' से 'अनी ' बनाकर

पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
मोर	मोरनी	सिंह	सिंहनी
भील	भीलनी	शेर	शेरनी
ऊँट	ऊँटनी	सरदार	सरदारनी
जाट	जाटनी	राजपूत	राजपूतनी

७) 'अ /ई / ऊ' से 'आनी / आणी ' बनाकर

जेठ	जेठानी	मेहतर	मेहतरानी
इंद्र	इंद्राणी	सेठ	सेठानी
देवर	देवरानी	नौकर	नौकरानी
भव	भवानी	रूद्र	रुद्राणी
चौधरी	चौधरानी	क्षत्रिय	क्षत्राणी

८) 'अ /आ /ई ' का 'इन ' बनाकर

साँप	साँपिन	नाग	नागिन
लुहार	लुहारिन	बाघ	बाघिन
सुनार	सुनारिन	माली	मालिन
पापी	पापिन	पड़ोसी	पड़ोसिन
धोबी	धोबिन	नाती	नातिन
कुम्हार	कुम्हारिन	ग्वाला	ग्वालिन
कहार	कहारिन	तेली	तेलिन

९) 'अ /आ / ई /उ/ऊ /ए ' से 'आइन ' बनाकर

ठाकुर	ठकुराईन	बाबू	बबुआइन
पंडित	पंडिताइन	दुबे	दुबाइन
बनिया	बनियाइन	चौबे	चौबाइन
लाला	ललाइन	गुरू	गुरूआइन
ओझा	ओझाइन	हलवाई	हलवाइन

१०) 'अ /ई ' का इनी / इणी बनाकर

अभिमानी	अभिमानिनी	एकाकी	एकाकिनी
हाथी	हथिनी	स्वामी	स्वामिनी
प्रार्थी	प्रार्थिनी	हितकारी	हितकारिणी
हंस	हंसिनी	आज्ञाकारी	आज्ञाकारिणी
मनोहर	मनोहारिणी	यशस्वी	यशस्विनी

११) 'ता ' से 'त्री ' बनाकर

कर्ता	कर्त्री	विधाता	विधाती
दाता	दात्री	अभिनेता	अभिनेत्री
वक्ता	वक्त्री	रचयिता	रचयित्री

१२) नित्य पुल्लिग शब्दों के साथ 'मादा ' जोड़कर -

खरगोश	मादा खरगोश	भेड़िया	मादा भेड़िया
गेंडा	मादा गेंडा	मगरमच्छ	मादा मगरमच्छ
भालू	मादा भालू	उल्लू	मादा उल्लू
मच्छर	मादा मच्छर	पक्षी	मादा पक्षी

१३) नित्य स्त्रीलिंग शब्दों के साथ 'नर ' जोड़कर -

चील	नर चील	गिलहरी	नर गिलहरी
छिपकली	नर छिपकली	मक्खी	नर मक्खी
कोयल	नर कोयल	मछली	नर मछली

१४) मूलत: स्त्रीलिंग शब्दों से पुल्लिंग -

जीजी	जीजा	ननद	ननदोई
मौसी	मौसा	बहन	बहनोई
भेड़	भेड़ा	भैंस	भैंसा

१५) कुछ शब्दों के स्त्रीलिग रूप बिल्कुल भिन्न होते हैं -

भाई	भावज / भाभी	सम्राट	सम्राज्ञी
कवि	कवयित्री	विद्वान	विदुषी

पुरूष	स्त्री	बिलाव	बिल्ली
वीर	वीरांगना	राजा	रानी
युवक	युवती	साला	साली
साधु	साध्वी	साला	सलहज
साहब	साहिबा	फूफा	बुआ
मर्द	औरत	ससुर	सास
मियाँ	बीवी	वर	वधू
अभिनेता	अभिनेत्री	बादशाह	बेगम
नपुंसक	बाँझ	बैल	गाय
बाप	माँ	विधुर	विधवा
नर	मादा /नारी	पिता	माता
		भाई	बहन / बहिन

लिंग पहचान का एक सरल ढंग यह भी है कि शब्द का बहुवचन बना लें। यदि अंत में एँ (ें) या आँ (ाँ) आए तो शब्द स्त्रीलिगं है। जैसे - पुस्तक से पुस्तकें, दवाई सें दवाइयाँ, महिला से महिलाएँ, खिड़की से खिड़कियाँ - ये सभी स्त्रीलिंग शब्द हैं ।

१६.४ वचन

किसी संज्ञा पद के एक या एक से अधिक होने का बोध करानेवाला वचन कहलाता है। जैसे- पंखा-पंखे, तितली-तितलियाँ, बहू–बहुएँ आदि। हिन्दी में वचन के दो भेद होते हैं

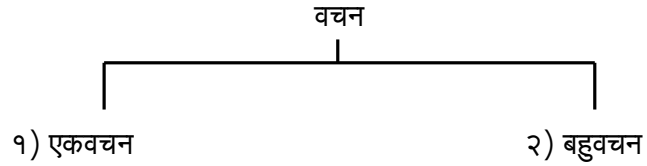

१) एकवचन - जो संज्ञा पद एक होने का बोध कराए, उसे एकवचन कहते हैं जैसे चिड़िया, लड़की, तारा आदि।
२) बहुवचन - जो संज्ञा पद एक से अधिक होने का बोध कराए, उसे बहुवचन कहते हैं जैसे चिड़ियाँ, लड़कियाँ, तारे।

वचन परिवर्तन : एकवचन वाले संज्ञा पदों को बहुवचन में बदलना वचन-परिवर्तन कहलाता है। एकवचन से बहुवचन बनाते समय कुछ विशेष नियमों का पालन करना पड़ता है। पुल्लिग और स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन बनाने में अलग-अलग नियमों का पालन करना होता है ।

पुल्लिग शब्दों से बहुवचन

पुल्लिग शब्दों से बहुवचन बनाते समय आ से अंत होनेवाले शब्द 'ए' में बदल दिए जाते हैं।

१) आ से ए (केवल पुल्लिग शब्दों में)

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
केला	केले	लड़का	लड़के
घोड़ा	घोड़े	पत्ता	पत्ते
बेटा	बेटे	किनारा	किनारे
तारा	तारे	बस्ता	बस्ते
लोटा	लोटे	बच्चा	बच्चे
पैसा	पैसे	गधा	गधे
दाना	दाने	घंटा	घंटे
कुत्ता	कुत्ते	तोता	तोते
तना	तने	छाता	छाते

घड़ा	घड़े	मोहल्ला	मोहल्ले
कपड़ा	कपड़े	प्याला	प्याले
कमरा	कमरे	धागा	धागे
रास्ता	रास्ते	मुरगा	मुरगे
हीरा	हीरे	चीता	चीते

कुछ आकारांत शब्द अपवाद है जिनमें कोई परिर्वतन नहीं होता जैसे -

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
राजा	राजा	काका	काका
पिता	पिता	नेता	नेता
चाचा	चाचा	देवता	देवता
मामा	मामा	नाना	नाना

२) 'आ' से अंत होने वाले आकारांत शब्दों के अतिरिक्त अ, इ, ई, उ, ऊ से अंत होनेवाले पुल्लिग शब्दों में कोई परिवर्तन नहीं होता जैसे

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बालक	दो बालक	शेर	दो शेर
पुत्र	दो पुत्र	बाघ	तीन बाघ
कवि	तीन कवि	माली	दो माली
मित्र	तीन मित्र	हाथी	चार हाथी
पशु	दो पशु	चाकू	तीन चाकू
मुनि	तीन मुनि	चित्र	दो चित्र
साधु	दो साधु	बाघ	तीन बाघ

स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन :- स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के बहुवचन बनाते समय सभी शब्द बदलते हैं। अंत में प्रत्यय लगाकर वचन परिवर्तन किया जाता है। स्त्रीलिंग शब्दों के वचन-परिवर्तन के नियम इस प्रकार हैं –

१) 'अ' से अंत वाले शब्दों में 'अ' का एँ कर दिया जाता है ।

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बहिन	बहिनें	कलम	कलमें
मेज	मेजें	पेंसिल	पेंसिलें
लहर	लहरें	तार	तारे
आँख	आँखें	सड़क	सड़कें
रात	रातें	बात	बातें
कमीज	कमीजें	पुस्तक	पुस्तकें
किताब	किताबें	तस्वीर	तस्वीरें

२) आकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में 'आ' का 'एँ' कर दिया जाता है ।

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कथा	कथाएँ	बालिका	बालिकाएँ
माला	मालाएँ	महिला	महिलाएँ
लता	लताएँ	कन्या	कन्याएँ
कविता	कविताएँ	अध्यापिका	अध्यापिकाएँ
पत्रिता	पत्रिकाएँ	सभा	सभाएँ
मात्रा	मात्राएँ	कक्षा	कक्षाएँ
समस्या	समस्याएँ	चिंता	चिंताएँ

३) इकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में 'याँ' जोड़ दिया जाता है ।

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
जाति	जातियाँ	विधि	विधियाँ
लिपि	लिपियाँ	नीति	नीतियाँ
तिथि	तिथियाँ	रीति	रीतियाँ
शक्ति	शक्तियाँ	राशि	राशियाँ
पंक्ति	पंक्तियाँ	प्रति	प्रतियाँ
रश्मि	रश्मियाँ	सिद्धि	सिद्धियाँ

४) **ईकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में 'ई' को 'इयाँ ' बना देते हैं ।**

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
नदी	नदियाँ	लड़की	लड़कियाँ
तितली	तितलियाँ	युवती	युवतियाँ
गिलहरी	गिलहरियाँ	थाली	थालियाँ
मछली	मछलियाँ	रानी	रानियाँ
बेटा	बेटियाँ	चिट्ठी	चिट्ठियाँ
स्त्री	स्त्रियाँ	टोपी	टोपियाँ

५) **उकारांत, ऊकारांत और औकारांत के साथ 'एँ' जोड़ दिया जाता है ।**

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
ऋतु	ऋतुएँ	वधू	वधुएँ
वस्तु	वस्तुएँ	बहू	बहुएँ
धेनु	धेनुएँ	गौ	गौएँ
धातु	धातुएँ		

६) **'या ' का 'याँ ' बना दिया जाता है।**

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
चिड़िया	चिड़ियाँ	गुड़िया	गुड़ियाँ
चुहिया	चुहियाँ	पुड़िया	पुड़ियाँ
कुतिया	कुतियाँ	डिबिया	डिब्बियाँ
बछिया	बछियाँ	बिटिया	बिटियाँ

७) **वर्ग दल या समूह के साथ गण, दल, वर्ग, वृंद जन जैसे समूहवाची शब्द लगाकर ।**

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
अध्यापक	अध्यापकगण	गुरू	गुरूजन
पाठक	पाठकगण	लेखक	लेखकवृंद
कवि	कविगण	अधिकारी	अधिकारी वर्ग
श्रोता	श्रोतागण	मित्र	मित्रवर्ग
टिड्डी	टिड्डीदल	मित्र	मित्रवर्ग

१६.५ संभावित प्रश्न

१) **निम्नलिखित शब्दों का लिंग बदलिए -**

कवि	भगवान	सदस्य	राक्षस
पापी	देव	शिक्षक	हलवाई
सुनार	वधू	नाती	नर कोयल
रूपवती	प्रिया	अभिनेत्री	बंदर
श्रीमान	भाग्यवान	अध्यापक	ससुर
ऊँट	अभिमानी	नगर	वर
बूढ़ा	युवक	किशोर	हाथी
सेठ	गाय	सम्राट	माली
पंडित	बालक	सिंह	संपादक
यशस्वी	धोबी	ग्वाला	गिलहरी
शिक्षिका	तरूण	पंडिताइन	गायक

२) **निम्नलिखित शब्दों का वचन बदलिए -**

पुस्तक	माला	चिड़िया	योद्धा
सेना	कुत्ता	खरबूजा	बच्चा
पड़ोसिन	कापी	घोड़ा	आँख
देवरानी	पत्नी	चुहिया	कविता
रानी	बूढ़ा	पिता	काका
गाय	भैसें	दरवाजा	कुर्सी
कहानी	कथा	भावना	ऋतु
बहू	नदी	बोतल	लड़की
गायिका	पुड़िया	आत्मा	माता
शक्ति	कार	बहनें	जाति

❖❖❖❖

१६.१

पर्यायवाची शब्द और विलोम शब्द

इकाई की रूपरेखा :

१६.१.१ प्रस्तावना
१६.१.२ इकाई का उद्देश्य
१६.१.३ पर्यायवाची शब्द
१६.१.४ विलोम शब्द
१६.१.५ संभावित प्रश्न

१६.१.१ प्रस्तावना :

समान अर्थ रखने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द या समानार्थी शब्द कहा जाता है जैसे 'फनी' के लिए जल, वारि, नीर, सलिल, तोय आदि शब्द इसके पर्यायवाची शब्द हैं। प्रसंग की आवश्यकता के अनुसार पर्यायवाची शब्दों में से सबसे सही शब्द का चुनाव करना भाषा-विज्ञ का काम है।

किसी भी शब्द का उल्टा, विपरीत अर्थ बताने वाला शब्द विलोम शब्द या विपरीत शब्द कहलाता है। जैसे 'अंदर' का 'बाहर', 'छोटा' का 'बड़ा', 'अच्छा' का 'बुरा'। पर्यायवाची शब्द और विपरीत / विलोम शब्द दोनों ही भाषा के अर्थग्रहण में सहायक होते हैं।

१६.१.२ उद्देश्य :

एक ही शब्द को अनेक शब्दों में, वही अर्थ रखते हुए कहना ही पर्यायवाची शब्दों का उद्देश्य होता है ।

विलोम शब्द का उद्देश्य किसी भी शब्द का विपरीत अर्थ बताना होता है। विलोम शब्द भाषा के अर्थग्रहण में सहायक होते हैं।

१६.१.३ पर्यायवाची शब्द :

एक–सा अर्थ बताने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं जैसे 'पेड़' का पर्यायवाची शब्द है – वृक्ष, विटप, तरू, द्रुभ, पादप आदि ।

नीचे कुछ पर्यायवाची शब्द दिए जा रहे हैं :

१) सोना - हेम, स्वर्ण, कनक, कंचन, हिरण्य

२) साँप - सर्प, भुजंग, विषधर, व्याल, नाग, उरग

३) किनारा - कूल, तट, तीर, कगार, पुलिन

४) अंधकार - अँधेरा, तम, तिमिर, तमिस्त्र

५) उन्नति - उत्थान, तरक्की, उदय, उत्कर्ष, विकास, प्रगति, वृद्धि

६) उपवन - बगिया, बाग, बगीचा, उद्यान, फुलवारी, वाटिका

७) संसार - लोक, विश्व, दुनिया, जग, जगत

८) स्त्री - नारी, महिला, वनिता , रमणी, कामिनी , ललना

९) शत्रु - अरि, रिपु, बैरी, दुश्मन

१०) वायु - पवन, हवा, अनिल, समीर, मारूत, वात

११) पानी - जल, वारि, सलिल, नीर, तोय

१२) आकाश - आसमान, गगन, अंबर, व्योम, नभ

१३) दिन - दिवस, वासर, वार, दिवा

१४) कोयल - पिक, कोकिल, परभृत

१५) उद्यान - उपवन, बाग, बगीचा

१६) ईश्वर - परमेश्वर, भगवान, ईश, परमात्मा, प्रभु

१७) अमृत - सुधा, पीयुष, सोम, अमिय

१८) इच्छा - अभिलाषा, मनोरथ, आकांक्षा, कामना, मनोरथ

१९) अग्नि - अनल, पावक, आग, कृशानु, हुताशन

२०) अतिथि - पाहुन, मेहमान, आगंतुक, अभ्यागत

२१) अंधा - अंध, प्रज्ञाचक्षु, दृष्टिहीन, नेत्रहीन

२२) किरण - रश्मि, मयुख, अंशु, कर, मरीचि

२३) कोमल - मृदु, सुकुमार, मसृण, नर्म, मृदुल

२४) समुद्र - सागर, जलधि, अर्णव, जलनिधि, सिंधु, वारीश, नदीश

२५) विद्युत - तड़िता, चपला, दामिनी

२६) बच्चा - शिशु, बालक, जातक, अर्भक

२७) सुंदर - मनोहर, मनोरम, रमणीय, रम्य, चारू, रूचिर

२८) पक्षी - विहग, विहंग, खग, द्विज, पंखी

२९) पृथ्वी - धरा, धरित्री, धारयित्री, वसुन्धरा, भू, मही, वसुधा

३०) पुष्प - सुमन, कुसुम, फूल, प्रसून

३१) नौकर - दास, सेवक, किंकर, भृत्य, अनुचर

३२) नारी - वनिता, महिला, अंगना, भामा, ललना, स्त्री, प्रमदा

३३) नदी - सरिता, निम्नगा, सलिला, पयस्विनी, तटिनी

३४) तालाब - तड़ाग, सर, पुष्कर, पोखर

३५) तरू - वृक्ष, विटप, द्रुम, पेड़, महीरूह

३६) डरावना - भयंकर, भीषण, भयावह, भयप्रद, भयानक

३७) झूठ - मिथ्या, असत्य, मृषा

३८) झंडा - ध्वज, पताका, केतु, केतन

३९) चंद्रमा - चाँद, निशाकर, चंद्र, इंदु, सुधांशु, सुधाकर, हिमकर

४०) जंगल - वन, विपिन, कानन, अरण्य

४१) रात - रात्रि, निशा, रजनी, यामिनी, रैन, विभावरी

४२) गाय - धेनु, सुरभि, गौ

४३) क्रोध - गुस्सा, रोष, कोप, रिस, क्षोभ, आक्रोश, अमर्ष

४४) गंगा - जाह्नवी, सुरसरि, देवनदी, भागीरथी, त्रिपथगा

४५) घर - गृह, सदन, शाला, मंदिर

४६) चाँदनी - ज्योत्सना, चंद्रिका, कौमुदी

४७) कमल - पंकज, सरोज, जलज, नीरज, वारिज, अंबुज

४८) नया - नव, नव्य, नवीन, नूतन, नवल, अभिनव

४९) निर्धन - धनहीन, दीन, गरीब, विपन्न

५०) पत्थर - प्रस्तर, शिला, पाषाण, पाहन, उपल, अश्म

५१) पर्वत - शैल, गिरि, अद्रि, नग, अचल

५२) झरना - निर्झर, उत्स, स्त्रोत, प्रपात

५३) असुर - दानव, राक्षस, दैत्य, दनुज, निशाचर

५४) सूचना - जानकारी, खबर, विज्ञप्ति

५५) युद्ध - लड़ाई, समर, संग्राम, रण

५६) मूर्ख - गँवार, बेवकूफ, जड़, मूढ़

५७) सरस्वती - भारती, शारदा, वागीश्वरी

५८) साधु - मुनि, संन्यासी, संत, वैरागी, अवधूत

५९) समूह - झुंड, टोली, दल, समुदाय, वृंद, पुंज

६०) तिरस्कार - अपमान, निरादर, अनादर, असम्मान, बेइज्ज़ती

६१) क्षति - हानि, नुकसान, अहित, घाटा

६२) आँख - नयन, लोचन, चक्षु, दृग, नेत्र

६३) अनुपम - अतुलनीय, निरूपम, अनोखा, विचित्र

६४) अध्यापक - शिक्षक, गुरू, आचार्य, प्राध्यापक

६५) तुरंत - फौरन, तत्क्षण, तत्काल, अविलंब, शीघ्र

इसी प्रकार अन्य पर्यायवाची शब्द भी हो सकते हैं ।

१६.१.४ विलोम शब्द

किसी शब्द का विपरीत (उल्टा) अर्थ देने वाले शब्द को विलोम शब्द या विपरीत शब्द कहते हैं जैसे –

श्वेत × श्याम, गुरू × शिष्य, सजीव × निर्जीव आदि ।

इसी प्रकार के कुछ शब्द यहाँ दिए जा रहे हैं-

शब्द	×	**विलोग शब्द**	**शब्द**	×	**विलोग शब्द**
पाप	×	पुण्य	आलस्य	×	स्फूर्ति
सजीव	×	निर्जीव	आस्तिक	×	नास्तिक
भूत	×	भविष्य	दृश्य	×	अदृश्य
शांति	×	अशान्ति	आदि	×	अनादि
विशेष	×	सामान्य	मुख्य	×	गौण
वादी	×	प्रतिवादी	सौभाग्य	×	दुर्भाग्य
स्वतंत्र	×	परतंत्र	कृष्ण	×	शुक्ल
मौखिक	×	लिखित	स्तुति	×	निंदा
अपेक्षा	×	उपेक्षा	क्रिया	×	प्रतिक्रिया
अंधकार	×	प्रकाश	खंडन	×	मंडन
ऐच्छिक	×	अनैच्छिक / अनिवार्य	दुर्जन	×	सज्जन
कठोर	×	मृदु	गर्मी	×	सर्दी
कायर	×	वीर	गुण	×	दोष
कीर्ति	×	अपकीर्ति	गुप्त	×	प्रकट
कृतज्ञ	×	कृतघ्न	घृणा	×	प्रेम
कृत्रिम	×	स्वाभाविक	चंचल	×	स्थिर
कोमल	×	कठोर	चतुर	×	मूर्ख
क्रय	×	विक्रय	छली	×	निश्छल
ऊँच	×	नीच	जीवित	×	मृत
उष्ण	×	शीत	जीवन	×	मृत्यु
उपस्थित	×	अनुपस्थित	ज्ञानी	×	अज्ञानी
उदय	×	अस्त	ठोस	×	तरल
उत्थान	×	पतन	देव	×	दानव
आस्था	×	अनास्था	धनी	×	निर्धन
आरोह	×	अवरोह	नवीन	×	प्राचीन
आध्यात्मिक	×	भौतिक	निंदा	×	स्तुति
आदि	×	अनादि/अंत	नीरस	×	सरस
आदान	×	प्रदान	स्वाधीन	×	पराधीन
सामिष	×	निरामिष	सुगम	×	दुर्गम (कठिन)
सामान्य	×	असामान्य / विशेष	सुगंध	×	दुर्गंध
साकार	×	निराकार	सदाचार	×	दुराचार

सदाचार	×	दुराचार	रूचिकर	×	अरूचिकर
सबल	×	निर्बल	विरोध	×	समर्थन
ध्वंस	×	निर्माण	विवाहित	×	अविवाहित
पंडित	×	मूर्ख	महान	×	क्षुद्र
विधवा	×	सधवा	बुद्धिमान	×	बुद्धिहीन, मूर्ख
वरदान	×	अभिशाप	मौखिक	×	लिखित
रक्षक	×	भक्षक	सत्कर्म	×	दुष्कर्म
महँगा	×	सस्ता	विश्वसनीय	×	अविश्वसनीय
दुर्लभ	×	सुलभ	मुरझाना	×	खिलना
निरक्षर	×	साक्षर	पुरस्कार	×	दंड
परतंत्र	×	स्वतंत्र	महात्मा	×	दुरात्मा
प्रत्यक्ष	×	परोक्ष	संयुक्त	×	वियुक्त
सक्रिय	×	निष्क्रिय	व्यर्थ	×	महत्त्वपूर्ण
शुद्ध	×	अशुध्द	रोगी	×	नीरोगी
समस्या	×	समाधान	सुपात्र	×	कुपात्र

इसी प्रकार अन्य विलोग शब्द भी हो सकते हैं।

१६.१.५ संभावित प्रश्न

१) **निम्नलिखित शब्दों का दो-दो पयार्यवाची शब्द लिखिए ।**

नदी	हवा	बाग	अँधेरा
चाँद	पानी	महादेव	अभिमान
समुद्र	सूर्य	वागीश्वरी	धन
रात्रि	चाँदनी	मृत्यु	इंद्र
प्रेम	बादल	आसमान	ईश्वर
बचपन	रात	पत्नी	कृष्ण
हनुमान	निर्धन	पति	कोयल
शिव	गंगा	बच्चा	आलोक
पवन	पुरूष	पक्षी	गणेश
औरत	आग	पत्थर	अपमान
सेवक	अश्व	फूल	दुनिया
सुंदर	आँख	गरीब	देवता

२) **निम्नलिखित शब्दों का विलोम / विपरीत शब्द लिखिए ।**

कपूर	आरंभ	सामान्य	सत्य
अंधकार	आशा	खंडन	हित
अमृत	आसक्ति	गुण	मैत्री
आध्यात्मिक	आय	कोमल	साहसी
आलसी	आयात	कीर्ति	रचना
आवश्यक	उत्कृष्ट	अनिवार्य	दुराचार
आदान	प्रश्न	वीर	स्वतंत्र
अवनति	उत्तर	दुर्जन	सबल
आकाश	पूरब	चंचल	विधवा
अपव्यय	चल	उदय	निरर्थक
सक्रिय	जड़	निर्दोष	जय
आस्तिक	विजय	निर्दय	अपना
रात	कोमल	शांत	राग

❖❖❖❖

१७

मुहावरे

इकाई की रुपरेखा

१७.१ प्रस्तावना
१७.२ इकाई का उद्देश्य
१७.३ प्रचलित मुहावरे : अर्थ व वाक्य - प्रयोग
१७.४. संभावित मुहावरे

१७.१ प्रस्तावना :

मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है बातचीत या अभ्यास । ऐसा वाक्यांश (वाक्य का छोटा अंश) जो सामान्य अर्थ से विपरीत किसी विशेष अर्थ का बोध कराए, उसे मुहावरा कहते हैं। ऐसा कोई भी वाक्यांश, जिसका शब्दार्थ ग्रहण न करके कोई विशिष्ट अर्थ ग्रहण किया जाता है, मुहावरा कहलाता है। जैसे-आँखों का तारा - यह एक मुहावरा है। अब इसका प्रयोग देखिए :- राम कौशल्या की आँखों का तारा थे किसी भी भाषा की समृध्दि में मुहावरे का अत्यधिक महत्त्व होता है। बिना मुहावरों के कोई भी भाषा समृद्ध और प्रभावशाली नहीं हो सकती है । इनमें शब्दों की प्रमुखता नहीं होती, अपितु ये संदर्भ, विचार और भाव प्रधान होती हैं । मुहावरों का प्रयोग करते समय अत्यन्त सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है वरना अर्थ का अनर्थ हो सकता है ।

१७.२ इकाई का उद्देश्य :

किसी भी भाषा को सुंदर, समृध्द, लालित्यपूर्ण एवं प्रभावशाली बनाने के लिए मुहावरों की अत्यन्त आवश्यकता होती है। बहुत लंबी बात मुहावरे में संक्षिप्त और प्रभावशाली ढंग से कही जा सकती है। इसके सटिक प्रयोग से भाषा का सौंदर्य बढ़ता है। भाषा में मुहावरों का महत्त्व बताना ही इस इकाई का उद्देश्य है ।

१७.३ प्रचलित मुहावरे : अर्थ व वाक्य - प्रयोग

नीचे कुछ प्रचलित मुहावरों के अर्थ उनके वाक्य-प्रयोग के साथ दिए जा रहे हैं :-

१) अंधे की लाठी – एकमात्र सहारा – संसार में इस बच्चे के सिवाय उस बुढ़िया का कोई नहीं है। यही उसके लिए अंधे की लाठी है ।

२) अक्ल का दुश्मन – मूर्ख उस अक्ल के दुश्मन को इतनी बड़ी जिम्मेदारी का काम सौंपना ठीक नहीं है।

३) अक्ल के घोड़े दौड़ाना – बहुत सोच –विचार करना – मैंने बहुत अक्ल के घोड़े दौड़ाए, परन्तु मुझे इस समस्या का कोई समाधान नहीं मिला ।

४) आसमान सिर पर उठाना – बहुत शोर मचाना - अध्यापक की अनुपस्थिति में छात्रों ने आसमान सिर पर उठा लिया ।

५) आँखें दिखाना – गुस्सा करना – मैं सही बात कह रहा हूँ और तुम व्यर्थ में ही मुझे आँखें दिखा रहे हो ।

६) आँखें बिछाना – बहुत आदर करना – प्रधानमंत्री के स्वागत में जनता ने आँखें बिछा दी थीं।

७) अपनी खिचड़ी अलग पकाना – अलग रहना - श्याम किसी की परवाह नहीं करता, वह अपनी खिचड़ी अलग पकाता है ।

८) आग बबूला होना - क्रोधित होना – अपमान जनक शब्दों को सुनकर वह आग – बबूला हो गया।

९) आकाश – पाताल एक कर देना – अत्यधिक प्रयत्न करना – अपने बच्चे को ढूँढने के लिए पूरे परिवार ने आकाश- पाताल एक कर दिया ।

१०) आँखों में धूल झोंकना – धोखा देना – डाकुओं ने पुलिस की आँखों में धूल झोंक दिया ।

११) दाँत खट्टे करना – बुरी तरह हराना - चंद्रगुप्त ने सेल्यूकस के दाँत खट्टे कर दिए थे ।

१२) घोड़े बेचकर सोना – निश्चिंत होना – परीक्षा देने के बाद विद्यार्थी घोड़े बेचकर सो गए ।

१३) छक्के छुड़ाना – बुरी तरह हराना – भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सैनिकों के छक्के छुड़ा दिए ।

१४) कमर कसना – तैयार होना - इस बार विद्यार्थियों ने परीक्षा में अच्छे अंक पाने के लिए कमर कस ली है ।

१५) कलेजा ठंडा होना - शान्ति प्राप्त करना – जब तक मैं उससे बदला नहीं लूँगा, तब तक मेरा कलेजा ठंडा नहीं होगा ।

१६) काला अक्षर भैंस बराबर – अनपढ़ - मैं पढ़ नहीं सकता, क्योंकि मेरे लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर है ।

१७) चुल्लू भर पानी में डूब मरना - लज्जा अनुभव करना – तुम्हें चोरी करते समय शर्म नहीं आई ? जाकर चुलू भर पानी में डूब मरो ।

१८) खून-पसीना एक करना – बहुत मेहनत करना – किसान और मजदूर खून – पसीना एक करके दो वक्त की रोटी की जुगाड़ करते हैं ।

१९) चार चाँद लगाना – प्रतिष्ठा बढ़ाना – भारतीय वैज्ञानिकों ने भारत देश की प्रतिष्ठा में चार चाँद लगा दिए ।

२०) एक और एक ग्यारह – संगठन में शक्ति भारत की आजादी की लड़ाई में यह सिद्ध हो गया कि एक और एक ग्यारह होते हैं ।

२१) आँखें तरसना – देखने के लिए जी चाहना – विदेश में गए हुए अपने बेटे को देखने के लिए माँ की आँखें तरस गईं।

२२) आँच न आने देना – तनिक कष्ट न होने देना – माँ स्वयं कष्ट सह लेती है परन्तु अपने बच्चे पर आँच नहीं आने देती है ।

२३) अपने पैरों पर खड़ा होना – अपने सहारे अपना कार्य करना - लाल बहादुर शास्त्री ने बचपन से ही अपने पैरों पर खड़ा होना सीख लिया था ।

२४) अँधेरगर्दी मचाना - लूट मचाना / अन्याय करना – आजकल प्राय: नेताओं ने अंधेरगर्दी मचा रखी है ।

२५) ईमान बेचना - बेईमान होना – आज के नेताओं ने अपना ईमान बेच दिया है ।

२६) उलटी गंगा बहाना – नियम के विरूध्द काम करना – आलसी राम ने ढेर-सारा काम करके आज उलटी गंगा बहा दी।

२७) कान भरना - चुगली करना – कान के कच्चे होने के कारण ही उसने तुम्हारे कान भर दी ।

२८) कान का कच्चा होना – बिना सोचे विचारे किसी पर विश्वास करना – मनुष्य को कभी भी कान का कच्चा नहीं होना चाहिए ।

२९) कमर टूटना - हिम्मत टूटना– फौजी बेटे के शहीद हो जाने के बाद माँ - बाप की कमर ही टूट गई।

३०) घाट – घाट का पानी पीना – बहुत घूम फिर कर अनुभव प्राप्त करना – घाट – घाट का पानी पीकर ही वह आज इतना आगे बढ़ा है ।

३१) गुड़- गोबर करना – काम बिगाड़ देना – मेरा काम बन ही चुका था, पर उसने आकर सब गुड़-गोबर कर दिया ।

३२) गले पड़ना – मुसीबत पीछे पड़ना – मोहन ने गरीब दयाराम की एक बार मदद क्या की, वह तो गले पड़ गया ।

३३) चार सौ बीस होना – धोखेबाज होना – तुम उस पर विश्वास मत करना, वह एक चार सौ बीस आदमी है ।

३४) मुँह फुलाना – रूठ जाना – वह हमेशा बेवजह मुँह फुला लेता है ।

३५) हाथ फैलाना - याचना करना – हाथ फैलाकर जीवन को सफल बनाना व्यर्थ है ।

३६) हाथों हाथ बिकना – बहुत जल्दी दुकानदार के सारे फल हाथों हाथ बिक गए ।

३७) सूर्य को दीपक दिखाना – प्रसिद्ध व्यक्ति का परिचय देना – नरेन्द्र मोदी जी के बारे में कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाने के बराबर है ।

३८) मक्खी मारना – कुछ न करना - वह इतना पढ़-लिख करके भी मक्खी ही मार रहा है ।

३९) मुट्ठी गरम करना – रिश्वत देना – आजकल भ्रष्टाचार इतना बढ़ता जा रहा है कि बिना मुट्ठी गरम किए कोई काम ही नहीं होता ।

४०) भाड़े का टट्टू – पैसे लेकर काम करने वाले – वह तो बिल्कुल भाड़े का टट्टू बन गया है।

४१) फूँक-फूँक कर कदम रखना – बहुत सोच-विचार कर काम करना – खराब समय में कुशल आदमी बिल्कुल फूँक-फूँक कर कदम रखता है ।

४२) रंग में भंग डालना – बना बनाया खेल बिगाड़ देना – राम ने झगड़ा करके अच्छी-खासी पार्टी में रंग में भंग डाल दिया ।

४३) भूत सवार होना – किसी काम के लिए हठ करना – आज कल उस पर पढ़ाई का भूत सवार है।

४४) बहती गंगा में हाथ धोना – अवसर का लाभ उठाना – आज कल हर आदमी बहती गंगा में हाथ धोने की सोचता है ।

४५) लकीर का फकीर बनना – अंधविश्वासी होना – इस नए युग में आज भी बहुत – से लोग लकीर के फकीर बने हए हैं ।

४६) सिर उठाना– विरोध करना - पाकिस्तान आजकल हिन्दुस्तान के सामने बहुत सिर उठा रहा है।

४७) लोहे के चने चबाना – कठिन काम करना – एवरेस्ट पर चढ़ना लोहे के चने चबाना है ।

४८) बाल-बाल बचना - दुर्घटना होते-होते बच जाना – हमारे मुख्यमंत्री दो-दो बार बाल-बाल बच गए।

४९) रंग जमाना – धाक जमाना - अपनी मधुर वाणी से उसने महफिल में अपना रंग जमा लिया।

५०) भैंस के आगे बीन बजाना – मूर्ख को उपदेश देना – किसी अशिक्षित व्यक्ति के सामने अंग्रेजी झाड़ना भैंस के आगे बीन बजाने के समान है।

५१) फूला न समाना – अत्यन्त प्रसन्न होना – कक्षा में प्रथम आने की खबर सुनकर रोहन फूला नहीं समा रहा था।

५२) पेट में चूहे कूदना – ज़ोर की भूख लगना – सुबह से कुछ नहीं खाने के कारण मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं।

५३) बाज़ी मारना – आगे निकल जाना – रमेश ने कक्षा में प्रथम आकर इस बार बाज़ी मार ली है।

५४) डूबते को तिनके का सहारा – संकटग्रस्त व्यक्ति को कुछ सहायता प्राप्त होना – इस संकट के समय में तुम्हारा साथ, मेरे लिए डूबते को तिनके का सहारा है ।

५५) टाँग अड़ाना – हस्तक्षेप करना – वह बात–बात पर मेरे काम में टाँग अड़ाता रहता है ।

५६) टेढ़ी खीर – कठिन कार्य - डॉक्टर बनना बहुत टेढ़ी खीर है।

५७) जोड़-तोड़ करना – उपाय करना – सुधीर जोड़-तोड़ कर अपना घर –परिवार चला रहे हैं।

५८) तूती बोलना - धाक बैठना – भारतीय सैनिकों की हर जगह तूती बोलती है।

५९) थूक कर चाटना – बदल जाना – थूक कर चाटना मेरे सिद्धान्त के खिलाफ़ है।

६०) दाँत पीसना - क्रोध करना – वह बेचारा दाँत पीसकर रह गया।

६१) दाल न गलना – काम न बनना – रामा की बहुत अधिक चालाकी के कारण उसकी दाल नहीं गलती है।

६२) ठेस लगना – दुख होना – जब कोई अपनों को धोखा देता है तो बहुत ठेस लगती है ।

६३) जान में जान आना – मन को चैन मिलना - दो दिनों से गायब बेटे को सही सलामत देखकर माँ की जान में जान आ गई।

६४) जी चुराना - काम से बचने के लिए बहाना बनाना - मुझे काम से जी चुराना बिल्कुल पसन्द नहीं है।

६५) चंपत हो जाना – गायब हो जाना – पुलिस को आते देखकर चोर चंपत हो गया।

६६) छप्पर फाड़कर देना – बिना मेहनत के बहुत देना - दुखी क्यों होते हो भगवान जब देगा तो छप्पर फाड़ कर देगा।

६७) घी के दिए जलाना – खुशियाँ मनाना – जब बेटा विदेश से इंजीनियर की डिग्री लेकर आया तो माँ ने घी के दिए जलाए।

६८) चादर से बाहर पाँव पसारना – आय से अधिक व्यय करना – तुम्हें बार-बार कहती हूँ कि चादर से बाहर पाँव मत पसारो।

६९) चिकना घड़ा होना – बेअसर होना – आजकल के बच्चे चिकने घड़े होते हैं। उन पर किसी बात का असर नहीं होता।

७०) चैन की बंसी बजाना – आनंद से जीवन बिताना – रिटायर होने के बाद अब पिताजी चैन की बंसी बजा रहे हैं।

७१) गंगा नहाना – बड़ा पुण्य करना – पुत्री का विवाह करके माता-पिता को लगा कि मानो वे गंगा नहा लिए हैं।

७२) गिरगिट की तरह रंग बदलना – सिद्धान्त हीन होना - अवसरवादी होना – उस पर भरोसा मत करना, वह गिरगिट की तरह रंग बदलता है।

७३) नाक में दम करना – बहुत परेशान करना – कुछ शैतान / शरारती बच्चों ने अध्यापक के नाक में दम कर दिया।

७४) पेट में दाढ़ी होना – कम उम्र में ही जानकार होना – आजकल के बच्चों को देखकर लगता है कि वे पेट में ही दाढ़ी लेकर पैदा हुए हैं।

७५) पानी- पानी होना – अत्यन्त लज्जित होना – अपने बेटे की करतूत देखकर माता-पिता पानी –पानी हो गए।

७६) पापड़ बेलना–कठिन साधना करना–अपनी पदोन्नति के लिए वह खूब पापड़ बेल रहा है।

७७) जी छोटा होना – उत्साह कम होना – तुम जी छोटा मत करो, सब ठीक होगा।

७८) दिमाग में भूसा होना - पूर्णतः मूर्ख होना – क्या तुम्हारे दिमाग में भूसा भरा है ?

७९) नमक मिर्च लगाना – बढ़ा-चढ़ा कर कहना – वह हर बात नमक-मिर्च लगाकर कहती है, उसका विश्वास मत करना।

८०) भीगी बिल्ली होना - डर से दुबकना – पिताजी का गुस्सा देखते ही वह भीगी बिल्ली बन गया।

८१) बाएँ हाथ का खेल – अति सरल कार्य - उसके लिए पेड़ पर चढ़ना बाएँ हाथ का खेल है।

८२) आग लगाना – शांति नष्ट करना / उपद्रव मचाना – दुष्ट व्यक्ति हर जगह आग लगाते रहते हैं।

८३) कसौटी पर कसना – परीक्षा लेना - चरित्र की कसौटी पर कसने से ही व्यक्ति का वास्तविक मूल्य प्रकट होता है।

८४) कलई खुलना – भेद खुलना – सी. बी. आई के छापे में नेता जी की कलई खुल गई।

८५) कमर सीधी करना – थकान मिटाना – अब कमर सीधी करने के बाद ही आगे का काम होगा।

८६) कंधे से कंधा मिलाना – आपस में सहयोग करना - आजकल औरत पुरूष के कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है।

८७) हाथ का मैल होना – तुच्छ वस्तु होना – रूपए पैसे आदमी के हाथ के मैल हैं, ये आते – जाते रहते हैं।

८८) बाग-बाग होना – खुश होना – भारत के विश्वकप जीतने के बाद मेरा दिल बाग – बाग हो गया।

८९) कलेजे पर पत्थर रखना – धीरज रखना – माँ की मृत्यु के बाद रीता को कलेजे पर पत्थर रखना पड़ा।

९०) किताब का कीड़ा – हर समय पढ़ने वाला – प्रज्ञा किताब का कीड़ा है, उससे सिनेमा देखने जाने की उम्मीद मत करना।

९१) उड़ती चिड़िया पहचानना – दिल की बात समझ लेना – हमसे चालाकी मत दिखाना, हम उड़ती चिड़िया पहचान लेते हैं।

९२) एक लाठी से हाँकना – अच्छे–बुरे का अंतर न करना – क्या शिक्षित, क्या अशिक्षित – तुम तो सबको एक ही लाठी से हाँकते हो।

९३) आकाश के तारे तोड़ना – असंभव काम करना – हर प्रेमी अपनी प्रेमिका के लिए आकाश के तारे तोड़कर लाने के वायदे करता है।

९४) कुत्ते की मौत मरना – बुरी मौत मरना – देशद्रोही हमेशा कुत्ते की मौत मरते हैं।

९५) अक्ल का पुतला – बुद्धिमान – आजकल के बच्चे खुद को अक्ल का पुतला समझते हैं।

९६) अंग–अंग ढीला होना – बहुत थक जाना – सुबह से शाम तक काम करते –करते अब तो अंग-अंग ढीला हो गया है।

९७) अपना ही राग अलापना – अपनी ही बात कहते जाना – आजकल जिसे देखो, सब लोग अपना ही राग अलापते हैं।

९८) आँसू पीकर रह जाना – बहुत शोक या दुख में चुप रह जाना – अपने बच्चों को दो वक्त की रोटी देने में असमर्थ माँ आँसू पीकर रह जाती है।

९९) गजभर की छाती होना – गौरव से भर जाना – बेटे के प्रथम आने पर माता-पिता की छाती गजभर की हो गई ।

१७.४ संभावित प्रश्न

निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर उनका वाक्य प्रयोग कीजिए।

१) अंगारों पर पैर रखना
२) अपना राग अलापना
३) अपने पैरों पर खड़े होना
४) ईश्वर को प्यारा होना
५) जले पर नमक छिड़कना
६) गंगा नहाना
७) गोबर गणेश होना
८) टोपी उछालना
९) ठंड़ा पड़ जाना
१०) तारे गिनना
११) तारे तोड़ लाना
१२) तेली का बैल
१३) दम तोड़ना
१४) दाँतों में जीभ होना
१५) दाहिना हाथ होना
१६) दिमाग चाटना
१७) दूज का चाँद होना
२६) मीठी नींद सोना
२७) यमपुर पहुँचाना
२८) शर्म से पानी-पानी होना
२९) सिर से पानी गुजर जाना
३०) सूरज को दीपक दिखाना
३१) सूरज पर थूकना
३२) सड़क नापना
३३) सोने पर सुहागा
३४) हथियार डालना
३५) मुँह तोड़ जवाब देना
३६) राई का पहाड़ बनाना
३७) खून का घूँट पीकर रह जाना
३८) मुँह फुलाना
३९) बीड़ा उठना
४०) डकार जान
४१) ठोक बजाकर लेना
४२) पत्थर की लकीर

१८) धरती पर पाँव न पड़ना
१९) नमक हराम होना
२०) नमक हलाल होना
२१) नाक रख लेना
२२) पाँव में शनीचर होना
२३) पारा उतरना
२४) भूत सवार होना
२५) भौंहें चढ़ाना
४३) नाक में दम करना
४४) नज़रों से गिरना
४५) नाक पर मक्खी न बैठने देना
४६) चोली दामन का साथ
४७) ज़ुबान बदलना
४८) घड़ों पानी पड़ना
४९) ख्याली पुलाव पकाना
५०) खून का प्यासा

१७.१

संक्षेपण एवं पल्लवन

इकाई की रुपरेखा

१७.१.१ प्रस्तावना
१७.१.२ इकाई का उद्देश्य
१७.१.३ संक्षेपण
१७.१.४ पल्लवन
१७.१.५ संभावित प्रश्न

१७.१.१ प्रस्तावना :

किसी विस्तृत विवरण, सविस्तार व्याख्या, वक्तव्य पत्र व्यवहार या लेख के तथ्यों और निर्देशों के ऐसे संयोजन को 'संक्षेपण' कहते हैं जिसमें अप्रासंगिक, असंबद्ध, पुनरावृत्त, अनावश्यक बातों को त्यागकर सभी अनिवार्य, उपयोगी तथा मूल तथ्यों का प्रवाहपूर्ण और संक्षिप्त संकलन हो। उदाहरण स्वरूप तीन घंटे की फिल्म या नाटक की कथा को आधे घंटे में ही कहना। इसमें फिल्मी कथावस्तु का संक्षेपण ही तो किया गया है जिसमें आवश्यक बातें कह दी गई और अप्रासंगिक बातें छोड़ दी गईं। संक्षेपण, मुख्य विषय का एक तिहाई अनुपात में (३:१) लिखा जाता है जिसमें कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक विचारों को प्रकट किया जाता है। इसे अंग्रेजी में Precis Writing कहते हैं।

'पल्लवन' को अंग्रेजी में Amplification कहते हैं। किसी सुगठित एवं गुंफित विचार अथवा भाव के विस्तार को पल्लवन कहते हैं। कम से कम शब्दों अथवा एक वाक्य में कहे अथवा लिखे भावों और विचारों में इतनी स्पष्टता नहीं रहती कि हर तरह के लोग उन्हें आसानी से समझ सकें। हिन्दी में हजारों सूक्तियाँ और कहावतें प्रचलित हैं जिनके अर्थ ऊपर से स्पष्ट नहीं हैं। किन्तु उनका अर्थ विस्तार करने पर उनके भाव पूरी तरह स्पष्ट हो जाते हैं। कम से कम शब्दों, वाक्यांशों या पंक्तियों को पूरी गंभीरता से समझकर उन्हें विभिन्न अनुच्छेदों में तब तक लिखा जाए जब तक मूल लेखक के समस्त मनोभाव पूरी तरह स्पष्ट न हो जाए। लेखन की इस क्रिया को हिन्दी में पल्लवन कहते हैं। पल्लवन में यह देखा जाता है कि छात्र या व्याख्याता ने किसी गंभीर तथ्य को कितनी बारीकी से और गहराई में उतरकर समझा है और अपनी भाषा में वह उसे कितनी दूर तक सुस्पष्ट कर सका है।

१७.१.२ इकाई का उद्देश्य :

'संक्षेपण' का उद्देश्य है छात्रों मे पठन-पाठन और लेखन में सरलता, स्वच्छता, प्रभाव और स्पष्टता की क्षमता का विकास करना, उनमें शब्द-संयम, भावसंयम और चिन्तन संयम की क्षमता को विकसित करना, उनमें मनोयोग दृढ़ता और एकाग्रता की सामर्थ्य उद्दीप्त करना भी संक्षेपण का उद्देश्य है क्योंकि यह एक मानसिक प्रशिक्षण है जिसमें अधिक से अधिक बातों को कम से कम शब्दों में लिखा जाता है और यह करना कठीन है।

'पल्लवन' का उद्देश्य है विद्यार्थियों में कम से कम शब्दों, अथवा एक वाक्य में कहे भावों और विचारों को अधिक से अधिक शब्दों, वाक्यों, अनुच्छ्छेदो में लिखने की क्षमता का विकास करना। यह 'संक्षेपण' का ठीक उल्टा होता है। 'संक्षेपण' और 'पल्लवन' दोनो का उद्देश्य विद्यार्थियों को यह मानसिक प्रशिक्षण प्रदान करना है जिसमें में अधिक से अधिक बातों को कम से कम शब्दों में कह सकें तथा कम से कम बातों को पूरे विस्तार से समझाते हुए प्रमाणित कर सकें।

१७.१.३ संक्षेपण :

संक्षेपण में लंबे-चौड़े विवरण, पत्राचार आदि की सारी बातों को अत्यन्त संक्षिप्त और क्रमबद्ध रूप में रखा जाता है। इसमें हम कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक विचारों, भावों और तथ्यों को प्रस्तुत करते हैं। वस्तुत: संक्षेपण किसी बड़े ग्रंथ का संक्षिप्त संस्करण, बड़ी मूर्ति का छोटा रूप और बड़े चित्र का छोटा चित्रण है। इसमें मूल की कोई भी आवश्यक बात छूटने नहीं पाती। अनावश्यक बातें छाँटकर निकाल दी जाती हैं और मूल बातें रख ली जाती हैं। यह काम सरल नहीं हैं। इसके लिए निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता है।

संक्षेपण के कुछ सामान्य नियम :

१. मूल विषय को ध्यानपूर्वक पढ़ें। जब तक उसका संपूर्ण भावार्थ स्पष्ट न हो जाए तब तक संक्षेपण लिखना आरंभ नहीं करना चाहिए। इसके लिए यह आवश्यक है कि मूल अवतरण कम से कम तीन बार पढ़ा जाए ।

२. मूल अवतरण के भावार्थ को समझ लेने के बाद उन आवश्यक शब्दों, वाक्यों अथवा वाक्य खंडो को रेखांकित करें जिनका मूल विषय से सीधा संबंध हो अथवा जिनका भावों या विचारों की अन्विति में विशेष महत्त्व हो। इस प्रकार कोई भी तथ्य छूटने न पाएगा।

३. संक्षेपण मूल संदर्भ का संक्षिप्त रूप है, इसलिए इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इनमें अपनी ओर से किसी तरह की टीका– टिप्पणी अथवा आलोचना - प्रत्यालोचना न हो। संक्षेपण में लेखक को न तो किसी मतवाद के खंडन का अधिकार है और न अपनी ओर से मौलिक या स्वतंत्र विचारों को जोड़ने की ही छूट हैं। उसे तो मूल के भावों अथवा विचारों के अधीन रहना है और उन्हें ही संक्षेप में लिखना है।

४) संक्षेपण को अंतिम रूप देने के पहले रेखांकित वाक्यों के आधार पर उसकी रूपरेखा तैयार करनी चाहिए। फिर उसमें उचित और आवश्यक संशोधन (जोड़-घटाव) करना चाहिए। यहाँ एक बात ध्यान रखने की यह है कि मूल संदर्भ के विचारों की क्रमव्यवस्था में आवश्यक परिवर्तन किया जा सकता है। यह कोई आवश्यक नहीं है कि जिस क्रम में मूल लिखा गया है, उसी क्रम में संक्षेपण भी लिखा जाए। लेकिन यह अत्यन्त आवश्यक है कि उसमें विचारों का तारतम्य बना रहे। ऐसा मालूम हो कि एक वाक्य का दूसरे वाक्य से सीधा संबंध बना हुआ है।

५) उक्त रूपरेखा को अंतिम रूप देने के पहले उसे एक-दो बार ध्यान से पढ़ना चाहिए, ताकि कोई भी आवश्यक विचार छूटने न पाए। जहाँ तक हो सके, यह अत्यन्त संक्षिप्त लगभग एक तिहाई से कम हो। यदि शब्द संख्या पहले ही निर्धारित हो तो यह प्रयत्न करना चाहिए कि संक्षेपण में उस निर्देश का पालन किया जाए।

६) संक्षेपण को व्याकरण के सामान्य नियमों के अनुसार एक क्रम में लिखना चाहिए।

७) उपर्युक्त सारी क्रियाओं के बाद संक्षेपण के भावों और विचारों के अनुकूल एक संक्षिप्त शीर्षक दे देना चाहिए। शीर्षक ऐसा हो जो सभी तथ्यों को समेटने की क्षमता रखे। शीर्षक लघु और कम से कम शब्दों वाला होना चाहिए।

८) संक्षेपण में विशेषणों, क्रियाविशेषण, किसी भी अलंकारों का प्रयोग नहीं होना चाहिए तथा अप्रासंगिक बातों, उद्धरणों और विचारों की पुनरावृत्ति को बिल्कुल हटा देना चाहिए। भाषा-शैली बिल्कुल सरल, स्पष्ट और आडंबरहीन होना चाहिए।

९) संक्षेपण में परोक्ष कथन (Indirect Narration) सर्वत्र अन्य पुरूष में होना चाहिए। जिस तरह किसी समाचार पत्र का संवाददाता अपने वाक्यों की रचना में परोक्ष कथन का प्रयोग करता है उसी तरह उसका व्यवहार होना चाहिए। संवादों के संक्षेपण में इसका उपयोग सर्वधा अनिवार्य है। ऐसा करते समय एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि हिन्दी में जब वाक्यों को परोक्ष ढंग से लिखना होता है तब सर्वनाम, क्रिया या काल को बदलने की जरूरत नहीं होती, केवल 'कि' जोड़ देने से काम चल जाता है जैसे-

प्रत्यक्ष वाक्य - राम ने कहा -" मैं जाता हूँ।"

परोक्ष वाक्य - राम ने कहा कि मैं जाता हूँ।

१०) संक्षेपण में मूल के उन्हीं शब्दों को रखना चाहिए जो अर्थव्यंजना में सहायक हों। जहाँ तक संभव हो, मूल शब्दों के बदले दूसरे शब्दों का प्रयोग (जैसे आजादी के लिए स्वतंत्रता) करना चाहिए, लेकिन ध्यान रहे कि मूल के भावों–विचारों से अर्थ में उलट फेर नहीं होने पाए। इसमें भाषा को सजाने -संवारने की आवश्यकता नहीं है।

११) संक्षेपण में शब्दों के प्रयोग में काफी संयम से काम लेना चाहिए। कोई भी शब्द बेकार या बेजान न हो। उन्हीं शब्दों का व्यवहार करना चाहिए जिनका प्रासंगिक महत्त्व है। मूल के उन्हीं शब्दों का प्रयोग करना चाहिए जो भाव व्यंजना और प्रसंगों के अनुकूल सार्थक है, जिनके बिना

काम नहीं चल सकता। शब्दों या वाक्यों को दुहराने की कोई आवश्यकता नहीं है। अंत में संक्षेपण में प्रयुक्त शब्दों की संख्या लिख देनी चाहिए।

संक्षेपण के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं :-

उदाहरण - १

तेनसिंह का साहस देखकर उनके फ्रांसीसी साहब चकित रह गए। अंत तक वे बहुत थक गए थे। यहाँ तक कि उनके पैर की दो उंगलियाँ मामूली ढंग से जम गई थीं। कहा जाता है कि उनकी वीरता देखकर भावुक फ्रेंच साहब इतने जोश में आए थे कि वे तेनसिंह को हार पहनाना चाहते थे, पर वहाँ पुष्प नहीं थे, इसलिए खाने के लिए जो सालेज (समोसे) रखे थे, उनकी माला बना कर पहना दी। उक्त अभियान में दो साहब मारे गए, पर उसी साल जाड़ों में जिस अभियान में तेनसिंह ने भाग लिया, उनमें वे स्वयं मृत्यु के जबड़ों से लौट आए। वे कब्र के दक्षिण में जार्ज फ्रेंई के साथ कोक्तंग शिखर पर चढ़ रहे थे, जो १९,९०० फुट ऊँचा है। १९५१ के २९ अक्टूबर को जार्ज फ्रेई के साथ जहाँ वे जा रहे थे, वह बहुत ढाल-वाली जगह थी। कुछ बर्फ जमी थी, पर बहुत पतली। ऊपर एक और पहाड़ी थी, जिसपर ढलान और अधिक थी। फ्रेई आगे-आगे थे। तेनसिंह दस कदम पिछे थे। और, एक दूसरा शेरपा औदग्वा उनके भी दस कदम पीछे था। एकाएक फ्रेई का पैर फिसला और वे तेनसिंह की ओर चले तेनसिंह ने उन्हें बचाने की चेष्टा की पर स्वयं उनके पैर लड़खड़ा गए । (शब्द- २००)

संक्षेपण : तेनसिंह का साहस

तेनसिंह के साहस और वीरता पर मुग्ध होकर फ्रांसीसी साहब जार्ज फ्रेई ने भावावेश में उनके गले में सालेज की माला पहना दी। २९ अक्टूबर, १९५१ को जब तेनसिहं, फ्रेई साहब और शेरपा औदग्वा के साथ १९,९०० फुट ऊँचे पहाड़ कोक्तंग के शिखर पर चढ़ते जा रहे थे। बर्फीली ढलान पर फ्रेई का पैर अचानक फिसला तेनसिंह ने उन्हें बचाने की कोशिश की, पर वे स्वयं लड़खड़ा गए। (शब्द -६८)

उदाहरण -२

एक दिन मेम-डॉक्टर बेला से पूछ बैठी - "तू कहाँ जाएगी? जाती क्यों नहीं? दूध और केले पर कहाँ तक पड़ी रहेगी?"

"कहाँ जाऊँ?"

" मैं क्या जानूँ, कहाँ जाएगी!"

" मेरा तो इस दुनिया में कोई अपना नहीं है!"

"तो इसके लिए मैं जिम्मेवार हूँ? अस्पताल तो कोई यतीमखाना या आश्रय नहीं है। अगर तू खुद यहाँ से न निकलेगी, तो मैं आज शाम को धक्के देकर निकलवा दूँगी।"

"क्यों, मेरा क्या कसूर ——————- "

" कसूर का सवाल नहीं है। मुझे इस 'बेड' पर दूसरे मरीज को जगह देनी है। आज ही वह आती होगी। तू तो अब बिलकुल चंगी हो गई।"

"तो आप अपने यहाँ मुझे अपनी नौकरानी बनाकर रख लें। मैं झाड़ू-बुहारू करूँगी, बरतन साफ करूँगी। मेरे लिए एक जून सूखी रोटी काफी होगी।"

"माफ करो, मैं बाज आई!" - मेम साहब ने जरा मुस्कुराकर कहा - "तुझे अपने घर पर ले जाकर रखूँ और मेरी चौखट पर रँगीलों का फैन्सी मेला हो! ना, मुझे कबूल नहीं।"

"तब और किसी शरीफ के घर में ....."

"क्या टें-टें करती है? मैं दवा देती हूँ, रोजी नहीं देती।"

"अस्पताल में दाई का काम नहीं मिल सकता?"

"बिना तनख्वाह के?"

"जो कुछ आप दें।"

"तू तो सिर पर सवार हो रही है!" - मेम साहब झल्ला उठीं यहाँ जगह नहीं। तेरे लिए तो बाजार खुला है। वहाँ तो खासी आमदनी होगी।" - राजा राधिका रमण: 'राम रहीम' (शब्द २१८)

संक्षेपण : मेम साहेब ने बेला को निकाल देने की धमकी दी

बेला जब भली-चंग हो गई तब एक दिन मेम साहेब ने उसे अस्पताल से चले जाने को कहा। लेकिन उसका तो इस दुनिया में अपना कोई नहीं था। मेम ने जब शाम को धक्के देकर निकलवाने की धमकी दी तो बेला ने नौकरानी बनने या अस्पताल में दाई का काम करने की इच्छा प्रकट की। इस पर मेम ने झल्लाकर कहा कि उसके लिए बाजार छोड़कर दूसरी जगह नहीं हो सकती। (शब्द- ७१)

विशेष नोट : इन दोनों अवतरणों को दो-तीन बार पढ़ा और मूल विषयों को समझकर आवश्यक बातों को रेखांकित किया। इसके बाद मूल में प्रयुक्त शब्दों को गिना। संक्षेपण को तिहाई रूप देने के लिए हमने रेखांकित पंक्तियों के सहारे उसका रफ प्रारूप तैयार किया। फिर अनावश्यक शब्दों को छाँटकर और वाक्य रचना को व्यवस्थित करते हुए संक्षेपण का अंतिम स्थिर कर उसे शुद्ध रूप में लिखा और अंततः एक शीर्षक प्रदान किया। सबसे अंत में संक्षेपण की तिहाई शब्द संख्या को भी लिख दिया। इस तरह हमारा संक्षेपण तैयार हुआ।

१७.१.४ पल्लवन :

कम से कम शब्दों या एक वाक्य में सुगठित, संगुफित भावों और विचारों को अधिक से अधिक वाक्यों व अनुच्छेदों में पूर्णतः अभिव्यक्त करना 'पल्लवन' कहलाता है। यह संक्षेपण का बिल्कुल उल्टा होता है। इसमे मूल कथ्य को अधिक से अधिक वाक्यों में पूरी तरह समझा कर लिखना होता है।

'पल्लवन' के कुछ सामान्य नियम :

१) पल्लवन के लिए मूल अवतरण के वाक्य, सूक्ति, लोकोक्ति अथवा कहावत को ध्यानपूर्वक पढ़िए ताकि मूल के संपूर्ण भाव अच्छी तरह समझ में आ जाएँ।

२) मूल विचार अथवा भाव के नीचे दबे अन्य सहायक विचारों को समझने की चेष्टा कीजिए।

३) मूल और गौण विचारों को समझ लेने के बाद एक-एक कर सभी निहित विचारों को एक-एक अनुच्छेद में लिखना आरंभ कीजिए ताकि कोई भी भाव अथवा विचार छूटने न पाए।

४) अर्थ अथवा विचार का विस्तार करते समय उसकी पुष्टि में जहाँ-तहाँ ऊपर से कुछ उदाहरण और तथ्य भी दिए जा सकते हैं।

५) भाव और भाषा को अभिव्यक्ति की पूरी स्पष्टता, मौलिकता और सरलता होनी चाहिए। वाक्य छोटे-छोटे और भाषा अत्यन्त सरल होनी चाहिए। अलंकृत भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

६) पल्लवन के लेखन में अप्रासंगिक बातों का अनावश्यक विस्तार या उल्लेख बिल्कुल नहीं होना चाहिए।

७) 'पल्लवन' में लेखक को मूल और गौण भाव या विचार की टीका-टिप्पणी और आलोचना नहीं करनी चाहिए। इसमें मूल लेखक के मनोभावों का ही विस्तार और विश्लेषण होना चाहिए।

८) 'पल्लवन' की रचना हर हालत में अन्य पुरूष में होनी चाहिए।

९) 'पल्लवन' व्यासशैली का होना चाहिए, समासशैली का नहीं। अत: इसमें बातों को विस्तार से लिखने का अभ्यास किया जाना चाहिए।

'पल्लवन' के दो उदाहरण नीचे दिये हैं -

उदाहरण -१

मूल अवतरण – विदेशी भाषा के विद्यार्थी होना बुरा नहीं, पर अपनी भाषा सर्वोपरि हैं।

- महात्मा गांधी

कोई भी भाषा बुरी नहीं होती, क्योंकि सबकी अपनी-अपनी विशेषताएँ है, अपने–अपने बोलने वाले होते हैं। हर भाषा यदि किसी अन्य के लिए केवल भाषा है तो अपने लिए मातृभाषा भी होती है। किसी 'भाषा' या किसी की 'मातृभाषा' को बुरा मानना या समझना मनुष्यता नहीं, विद्याप्रेम नहीं, बल्कि संकीर्णता और नीचता है। फिर, हर भाषा का अपना साहित्य होता है और साहित्य मानवमात्र के प्रेम की वस्तु है। संसार के कोने-कोने में अनगिनत भाषाएँ बोली और लिखी जाती हैं; जिनकी अपनी प्रकृति और अपने उच्चारण हैं। ये सारी भाषाएँ सीखी जा सकती हैं। हजारों विद्यार्थी विदेशी भाषाओं या दूसरे की भाषाओं का अध्ययन करते हैं ताकि उनके साहित्य का ज्ञान प्राप्त किया जा सके। हर भाषा के साहित्य की अपनी विशिष्टता होती है। उस विशिष्टता में किसी भी देश की मानसिक, विलक्षणता रहती है। इन सारी बातों की जानकारी के लिए ही विदेशी भाषाओं का अध्ययन होता है। यह कोई बुरी बात नहीं। अनेक भाषाओं का ज्ञान आवश्यक है क्योंकि इससे मानवीय दृष्टि व्यापक, विचार उदार और अंतर्राष्ट्रीय संबंध सुदृढ़ होते हैं। इसलिए विदेशी भाषा या दूसरी भाषा का विद्यार्थी होना बुरा नहीं हैं।

लेकिन, विदेशी भाषाओं या दूसरों की भाषाओं को पढ़ने के पहले अपनी राष्ट्रभाषा और मातृभाषा का ज्ञान नितान्त आवश्यक है। अपनी भाषा में ह्रदय बोलता है; इसमें माँ की ममता, राष्ट्रीय संबंधों का माधुर्य और अपने को जानने पहचानने की सरलता रहती है। अपनी भाषा में अपनापन रहता है। इसके लिए हमें विशेष श्रम नहीं करना पड़ता, व्यर्थ की माथापच्ची और समय की बरबादी नहीं करनी पड़ती। हिन्दी हमारी मातृभाषा है। इसलिए इसके व्यवहार में हमें जितनी सहजता और सुविधा का बोध होता है उतना विदेशी भाषाओं में नहीं होता। कारण यह है कि हिन्दी हम घर-बाहर सभी जगह बोलते हैं; इसी में हम अपने मन में बातें सोचते हैं, किसी

विदेशी भाषा में नहीं। इसीलिए यह हर तरह की शिक्षा- चाहे वह अन्य किसी भाषा की शिक्षा हो या कला-कारीगरी की– का माध्यम होती है। अगर हम कोई विदेशी भाषा सीखते हैं तो अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा के माध्यम से ही। इसीलिए जब हम किसी दूसरी सीखी भाषा को बोलते हैं तो मातृभाषा में मन में जो हम सोचते हैं, वह उसी का अनुवाद होता है। इसीलिए इसके बिना हम रह ही नहीं सकते। यह हमारे दैनिक जीवन के साथ मिली -जुली है। दूध में पानी घुला होता है, उसी तरह मातृभाषा में भी हमारी माँ का संस्कार, उनका प्यार और मिठास है। अतः अपनी भाषा सर्वोपरि है। भाषाओं के अध्ययन में इसी का सबसे ऊँचा स्थान है। यही कारण है कि सभी सभ्य देशों में शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जाती है।

विदेशी भाषा सीखी जा सकती है पर वह अपनी नहीं हो सकती। वह मस्तिष्क की वस्तु हो सकती है, ह्रदय की वाणी नहीं हो सकती। उसमें माँ की ममता, पिता का प्यार, पड़ोसियों का स्नेह और हमारा मन या हमारे देश का दर्द नहीं हो सकता। आज अंग्रेजी हमपर जबरदस्त लदी है। फल यह है कि लाखों विद्यार्थी अंग्रेजी में फेल हो रहे हैं। लादी गई कोई भी विदेशी भाषा समाज और देश के स्वाभाविक विकास में बाधक होती है। फिर, भाषा तो अन्य विद्याओं को जानने का एक माध्यम है, अपने भाव प्रकट करने का एक जरिया है। बचपन की जानी-समझी मातृभाषा को अपनी पढ़ाई-लिखाई या कारोबार का माध्यम न बनाकर अंग्रेजी को बनाने से अंग्रेजी सीखने में ही हमारे दस-बारह वर्ष व्यर्थ हो जाते हैं। आज अंग्रेजी को माध्यम रखने के कारण देश के हर विद्यार्थी के यानि इस देश के दस-बारह वर्ष बर्बाद हो रहे हैं। क्या इस बरबादी को भी देशभक्ति में गिना जाए? अतः ठीक ही कहा गया है कि विदेशी भाषा का विद्यार्थी होना बुरा नहीं, पर अपनी भाषा सर्वोपरि है।

उदाहरण – २

मूल अवतरण :- "नर और नारी जनमते और मरते हैं, परन्तु राष्ट्र सदा अमर रहता है।"

- पंडित जवाहरलाल नेहरू

संसार में असंख्य नर-नारियों का जन्म प्रतिक्षण होता रहता है, और हर क्षण उनकी मृत्यु भी होती है। मनुष्य के साथ जीना-मरना सदा लगा रहता है। जन्म के साथ मृत्यु का संबंध अवश्यम्भावी है। जन्म होता है तो मृत्यु भी होगी, यह निश्चित है। यह एक ऐसा सत्य है जिसके संबंध में किसी तरह का भ्रम हो ही नहीं सकता।

किन्तु, राष्ट्र अमर है, इसकी आत्मा अमर है। यह मनुष्य की तरह जीता-मरता नहीं है। राष्ट्र की शक्ति उसके नागरिक, उसकी संस्कृति, उसका साहित्य, उसकी परंपरा और उसकी ऐतिहासिक चेतना में हैं। नागरिकों की सबल एकता से राष्ट्र मजबूत होता है, उसकी आत्मा सशक्त और दीर्घजीवी होती है। जब तक राष्ट्र की आंतरिक एकता सुदृढ़ रहती है, उसपर कोई भी बाहरी शक्ति उंगली उठाने की हिम्मत नहीं करती, उसका अमरत्व बना रहता है, उसका पतन नहीं होता। लेकिन, जब उसकी आंतरिक शक्ति गृहकलह में पड़कर विश्रृंखल होने लगती है तब उसका ह्रास अवश्यम्भावी हो जाता है किन्तु यह 'ह्रास' ह्रास ही है, 'राष्ट्र' का नाश नहीं। राष्ट्र के साथ उसकी संस्कृति, साहित्य, परंपरा कला, ऐतिहासिक चेतना जैसे जो अमर तत्व हैं वे किसी भी पतन के समय अपने नागरिकों को पुनः सचेत और प्रकृतिस्थ करते हैं और तब पहले से अधिक तीव्रता से वे नागरिक ही अपनी विश्रृंखलता को समाप्त कर एक हो जाते हैं, राष्ट्रमय हो जाते हैं।

मनुष्य मरता है परन्तु उसकी परम्परा कभी नहीं मरती, व्यक्ति मरता है परन्तु राष्ट्र नहीं मरता ।

कश्मीर से कन्याकुमारी और कामरूप से कच्छ तक फैले भारतीय राष्ट्र में नदी, पर्वत, वृक्ष, लता, क्षेत्र, इत्यादि के साथ जुटा आत्मीयता का संबंध केवल भौगोलिक ही नहीं, बल्कि वंश परंपराओं का भी है। फिर ये वंश परंपराएँ एक-सी साहित्यिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, नैतिक और ऐतिहासिक विरासतों से एक दूसरे से बँधी हैं। आज भारत के किसी एक कोने का निवासी मूलत: किसी अन्य छोर का वंशज है। किसी एक कोने की भाषा बोलने वाला मूलत: किसी दूसरे ही छोर की जन्मी भाषा बोलता है, सारे तीर्थ, सारी नदियाँ, सारे धाम और सारे यात्रा पथ एक दूसरे के ऐतिहासिक मिलन के साक्षी हैं। सारे वंशों की रगों में एक ही पारस्परिक रक्त का संचार है यही कारण है कि भारत एक राष्ट्र है। व्यक्ति के मरने से राष्ट्र नहीं मरता। व्यक्ति के धर्म परिवर्तन से राष्ट्रीयता में परिवर्तन की सांप्रदायिक नारे बाजी तो और भी बड़ी मूर्खता है । अत: नर नारी के जनमने-मरने पर भी राष्ट्र अमर है, बल्कि राष्ट्र की जो संस्कृति और राष्ट्रीयता है वह राष्ट्र के सारे नागरिकों के धर्म परिवर्तन तक कर लेने पर वही रहती है, बदलती नहीं है ।

अपेक्षित प्रश्न :

१) "क्रोध एक तरह का रोग होता है जिसे क्षणिक पागलपन भी कह सकते हैं।" - महात्मा गाँधी

२) जीवन शक्ति को शरीर में धारण करने की क्षमता ही ब्रह्मचर्य है।

३) हिंसा बुरी चीज है, पर दासता उनसे भी बुरी है।

४) "प्रायश्चित से पिछले पाप के प्रति विरक्ति उत्पन्न होती है और आगे के लिए सावधानी।"- महात्मा गाँधी

५) अव्यवस्थित - चंचल चित्र वाले व्यक्ति की सफलता में हमेशा संदेह रहता है।

१७.१.५ संभावित प्रश्न :

१) निम्नलिखित अवतरण का संक्षेपण लिखिए।

क) जीवन क्या है ? जीवन केवल जीना, खाना, सोना, और मर जाना नहीं है। यह तो पशुओं का जीवन है। मानव-जीवन में भी ये सभी प्रवृत्तियाँ होती हैं, क्योंकि वह भी तो पशु है। पर इनके उपरान्त वह कुछ और भी होता है। उसमें कुछ ऐसी मनोवृत्तियाँ होती हैं जो प्रकृति के साथ हमारे मेल में बाधक होती हैं। कुछ ऐसी होती हैं जो इस मेल में सहायक बन जाती हैं। जिन प्रवृत्तियों में प्रकृति के साथ हमारा सामंजस्य बढ़ता है, वे वांछनीय होती हैं। जिनसे सामंजस्य में बाध्य उत्पन्न होती है, वे दूषित हैं। अहंकार, क्रोध या द्वेष हमारे मन की बाधक प्रवृतियाँ हैं। यदि हम इनको बेरोक-टोक चलने दें तो नि:संदेह वे हमें नाश और पतन की ओर ले जाएँगी इसलिए हमें उनकी लगाम रोकनी है। उनपर संयम रखना पड़ता है, जिसमें वे अपनी सीमा से बाहर न जा सकें।

- प्रेमचंद

ख) हमारे सपनों की इमारतों के सुनहरे गुम्बद कितने मोहक होते हैं। दूर के सौन्दर्यमंडित पर्वत शिखर की तरह वे हमारी आँखों में समा जाते हैं और बरबस हमें अपनी ओर खींचते हैं। मगर जितना ही हम उनके निकट पहुँचने की कोशिश करते हैं, वे उतनी ही दूर नजर आने लगते हैं। थककर अकसर हम हताश हो जाते हैं, कभी-कभी नए रास्तों पर भी चलने लगते हैं। इसे इंसान की कमजोरी ही समझना चाहिए क्योंकि कर्म की सार्थकता फल में नहीं, कर्मण्यता में है; उस पुरूषार्थ में है जो एक-एक कदम की गति, एक-एक इंच की चढ़ाई का आनंद लेता है। वास्तव में, चढ़ाई के प्रयत्न का सुख अपने आप में ही इतना मीठा है कि उसकी तृप्ति की कोई सीमा नहीं।

ग) कवि का काम है कि वह प्रकृति विकास को खूब ध्यान से देखे। प्रकृति की लीला का कोई ओर छोर नहीं, वह अनन्त है। प्रकृति अद्‌भूत खेल खेला करती है। एक छोटे से फूल में वह अजीब कौशल दिखलाती है। वे साधारण के ध्यान में नहीं आते। ये उनकी समझ में नहीं आ सकते, पर कवि अपनी सूक्ष्म दृष्टि से प्रकृति के कौशल अच्छी तरह देख लेता है, उनका वर्णन भी वह करता है। उनसे नाना प्रकार की शिक्षाएँ भी वह ग्रहण करता और संसार को लाभ भी पहुँचाता है। जिस कवि में प्राकृतिक दृष्टि और प्रकृति के कौशल देखने और समझने की जितनी ही अधिक शक्ति होती है, वह उतना ही महान कवि होता है।

प्रश्न -२ निम्नलिखित अवतरण का पल्लवन लिखिए।

क) जीवन को मर्यादित करने का सहज उपाय यह है कि मनुष्य नित्यकर्मो का पालन सावधानी से करे।

ख) बुद्‌धिमान लोग गुरू ऋण बहुत बड़ा मानते हैं, क्योंकि और ऋण तो आसानी से लौटाए जा सकते हैं - ज्ञानदान का ऋण सबके लिए लौटाना संभव नहीं है। - महात्मा गांधी

ग) विचारों की अनिश्चितता होने से मनुष्य का जीवन अस्त-व्यस्त और व्यक्तित्व चकनाचूर हो जाता है।

घ) जो स्त्री देश को तेजस्वी, नीरोग और सुशिक्षित संतान भेंट करती है, वह भी सेवा ही करती है।

ड) गाँधी टोपी की उमंग और है, गाँधीत्व की गंध और। - राजा राधिकारमण